# श्री जैन सिद्धान्त भास्कर

# THE JAINA ANTIQUARY

1.-50-51

1997-1998

JOINT-ISSUE



प्राच्य दुर्लभ पाण्डुलिपि विशेषांक - 2

MANUSCRIPTS SPECIAL ISSUE

PART-II



SRI DEV KUMAR JAIN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE

ARRAH (BIHAR) INDIA-802301

## मुनि सिद्धान्ति देव नेमिचन्द्र कृत द्रव्यसंग्रह

### का हिन्दी-छाया-अनुवाद

गतांक के आगे

#### सं० प्रो० डॉ० लालचन्द्र जैन

आते जो कर्म परिणामों से आत्मा के, वे होते भावाश्रव, जिनदेव ने कहा। कार्याश्रव अन्य हैं होते (29)

मिथ्यात्व, आविरत, प्रमाद, योग, क्रोध आदि जाने जाते फिर, पाँच, पाँच, पंद्रह, तीन व चार भेद के क्रमश: पूर्व के (30)

ज्ञानावरणी आदि योग्य पुद्गल कर्म जो आते, वे द्रव्याश्रय जाने जाते अनेक भेद से-जिनवर ने कहा (31)

वंधता कर्म जिस चेतना भाव से, सो भाववंध है। पर कर्म के प्रदेश का अन्योन्य प्रवेश इतर है (द्रव्यबंध है) (32)

प्रकृति, स्थिति, अनुभाग, प्रदेश-भेद से हैं चार प्रकार के बन्ध के। योग से प्रकृति व प्रदेश, पर स्थिति व अनुभाग कषाय से उपजें (33)

चेतन परिणाम जो कर्मों के आश्रव-निरोध के हेतु, सो भाव संवर सुनिश्चित हैं; द्रव्याश्रव का अवरोध अन्य है (34)

व्रत, समिति, गुप्ति धर्म, अनुप्रेक्षा व परीषह-जय। चारित्र के बहुभेद ये, जातव्य हैं, भाव संवर की विशेषताएँ (35)

#### अनुवादक श्री सुबोध कुमार जैन, आरा

जब समय आता तब तपस्या से या भोग कर फल या कर्म पुद्गत उसे भाव निर्जरा मानो इस प्रकार निर्जरा दो प्रकार की उ

सर्व कर्मों के क्षय हेतु, आत्मा के हैं परिणाम जो, जानों वह भाव मोक्ष। द्रव्य मोक्ष कार्मों का पृथक भाव

शुभ-अशुभ भाव युक्त पुण्य-पाप होते निश्चय से जीव व साता, शुभ, आयु-नाम-गोत्र होते पाप से होते इनसे विपरीत (38)

सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चरित्र मोक्ष का कारण जानो, व्यवहार से निश्चय से तीनों ही मिलकर होते हैं निज आत्मा (39)

रत्नत्रय नहीं बसते, आत्मा से मुक अन्य किन्ही द्रव्य में इसीलिए तीनों मिलकर ही होते मोक्ष के कारण आत्मा (40)

जीवादि में श्रद्धान, आदि सम्यक् रूप आत्मा का । दोषों से विमुक्त ज्ञान निर्दोष सम्यक् होता (41)

संशय, विमोह, विश्रम विवर्जित आत्म, पर-स्वरुप का ग्रहण सम्यक् ज्ञान, साकार व अनेक भेद (42)

शेष कवा

# श्री जैन सिद्धान्त भास्कर

## जैन पुरातत्व संबन्धी वार्षिक शोधपत्र

बी॰ नि॰सं॰—2524-25 वि॰ सं॰—2054-55

.

1997 एवं 1998

भाग—50-51 अंक—1-2

् प्रधान सम्पादक

डॉ0 राजाराम जन

#### सम्पादक मगडल

हां लालचन्द जीन (वैशाली) हां ऋषभचन्द फीजदार (वैशाली) डा॰ गोकुल चन्द्र जेन (आरा)

डॉ॰ शशिकान्त (लखनऊ)

## प्राच्य दुर्लभ पाण्डुलिपि विशेषांक २

(श्री जें । सि । भ । आरा में सुरक्षित संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी की हस्तिलिखित पाण्डुलिपियों की विवरणात्मक सूची संख्या-998 से 2017 तक। सम्पादक —ভাঁ সহূषभचन्द फीजदार )

. प्रकाशक

अं अय खुमार जैन मंत्री श्री देव कुमार जैन मंत्रियण्डल रिसर्च इन्स्टीच्यूट

प्राचीन विज्ञानत् भवन, आरा (बिहार)



विदेश में —300 1,50/

## THE JAINA ANTIQUARY

#### YEARLY JAINOLOGICAL RESEARCH JOURNAL.

V.N.S -2524-25

1997 & 1998

Vol.—50—51

V.S. 2054-55

Joint Special Issue

No.-1-2

#### C. Editor

#### Dr. Raja Ram Jain

#### Editorial Board

Dr. Lalchand Jain (Vaishali) Dr. Gokulchand Jain (Arrah)

Dr. Rishabh Ch. Fauzdar Dr. Shashi Kant

(Vaishali)

(Lucknow)

#### MANUSCRIPTS SPECIAL ISSUE - 11

( DISCRIPTIVE CATALOGUE OF OLD RARE SANSK II, PRAKRIT, APABHARANS, HINDI MANUSCRIPTS PRESERVED IN SRI JAIN SIDDHANT BHAWAN, ARRAH, No. 998-2017, Edited by Dr. Rishabhchand Fauzdar)

> Published by Ajay Kumar Jain, Secretary

Shri Devkumar Jain Oriental Research Institute SHRI JAIN SIDDHANT BHAWAN ARRAH BIHAR (INDIA)

Inland Rs. 200/- ]

[ Foreign Rs 🐠 📭

# I N D E X ( विषय - सूची )

पृष्ठ संख्या

		•	6 - "	
1.	मानद प्रबंध निदेशक का प्रतिवेदन	ले॰ सुबोध कुमार जैन		
2.	प्रधान सम्पादकीय	ले॰ डा॰ राजाराम जैन	1 से 10	
3.	Foreword	Naseem Akhte	r	
	(Manuscript, Special Issue,	vol-II)		
4.	प्रकाशकीय नम्र निवेदन	ले• अजय कुमार जैन		
5.	Abbreviation			
6.	समर्पण ले॰ सुबोध कुमार जैन			
7.	Introduction Dr. Gokul Chand Jain I रे		in I d IX	
	(Manuscript vol-I)			
8.	सम्पादकीय ड	ा० ऋषम चन्द जैन फौ	नदार'	
	(श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली-१	गाग-2)	KI से XIV	
9.	Introduction to Dr. Gokul Chand Jain		i Jain	
	SECOND VOLUME			
10.	Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabharamasa			
•	& Hindi, Manuscripts.			
	(i) Purana. Carita, Katha		1 से 13	
	(ii) Dharma, Darsana, Acara		14 से 39	
	(iii) Rasa-chand Alankara & Kavya (iv) Mantra, Karmakanda		40 से 49	
			<b>50 से 5</b> 9	
	(v) Ayurveda	A	60 से 61	
•	(vi) Stotra		62 से 113	
	(vii) Puja-Patha-vidhana		14 से 173	
		** Y		

Ac. Gunratnasuri MS

11.	परिशिष्ट	
	(i) पुराण, चरित कथा	1 से 55
	(ii) धर्म, दर्शन, आचार	56 से 69
	(ili) रस, छन्द, अलंकार इत्यादि	70 से 79
	(iv) रस, छन्द, अलंकार एवं काव	ष्य
	(v) मंत्र, कर्मकाण्ड	92 से 107
	(vi) आयुर्वेद	108 से 115
	(vii) श्रोत	116 से 203
	(viii) पूजा-पाठ-विधान	204 से 309
12	भवन का 95 वाँ वार्षिक प्रतिवेदन	<b>ले० अजय <u>क</u>ु० जैन</b> 310 से 313
13.	मुडिवद्री जैन मठ के भट्टारक	<b>ले॰ निरज जैन</b> 314 से 315
	दिवंगत स्वामी जी	(सतना)
14.	श्री मुडविद्री क्षेत्र के पूज्य भट्टारक जी के देहावसन पर	ले॰ सुवोध कु॰ जैन 316
15.	हमारे बड़े भाई प्रबोध कुमार जी का	A
	देहावसन	ले॰ सुबोध कु॰जैन 317 से 318
16.	भाषा के स्वभाविक विकास का नाम है 'प्राकृत'	१ ले <b>॰</b> मदनलाल खुराना 319
17.	कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार	ले० डा∙ अनुपम जैन 320
	(कुन्द-कुन्द ज्ञानपीठ इन्दौर द्वारा प्रवी	र्तत)
18.	पाठकों के उदगार (। से 4)	321 से 322
19.	पुस्तक समीक्षा एवं समालोचना	322 से 325
20.	छपते-छपते	ले• सुबोघ कु॰ जैन 326
21.	Catalogue & Price list of Prin & Xerox publications 1998.	
22.	मुनि सिद्धान्त देव नेमिचन्द कृत 'द्रत्यसंग्रह' का हिन्दी-छाया अनुवाद र	
	( 29 से 58 )	सं • 2, 3

#### मानद् प्रबंध-निदेशक का प्रतिवेदन

श्री जैन सिद्धान्त भवन का ग्रंथाविल भाग-1 एवं भाग-2 जो कि भारत सरकार के शिक्षा विभाग के सहयोग से प्रकाशित हुआ था, लगभग 2000 हस्तिलिखित ग्रंथों की सूची एवं विस्तृत परिचय है और उनका 2 भागों में निम्न विद्वानों को कुछ माह मैंने अपने देवाश्रम कार्यालय में बिठाकर स्वयं अपने निदंशन में इसे तैयार करवाया था।

दोनों ही ग्रंथाविलयों का सम्पादन संस्कृत पाकृत के विद्वान डॉ॰ ऋषभ चन्द्र 'फोजदार'' ने किया था।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के ग्राहकों को सन् 1995 में प्रथम भाग विशेषांक के रूप में प्रेषित किया गया था। अब उसी ग्रन्थ का दूसरा भाग इस वर्ष उसी प्रकार विशेषांक के रूप में सभी ग्राहकों को प्रेषित किया जा रहा है।

अतः मैं डाँ॰ ऋषभ चन्द फौजदार तथा उनके सहयोगी सभी विद्वानों को आज फिर धन्यवाद दे रहा हूँ जब कि हम ग्रंथाविल के दूसरे भाग को श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के ग्राहकों को सन् 1997 एवं सन् 1998 के रूप में प्रेषित करने की तैयारी कर रहे हैं। इस विशेषांक में कुल 514 पृष्ठ है।

श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के प्रधान सम्पादक डॉ॰ राजा राम जी जैन ने विद्तापूर्ण प्रधान सम्पादकीय लेख लिखा है, उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद दे रहा हूँ।

भवन में लगभग 6000 हस्तिलिखित ग्रंथ हैं। अभी 4000 ग्रंथों की विस्तृत सूची के लिए भारत सरकार का कोई ग्रान्ट प्राप्त नहीं हुआ है। फिर भी 1000 हस्तिलिखित ग्रंथो का तीसरा भाग मैंने भवन की ओर से तैयार कराकर डॉ॰ ऋषभ चन्द फौजदार के सम्पादन के लिए प्रेषित किया है। इस समय डां० ऋषभ चन्द जैन वैशाली शोध संस्थान में प्रोफेसर के पद पर कार्य कर रहे हैं। उनके सम्पादन का दायित्व पूरा होने पर मुद्रण का प्रोग्राम बनाऊँगा।

सूचनार्थं यह मंतव्य मुद्रित कर रहा हूँ।

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1998 सुबोध कुमार जैन मानद प्रबन्ध निदेशक श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

#### प्रधान सम्पादकीय

# पाण्डुलिपियाँ और उनका महत्व

प्रो० (डॉ०) राजाराम जैन

पाण्डुलिपियाँ किसी भी समाज एवं देश की अमूल्य घरोहर मानी गई हैं क्योंकि वे उनके पूर्वजों द्वारा अनुभूत ज्ञान-गरिमा की प्रतीक तथा स्वाध्याय, पठन-पाठन, मनन एवं चिन्तन की प्रवृत्ति, मानसिक एकाग्रता, आध्यात्मिक उत्थान, बौद्धिक-विकास, सांस्कृतिक उन्नयन, कलात्मक अभिरुचि और साहित्यक-प्रतिभा आदि की परिचायिका होती है।

यही नहीं, उनके आदि एवं अन्त में उपलब्ध प्रशस्तियों एवं पुष्पि-काओं में पूर्ववर्त्ती अथवा समकालोन इतिहास, संस्कृति, समाज एवं साहित्य आदि के उल्लेखों के कारण देश एवं समाज के विविध पक्षीय इतिहास के लेखन तथा राष्ट्रीय अखण्डता एवं भावात्मक एकता को ठोस बनाने में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इनके अतिरिक्त भी, उनमें लेखन-सामग्री में प्रयुक्त विविध उपकरण, लिपि की विविध रौलियाँ, चित्रकला तथा उनकी कलात्मक अभिरुचि की अभिन्यक्ति तथा उसके विकास की दृष्टि से भी उनका विशेष महत्त्व है।

जैन-परम्परा में जिनवाणी को सुरक्षित रखने का मूल आघार होने के कारण पाण्डुलिपियों को पूज्यता तथा विशेष आदर का भाव मिलता रहा है। उन्हें अपनी पवित्र धरोहर मानकर जैनों ने न केवल अपने तीन दैनिक आराध्यों-देव, शास्त्र एवं गुरु में से शास्त्रों को भी समान रूप से पूज्य मान-कर उनकी सुरक्षा के लिए प्रारम्भ से ही अनेक प्रयत्न किये हैं, अपितु जैनेतर अनेक दुर्लभ पाण्डुलिपियों को भी प्राणपण से सुरक्षित रखा है।

#### पाण्डुलिपि : उसकी आवश्यकता और प्रादुर्भाव :-

प्राकृतिक विषदाओं तथा अन्य सांसारिक जटिल समस्याओं के कारण उत्पन्न सानिसक अस्थिरता और उनसे विस्मृति के उत्पन्न होने की आशंकर से, कण्डे सरम्परा द्वारा प्राप्त ज्ञान को सुरक्षित रखने की आवश्यकता का जब अनुमव किया स्था तब उमे जिन सहज उपलब्ध उपकरणों पर लिपिबद्ध किया स्था, उसे 'पाण्डुलिपि' नाम से अभिहित किया गया। इस "पाण्डु-

लिपि" शब्द में दो पदों का मेल है-पाण्डु एवं लिपि, जिसका अर्थ है-पाण्डुर-वर्ण वाले आधार अथवा उपकरण पर, किसी विशेष अथवा किसी तरल पदार्थ से अथवा किसी विशेष कठोर नुकील उपकरण से, किन्हीं मान्य संकेतों के द्वारा अपेक्षित ज्ञान को चित्रित अथवा उत्कीर्णित कर उसे सुरक्षित रखना। इस प्रकार भारत में पाण्डुलिपियों का प्रादुर्भाव हुआ। गवेषकों के अनुसार इसका काल अनुमानतः ईसा पूर्व चतुर्थ सदी के आसपास माना जा सकता है।

#### पाण्डुलिपियों के उपकरण:--

यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पाण्डु अथवा पाण्डुर वाला प्रारम्भिक आधार क्या रहा होगा? इस विषय पर क्या-क्या गवेषणा हुई, उनको जानकारो तो नहीं मिल सकी, किन्तु हमारी दृष्टि से पाडुलिपि तैयार करने का प्रारम्भिक भारतीय आधार पाषाण था।

तत्पश्चात विकास की यह परम्परा चलती रही है और (2) भोजपत्र (3) ताड़पत्र (4) कागज (5) कपड़ा (6) काष्ठ-पट्टिका (7) चमड़ा (8) ईंट (9) सोना (10) चाँदी (11) तांबा (12) पीतल (13) कांसा और (14) लोहा तथा उनके मिश्रण से निर्मित उपकरण आदि हमारे आगम शास्त्रों तथा ज्ञान-विज्ञान तथा इतिहास, संस्कृति एवं सामाजिक-विचार को लिपिबद्ध करने के साधन बनें।

उक्त सामग्री को देखकर यह भ्रम होना स्वाभाविक है कि पत्थरों तथा धातुओं पर जिखित सामग्री को पाण्डुलिपि कैसे माना जाय? इसके समाधान में केवल यही कहा जा सकता है कि तत्कालीन सहज उपलब्ध प्राकृतिक पाण्डुर-वर्ण अथवा उसके समकक्ष वर्ण वाली वस्तु पर अंकित आधार-सामग्री को पाण्डुलिपि कहा गया। भने ही वह पत्थर की हो अथवा पेड़ों की छाल की। उस समय उसका पाण्डुलिपि के रूप में जो नाम-करण हुआ, वह ऐसा रूढ़ होता चला गया कि उक्त सभो तो पाण्डुलिपि कहलाती हो रहीं, वर्तमान में प्रेस में छाने के लिए दी जाने वाली प्रेस-सामग्री भी पाण्डुलिपि कही जाने लगी।

जैन-परम्परा में लेखन-कार्य हेतु पूर्वोक्त आधारभूत सामित्र यों में से चमड़ा, ईट, काँसा एवं लोहा छोड़कर अल्पाधिक मात्रा में प्रायः उक्त समस्त सामित्रयों का उपयोग किया गया है। इन उक्तरणों के उल्लेख प्राचीन जैन-ग्रन्थों में एक साथ एक ही स्थान पर नहीं मिलते, बल्कि प्रासंगिक अथवा अनुषांगिक रूप से यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। उनमें इन तथ्यों की स्थिति लग-

भग वैसी ही है, जिस प्रकार समुद्रतल में छिपे मोतियों अथवा नदी-तटों की बालू में बिखरे हुए सर्धायबीजों की। फिर भी, इन सामग्रियों की खोज जितनी किठन है, उतनी ही रोचक एवं मनोरंजक भी। इस दिशा में अभी तक क्रमबद्ध खोजपूर्ण विस्तृत कार्य नहीं हो सका है, जब कि जैन पाण्डु-लिपियों के गौरवशाली महत्व को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है।

यह परम गौरव का विषय है कि पाण्डुर-वर्ण के पाषाण पर उत्नीणं एक जैन शिलालेख भारत की सम्भवतः सर्वप्रथम लिखित पाण्डुलिपि है, जो भ॰ महावीर के परिनिवाण के ८४ वर्ष बाद अर्थात् वीर निर्वाण संवत् ८४ (ई० पू० ४४३) में उन्हीं की स्मृति में बाह्मी-लिपि में उत्कीणं कराया गया था।

इस प्रकार आधार सामग्री, लिपि-शैली एवं वीर निर्वाण संवत् के स्पष्ट उल्लेख होने के कारण वह लेख न केवल जैन समाज के लिए गौरव का विषय है, अपितु देश के लिए एक ऐतिहासिक महत्व का दस्तावेज भी। यह शिलालेख अजमेर के पास बडली-ग्राम में मिला है। काल के प्रभाव से वह कुछ क्षतिग्रस्त हो गया है। फिर भी, महामान्य पुरातत्ववेत्ता तथा प्राच्य लिपि-विधा के महापण्डित पं० गौरीशंकर हिराचन्द्र ओझा ने सावधानी पूर्वक पढकर उसे भारत का प्राचीनतम अभिलेख बतलाया है।

ईसा-पूर्व दूसरी सदी के हाथीगुम्फा-शिलालेख में चर्चा आती है कि सम्राट खारवेल १ वर्ष की आयु में युवराज पद प्राप्त करने के पूर्व लेख, रूप. गणना एवं व्यवहार-विधि में विशारद (पण्डित) हो गया था। इससे यह विदित होता है कि लेखन की परम्परा खारवेल के समय तक श्रमण संस्कृति में पर्याप्त विकसित हो चुकी थी।

#### ई॰ पू० की सदियों में कागज एवं भोजपत्र के प्रयोग :-

पाण्डुलिपि तैयार करने सम्बन्धी अन्य उपकरणों में भोजपत्र, ताइप एवं कागज का महत्वपूर्ण स्थान है।

भारत में कागज के निर्माण की सर्वप्रथम सूचना यूनानी-स्रोतों से मिलती है । सम्राट सिकन्दर के सेनापति निआर्कस (ई० पू• 320) ने लिखा है कि 'भारतीय प्रजा रुई तथा चिथड़ों को कूटपीस कर कागज बनाती

१. 'वीराय भाग्वत चत्रासिति वसं प्राचीन शिलालेख संग्रह पृ• ४

है।" मगध में सीरिया के राजदूत के रूप में आए मेगास्थनीज (ईसा पूर्व 305) ने भी उसका समर्थन किया है। इससे विदित होता है कि ईसा-पूर्व की तीसरी-चौथी सदी में भारत में कागज का आविष्कार हो गया था और उसी समय कागज तथा भोजपत्र दोनों का ही प्रयोग होने लगा था। किन्तु उसका उपयोग किसने किस प्रकार किया, इसकी जानकारी उपलब्ध नहीं होती। आज ई० पू० की कागज अथवा भोजपत्र की कोई, पाण्डुलिपि उपलब्ध भी नहीं है। इसका कारण सम्भवतः यही रहा होगा कि वे दोनों ही सड़ने गलने वाले पदार्थ थे, अतः बहुत सम्भव है कि वे नब्ट हो चुकी हों?

ईस्वी सन् के प्रारम्भिक वर्षों में भी सम्भवतः भोजपत्र पर पाण्डुलिपियां लिखी जाती रहीं। उन पर लिखित बौद्धों एवं वैदिकों की कुछ
प्राचीन पाण्डुलिपियां भी उपलब्ध होती हैं, किन्तु जैनियों की नहीं।
हिमवन्त-थेरावली के एक उल्लेख के अनुसार सम्राट खारवेल के पास भोजपत्र पर लिखित एक जैन पोथी थी, यद्यपि मुनि पुण्यविजय जी ने उक्त
उल्लेख को केवल कल्पनाधारित ही बतलाया है।

भोजपत्र की कुछ पाण्डुलिपियाँ पूना, लाहोर, कलकत्ता. तिब्बत, लन्दन, ऑक्सफोर्ड. वियेना एवं बलिन के ग्रन्थगारों में सुरक्षित हैं, किन्तु प्रो० एस० एम० कान्ने के अनुसार वे 15 वीं सदी ईस्वी के पूर्व की नहीं है।

#### ताड्पत्र का प्रयोग

प्राचीन काल में पाण्डुलिपियों के लिए ताड़ पत्र सबसे अधिक सुविधा जनक माना गया। क्यों कि एक तो वह टिकाऊ होता था, दूसरे उसकी लम्बाई एवं चौड़ाई पर्याप्त होती थी। पत्नों की दोनों नर्सों के भाग को आवश्यकतानुसार काट कर उन्हें पानी में भिगों दिया जाता था। फिर उन्हें सुखाकर कौड़ी, बाँस या किसी चिकने पत्थर से रगड़ कर उसे चिकना बना दिया जाता था, तब किसी नुकीले उपकरण से उस पर खोदकर लिखते थे। काश्मीर तथा पंजाब को छोड़ कर सारे भारत में इसका प्रयोग किया जाता था। इस प्रक्रिया में काष्ठपट्टिका पर अक्षर खोदकर स्याही लिपे हुए ताड़ पत्र पर उन्हें छाप दिया जाता था। बह पद्धति उत्तर भारत में प्रचलित थी और लेखनीं से ताड़ पत्र पर पहले अक्षर उकेर कर फिर उनमें काला रंग भर दिया जाता था। यह प्रक्रिया दक्षिण भारत में प्रचलित थीं।

चीनी यात्री हयूनत्सांग के अनुसार बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद जब प्रथम संगीति हुई, तब त्रिपिटिक का लेखन ताड़–पत्रों पर ही किया

ततो लेख रूप गणना बवहार विधि विसार देन सबिजाबाद क्षालेन नववसानि योवराज पसाति (पंक्ति सं• 2)

जाता था। किन्तु वे मूल पाण्डुलिपियाँ अब उपलब्ध नहीं।

वर्तमान में भारत में जो भी ताड़पत्रीय पाण्डुलिपियां मिलती हैं, वे 10 वी 11 सदी के पूर्व की नहीं थे। इसके पूर्व की पाण्डुलिपियां या तो नष्ट हो गई, अथवा बहुत सम्भव है कि वे विदेशों में ले जाई गई होगी।

दशवैकालिक (हारिभद्रीय) टीका में ताड़पत्रीय पाण्डुलिपिबों की रोचक जानकारी दी गई है। उसमें उनका 5 प्रकार के आकृतिसूचक वर्गीकरण किया गया है।

गंडो-जो चीड़ाई, लम्बाई एवं मोटाई में समान होती थीं।

कच्छपी—जो कछुवे के रुमान मध्य में वित्तीर्ण तथा अन्त में पतली होती थी।

मुब्टि—जो लम्बाई में चार अंगुल अथवा वृत्ताकार होती थी अथवा। चार अंगुल लम्बो तथा चार कोनों वाली होती थी।

संपुष्टि—जो दो पृटकों में बन्धी हुई होती थी। और, सृपाटिका/सम्पुटक जो पतली किन्तु विस्तृत होती थी। इसक आकार सम्भवतः चोंच के समान होता था।

ताड़पत्र की इन पाण्डुलिपियों को 'पोत्थ्यं' भो कहा गया है — जिसका अर्थ है पोथी अथवा पुस्तक अथवा धार्मिक प्रन्थ।

राजप्रानीय सूत्र में ताड़पत्रीय पाण्डुलिपि की संरचना के विषय में सुन्दर वर्णन मिलता है। उसके अनुसार सूर्याभदेव के ध्यवसाय-सभा-भवन में एक ऐसी पाण्डुलिपि सुरक्षित थी, जिसके आगे पीछे के आवरण पृष्ठ (पुर्ठे) रिष्टरतन से जिटत थे, जिसकी किम्बिका (ऊपर तथा नीचे को ओर लगी लकड़ी की पट्टी) रिष्ट नामक रत्नों से जिटत थी, जो तप्तस्वणं से बने डोरे, नाना मिण जिटत ग्रंथी, वै-ढडूर्य-मिण द्वारा निर्मित लिप्यासन अर्थात् दवात, रिष्ट नामक रत्न द्वारा निर्मित उसका ढक्कन, शुद्ध स्वर्ण निर्मित श्रृष्टला रिष्टरत्न द्वारा निर्मित स्याही, वज्रयत्न द्वारा निर्मित लेखनी और रिष्टरत्नमय अक्षरों द्वारा लिखित धर्मलेख से युक्त थी। इस वर्णन में अतिशयोक्ति प्रतीत नहीं होती। क्योंकि वर्तमान में इसी प्रकार की रत्नजिटत कुछ कर्मलीय अमूल्य जन पाण्डुलिपियाँ जैन शास्त्र—भाण्डारों में एवं जैनेतर पाण्डुलिपियाँ जैनतर शास्त्र भण्डारों में सुरक्षित हैं।

ताड़पत्र की प्रतियां आकृति में छोटी बड़ी सभी प्रकार की मिलती हैं। उसकी सबसे लम्बी प्रति दिगम्बराचार्य प्रभाजन्द्रकृत प्रमेयकमलमार्तण्ड की है, जो जैन न्याय का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ माना गया है। वह 37 इंच लम्बी है, जो पाटन (गुजरात) के जैन स्वेताम्बर शास्त्र भण्डार में सुरक्षित है। कागज को पाण्डलिपियां

कुमारपाल प्रबन्ध (जिनमण्डन मणि वि० सं० 14°2) में एक उल्लेख मिलता है कि एकबार चालुक्यनरेश कुमारपाल जब अपने जैन ज्ञान भण्डार में गया तो उसने देखा कि उसके लिपिकार कागज के पत्रों पर पाण्डुलिपियाँ तैयार कर रहे हैं। तब उसने पूछा कि कागज पर लेखनकायं क्यों किया जा रहा है तो लिपिकारों ने उसका कारण ताड़पत्रों की कमी बतलाया। इसका तात्पर्य यह हुआ कि १२ वीं – १३ वीं सदी में ताड़पत्रों की उपलब्धि में कठिनाई होने लगी थी। अतः पाण्डुलिपियाँ कागज पर लिखी जानें लगी थीं। कागज की ऐसी पाण्डुलिपियाँ उत्तर भारत में प्रचुर मात्रा में मिलती है।

पाण्डुलिपियों के अध्यवन में मुझे भी पिछले लगभग ४० वर्षों का अनुभव है। उनकी खोज, प्रतिलिपिकार्य अध्ययन सम्पादन अनुवाद एवं समीक्षाकार्य घोर घैर्य-साध्य कष्ट-साध्य एवं व्यय-साध्य होने के साथ साथ गुफागृह में बन्द रहकर ही एकाग्रमन सम्पादनादि कार्य करने की प्ररेणा देता है। यह भी अनुभव किया कि मध्यकालीन प्राचीन पाण्डुलिपियों के न्यायपूर्ण अध्ययन के लिए विभिन्न सदियों के अनुसा—

१ (क) एकदा प्रातर्गु रूनू सर्वसाधन विन्दित्वा लेखक्वाला विलोक्नाय गतः । लेखकः । कागदपत्राणि लिखन्तो दृष्टः । ततः गुरूपाश्वे पृच्छा । गुराभिरूच-श्रीचौलुक्यदेव सम्प्रति श्रीत। उपत्राणां त्रुटिरस्ति ज्ञानकोशे अतः कागदपत्रेषु ग्रन्थलेखनभिति ।

निध-नैष्ट्य का ज्ञान तो आवश्यक है ही, प्राध्य भारतीय संस्कृति, तत्कालीन राजनैतिक एवं सामाजिक-इतिहास, लोकसंस्कृति एवं भाषाविज्ञान का समुचित ज्ञान भी अत्यआवश्यक हं। क्योंकि मध्यकालीन विशेष रूप से अपभ्रंग-पाण्डुलिपियों के आदि एवं अन्त में विस्तृत प्रशास्तियों का अंकन किया गया है जिनमें स्वात्म परिचय के साथ-साथ कियों ने पूर्ववर्ती एवं समकालीन साहित्यिक राजनैतिक, सामाजिक एवं लोकजीवन सम्बन्धी सन्दर्भ सामग्री भी अंकित की है, जिसके-तुलनात्मक अध्ययन से लुप्त, विलुप्त, अनुपलव्ध अनेक ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी मिलती है। राष्ट्रकूट, गंग तथा चाल्वयासम्माटों एवं अन्य तोमर, चौहान एवं मुस्लिम नरेशों के कार्य-कलापों एवं उनके समय को अनेक घटनाओं

पर प्रकाश पड़ता है, जो वर्तमानकालीन इतिहास-ग्रन्थों में अमुपलब्ध है। इसकी विस्तृत चर्ची मैंने अपने शोध-प्रबन्ध तथा समय-समय पर लिखित अन्य स्वतन्त्र निबन्धों में की है। जिनकी साहित्य-जगत में प्रशंसा भी हुई है।

महाकवि रइधू की प्रशस्तियों में उल्लिखित उनकी स्वर रचित रचनाओं की सूची में से कुछ पाण्डुलिपियों अभी तक अनुपलव्ध हैं। उनकी सिरिबालचरित को प्राचीन एवं प्रामाणित पाण्डुलिपि न मिलने से उनके लिए में म्रत्यन्त व्यग्र एवं चिन्तित थाा किन्तु इसे सुखद संयोग ही कहा जायेगा कि कुछ समय पूर्व मगध विश्वविद्यालय के हमारे एक प्रोफेसर-मित्र जब पेरिस (फ्रांस) विश्वविद्यालय में एक भाषणमाला प्रस्तृत करने गए तब वहां की एक प्रोफेसर—महिला ने उनसे मेरा पता पूछा। यह था कि उस विद्षी महिला ने महाकवि रइध् कृत 'अणयभिउकहा' पर मेरा एक निबन्ध कहीं से उपलब्ध कर सन् 1964 के आसवास पढ़ा था। उसमे प्रभावित होकर वे मेरी खोज में थीं। क्योंकि महाकवि रइध्कृत 'सिरिबालचरिक' को एक पाण्डुलिपि उन्हें पेरिस के किसी शास्त्रागार में उपलब्ध हुई थी और वह उसे मेरे लिए भेंट स्वरूथ भेजना चाहती थी। मेरे उक्त मित्र के द्वारा उक्त पाण्डुलिपि को जीरोक्स कापी के साथ उन्होंने मेरे लिए अत्यन्त भावुक-पत्र भेजकर आरा नगर (बिहार) में आकर मिलने की इच्छाभी व्यक्त की थी। इस प्रसंगने मुझे यह सोचने के लिए विवश कर दिया कि रइधू साहित्य की तथा अन्य अनेक लेखकों को भारत में अनुपलब्ध कुछ पाण्डलिवियाँ भी विदेश में कही सुरक्षित हो सकती है।

अपन्न श के महाकि घवन (10 याँ सदी) जैसे अनेक कियों ने अपनी-अपनी ग्रन्थ पशस्तियों में पूर्ववर्ती अनेक ऐसे दजनों ग्रन्थों एवं ग्रंथ-कारों के उत्लेख किए हैं जिनमें से वतंमान में कुछ अज्ञात विस्मृत अथवा अनुपलब्ध हैं। असम्भव नहीं कि उनमें से भी अनेक ग्रन्थ विदेश के शास्त्र भण्डारों में अज्ञात वनवास भोगते हुए अपने उद्धार की प्रतीक्षा कर रहे हों? कुछ समय पूर्व मैंने रूस के शास्त्र-भण्डारों में सुरिश्तत कुन्द-कुन्द शिवार्या पूज्यपाद, सोमसेन आदि एव अन्य जैनाचार्य-लेखकों की सिक्षप्त ग्रन्थ सूची 'प्राकृत-विधा" (अंक ७/५) में प्रकाशित की थी साथ ही पंचास्तिकाय मोम्मटसार—(कर्मकाण्ड) के फारसी -अनुवाद एवं फारसी-भाषा में लिखित 'इषभस्तोत्र" आदि की भी चर्चा की थी। इसी प्रकार "जैन-पंचरवाण" (प्राकृत जैनेत्तर 'पंचतन्त्र" संस्कृत कथानक कम्से गया, आदि पर भी चर्चा की थी तथा बताया था कि मैगास्थनीज, फाहियान, हयूनत्सांग, अलवेस्नी तथा अन्य अनेक विदेशी-यात्री भारत आकर जैनाजेन अनेक

पाण्डूलिपियाँ अपने साथ लेते गए थे। दुर्भाग्य से उनका विवरण आज तक तैयार नहीं हो सका है। मैंने एक बार यह भो लिखा था कि आचार्य जिनसेन के परम भक्त एवं शिष्य राष्ट्रकूट नरेश अमोधवर्ष द्वारा विरचित प्रश्नोत्तर रत्नात्नमालिका' नामको संस्कृत जैन रचना तिब्बत के एक शास्त्र भण्डार में उपलब्ध हुई थी, जो भाषा, भाव, शैली की दृष्टि से एक बेजोड़ रचना सिद्ध हुई है। यह भो लिख चुका हूँ कि बट्टकेरकृत मूलाचार की प्राचीनतम प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति जमंनी के प्रोफेसर अल्सडाफं के पास सुरक्षित है। डा० अल्डाफं डा० होरालाल जो एवं प्रो० उपाध्ये जी घनिष्ट मित्र तथा आचार्यं जी विद्यादन्दजी के प्रशंशक एवं परमभक्त थे। अभी हाल में हो डा० आल्सडाफं का स्वर्गवास हुआ है। वे उसका सम्पादन कर रहे थे।

ताल्पर्य है कि सहस्त्रों जैन पाण्डुलिपिया विदेशों के कोने-कोने में पहुँचकर वहाँ सुरक्षित अथवा असुरक्षित रूप में पड़ी हुई हैं। हमें निरन्तर यह विचार करना चाहिए कि वे हमारे आचार्यों के समुन्तत-चिन्तन, प्रौढ़-लेखन सशक्त-भाषा, विचार एवं सहज-शैली के प्रकाशक एवं समकालीन लोक भाषाओं को साहित्यक सामर्थ्य प्रदान करने वाले अनुपम उदाहरण हैं। हमारी श्रवण संस्कृति के चिरन्तन विकास एवं विश्व साहित्य की समृद्धि के वे स्विणम अध्याय हैं। उन्हें अपनी बहुमूल्य घरोहर समझकर इस समय उनकी उपलब्धि एवं जीणोंद्धार हेतु सामाजिक-प्रयत्न अतीव आवश्यक हैं।

आरा स्थित जैन सिद्धान्त भवन जैसी कि (इस सदी के प्रारम्भिक काल से) भारत विख्यात आरा (बिहार) स्थित जैन सिद्धान्तभवन के बहुमूल्य प्राच्य शास्त्र भण्डार के विषय में देश-ति हैंश में चर्चाएँ होती रही हैं, उसकी ताड़पत्रोय एवं कर्गलीय (सचित्र एवं सामान्य) पाण्डुलिपियों का सदुपयोग शोधार्थियों ने आवश्यकतानुसार बहुत मात्रा में किया है। इसके लिए उन्हें सहस्त्रों मीलों की यात्रा कर आरा आने तथा दीर्घ प्रवास करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। अतः उनकी सुविधा के लिए जैन सिद्धान्त भवन की प्रबंध समितिने भवन में सुरक्षित पाण्डुलिपियों का (Discriptive manus cripts of old maniscripts) के प्रकाशन का निर्णय लिया। उसे निर्णय श्रृंखला का प्रथम भाग प्रकाशित होकर पाठकों के हाथों में पहुँच चूका है। पूर्व में यह भी निर्णय लिया गया था कि इसे भवन के शोध-पत्र-जैन सिद्धान्त भास्कर and Jain Antiquory) के विशेषांक के रूप में अपने सामान्य ग्राहकों एवं पाठकों को भेंट किया जाय। इसे जैं सिं भ भ And Jaina Antiquory का विशेषांक इसलिए मनाया

में जा रहा है कि उसके माध्यम से वह अधिकाधिक जिज्ञासु पाठकों के हाथों जा सके। क्यों कि समस्त सामग्री के दो खण्डों का लागत मूल्य ही लगभग 500/- से अधिक आ रहा है, इस कारण उसे खरीद पाना प्रत्येक पाठक को सम्भव भी न हो पाता।

प्रस्तुत ग्रंश में संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश एवं हिन्दी की 996 पाण्डु लिपियों को सूची प्रस्तुत को जा रही है। शोधार्थियों की दृष्टि से इसमें आदि एव अन्त की प्रशस्तियों तथा पुष्टिकाओं के साथ साथ अन्य आवश्यक सूचनाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिनसे पाण्डुलिपियों के लेखक का परिचय, लिपिकारों का परचय, उनका प्रतिलिपि काल तथा प्रतिलिपिस्थल का तो पता चलता ही है, साथ ही ग्रन्थकार के इतिवृत्त के समकालीन अनेंक घटनाओं की भी सूचना मिलतो है, जो इतिहास के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है।

प्रस्तुत अंश में प्राच्य भारतीय विद्या के श्रृंगार तथा जैन-विद्या के गौरव प्रत्य के रूप में प्रसिद्ध प्रत्थों में जिनसेनाचार्य कृत आदिपुराण (ऋषभ चिरत) का मूल हिन्दी पद्यानुवाद उसकी वचिनका तथा टिप्पणी विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसकी मूल प्रति को प्रतिलिपि वि॰ सं॰ 1773 में पाटलिपुत्र में की गई थी, इससे विदित होता है कि उस समय पाटलीपुत्र का जैन समाज जिनवाणी के उद्धार में विशेष रुचि रखता था तथा वह उत्तर मध्य काल तक जैन-विद्या का केन्द्र भी रहा था। क्रमांक 13 की पाण्डुलिपि आचार्य रुननिन्द कृत भद्रबाहुचरित्र का विशेष महत्त्व इसलिए है कि उसमें जैन-संघ के दि॰ एवं श्वेताम्बर सम्प्रदाय में विभक्त होने की ऐतिहासिक सूचना अंकित है।

जेन सिद्धान्त भवन ग्रंथागार में सुरक्षित अप्रश्नंश कृतियों में महाकित रइधू कृत हरिवंशपुराण (क्रमांक 44) तथा यशः कीर्ति कृत हरिवंशपुराण क्रमांक 45) मेधेवरचरित रइधू, (क्रमांक 64) पार्श्वपुराण रइधू, (क्रमांक 88) जयमित्रहल्लकृत बइडमाणचरिउ (क्रमांक 135, 136) सुकोसलचरिउ रइधू, (क्रमांक 441) (उपदेशरत्नमाला सुबुद्ध पंडित (क्रमांक 453) आदि पाण्डुलिपियां शोधार्थियों की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण हैं।

इसी प्रकार शौरशेनी प्राकृत के भगवती-अराधना ( शिवार्य क्रमांक 177 भावसंग्रह (श्रुतमुनि, क्रमांक 181) चौबीस ठाणा (पाण्डे भोवाल, क्रमांक 201) चौबीस गुणगाथा (क्रमांक 202,-203) चउसरण पइण्णं (क्रमांक 205) दर्शनसार (देवसेन, क्रमांक 209), द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्र सि॰ च॰ क्रमांक 213,-224), धर्मरसायण (क्रमांक 235) गोम्मटसार जीव काण्ड नेमिचन्द्र सि॰च॰ क्रमांक (242-244) गोमटसार कर्म काण्ड ने॰ चं० सि॰ च॰

्रिमांक 245-249) कर्मप्रकृति ग्रन्थ (नेमिचन्द्र सिद्धोन्तिदेख, कमांक 273) कर्म-विपाक (आनन्दसूरि, क्रमांक 273), कार्तिकेथानुप्रक्षा (स्वामिकुमार कमांक 276) लोकवर्णन (अपूर्ण, कमांक 282),
मूलाचार (कुन्दकुन्द्र, कमांक 292) पंचसंग्रह (रत्नकीति क्रमांक 305)
प्रतिक्रमणसूत्र (क्रमांक 316) सबोध-पंचासिका (क्रमांक 337) सत्वित्र भंगी
(रंगनाथ मंददारक, क्रमांक 361) सिद्धान्तसार (जिनेन्द्रदेवाचार्य, क्रमांक 374), वसुनन्दिश्रावकाचार (क्रमांक 443), व्रह्महेनच्द्र कमांक 384)
तत्वसार (क्रमांक, 393) त्रेलोक्य प्रजृति प्रशस्ति (पंजिनेन्द्रकेमोंक 384)
तत्वसार (क्रमांक, 393) त्रेलोक्य प्रजृति प्रशस्ति (पंजिनेन्द्रकेमोंक 384)
विलोकसार (नेमिचन्द्र, क्रमांक 424) प्राकृत-दयान्तरण द्विज अध्योय
(क्रमांक 488)। आदि।

खनत पाण्डुलिपियाँ शौरसेनी प्राकृत-साहित्य तथा समकालीन भाषा लिपि के इतिहास-लेखन की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखती हैं।

पूर्व मध्यकालोन (अर्थात् रोतिकालोन) हिन्दी में महाकित भूद प्हांस हारा लिखित पार्वपुराण की दो प्रतियां (क्रमांक 91 तथा 92) भवन में सुरक्षित है। हिन्दी भाषा एवं सहहित्य के महारथी विद्वान मं हजारी प्रसाद हिन्दी भाषा का उत्कर्द कोटि का महाकाव्य माना है। पुर्वाचार्यों हारा निर्धारित महाकाव्य के सभी लक्षण इसमें विद्यमान है। इसका कथानक पौराणिक होते हुए भी वह अत्यन्त रोचक ममस्पर्धी एवं आत्मपोषक है। इस प्रथ की गहिमा एवं लोकप्रियता का इसीसे पता चलता है कि इसका प्रतिलिप इवेताम्बर मातानुयायी ऋषि हंसराज जी के शिष्य रामसुखदास ने वि सं 1856 की कार्तिक सुदी नौवी बुधवार के दिन शाहजहानाबीद (दिल्ली) में वैठकर की थी। यही प्रतिलिप जे सि भ में सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त हिन्दों संस्कृत प्राकृत एवं अपभूषा की विविध विषयक अनेक पाण्डुलिपियाँ यहाँ सुरक्षित हैं, जिनका विवरण प्रस्तुत ग्रन्थ सुची में अकित किया गया है।

प्राचीन पाण्डुलिपियों को विवरणामक एवं स्वीकृत सूची तथार करना स्वयं में एक कठिन कार्य है फिर भी डॉ॰ ऋषमचन्द्र जैन फीजदार, श्री जिनेश जैन एवं अन्य साहित्य सेवियों ने जिस एकार्यता से इसे तैयार किया है वह सराहनीय है 1 जैन सिद्धान्त भवन के संरक्षक संचालक श्री बाव सुकीय कुमार जैन का उत्साह भी अत्यन्त सराहनीय है क्योंकि उनकी प्ररणा के बिना उक्त बहु मृत्य कार्य सम्भव ने हीता। पूर्ण विश्वास है कि शोधार्थी एवं स्वाध्यायार्थगण इसका पूर्ण सदुपयोग कर तथा अपने सुचिन्तित सुझाव कर हमें उपकृत करेंगे।

#### Foreword

भझ

Bihar has played a great role in the history of Jainism, Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc. Part second which is named as Parisista (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism.

February 29, 1988.
Vikas Bhavan, Patna

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

## प्रकाशकीय नम् निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पंचवर्षीय योजना के रूप में इसके छ: भाग प्रकाशित करने में सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जीन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' का यह दूसरा भाग जैन सिद्धांत भवन, आरा के ग्रन्थागार में संग्रहीत संरहत, प्राष्ट्रत, अपभ्रं श, कन्नड़ एवं हिन्दी के हम्तिलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। इसमें लगभग एक हजार ग्रन्थों का विवरण है। हर भाग में इसका विभाजन सो खण्डों में किया गया है। पहले खण्ड में अंग्रेजी (रोमन) में ग्यारह शीर्षकों द्वारा पांडुलिपियों के आकार, पृष्ठ संख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रंथागार में लगभग छह हजार हस्तिलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रंथों का संग्रह है। इनमें अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित हैं। अप्रकाशित ग्रन्थों को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान में जैन सिद्धांत भवन, आरा में उपलब्ध 'राम ग्रणोरसायन रास (सचित्र जैन रामाग्रण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठकों के हाथ में होगा। इसमें २५३ दुर्लभ चित्र हैं।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने में काफी किठ-नाइयों का सामना करना पड़ा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी संयोग जुड़ते गए जिससे मैं यह ऐतिहासिक एवं महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य में भी अपने सभी सहयोगियों से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एवं रामयशोरसायन रास के प्रवाशन के सबसे बड़े प्रेरणा-श्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एवं मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अपने कार्यंकर्त्ताओं की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य में लगे हैं।

बिहार सरकार एवं भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एवं आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय विहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंगल भाषा में लिखी है। बिहार स्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अस्तर साहव ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आमार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम ओर लगन ये ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोधा-कारी के रूप में भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डों के संकलन के संपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा में एक हजार ग्रंथों की ग्यारह कालमों में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं में परिषिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शक्रुष्टन प्रसाद सिन्हा, बीo ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद बर्मा ने पुस्तक के अत में 'वर्ण-कम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थों की कम सख्या का संकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगों से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से अभारी हूँ।

अजय कुमार जैन

देवाश्रम,

आरा

श्री देवकुमार जैन ओग्गिस्टल लाईकोरी

#### **ABBREVIATION**

V. S. - Vikrama Samvata

D. - Devanāgarí

Stk. - Sanskrit

Pkt. - Prakrit

Apb, — Apabhramsa

C. — Complete

Inc. — Incomplete

Catg. of Skt. Ms. - Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg. by Lewis Rice. M. R. A. S.,
Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg. of Skt. & Pkt Ms - Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar. by. Rai Bahadur Hiralal, B.A. Nagpur, 1926.

- (१) आ सूर आमेर सूची डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।
- (२) जि०र० को० जिनरत्नकोय डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना ।
- (३) जै । प्र । प्र । जै । प्र प्रशस्त संग्रह—पं । जुगलिकशोर मुख्तार।
- (४) दि० जि ग्र० र० दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
- (५) प्र० जै॰ सा० प्रकाशित जैन साहित्य--- वा० पन्नालाल अग्रवाल।
- (६) प्र० सं० प्रशस्ति संग्रह —डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल ।
- (७) भ सं भट्टारक सम्प्रदाय विद्याधर जोहरापुरकर ।
- (5) रा० सू० राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समपंग

देवाश्रम परिवार में
पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,
राजिंष बाबू देवकुमार जी,
ब्र० पं॰ चन्दा माँश्री,
और
बाबू निमंलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी
यशस्वी तथा गुणीजन हुए हैं।
उन सभी की पावन
स्मृति को यह
श्री जंन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली
सादर समिंपत है।
ऐवाश्रम श्रारा —सुबोधकुमार जंन
१४-३-५0

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

#### INTRODUCTION ( VOL—I, )

I have great pleasure in introducing Sri Jaina Sidifa a Bhavan Granthavali—a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhanta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as a and b. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India. The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator. 6. Material, 7 Script and language, 8. Size and number of folio, tines per page and letters per line. 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars. These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of Drvyasam raha have been recorded (S. Nos. 213 to 224). It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhanti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators. Each Ms. preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number. Its justification could be observed in the details provided.

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in Devanāgarī Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios. Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi verson in poetry by some unknown

writer and is incomplete. Two MSS (218, 222) are with exposition in Bhāṣā (Hindi) prose and poerry by Dyānatarāya and three are in Bhāṣā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose. Ms No. 229 is a Bhāṣā vacanikā by Jayacanda. These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads:

1.	Purāņa, Carita, Kathā	1 to 155
2.	Dharma, Darsana, Ācāra	156 to 453
3.	Nyāyaśāstra	454 to 480
4.	Vyākaraņa	481 to 492
5.	Kośa	493 to 501
6.	Rasa. chanda, Alankāra & Kāvya	502 to 531
7.	Jyotişa	532 to 550
8.	Mantra. Karmakāņda	551 to 588
9.	Ayurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11.	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order. The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as Parisista or Appendix. This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in Devanagari script. The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour-

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below:—

- (1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as Navaratnaparikṣā (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a Ratna śāstra by Buddhabhatt. Similarly, Nilivākyāmṛlam (511.512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). Trepanakriyākośa (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under Ācāraśāstra. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.
- (2) Some of the MSS of Aptamimatisa contain Aptamimatisalina-kṛti of Vidyananda (455) Aptamimatisavṛtti of Vasunandi (456) and Aptamimātisabhāṣya of Akalanka (457). These three famous commentaries are popularly known as Aṣṭasahaśn. Aṣṭaśati and Devagamavṛt i. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.
- (3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given. These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important. If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in Kannada scripts. When these are rendered into Devanāgari scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373).

- (4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in Kannada scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.
- 5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana. Arrah itself. MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.
- (6) The study of colophon reveals many more inportant references of Samgh s, Ganas, Gacchas, Bhattarakas, and presentation of Sastras by pious men and women to ascetics, copying the Ms for personal study—sva hyaya, and getting the work prepared for his son or relative etc. Such references denote the continuity of religious practice of Sastratana which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,
- (7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout śrāvakas and desciples of Bhatṭārakas or other ascetics.
- (8) In most of the MSS counting of alphabets, words, ślokas, or gãthās have been given as granthaparimāṇa at the end of the MSS. This reference is very important from the point of the extent of the Text. Many times the author himself indica es the granthaparimāṇa. Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each). The Āptamimāmsā Bhāşya of Akalanka is more popularly known as Aṣṭasahaśri. Both works are the commentaries on the Āptamimāmṣā (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyananda himself says about his work:—

"Śrotavy - aṣṭasahasrī śrutaih kimanyaih sahasrasamkhyānaih." Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvīra were reduced to writing counting was done in the form of Padas. For instance the Āyāramga is said to contain eighteen thousand Padas.

" āyāramgamatthāraha—pada - sahassehi"

(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others. There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the Jaina Siddhania Bhavana Granthavali is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz. 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal Jaina Siddhanta Bhaskara and Jaina Antiquary. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India. However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable. The earliest Sauraseni Prakrit Siddhanta Sastra Satkhandagama

with its famous commentaries Davalā, Jayadavalā, and Mahādavlā was copied from the only surviving palm leaf Ms in old Kannada scripts, preserved in the Siddhānta Başadi of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Srí Syādvāda Mahāvidyālaya. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of Biblothica Jainica—The Sacred Books of the Jainas began with the publication of Dravya Samgiaha as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like Samayasāra, Gommatasāra, Ātmānuśāsana and Purusārtha Siddhyupāya were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. Jaina Siddhānta Bhāskara and Jaina Antiquary, a bilingual Research Journal was published with the objective o bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in Kannada scripts or rendered into Devanāgarí on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a Sāstra-Bhandāra, because the Jina, Jinavāni and Jinaguru were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the Sastra-Bhandaras. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D.) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and Sastra started and much interior places were choosen for the purpose. A new sect of the Bhattarakas and Caityavasis emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the Sastra Bhandaras. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different Sastra Bhandaras. One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West. And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhiamsa works were rendered into Kannada. Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shantamma, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of Santipurana and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz. 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessibility. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the Sildhānta Sāstra Satkhan lāgama is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published. Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, Jinaralnakośa by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the Kanndaprāntiya Tādapatriya Grantha Sūchi in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipur also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of Dilli Jina-Grantha-Ratnāvāli published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of Sin Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvali is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications.

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors. I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr. Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible.

Dr. Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jainagam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

#### सम्पादकीय

ř

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश में विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बड़ा मंगमरमर का हॉल है, जिसमें सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तिलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चकेश्वरकुमार जैन कला दीर्घाय है। इस कला दीर्घा में शताधिक दुर्लभ हस्तिनिमित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदिशत है। यहीं ५४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा में श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १६०३ में भट्टारक हर्षकीित जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे । आते ही उन्होंने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा में बाबू देवकुमार जी द्वारा संगृहीत उनके पितामह पं० प्रभुदास जी के ग्रन्थ संग्रह के दर्शन किये तथा उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेंरणा दी । बाबू देवकुमार जी धर्म एवं संस्कृति के प्रेमी थे, उन्होंने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी । भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसंग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया ।

जैन सिद्धान्त भवन के संवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यगस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १६०६ में दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमें विभिन्न नगरों एवं गांवों में सभाओं का आयोजन करके जैन संस्कृति की सरक्षा एवं समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गांवों और नगरों से हस्तिलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानों पर शास्त्रभंडारों को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाड़ियों पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गित को कौन जानता है? १६०८ ई० में ३१ वर्ष की अल्पायु में ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धांत भन के कार्य-कलाप भी प्रभाबित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य संभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तों की यात्रा करके हस्तिलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस में वड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियों और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जै होबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होंने बाबू देवकुमार की स्मृति में प्रशस्तियाँ लिखीं एवं भवन की सुरक्षा एवं समृद्धि की प्रेरणाएँ दीं।

सन् १६९६ में स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बावू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मंत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य— कलापों में गित भर दी। १६२४ मई में जैन सिद्धांत भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष में भव्य एवं विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धामिक अनुष्ठान के साथ सन् १६२६ में श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थागार को नये भवन में प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल में ग्रन्थागार में प्रवुर मात्रा में हस्तिलिखत तथा मुद्रित ग्रंथों का संग्रह किया। जैन सिद्धांत भवन आरा में प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिप करने के लिए लेखक

(प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थों को बाहर के ग्रन्थागारों से मंगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह में रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थों की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने संग्रह के जीर्ण—शीर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थों में प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एवं इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १९४६ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुश्राता चन्नेश्वरकुमार जैन भवन के मंत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होंने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १९५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मंत्री पद का भार दिया गया. जिसे वे अभी तक पूरी लगन एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं। इनके कार्यकाल में भवन के किया-कलापों में कई नये अध्य जुड़ गये हैं, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों उभर-कर सामने आये हैं।

जैन सिद्धांत भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धांत भास्कर एवं जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १२१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओं के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्च कोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर में सुविख्यात है। इसके अंक जून अर दिसम्बर में प्रकट होते हैं। जीत सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जीत प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत और जैतिवद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। संस्थान में शोध सामग्री प्रचुर मात्रा में भरी पड़ी है। संस्थान सन् १९७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में इसके मानद निदेशक, डा० राजाराम जैत, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हरप्रसाद दास जैत कालेज (मगध वि. वि.) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी, एच, डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस संस्था द्वारा अबतक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस संस्था के हस्तिलिखित ग्रन्थों के सूचीकरण कार्य में यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रंथावली, का द्वितीय भाग है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एवं हिन्दी भाषाओं के १०२३ ग्रंथों की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रंथ को प्रथम भाग की तरह दो खंडों में विभक्त किया गया है। प्रथम खंड में पाण्डुलिपियों का विवरण रोमन लिपि में दिया गया है। दूनरे खण्ड में परिशिष्ट शीर्षक से ग्रन्थों के प्रारम्भिक अंश, अन्तिम अंश तथा प्रशस्तियाँ दी गई हैं। सूची में आधुनिक पद्धित से ग्रन्थों का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों में प्रस्तुत है—

(१) कम संख्या। (२) ग्रन्थ संख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताड़पत्र। (७, लिपि और भाषा। (६) आकर सेमी-में, पत्रसंख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति संख्या एवं प्रत्येक पंक्ति की अक्षर संख्या। (६) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११। विशेष जानकारी यदि कोई हैं।

ग्रन्यावली को सामान्य रूप से विषय वार निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया गया है—

- (१) पुराण-चरित-कथा।
- (२) धर्म दर्शन-आचार।
- (३) रस छन्द, अलंकार काव्य,।
- (४) मंत्र-कर्मकाण्ड, ।
- (५) आयुर्वेद ।
- (६) स्तोत्र, (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनका विषय निर्धारण विना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नहीं हो सकता है, उन ग्रन्थों को भी इन्हीं शीर्षकों के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है। क० ६६८ से १०६८ के बीच लगभग पचास ऐसे प्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते हैं. क्योंकि वास्तव में यह प्राया व्रत-कथाएँ हैं। ऐसी कथाओं में पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत्त होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगों के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एवं सरल विधा है।

प्रस्तुत सूची में तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुसंख्यक हैं। कम संख्या १३६९ से २०२० तक स्तोत्र एवं यूजा-विधान के ही ग्रंथ हैं। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थों का एक साथ संग्रह होना, अपने आपमें महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शारदातिलक सटीक. वैद्यमनोत्सव, योगविन्तामणि, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी हैं।

अन्य ग्रंथागारों में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं। इसमें जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली भाग — १ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियों के खोजने में सहयोगी होंगे। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारों, मंदिरों तथा संस्थानों में हस्तलिखित ग्रन्थों की भरमार है। जो अभी तक अप्रकाशित पड़े हुए हैं। उन्हें प्रकाश में लाने की दिशा में जो प्रयत्न हो रहे हैं, वे पर्याप्त नहीं है। विद्वानों, अनुसन्धाताओं. तथा सम्बद्ध संस्थाओं को इसे एक आन्दोलन के रूप आगे बढ़ाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने में डा० गोकुलचंद्र जैन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियों का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य में भी सबका निर्देशन एवं सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रंथावली के सम्पादन, संयोजन में जो त्रिटियाँ हुई हैं, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान आरा (बिहार)

## INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of Śri Jaina Sidhārta Bhavana Granthāvali, I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series. Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prakrit, Aprabhramśa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah. It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume. In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and Śri Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvali in particular.

The Second Volume is also divided into two parts. In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarí scripts. The MSS have been classified under some general heads like Purāna-Carita-Kathā, Dharma-Darśana-Ācāra etc. This classification helps a common reader. Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of Kathā (nos 998 to 1026) are the part of Ācāra or Pūja-Vidhāna and not related with the narrative literature in its strict sense.

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance. By publication of this volume they have became accessable to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions, Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume.

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to Bhakti and Karmakanda (rituals) have not been given in Jaina religion. A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs-Stotras-Stuti-Pūjā Pātha, Pratisthā etc. and other related matters. The number and variety of MSS clearly testify that Bahkti and Karmakānda occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism Bhakti and Kriyākāda alone can not lead to liberation or Mokṣa.

In this volume seven more MSS of Dravyasmgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise. All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text.

Some important Prakrit and Apabhramsa MSS Iki Samaya sāra (1165—1168, Pravacanasāra (1158—1169), Saṭpāhada (1172—1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133) Paramātmaprakāsa (1154, 1155) have also been recorded in this volume.

Seventeen MSS relating to Indian medicine i. e. Äyurveda have been mentioned some of which like Aştangahrdaya of Vagbhata (1344, Sarangadhara-samhitā (1356) o Saradatilaka (1355), Madanavinoda (1349) deserve special mention.

A good number of MSS is related to stotra literature. Some of them are close to tantra. It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like Padmāvatīkšalpa, Jvālāmāliníkalpa, Sarasvatīkalpa etc.

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume with in a short time after the publication of first volume. I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue.

-Dr. Gokul Chandra Jain

धी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली SHRI DEVAKUMAR JAIN QRIENTAL LIBRARY, JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH ( BIHAR )

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

2 ] भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

. No.	Library accession or Collection No- If any	Collection No.		Name of Commentator	
1	2	3	4	5	
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudasa-Katha	Jnānasāgara	-	
999	Nga/47/4/43	,, ,, ,,	-	_	
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	_	- :	
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā		-	
1003	Nga/411 Jha/	Aşţānhikā Kathā	Jnānasāgara	_	
100	3 Nga/48/15/6	y. »;	_	_	
100	Nga/47/4/64	Athāi ",	Bhairondasa	_	
100	Nga/47/4/47	Ādityavāra "	_	_	
100	Nga/40/1	,, ,	_	_	
10	07 Nga/41/Ga	**	_	_	
10	08   Nga/47/4/48	3 ,, ,,	_	_	

## Catalogue of Sanskrit, Parkrit, Apabhrmsa & Hindi Manuscripts (Purāṇa-Carita-Kathā)

Mat. or subt.	ScriPt	Size in cms. No, of follos or leaves lines per page & No. of letters Per line	Extent	Candition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	17.5×13.5 7.14.15	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
Р.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	C	Old	-
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 3.14.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.0×18.0 6.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 11.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	14.2×9.0 22.9.22	С	Old	
p.	D; H. Poetry	14.5×11.0 3.13.16	С	Good	
Р.	D; H, Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old	

4 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन यन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	_	
1010	Ta/42/45	Ākāśa-Pancami Kaţhā	Jnānasāgar	_
1011	Nga/41 Ta	,, ,, .,		
1012	Ta/12/1	Bhavişyadatta Katha		
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	_
1014	Ng/41 (Gha)	Caturdasi Kathā	Jnānasāgara	_
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccāriņi Kathā	<b>-</b>	<del>-</del>
1016	Ta/26/1	D <b>ā</b> na-Kathā	Bharamalla	_
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākṣṇi Kathā	_	-
1018	Nga/47/4/68	n n n	Bhairondāsa	
1019	Nga/41/ Cha	29 99 99	Jņānasāgara	
1020	Nga/48/15/3	33 33 34 <sub>1</sub>	99	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 5 ( Purāṇa-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. poetry	2 .0 × 16.7 8.12.29	С	Good	•
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	O.d	
Р.	D; H. Poetry	24.2×16.0 68.10.30	С	Good 1948 V. S.	
Р.	D; H. Poet ry	14 2×9.0 31.9.22	C	Good	
Р.	D; H Poetry	14.5×11.0 8.13.16	С	Good	
P.	D; Skt. Prose	14.2×9.0 11.9.22	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.3×17.5 38.14.21	c	Good	
P.	D; H, Poetry	20.6×18.0 2.16.18	С	Old	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	20.6×18.0 8.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 8.13.16	С	Old	
P.	D; H, Poetry	17.5×13.5 7.14.18	С	Good	

6 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakuma: Jain Oriental Library Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Daśa-lākşaṇi-vrata-Kathā	Jnānasāgara	-
1022	Nga  44   16   1	,, ·, ,, ,,	. –	
1023	Ta/27/1	Darsana-Kathā	Bhārāmalla	
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	_	
1025	Ja/60	Dhūpa-daśami Kathā	_	
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata "	-	
1027	Ja/53	Hari-vamsa Purāņa	_	_
1028	Ja/27/1	23 29 31	-	
1029	Jha/10/3	17 22 27		
1030	Ja/59	Jambū-caritṛa		-
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāṇa Kathā	_	-
1032	Ja/6/1	Mahāvira-Purāṇa		

6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
<b>P</b> .	D; H. Poetry	13.0×10.3 5.9.10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available.
P.	D; H. Poetry	19.7×16.5 48.14.21	С	Good	
→ P.	D; Skt. Prose	14.2×9.0 14.9.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.5×10.5 5.8.28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost.
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	С	Old	
P.	D; Skt./ H. Poetry	27.9 × 17.3 149.14.40	С	Good	
Р.	D; Skt./ H. Prose/	21.5×14.4 41.15.38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed.
P.	Poetry D; H. Prose	26.8 × 10.5 8.12.37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P.	D; H. Poetry	29.4×14.1 22.13.38	С	Good 1933 V. S.	Rajyakumāra canda seems to be copiar.
P.	D; H. Poetry	19.0×17.0 5.15.22	С	Old	
P.	D; H. Poetry	30.2×15.0 85.12.49	Inc		Opening pages are missing.

8 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थाक्ली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nāthā-Vivāha	Vina Jīlāla	
1034	Nga/47/4/62	Niskāṅkṣita-guṇa Kathā	_	<b>-</b>
1035	Ta/42/46	Niśśaly <b>ā</b> ṣṭami ,,	<b>J</b> nānasamudra	_
1036	Nga/41/ <b>J</b> ha	Nirdoşa-saptami "	Jnānasāgara	_
1037	Nga/48,15/8	Pańcami "	Surendra-Bhūsaņa	_
1038	Ja/l1	Parśva-purāṇa	Lālā Caṇdulāla	_
1039	<b>Ja</b> /10	"	- -	
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	_	-
1041	Ta/42/51	, <b>)</b> , • <b>)</b>	Jnānas <b>ā</b> gara	
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	"	
1043	Nga/44/16/2	95 39 29	<del>-</del>	-
1044;	Ta/42/44	Ravivrata "	_	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabharmsa & Hindi Man uscripts [ 9 ( Purāṇa-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10		11	
Р.	D; H. Poetry	22.0×13.0 6.15.13	C	Old		-	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	С	Oid			
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	С	Good	· .		
Р.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	С	Old			
Р.	P; H. Poetry	17.5×13.5 10.14.15	С	Good			
Р.	D; H. Poetry	28.0×13.0 144.13.27	С	Good			
P.	D; H. Poetry	29.0×14.0 11.12.28	Inc	Good			
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	С	Old			
P. 1	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good			
Р.	D; H. Poetry	17.5×13.5 5.14.15	С	Good			
<b>P.</b>	D; H. Poetry	13.0×10.2 11.9.10	Inc	Old			
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 4.33.37	С	Good	).		

भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

				4
1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	_	_
1046	Ja/34/1	,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,, ,,	Bhanukirti	
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	_
1048	Ta/42/54	Rohiņi Kathā	-	_
1049	Nga/48/15/7	>> <b>&gt;</b> 8	_	<b>-</b> ,
1050	Nga/41/ţha	Rohini-vrata Kathā	, <b>-</b>	
1051	Ja/62	Roța-tija "	Dyānatarāya	_
1052	Ta/42/56	22 21	_	_
1053	Nga/46/9/1	<b>&gt;&gt;</b>	_	_
1054	Nga/46/9/2	** **	_	_
1055	Nga/41	Salūnā "	Vinodilāla	·
1056	Nga/46/3	Šila-Kathā	Malla-sena ?	

## Catalogue of Sanskrit. Parkrit, Apabhrmsa & Hindi Manuscripts [ 11 ( Purāṇa-Carita-Kathā )

				1	
6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	С	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	19.0×14.9 8.11.15	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.3×17.5 33.14.21	<b>.</b> C	Good	
P. :	D; H / Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	17.5×13.5 9.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	c	Old	
P.	D; H. Poetry	22.3×13.0 9.8.23	C	Good	
P.	D; H. Prose	32.3×19.0 1.33.37	c	Good	
Ρ.	D; H. Prose	18.8×17.6 2.17.23	C		
p.	D; H. Poetry	18.8×17.6 3.14.17	С		
Ρ.	D; H, Poetry	14.5×11.0 19.13.16	С	Old	
P.	D; H. Poetry	25.6×16.6 27.13.36	С	Old	

12 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्यावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1057	Ta,28/2	Śila-vrata Kathā	Bhārāmalla	_
1058	Nga/40/3	Šiłavati "	_	
1059	Nga/41/ <b>J</b> a	Solahakāraņa Kathā	Jnânasāgara	-
1060	Nga/46/6	,, ,,	>>	:
1061	Nga/48/15/2	Şodaśa-kāraṇa "	,,,	_
1062	Ta/42/48	Şravana-dwâdasi "	•9:	_
1063	Nga/45/1	Saipāla-Caritra	Jivarāja	_
1064	Nga/45/12	>> >>	-	
1065	Ta/42/47	Sugandha-dasami Kathā	Jnānasagar <b>a</b>	<b>-</b>
1066	Nga/48/15/9	•9 99 99	_	_
1067	Nga/47/4/78	99 34 99		—
1068	Nga/41	Sugandhadasami ,,	Jnānasāgara	_
	1	1		,

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 13 ( Purāṇa-Carita-Kathā )

6	7	8	9	10	11				
P.	D; H. Poetry	19.8×17.2 45.14.23	С	Good					
P.	D; Skt. Prose	14.2×9.0 50.9.22	С	Old					
Р.	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	С	Old					
P.	D; H. Poetry	23.2×15.0 4.16.15	c	Old					
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	С	Good					
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good					
P.	D; Skt. Prose	24.7×11.2 40.13.37	C	Good					
P,	D; H. Poetry	24.5 ×11.3 38.15.35	С	Old					
Р	D; H. Poetry	32.3 × 19.0 2.33.37	C	Good					
P	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good					
<b>P.</b>	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	С						
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	C	Old					

14 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4 5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	- 77 O
			N.C.
1070	Ta/14/35	Vira Jin: ñda	
1071	lo (24/5	V. Tr.	
10/1	Ja/34/5	Vişnu Kumāra "	Vinodilāla —
1072	Ta/11/1	Arihart -Kevali	Rama-gopālā
·			
1073	Ta/6,9	Ārādhanāsāra	- " -
		;	
1074	Nga/38/10	Arādhanā-pratibodha	
1075	Ja/l	Artha Prakāşikā	
11	,		
1076	Ta/9/1	Ātmānuśāsana	Guna-bhadra
1077	Ja/38	Banārasi-Vilāsa	Banarasidāsa
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	
1079	Nga/47/15/6	<b>99</b> 27	
1080	Ta/6/18	29 29	
~	44.65000	1	1

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 15

<b>8</b>					
6	7	8	9	10	s 11
P.	D; Skt.	14. ×9.0 32.9.22	C	Old . ,	£
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8. 3.11.15	С	O!d	:
Р.'	D; H. Poetry	19.0×14.9 19.15.16	C	Old .	
P.	D; Skt Poetry	14.5 ×11.7 29.9.15	C	Good 1917 V. S.	
Р.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 8.18.15	C	Oid	
P.	D; H Poetry	15.7×9.0 7.9.22	<b>C</b>	Good	
P.	D; H: Prose	33.4×18.9 411.13.33	C	Good	The opening pages are damaged.
` <b>P.</b>	D; Skt. Prose	19.0×14 5 37.15.13	С	Old 1928 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.1 107.12.31	C	Old	(#) *
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	c	Old	1. <sup>10</sup>
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 2.12.19	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 1.20.17	C	Old	

16 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumae Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bisa Tirthankaranāmāvali	_	
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatidāsa	
1083	Nga/45/7	ş. əş	"	· <b>_</b>
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	<del>-</del>	
1085	Ta/14/3	•• ••	_	_
1086	Nga/45/10	Cāturmāsa Vyākhyā		_
1087	Ja/40	Caudaha-guṇa-sthāna	_	
1088	Ja/45/3	1) 11 11	-	_
1089	Ja/51/21	Catvāri-dandaka	_	
1090	Ta/[4/42	Caubisa "	Daulata-rāma	
1091	) Já/65/ 1	<b>,,</b>	,,	_
1092	Ja/23/1	"	<b>3</b> 3	<u> </u>

Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabharmsa & Hindi Manuscripts [ 17 ( Dharma-Darsana Ācāra )

4					
6	7	8	9	10	11
Ρ.	D; Skt. Poetry	32.5×8.5 3.6.13	С	Old	
Ρ.	D; H. Poetry	25.0×12.0 170.11.34	С	Good	
P.	D; H. Poetry	26.8×13.9 168.11.33	C	Old 1967 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.30.37	С	Good	
<b>y</b> P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 3.13.18	С	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	24.7×11.3 72.13.38	<b>C</b> ,	Old	
P.	D; H. Prose	22.0 × 13.5 63.12.27	C	Ołd	
<b>P.</b>	D; H. Prose	15.0×11.3 8.10.19	C	Old	
P.	D; Pkt. Poctry	32.3×20.1 1.13.35	С	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 6.12.20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 10.10.14	С	Good	
P.	D; H. Prose	22.4×14.2 18.17.18	Inc	Old	

18 ] धी जैन सिद्ध।न्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1093	Ja, 45/2	Caubisa thänä	· <u>-</u>	<del></del>
1094	Ja/41	Carca-Sangraha	<del>-</del>	
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	_
1096	Ja/30	., .,	-	-
1097	Nga/45/11	Daśāskańdha		
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvaní	Dyānatar <b>āya</b>	_
1099	Ja/16/6	<b>39 3</b> 1	,.	_
1100	Nga/37/4	Dāna-śila-tapa-bhāvanā	_	
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	
1102	Ja/41/1	Digambara āmnāya	_	
1103	Ja/12	Dharma-grantha	<u>-</u> ' · · ·	_
1104	Ja/25	"	<b>-</b>	_
		1		

Catalogue of Sanskrit, Parkrit, Apabhrmsa & Hindi Manuscripts [ 19 ( Dharma-Darsana Ācāra )

*	6	7	8	9	10	11
	Р.	D; H. Poetry	15.0×11.3 5.10.20	Ċ	Old	
	Р.	D; H. Poetry	21.2×13.6 148.11.33	С	Old	
	P.	D; H. Poetry	29.7×14.0 83.11.44	С	Good 1893 V. S.	
_ 4	Р.	D; H. Poetry	20.8×14.2 157.16.17	C	Geod	i
7	Р.	D; Pkt. Prose/ Poetry	23.4×10.3 42.13.40	С	Old 1735 V. S.	
	Р.	D; H. Poetry	18.3×11.5 10.16.15	С	Good	,
	Р.	D; H. Poetry	23.3×19.0 10.15.18	С	Good	
	P.	D; H. Poetry	20.3×11.5 13.9.18	C	Old	
	Р.	D; Skt. Poetry	13.0×14.8 14.9.26	С	Old .	
<b>.</b>	p.	D; H. Prose	21.2×13.6 2.11.30	C	Old	
	Р.	D; H, Poetry	12.9 ×27.4 230.9.19	С	Old	
	P.	D; H Prose/ Poetry	22.0×14.4 110.20.14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing.

20 ] जिन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	<b>2</b> : .	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmṛtasāra	_	-
1106	Nga/44/13/4	Dharmāş <sub>ļ</sub> aka	_	<del>-</del>
1107	Ja/9	Dharma-paríkṣã	Manohara	_
1108	Ja/14	Dharmaratna	-	-
1109	Ja/13	", " granthā	_	_
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	_
1111	Nga/30/1	Dharmasāra Satasai	Şîromanid <b>a</b> sa	_
1112	Ta/61/14	Dravya-Sangraha	Nemicanda	
1113	Nga/30/2/2	»	99	_
1114	Ta/37	,, ,,	<u> </u>	_
1115	Ta/4/1	• , ,,	Nemicañda	_
1116	<b>Ta</b> /6/1	" "	•	_

Gatalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 21

	T .	1. 0	1 0	T	
6	7	8	9	10	. 11
- P.	D; H. Prose/Poetry	21.0×16.5 60.15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 4.6.13		Old	
Р.	D; H. Poetry	29.8×15.0 181.12.48	С	Good	
P.	D; H. Poetry	26.9×13.2 181.9.24	C	Good	
P.	P; H. Poetry	26.6×14.0 206.9.24	С	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11 5 10.16.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	17.5 × 14.3 75.13.22	С	Good 1832 V. S.	
Р.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 10.23.15	С	Old	
P.	D; H. Poetry	19.0×14,8 5.9.26	С	Old	
Ρ.	D;H /Skt. Poetry	16.0×12.0 41.10.16	С	Ol <b>d</b>	Starting three pages are missing so it has opening.
P.	D;H./Pkt. Prose	23.2×19.5 20.13.32	С	Old 1871 V. S.	
P.	D;Pkt./H. Poetry/ Prose	22.2×14.7 49.18.20	C	Old	F

22 ] भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्यावसी
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	, <b>3</b>	4 .	<u>.</u> 5
1117	<b>Ja/2</b> 3	Dravya-Samgraha	Nemicandra	., <del></del>
1118	Nga/16/2	99 19	,	
1119	Ta//14/33	Dv <b>ā</b> das <b>ā</b> nuprekṣā	7. <del>4.</del> 10. 11. 2. 12. 17.	<b>-</b>
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	*	<b>-</b>
1121	Nga/38/13	Gati-Lakṣṇṇa	_ ;	
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicandra	-
1123	Ta/3/46	Gyāna kē ath anga	_	******
1124	Nga/28/1	Haņavanta aņuprēkşā	Pandita Bacharāja	
1125	Nga/48/11/5	Jina-gāyatrí trikāla-sandhyā	_	-
1126	Ta/24/3	Jina-guṇa-sampatti	_	-5
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	_	
1128	Nga/47/4/77	Jēva-rāsi-k <b>samā-va</b> ņí		-

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 23 ( Dharma-Darsana Ācāra )

, ,	The Construction of the Co						
6	7	8	9	10		11	
P.	D; Pkt. H.: Prose/		C	Old			
P.	Poetry D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 6.11.21	С	Good			
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.13,16	C	Old Politiques			
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 2.13.35	c	Good			
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 2.9.22	С	Good			
P.	D; H. Prose	36.5×18.7 454.11.38	C	Good			
P.	D; Pkt./ H. Poetry	22.5 × 15.0 3.12.31	C	Good			
P,	D; Pkt. Poetry	14.6×14.1 7.14.19	С	Good			
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×13.2 0.10.13	Inc	Old			
P	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 3.37.33	<b>C</b>	Old			
Р.	D; H. Poetry	11.5×10.0 4.10.14	С	Good			
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old			

24 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacīsi	Banarasidāsa	f <b>!</b>
1130	Ja/23/4	Jnānāmava-Vacanika	Śubhacańdra	_
1131	Nga/16/3	Karma-prakrti-grantha	Nemicandra	-
1132	Ta/17/1	Karma-battisi	1 <b>–</b> 4 – 4 / 4	_
1133	Nga/20,2	Karatikeyanu preksa	Kārtikeya	
1134	Ja/51	Laghu-tattvārtha sūtra	_	- -
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika		
1136	Ta/42/80	32 29	_	_
1137	Nga/38/9	Leśyā-Swarūpa	·	
1138	Ta/4/3	Lilavați-prakirnaka	Bhāskarācārya	_
1139	Ja/18	Mithyatva Khandana	Padmasāgara	_
1140	Ja/4	Mokṣamārga		_

## Catalogue of Sanskrit, Parkrit. Apabhrmsa & Hindi Manuscripts [ (Dharma-Darsana Ācāra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	4.2 × 9.6 3.9.22	С	Old	19 <sub>10</sub>
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 40.18.15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13:0×15.0 18.11.21	С	Good	1.1
Р.	D; H. Poetry	15.5×9.5 10.10.19	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	25.6×15.0 38,15.21	С	Good	to keep to the second of the s
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.34	С	Good	It is also named Arhat pravacana.
Р.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 2.12.36	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	: · · C	Good	
Ρ.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9.0 2.9.22	C	Good	
Р.	D; Skt. Pros / Poetry	19.3×13.0 167.17.16	С	Old .	u ut en
Р.	D; H. Poetry	23.9×10.8 113.9.32	C	Good	
Р.	D;H,/Pkt. Prose/ Poetry	32.1×15.0 224.12.50	Inc	Good	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakuma Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokşa-mārga paidí	Banārasidāsa	+
1142	Ta/14/36	39 39 39	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	. i
1143	Ta/6/13	Mṛtyu-mahoṭsaya	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	-	
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	_	
1146	Ja/27/5	Naya-cakra	Devasena	9 <del>-</del> 9.
1147	Nga/16/5	99 99 1	,,	-
1148	Ja/41/2	" " Vacanikā	Hemarāja	. –
1149	Nga/28/6	92 99 <sub>2000</sub> 19	Deva <b>se</b> na	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nírvāṇa-kāṅda		.v., <del></del>
1151	Nga/20/4	79 39	Bhaiyā Bhagavatidāsa	
	Ta/6/22	Panca Vjrhšatikā	·	are in the second of the secon

Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabharmsa & Hindi Manuscripts

1.1-11.1-( Dharma-Darsana Acara ) 10 11 6 9 7 8  $\mathbf{C}$ P. D; H.  $11.5 \times 10.0$ Good 7.10.14 Poetry P. C Old D. H.  $15.2 \times 12.8$ Po etry 5.11.15 D; Pkt./ Sk t./ P. C  $22.2 \times 14.7$ Old 3.20.19 Poetry P. C Opening two pages are D; H  $13.0 \times 15.0$ Good missing. 23.11.21 Poetry C P.  $11.0 \times 11.0$ Old D; H. Poetry 6.12.17 It is also called P.  $\mathbf{C}$ D; Skt.  $21.5 \times 14.4$ Old Ālāpapaddhati. Prose 12.19.13 P.  $\mathbf{C}$ D; Skt.  $13.1 \times 15.0$ Good Prose 13.11.21 P.  $\mathbf{C}$ D; H,  $21.2 \times 13.6$ Old 17.11.34 poetry P. C Good D; H.  $13.4 \times 17.6$ Poetry 26,11,19 1962 P. Good D; Pkt.  $25.6 \times 15.0$ C 3.15.21 Poetry P. C D; H.  $25.6 \times 15.0$ Good Poetry 3.14.18 The charts of Mantra and P. C D; Pkt. Old  $22.2 \times 14.7$ 

Poetry

2.20.20

Tantra are in its last pages.

1 27

28 ] भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmșihi	<u>-</u>	_
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāša	Yogiñdradeva	4 <u>-</u> -
1155	Nga/16/6	99 99 <sub>-</sub>	<b>,</b>	7 å
1156	Ja/6/3	Parikṣā-mukha Vacanikā	<b>-</b>	· _
1157	Nga/?6/4	Praśna-mālā	_	_
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakirti- mahārāja ?	-
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	<b>-</b>	_
1160	Jha/10/2	•• •• •	Hemarāja	·
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalanka-swāmi	_
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-puṇya-māhātmya		_
1163	Nga/47/4/69	Puṇya-māhātmya	_ ,	
1164 bn	Ta/12/2			_

6	7	8	9	,10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11.3 9.10.20	C	Good	
Р.	D; Apb. Poetry	22.2×14.7 25.19.13	С	Old	
Р.	D; Apb. Poetry	13.0×15.0 29.11.21	C	Good	It is also called paramappayāsu.
Р.	D; H. Prose	30.2×15.0 1.11.37	Inc	Good	
P.	D; H. Prose	20.3 ×15.8 57.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.8 × 14.4 27.14.35	C	Old	j .
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	26.6×10.5 14.14.39	Inc	Old	:1
P.	D; H. Prose/ Poetry	26.8×10.5 28.12.47	Inc	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	145.×11.7 6.11.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 9.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 1.16.18	c	Old	Serting 1
P.	D; H. Poetry	24.2×16.0 44.10.30	С	Good	, s-q-

30 ] भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumır Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayas <b>ā</b> ra-gāthā	-	
1166	Ja/37	", nāṭaka	,—,	_
1167	Nga/12/1	22 33	Banārasidāsa	· , ;
1168	Nga/42/2	>> >>		_
1169	Nga/16/8	Samavaśaraņa	_	_
1170	Nga/16/7	Samud-ghāta	_	· <u>-</u>
1171	Ta/11/8	Sațdarśana	, <del>-</del>	_
1172	Ta/6/1	Saţpāhuda	Kundakunda	
1173	Nga/16/4	"	"	_
1174	Nga/47/4/55	Sațl <b>e</b> śyābheda	- -	- 1
1175	Ta/14/40	Samāyika	<u>-</u> *	<u> </u>
1176	Ta/14/15	,,	18 <u>1</u>	-

Catalogue of Sanskrit, Parkrit, Apabhrasa & Hindi Manuscripts [ 31 (Dharma, Darsana, Acara)

6.	7	8	9	10	11	1
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	Inc	Good		
P.	D; H. Poetry	21.0×14.5 81.13.31	C	Old		
P.	D; H. Poetry	15.0×8.0 344.6.16	С	Old 1884 V. S.		
P.	D; H. Poetry	15.0×14.0 128.13.19	С	Good 1840 V. S.		
Р.	D; H. Poetry	13.0×15.0 40 11.21	С	Good		
P.	D; H. Poetry	13.0×15.0 3.11.21	C	Good		
Р.	D; H. Poetry	14.5×11.7 2.11.20	С	Good	to proc	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 35.19.15	C	Old'	ar.	
Р.	D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 36.11.21	C	Good		
p.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	С	Old		
Р.	D; Skt, Poetry	15.2×12.8 2.12.13	С	Old		
Р.	D; Pkt/ Skt. Prose/ Poetry	15.2×12.8 25.11.16	c	Old		

32 ) श्री जैन मिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2 ;	3	4	5
1177	Ta/42/95	Sāmāyikā	<del>-</del>	ja <del>−−</del> ″g
1178	Ja/51/20	25	_	<del>-</del>
1179	Nga/19	>>	. <del></del>	. —
1180	Ta/26/3	Sāṣācāra	<del></del> 0	<b>-</b>
1181	Ja/45/4	Sātatattva		_
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	_
1183	Ja/65/3	Sindūra-Prakaraņa (Sūkt:muktava!i)	Somaprabhācārya	Ha şakirti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakaraņa		_
1185	Nga/31/2/6	,,, 21	Somapra bhācārya	H arşakiit
1186	Nga /47/4/76	Śila-Vrata		
1187	Jha/5/1	Śrāvakācāra	Gumāni-Lāla	-
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramaņa		

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhranta & Hindi Manuscripts [ 33 (Dharma, Darsana, Ācāva )

6	7	8	. 9	10	11 1 1 1 1
P.	D; Skt./ Poetry/ Prose	32.3×19.0 3.33.37	<b>C</b> 34.	Good	
<b>P</b> .	D; Skt. Poetry	32.3 ×20.1 3.13.35	C. <sub>a</sub> °	· Good, v.z.g.	
P.	D; Skt. Poetry	15.8 × 9.0 2.9.22	C	Good	<b>L</b> .
P.	D; H. Poetry	20.3×17.5 3.14.21	Ç	Old	
Р.	D; Skt. Prose	$15.0 \times 11.3 \\ 7.10.20$	C	Old	
P.	D; H. Prose	32.1 ×16.0 26.11.47		Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 51.10.14	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	19.0×14.5 19.15.13	С	Old	Pandita Paramananda seem to be copier.
P.	D; H. Poetry	12.3×16.0 21.15.16	С	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	С	Old	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	29.8×14.4 151.12.48	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 19.11.16	C	Old	

34 । श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्यावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2 1	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramaņa		_
1190	Nga/48/6/1	Srāvaka-Vrata-Sandhyā	_	_
1191	Nga/48/11/4	ğ 19 19 19	<b>~</b>	
1192	Nga/47/4/60	" Vidhāna	<b>-</b>	4.
1193	Nga/25/11	Śri-pāla-darśana	-	_
1194	Nga/44/19/1	99 90 39	_	· <u>-</u>
1195	Ja/6/2	Sud <b>rști T</b> arangin1	_	_
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	_
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmi	_
	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	_	
1198	Nga/47/4/38		Umā Swāmi	_
1199		0) 10		-
1200	Nga/47/4/38	19		}

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit Apabharmsa & Hindi Manuscripts

(Dharma, Darsana, Ācāra)

6	7	1 2 8	9	10	11	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	32.3×19.0 4.33.21	C	Good		
P.	D; Skt. Prose	15.7×9.2 8.7.18	Inc	Old		
P.	D;Skt. Poetry	16.5×13.2 6.12.16	č	Old		
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	С	Old		
Р.	P; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	С	Good		
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 5.9.25	С	Old		
<b>P</b> .	D; H. Poetry	30.2×15.0 43.15.38	Inc	Good		
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 4.21.21	С	Good		
P.	D; Skt. Prose	32.3×20,2 10.23.17	Inc	Old		
, <b>P.</b>	D; Skt. Prose	22.5×13.0 24.18.13	C	Old		
<b>P.</b>	D; Skt. Prose	20.6×18.0 13.16.18	С	Old		
P.	D; Skt. Prose	13.5 ×8.5 38,6.13	C	Old		

36 ] की जैन विकास भवन धन्यावसी Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	٦٠.	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	,	Umāswāmi	*
1202	Ta/14/24	" "		**	: _
1203	Ta/42/17	<b>?? ?</b> > 0	•	· <b>&gt;</b> >	·
1204	Nga/38/6	2) 2)		21	11 /: <b>-</b>
1205	Ja/23,2	29 39		»	_
1206	<b>Ta/</b> 6/6	<b>»</b> , ,,		39°	_
1207	Ja/27/3	** **		,,	_
1208	Nga/25/6	» »		29	
1209	Nga/20/1	" "		**	_
1210	Nga/17/2/1	) <b>)</b>		99	
1211	Nga/20/1/2	99 99		<b>39</b>	
1212	Ja/33/2	» »	•	••	·
1	;		1		

Catalogue of Sanskritt, Parkrit. Apabhrmsa & Hindi Manuscripts [ 37

6	7	- 8	9	10	11	1
<b>P</b> .,	D; Skt. Prose	15.5×14.6 23.8.20	С	Qid.		
P.	D; Skt. Prose	15.2×12.8 19.11.15	С	Old		
<b>P.</b>	D; Skt. Prose	32.3 × 19.0 4.33.39	Č	Good		
P	D; Skt. Prose	15.8×9.0 4.9.22	C	Good		
Р.	D; H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 57.19.15	j f <b>C</b> + st	»Old		
P	D; Skt. Prose	22.2×14.7 9.20.20	C	Good Askar		
P.	D;H./Skt. Prose	21.5×14.4 56.17.13	Inc	Old		
P.	D; Skt. Prose	28.4×17.0 9.24.17	С	Good 4	, a	
Р.	D; Skt. Prose	25.6×15.0 13.15.21	C	Good	tl I	
Р.	D;Skt./H. Prose	25.0×17.0 45.20.16	С	Good San		
Р.	D; Skt. Prose	29.0×17.8 11.21.17	С	Good		
P.	D; S. Prose	19.7×13.0 10.18.16	C	Old FF N	គ៌)	

अधि केन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावसी
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmi	_
1214	Ja/27	<b>,</b> , (	2 <b>3</b> 2 2 1 2 1 2 2 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2	
1215	Nga/31/2/2	ري دوري اوري وري		
1216	Nga/29/3	9 <b>9</b> - 9 <b>9</b> - 1	••	· · ·
1217	<b>Ja/2</b>	,, ,, Vacanilla	Jayacanda	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
1218	Nga/32	Trepanakriyā	19.34 19.34 19.34 19.34	· -
1219	Ta/5/12	()		ta, s <u> </u>
1220	Nga/48/26/1	Trikāla-Caturvinšatī		
1221	Ta/16/3	Trivarņ <b>ā</b> cāra	Jingsonäeäryä	
1222	Ja/5	Trilokasāra		_
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā		
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-pacisi	2 - 3 C H	,

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 39

6	7	10 <b>. 8</b>	9	10	11
•		0			
P.	D; Skt. Prose	19.0 ×14.9 18.11.15	<b>C</b>	Old	
P.	D. Skt. Prose	20.2×14.5 14.15.18	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	12.3×16.6 3.17.16	Ċ	Good	
Р.	D;H /Sk <sup>t</sup> . Prose	13.2×21.0 71.16.13	C	Good	
Р.	D; H. Prose	32.2×15.3 272.12.56	Inc	Good min	
Р.	D; H. Prose/ Poetry	25.3 ×15.0 175.16.18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P	D; Skt. Poetry	25.0 × 15.0 2.26.25	Inc	Old	
P.	D; H. poetry	17.5 × 13.5° 3.8.24	C	Good	:
P.	D; Skt. Poetry	15.5×9.5 28.9.16	С	Old	It has no heading or opening.
. <b>P.</b>	D; H. Prose	31.0×16.2 295.11.59	C	Good	Two pages are damaged.
P.	D; H. Prose	33.4×18.9 18.13.33	Inc	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 2.18.15	C	Old	The second section of the section of

भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रान्यावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	5 4 5
1225	Ja/27/4	Yoga	Subhacandra
1226	Nga/31/2/5	Yogi-rāsā	Jinadāsa
1227	Nga/44/19/9	Akşara Battisi	Bhagavatidāsa
1228	Nga/47/4/52	., Vavani	
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	
1230	Nga/47/4/44	Ajhāi-Rāsā	Vinayakirti
1231	Ta/14/32	<b>99 99</b> (40 )	
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodilāla —
1233	Nga/47/4/50	, 4 <b>193 - 22</b> - 34	
.1234 .55	Ja/40/2	Candra-śataka	
1235	Nga/46/2/1	Careā-śataka	Dyānatarāya —
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacisi	- 12 - 12 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 -

6	7	8	9	10		11	
P.	D; H. Prose	21.5 × 14.4 50.22.16	С	Old			4.
₽.	D; H. Poetry	12.3×16.6 5.13.14	С	Good			
P.	D; H· Poetry	19.5×12.5 10.8.21	С	Good			
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	С	Old			
P.	D; Skt. Poetry	23.8×18.2 10.18.21	Inc	Old			
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old			
Ρ.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.13.18	C	Old			
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good			
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Olđ			
P.	D; H. Poetry	22.0×13.5 16.13.34	С	Old			
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 12.13.28	С	Old:			
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good			

42 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्यावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	() <b>3</b>	4	5
1237	<b>J</b> a/16/ <b>7</b>	Dasa-bola-pacisi	Dyānatarāya	·—
1238	Ja/35/7	21 23 ° 25	; <del>-</del>	, <b>–</b>
1239	Nga/46/2/3	Daśa-th <b>āna</b> Caubisi	Dyānatarāya	_
1240	Ja/35/1	Dhāla-gaṇa		_
1241	Ja/16/3	39 >9	_	_
1242	Ta/6/17	Dohā	Rūpa-canda	_
1243	Ja/26	Dohāvalí	-	_
1244	Ja/27/2	**	<b>-</b> .	_
1245	Ja/28	29	_	-
1246	Nga/31/4/10	Dwipancāśa tikā	Banarsidāsa	
1247	Nga/44/11	Fuṭakara-Kāvya	<b>–</b>	<del></del>
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṭaka	Vādicandra	

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 6.15.18	С	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 7.16.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	С	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 10.16.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 9.15.18	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 7.18.17	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	22.0×15.0 4.18.15	С	Old	
P.	D; H. Poetry	21.5×14.4 16.18.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	21.0×14.7 4.18.15	С	Good	
p.	D; H. Poetry	15.3×12.4 13.25.20	<b>C</b>	Old	Opening pages are missing.
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	13.0×10.0 20.10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19.0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

44 । श्री के शिदान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2;	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	<b>_</b>	-
1250	Ta/3/44	Jakari	Bhūdharadāsa	-
1251	Ta/14,34	Jogi-Rāso	- <u>-</u>	. <u>-</u>
1252	Ta/3/55	Kavitta	_	-
1253	Ta/3/54	,,	_	-
1254	<b>Ja</b> /40/3	· • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	Trilokacanda	-
1255	Nga/41/Ka	Kṛpaṇa-Pacisi	_	: -
1256	Ta/42/55	Māla-Pacisi	_	_
1257	Nga/44/20	Nāmamā! <b>ā</b>	Nandadāsa	_
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	_	<b>-</b>
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Cañdrikā		· -
1260	Nga/41/ba	"	_	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

	<del>,</del>				
6	7	8	. 9	10	11
Р.	D; Pkt. Skt. Poetry	15.5×12.0 22.10.19	Inc	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.14.21	C	Old	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	P; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.0×13.5 2.12.31	С	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 7.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.7×11.2 26.17.16	C	Old 1806 V. S.	It is also called Manamanjari
Р.	D; H. Poetry	11.5×10.0 5.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×13.5 168.14.16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
Р.	D; H. Poetry	14.5 ×11.0 6.13,16	Inc	Old	

46 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्यावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemicandrik <b>a</b>		_
1262	Nga/37/8	Nemināthā Bārahamāsā	Vinodilāla	_
1263	Ja/16/4	,, Vivāha	,,	_
1264	Ta/3/47	<b>20</b> >>	91	_
1265	Ja/35	<b>,,</b>	,,	-
1266	Nga/47/4/73	Pakhavār <b>ā</b>	Tulasi	
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakari	Śrirāma	
1268	Nga/46/1	Pingala	Śridhara	_
1269	Nga/47/4,51	Rājula Pacisi	<del></del>	_
1270	Nga/44/10/4	,, ,,	Vinodilāla	
1271	Nga/44/9/2	. >> >9	29	-
1272	Nga/44/Pa	95 22	<b>,,</b>	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 47 ( Rasa-Chand-Alanakāra, Kāvya )

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 15.13.22	С	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×22.0 6.16.12	С	Old	
P.	D; H. Poetry	23.8×19.0 5.15.18	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 6.16.14	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P,	D; H. Poetry	30.0×15.8 16.10.37	C	Old	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	С	Old	
P	D; H. Poetry	18.5×13.0 6.13.22	С	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×10.5 11.12.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	

48 ों जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थाबली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	, 2	(i.j. 3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacīsi		/ <sub>1</sub> —
1274	Nga/44/19/2	Rist <b>à</b>	<del>-</del>	_
1275	Nga/47/4/81	55		
1276	Ja/65/8	**	- 13 m	_
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūvacanda	_ •
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vṛṅdāvana	
1279	Nga/45/5	Samkitadhikār <b>a</b>	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
1280	Ta/3/2	Sammeda Sikhara Māhātmya	-	<u></u>
1281	Nga/45/8	27 89 39	·	_
1282	Nga/45/6	<b>29</b> 29 29	Lohâcārya	
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lalacanda	_
1284	Nga/46/5/2	yy yy		-

1					
6	7	8	9	10	41
<b>P</b> .	D H. Poetry	19.5×12.5 13.10.19	- C	Old	,
Р.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2.95	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20,6×18.0 2.16.18	С	Old 1853 V. S.	
P.	D; H. Po <b>et</b> ry	11.5×10.0 12.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.5 6.12.35	C	Old	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	21.3×16.4 131.14.16	С	Old 1953 V S.	
<b>P.</b> .	D; H. Poetry	23.5×9.0 31.20.58	C	Old 1702 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.3×15.0 3.9.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	24.0×12.2 11.9.25	С	Good	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	23.7×15.0 103.9.23	Inc	,Old · · · ; ·	
Ė.	D; H. Poetry	19.3×10.6 72.10.28	С	Old 1892 V. S.	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23.1×15.1 70.18.17	C	Good	

50 ] भी जैन सिद्धान्त भवन प्रम्थावली
Shri Devakuma: Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1		3	1 4	1	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kā:aṇa-ı āsā	Sakalakırti		<i>y</i>
1286	Ta/42/53	Śruta-pańcami-rāsā			
1287	Nga/46/5/1	Sri-pāla-daršana	_		-
1288	Ta/10	Subhaşitāvalí	. –		<b></b>
1289	Nga/47/4/49	Bahubali	_		· <u>-</u> ;
1290	<b>Ta</b> /6/15	Viveka Jakari	Rūpa-canda		
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacisí	_		
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra- mantra	Manatunga		·
1293	Nga/26/3	93 39	<b>19</b>		
1294	Nga//26/9	Caubisa tirthankara mantra	_		<b>-</b>
1295	⊹ <b>Ja/51/15</b> .∉	Gāyatri mantra	_		
1296	Nga/43/3/1	Ghantā-karņa-mantra		4,4 334	

ľ						
	6	7	8	9	10	11
	P.	D; H. Poetry	20,6×18.0 3.10.18	, <b>c</b>	Old	,
	P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
	P.	D; H· Poetry	23.1×15.1 2.14.14	Inc	Good .	
	Р.	D; Skt. Poetry	15.0×13.0 178.6.14	C	Old	
	P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	С	Old	
	P.	D; H. Poetry	22.2×I4.7 14.19.16	С	Old.	8. %
	P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
	Р.	D; H./ Skt. Prose/	29.0×17.0 20.24.17	C <sub>2</sub> ,	Good	Opening pages are missing.
	P.	Poetry D; H./ Skt. Prose/	20.0 × 16.4 49.13.22	С	Good	It has fourty eight mantra charts.
	P.	Poetry D;H./Skt. Poetry	29.0×17.0 6.24.17	С	Good	
	<b>P</b>	D; Skt. Prose	32.3×20.1 3.13.35	С	Good:	
	P.	D; Skt. Poetry	17.0 ×13.0 × 13.0 × 1.9.18	С	Old W	
			1	*		

52 । श्री जैन सिद्धान्त अवत अन्यावती
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

-				~/
1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghañjā-karņa-mantra	<u>-</u>	_
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	-	_
1299	Nga/13/4	Jaina-gäyatri	<b>_</b>	;
1300	Nga/13/3	Jaina-Samkalpa	· · · · · · · · · · · · · · · · · ·	. —
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	3 - 3	
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Ya <b>ātra</b>		<u>-</u>
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kāṇda-mañtrā	_	· <u> </u>
1304	Nga/26/8	Mahālakşmi-ārādhanā		:
1305	Ja/51/18	Mantra	_	<u> </u>
1306	Ta/11/4	<b>1</b> ,	<del>-</del>	
1307	Nga/43/2	" Samgraha		<b>.</b>
1308	Nga/48/11/6	Mañtra-Yañtra	Rimacandra 122	
ţ	Ì	i e	•	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 53 ( Mantra, Karmakān la )

3. <sup>1</sup>					
6	7	8	9	10	-11
Ρ.	D. Skt. Prose	17.3×13.0 2.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	25.0×15.0 7.25.18	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	24.3×18.3 2.20.17	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	24.3×18.3 1.21.20	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.5 × 13.2 2.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. poetry/ Prose	15.7×9.2 10.7.18	С	Old	It is so demage that it cannot read and write.
P.	D;H.Skt. Poetry	29.0×17.0 2.24.17	С	Good	;
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	It has mantra charts also.
Р.	D; Skt. Prose	14.5×11.7 9.11.22	С	Good	
Ρ.	D; Skt, Prose	16.4×13.4 10.13.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 1.11.15	С	Old	

54 ] भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-maňtrā	Vinodilāla	_
1310	Ta/42/84	Padmāvatí-dandaka	-	_
1311	Nga/43/4/2	,, Kalpa	Mallișeņa	_
1312	Nga/43/6/2	<b>,</b>	_	_
1313	Ta/42/85	,, Kavaca	_	
<b>1</b> 314	Ta/42/104	>> >>	_	_
1315	Nga/48/11/2	pp 39	_	
1316	Nga/26/12	99 91	_	-
1317	Nga/48/6/2	., ,,	Rāmacañdra	_
1318	Ta/30/2	" Mañtra	_	
1319	Nga/43/6/12	33 <b>83</b>	_	-
1320	Ta/42/83	" Pajala	_	

k.				•	·
6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.31	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3 × 14.0 11.10.20	С	Old	
Р.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 7.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 2.12.17	C	Old	
Р,	D;H./Skt. Prose	29.0×17.0 4.24.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.7×9.2 6.7.18	C	Old	
Ρ.	D;H./Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	С	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
Р.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

56 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pandraha-yantra-vidhi		_
1322	Nga/26/2	Pārśwanāthā-stotra- mantra	_	_
1323	Nga/43/6/4	<b>,</b>		_
1324	Nga/26/3	» » ·		_
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatri	Harayaśa-miśra	
1326	Nga/13/6	Sakali-karaņa vidhāna	<u> </u>	-
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	_	_
1328	Nga/26/14	Sāntinātha-mantra	<u>-</u>	
1329	Nga/43/6/6	Saraswati-mantrā	- <u>-</u>	_
1330	Nga/47/5/7	<b>29</b>	_	
1331	Nga/38/14	19 29		<del>_</del>
1332	Nga/26/4	" stotra	_	, <b>,</b>
}		J		

*					
6	7	8	9	10	11
Ρ.	D; H. Prose	15.5×9.5 8.10.25	Inc	Old	
Ρ.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 2.24.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 3.14.16	C	Good	
P.	P; Skt Prose	16.0×10.3 37.7.19	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.4×18.7 5.21.17	С	Good	
P.	D; H. Prose	25.0×10.0 17.15.42	С	Old	
<b>P.</b>	D;H./Skt. Prose	29.0×17.0 3.24.17	С	Good	
Р.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.12	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×16.0 2.12.19	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	15.7×9.00 6.9.22	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29.0 ×17.0 2.24(17	С	Good	
		1	,		

58 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

-1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kāraņa-mańtra	•	-
1334	Ta/3/42	Sūtaka-vidhi	<del>-</del>	
1335	Ta/4/11	Tantra mañt ā Samgarah	<b>-</b> .	
1336	Nga/20/15	Trivarnācāra-mantra	_	
1337	Ta/39/18	Vasikaraņa-adhikārā	_	
1338	Ta/39/20	Vasyādhikāra		
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	_	_
1340	Nga/43/6/11	Visarjana "	_	<del>-</del>
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhi	<del></del>	
1342	Ta/2/2	Yańtra-mańtra-samgraha		_
13 43	Ta/2/3	39 39	<del>-</del>	
1344	Ta/2/1	Aştāńga hṛdaya	Vāgbhaţţa	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit. Apabhramia & Hindi Manuscripts [ 59 ( Mantra, Karmakānda )

4	( Mantra, Karmakanda )						
6	7	8	9	10	11		
P.	D Skt. Poetry	19.5×12.5 2.7.18	С	Old			
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Old			
P.	D; Skt. Prose	11.5×15.5 161.21.16	Inc	Old	• • • · · · · · · · · · · · · · · · · ·		
P. <b>♠</b>	D;H /Skt. Prose	29.0×17.0 13.24.17	C	Good	•		
<b>▼</b> .	D; Skt. Prose	20.0×12.0 2.17.12	С	Old	. 3		
Ρ.	D; Skt. Poetry	20.0 × 12.0 2.16.1	С	Old			
P.	D; Skt. Poetry Prose	15.5×11.6 2.10.21	Ċ	Oid			
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 2.12.12	С	Old			
P.	D; Skt. Prose	13.3×10.2 21.8.14	Inc	Old	l to 3 and 6 or 7 pages are missing.		
P.	D; H. Prose	20.5×17.1 139.25.22	С	Old	The mantras & tantras charts are available in the mss.		
Р.	D; H. Prose	16.5×21.0 52.17.23	C	Old	There are so many yantra & mantra charts in the mss.		
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.6×18.5 183.22.24	C	Good			

60 । श्रो जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

-			•	, - name
1	2	3	4	5 ·
1345	Ta/1/2	Cikitsā-šāstra	<b>-</b> .	
1346	Ta/1/1	", sāra	_	
1347	Ta/4/2	Jwara-hara-yantsa	<del>-</del>	_
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karaṇa chāyã vyavahāra	Bhāskarācārya	_
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda- nighantu	Madanapāla	_
1350	Ja/33	Nādi-Prakāśa	_	_
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	_
1352	Ta/4/9/2	Pańca-daśa Vidhāna	-	_
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda		_
1354	Ta/4/9	Rūpa-mangala		_
13 55	Ta/4/8	Śāradā-tilaka satīka	· -	
1356	Ta/2/1/2	Sårangadhara Samhitä	Särangadhara	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 61 (Ayurveda)

6	1

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	27.0×11.9 120.13.49	Inc	Old	Closing pages are missing.
P.	D; H. Prose/Poetry	19.5×14.7 59.14.29	С	Good	
P.	D; Skt. Prose	19.3×13.0 2.14.17	С	Good	
Р.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	19.3×13.0 18.19.19	С	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	19.3×13.0 183.14.17	С	Good 1912 V. S.	
Р.	D; H. Prose	19.7×13.0 16.15.11	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	28.6×18.5 64.22.16	С	Old	
Р,	D;Skt./H. Prose Poetry	13.5×11.5 25.15.15	С	Olq	
Р	D; H. Poetry/ Prose	26.0 × 16.3 158.21.14	С	Good 1906 V. S.	
P	D;Skt /H. Prose	15.8 × 13.3 74.13.18	С	Good	
P	D; Skt./ H. Poetry	15.8 ×13.3 163.13.18	<b>C</b>	Good 1676 V. S.	
Р.	D; Skt. Poetry	28.6×18.5 61.23.22	<b>C</b>	Old	

62 ] श्री चैन सिद्धान्त भवन श्रन्यावसी
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūşaṇa	Nayanasukha	-
1358	Ta/4/10	,, manotsava	Bansidhara Misra	<del>-</del> ·
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmaņi	Harşakirti	
1360	Ta/2,4	Yūnāní-Cikitsā	C C	en e
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti (	-	_
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodílála	
1363	Nga/47/4/58	" ārtí	, <del>-</del> ·	_
1364	Nga/30/2/5	" stotrā	<del>-</del>	
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtí	4, <u>ma</u> 11 148	
1366	Ja/51/24	Ambikā-devi-stotra	<u> </u>	^ <u></u>
1367	Nga/26/5	Anka-garbha-şad <b>āracakr</b> a	Devanandí	_
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmal <b>a</b>	_

## Catalogue of Sanskrit. Parkrit. Apabhrmsa & Hindi Manuscripts [ 63 (Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	24.0 × 16.0 11.34.20	С	Old 1794 V. S.	1 NA 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10
P.	D; Skt. Poetry	15.8 × 13.3 81.13.18	C	Good	
Р.	D; Skt. Prose	24.0×16.0 134.22.22	C	Old 1794 V. S.	
Р.	D; H. Prose	20.5×17.5 98.23.22	C	Old	
Р.	P; Skt./ Pkt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	20 6×18.0 2.16.18	C	Old	.0.
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9.26	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	. C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3 × 20.0 1.13.35	С	Good 1959 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6 ×18.0 2.16.18	C	Old	

64 ] भी अन सिद्धान्त भवन सन्त्राक्ली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2 ,	3	4	5
1369	Ta/18/3	Ārati	) - N	_
1370	Ta/18/10	**	Dyānatatāya	
1371	Ta/3/4	••	<u>-</u>	_
1372	Nga/44/17	,, Samgraha	1	·
1373	Ta/39/2	Aşıaka	_	_
1374	Ta/6/9	Bhajana	- <del>-</del>	
1375	Nga/12/1	Bhajanāvalı	Ajita-Dāsa	_
1376	Nga/12/2	**	**	
1377	Nga/12/3	•••	31	<b>—</b> ,
1378	Nga/16/9	•	_	<b>-</b>
1379	<b>Ja</b> /31	Bhajana-Samgraha	Ajita-Dāsa	-
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatunga	,

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 65 ( Stotra )

	, ,				
6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	11.0×4.0 2.13.19	С	Old	
P.	D; H. Poetry	11.0×11 0 2.12.17	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.32	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.0 × 16.0 4.13.21	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 2.19.20	С	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×15.7 2.20.17	С	Old	
P.	D; H. poetry	25.0×22.0 445.15.24	С	Old	
P.	D; H. Poetry	21.0×26.0 25.14.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.4×22.0 42.22.26	С	Old	
P.	D; H. Poetry	13.0×15.0 5.16.21	C	Good	
<b>P</b> .	D; H, Poetry	20.5×12.7 12.16.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.6 5.21.18	С	Good	

60 ) श्री सैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatunga	_
1382	Nga/28/2	», y,	,,	_
1383	Nga/38/1	<b>,</b>	,,	<b>—</b>
1384	Ta/3/10	, ,,	39	_
1385	Ta/42/63	"	,,	_
1386	Ta/4/2	94 · 99	,,	_
1387	Nga/46/12/2	»,	39	_
1388	Nga/45/2	99 99	• ••	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	,, ,,	**	_
1390	Nga/48/21/1	,, ,,	***	_
1391	<b>Ta/9/</b> 5	»	**	Sivacandra
1392	Ta/14/26	<b>39</b> 39		_

67

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotia)

6	7	8 !	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 5.21.16	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	14.6×14.1 6.13.18	C	Old	
Ρ.	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 7.9.22	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 5.12.18	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 7.10.21	С	Old	
Ρ.	D; Skt. Poetry	22.5×13.0 7.18.13	С	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	25.2×12.1 34.9.34	С	Good 1849 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Old	
p.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 10.12.12	C	Old	
<b>P</b> .	D; Skt, Poetry/ Prose	19.0×14.5 15.19.18	С	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 8.11.15	С	Old	

68 ] श्री अंन सिद्धान्त भवन प्रन्थावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

- 1		3	4	5
1	2	3		
1393	Nga/20,5	Bhakiāmara stotra	Mānatungā	
			·	
1394	Nga/47/4/15	,, ,,		-
1395	Ta/18/13		_	-
1396	Ta/31	,, bhāṣā	Hemrāja	_
	·			
1397	Nga/41/2/5	,, Stocra	, ,,	_
1398	Ta/6,3	,, ,,	•	., , <b>-</b>
	, in the second second			
1399	Ja/35/4	99	,,,	_
	, ,			
1400	Nga/20/6	,, •,	.,	_
1401	Nga/25/1	»,	,,,	_
1402	Ja/52	" Vacanikā	Mânatunga	_
1403	Nga/47	" Stotra Vacani	kā Mānatunga	
1404	Nga/48/6/7	***	_	_
1707	2.801 (0) 01	***		

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 69 ( S.o.ra )

6	7	8	9	.10	11
P	D; Skt. Poetry	25.6×15.0 7.14.16	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 9.12.17	С	Oid ·	
P.	D; H. Poetry	19.5×16.1 6.12.25	c	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 12.8.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 5.19.20	С	Good	
₽.	D; H. Poetry	18.3×11.5 8.16.15	С	Good	
P,	D; H. Poetry	25.6×15.0 7.16.16	C	Good	
Ρ.	D; H. Poetry/	28.4×17.0 4.24.17	С	Good	7.25
P	D; H. Poetry	27.5×12.5 29.11.38	C	Good	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	20.1×16.3 47.10.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.2 25.7.18	Inc	Very Old	

70 | भी जैन सिद्धान्त भवन र न्यावसी Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara jikā	Jinasāgara	_
1406	Nga/44/13/5	,, stotra	Mānataṅga	_
1407	Ta/14/16	Bhakti samgraha		_
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	<u> </u>	_
1409	Ta/42/78	**	_	
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	_	_
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturavimiati stotrā	Śivacandra	_
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubisi	-	_
1413	Ta/4/6	<b>27 27</b>	Bhūpalakavi	_
1414	Ta/42/67	<b>27</b> 19	"	
1415	Nga/38/5	,, stotra	,,	_
1416	Nga/26/1/6	., caubisi stotra	99	_

Catalogue of Sanskrit. Parkrit. Apabhrmía & Hindi Manuscripts [ 71 ( Stotra )

	•		(	Stotra )	_				
6	7	8	9	10		1	1	•	
P.	D; H. Poetry	20 1×15.6 7.13.20	C	Good					
P.	D;H./Skt. Poetry	13.5 ×8.5 18.6.13	C	Good					
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	15.2×12.8 51.11.15	C	Old					
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.7 1.21.23	C	Good					
P.	P; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good					
P.	D; Skt. Poetry	10.3×9.5 6.7.8	С	Good					
ρ.	D; Skt. Prose	19.0×14.5 11.20.19	C	Old 1927 V. S.					
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.17.18	C	Old					
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 6.11.20	C	Old					
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good					
<b>P.</b>	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 6.9.22	C	Good					
P.	D; Skt. Poetry	29.0 ×17.8 3.21,17	С	Good					

72 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

		ì				1
1	2	3		4	Ĭ	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotra				-
1418	Nga/47/4/12	,, caul isi bhāṣā		_		
1419	Nga/47/1/57	Bisa-viraha-māna-ārati		_	* * *	_
1420	Nga/44/10/8	B∘ahma-lakşaṇa		_		
1421	Ta/42/87	Caityālaya stotrā		,	V 3	
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwari "		_		
1423	Nga/43/1	29 .99				<u> </u>
1424	Nga/43/3/5	Candra-prabha,,				<u> </u>
1425	Nga/48/6/5	., 29		.—		,
1426	Ta/42/98	Cāritra bhakti				-
1427	Nga/48/8/2	Caturvińśatí stotra	€9.34 - 1 2.71 €	- · · · · -	; d. d. g.√≃de	
1428	Nga/43/6/8	59 *9	\$ <b>19</b>	7 <del>1</del> 1 4 4 4 7	シャウ	
ł		•	ı		'	

[ 73

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

			`		
6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.17.18	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C ,	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.1 1.33.37	С	Good	
Ρ.	D; Skt. Poetry	14.9×11.2 4.8.19	·C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 3.9.20	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 4.7.18	С	Old	
p.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
<b>P</b> . ·	D; Skt, Poetry	9.6×6.0 6.4.8	С	Old :	
Р.	D; Skt Poetry	17.3×13.0 2.13.13	С	Old	

74 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturvimsati Stotra	_	_
1430	Nga/44/10/2	,, Jina Stotra	_	
1431	Ta/18/9	Caubisa tirthankara pada	_	_
1432	Ta/42/69	Cintamani Stotra	_	_
1433	Ja/61	,, Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	
1434	Nga/44/10/25	19 19 19	_	_
1435	Nga/47/4/66	Caubisa Jina Ārti	Bhairondāsa	
1436	Nga/47/4/74	27 29 27	_	_
1437	Ja/23/3	" Dan laka Vinati	Daulatar <b>âm</b> a	_
1438	Nga/47/4/32	Darsana Ināna Cari!ra Ārati	Dyānatarāya	<b></b>
1439	Ta/6/5	Darşana-Stuti	_	-
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	_	-

~					
6	7	8	9	10	. 11
P.	D. Skt. Poetry	17.0×13.0 3.9.21	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 1.11.28	С	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 11.12.16	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3 ×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	22.0×13.0 2.13.11	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5 × 13.1 4.12.22	С	Old	
P.	D; H. poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	22.4×14.2 6.18.15	C	Old	
P.	D; H./ Skt. Poetry/	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
<b>P</b> .	Prose D; H, Poetry	22.2×14.7 2.21.18		Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

76 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1441	Ta/42,89	Deva-stavana		_
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra	Vādirāja	_
1443	Nga/26/1/4	 19 99 '	,,	_
1444	Ta/42/66	" "	,,	-
1445	Ta/4/5		**	_
1446	Nga/44,10/10	», »	,,	
1447	Nga/47/4/10	., ,,	**	_
1448	Nga/44/15	,, ,,	-	_
1449	Nga/48/21/3	" "	"	<u> </u>
1450	Ta/9/7	39 19	<b>-</b> 1 1	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	<b>27</b>	<b>33</b>	
1452	Nga/25/2	23	-	- -

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3 ×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 5.9.22	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	P; Skt. Poetry	23.2×19.5 6.11.20	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.17.18	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.6×9.2 19.7.19	Inc	Old	It has no opening and closing.
Р.	D; Skt. Poetry	16.5×12,5 7.12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	19.0×14.5 12.19.19	C	Old	34.
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	28.4×17.0 4.24,17	C	Good	
ι		į.	j	1	The state of the s

78 ) भी र्शन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Gaṇadhara Stuti	_	
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotrā	_	-
1455	Nga/48/8/1	Ghanta-Karna "	<b>-</b> .	
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdhara Jāsa	_
1457	Ta/14/31	<b>&gt;&gt;</b>	-	_
1458	Ta/3/9	Guruvinati	Bhūdharadāsa	_
1459	Nga/45/3	Cuṇāvali	_	_
1460	Ta/9/4	Guṇāṣṭaka	Parmānanda	_
1461	Nga/ <b>3</b> 9	Jaina-pada-Samgraha	_	_
1462	Nga/44/10/26	Jinacaitya Namaskāra		<b></b>
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti	-	
1464	Ta/42/7	Jinapanjara Stotra	<u> </u>	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 79 ( Stotra )

to the					
6	7	8	9	10	11
Р.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 3.24.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9.26	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	9.6×6.0 4.4.8	С	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.12.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.0×11.0 18.15.39	С	Old	
P,	D; H. Poetry	19.0×14.5 5.14.17	С	Old	
₽.	D; H. Poetry/	11.0×17.5 183.9.23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 3.13.22	С	Old	
P	D; H. Poetry	22.0×13.0 2.14.32	С	Old	
. P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	

80 । श्री **जैन सिद्धान्त** भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	_	<del>-</del>
1466	Nga/48/18/1	<b>&gt;</b> > >>	_	_
1467	Ta/42/70	Jinarakṣā Stavana	<b>-</b> .	_
1468	Ja/50	Jinasahasranāma	Sikharacanda	-
1469	Ta/3/16	Jinendra darsana Stotra	_	-
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	_
1471	Ta/3/17	,, ,,	<b>-</b>	_
1472	Nga/26/13	Jwālāmāliní Stotra	Candraprabha	-
1473	Nga/43/3/6	••, ••,	_	
1474	Nga/43/6/3	19	_	_
1475	Nga/48/2	pp p,	_	
<b>1</b> 476	Nga/48/6/8	39	-	-

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 81 ( Stotra )

6	7	8	9	10	, 11
P.	D; Skt. Poetry	11.0×11.0 4.12.17	С	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	40.0×11.4 1.52.16	С	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; H. Poetry	32.2×20.2 90.13.37	C	Good 1957 V. S.	Copied by Bhagawanadatta.
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 1.12.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	С	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.36	С	Good	
P,	D;H.Skt. Poetry	29.0×17.0 3.24.17	С	Good	
P	D; Skt. Prose/ Poetry	17.0×13.0 4.9.21	Inc	Old	
P	D; Skt. Prose	17.3×13.0 2.12.11	C	Old	
P	D; Skt. Prose	12.8×9.5 6.10.12	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	Damaged.

8ी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3		4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-māliní Sto	tıa	_	_
1478	Ta/42/90	<b>21</b>	,	- -	_
1479	Nga/26/1/3	Kalyāṇa-mandir	a Stotra	Kumudacandra	
1480	Nga/47/4/7	,, ,,	,,	. 20	_
1481	Nga/48/21/2	,, ,,	,,	<b>&gt;</b>	_
1482	Ta/4/3	,, ,,	",	<b>39</b> ·	- "
1483	Ta/42/64	,, ,,	**	,,	- a
1484	Nga/38/2	,, ,,	**	19	<del>-</del>
1485	Ta/9/6	,, ,,	* * * * * * * * * * * * * * * * * * * *	97	Pandit Sivacañdra
1486	Nga/44/10/1	Kalyāņamandir	Stotra	Banārasidāsa	
1487	Ta/18/12	29	· . ••	99	<b>—</b>
1488	Nga/25/3	39"	: <b>.,</b>	(1 <b></b> ) (1	-

	<del>-</del>			-	_
	(Stotra)	٠.	i - 3 +	Lv	

7						
6	7	8	9	10	11	
P.	D. Skt. Prose	14.3×11.2 8.7.18	Inc	Old		
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	С	Good		
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 5.21.17	С	Good: d?		
P.	D; Skt Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Old		
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 10.12.12	С	Old		
Ρ.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 7.11.20	С	Old		
P.,	D; Skt. poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good		
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 8.9.22	C	Good		
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 16.20.19	С	Old		
P	D; H. Poetry	18.5×13.0 5.11.28	C	Good		
<b>P</b> .	D; H, Poeţry	11.0×11.0 8.12.17		Old		
<b>P.</b> -	D; H. Poetry	28.4×17.0 3.24.17	C	Gọod		

84 ो भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāņa-mandira	_	_
1490	Nga/44/13/3	39 B9	_	
1491	Nga/43/6/7	Kșetrapăla Stotra	_	_
1492	Ta/42/106	<b>3</b> 9	-	<b>-</b> .
1493	Nga/48/4	»	_	-
1494	Ta/42/103	))	_	_
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasran <b>ā</b> ma	_	
1496	Nga/47/4/5	99 39 39	-	_
1497	Ta/18/8	29 19 94		_
1498	Nga/41/Na	» » »	/	
1499	Nga/13/8	Lakşmi Stotra	_	<del></del>
1500	Ta/42/76	<b>29</b> •• <b>39</b>	_	-

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	13.5×8.5 12.6.13	C	Old	
Р.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3 ×13.0 5.13.13	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	P; Skt. Poetry	16.4×10.0 3.7.18	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
٤.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 5.21.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	11.0×11,0 5.12.13	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 3.13.16	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	24.3 ×18.0 2.21.20	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	

86 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

	District District District, Julia Siddhant Bhavan, Arran							
1	2	3	4	5				
1501	Nga/26/1	Lakşmi-Stotra	_	_				
1502	Nga/44/4	Mahāvira-Ārati	_	_				
1503	Ta/30/8	Mañdaloddhära Stotra		_				
1504	Ta/3/41	Mańgala Ārati	Dyānatarāya					
1505	Nga/43/6/5	Manibhadra Stotra	-	_				
1506	Ta/42,77	Mañgalâşţaka	_	_				
1507	Ta/39/23	Maṅgala-jina-darśana	Rūpacandra					
1508	Ta/3/7	Muniśwara Vinatí	Bhūdharadāsa	_				
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śripāla	_				
1510	Nga/47/4/4	,,	25					
1511	Ta/42/102	Nandiśwara-Bhakti	_					
1512	Nga/47/2	99 99	<b>-</b>	_				

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 87 ( Stotra )

6	7	8	9	10	11
Р.	D; Skt. Poetry	29.0×17.7 1.24.16	С	Good	
<b>P</b> .	D; H. Poetry	21.0×16.0 3.13.14	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	20.1×15.0 2.13.20	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P.	D; Skt. H. Prose	17.0 × 13.0 5.13.11	С	Old	
P.	Poetry D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.0×12.0 1.24.18	Inc	Old	
Р,	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
Р	D; H. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry/ Prose	20.2×15.8 8.10.27	C	Old	

88 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5 .
1513	Ta/6/12	Naraka Vinatí	Guṇasāgara	-
1514	Nga/48/14	Nārāyaṇa-lakṣmi-stotra	_	_
1515 .	, Та/42/74	Nava-graha-stotra	-	_
1516	Ta/42/39	,, ,,	-	<b>-</b>
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	_	<del></del>
1513	Nga/43/6/9	" Stotra	_	
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantrā-Stotra	_	
1520	Nga/47/4/65	Neminātha Ārati	Bhairondása	
1521	Nga/48/6/4	Neminātha Stotra	_	_
1522	Nga/38/11	Nijāmaņi	Brahma Jinadāsa	<b>—</b> ;
1523	Ta/42/100	Nirvāņa Bhakti	_	_
1524	Ta/6/11	" Kāṇda	Bhagavatid asa	_

Œ.	Č.			(	Stotra)	
75	6	7	8	9	10	11
	P.	D. H. Poetry	22.2×14.7 4.18.15	C	Old	
	Р.	D; Skt. Poetry/ Prose	13.8×12.0 29.10.13	C	Good	
	P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
	P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
(	P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 4.12.17	С	Old	
	P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.13	c	Old	
	P.	D; Skt. poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
	P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 1.16.18	С	Old	
	Р.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 3.7.18	С	Old	The mss. is totely damaged.
ř	Р.	D; H. Poetry	15.7×9.0 7.9.22	C	Good	
	Ρ.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good .	
	P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 3.18.15	С	Old	

90 ] धी र्थन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirv <b>ā</b> ņa-Kāṇda	Bhagavatidāsa	_
1526	Nga/47/4 <b>/</b> 35	<b>))</b>	<b>,.</b>	_
1527	Nga/47/5/11	<b>,</b>	<b>33</b>	_
1528	Ja/35/3	29 99	***	_
1529	Nga/25/7	19 99	**	_
1530	Nga/26/1/11	<b>.</b>	<b>»</b>	_
1531	Ta/6/21	99 9,		_
1532	Nga/48/26/6	? <b>?</b>	_	-
1533	Nga/26/1/10	29		_
1534	Nga/33/5	9; 9;	<u>-</u>	_
1535	Nga/47,4/34	2° 2 <b>6</b>	_	-
1536	Ta/47/5/10	**		_

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 5.10.27	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 4.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 3.16.15	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 2.26.26	С	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 3.18.21	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	16.5×13.5 3.8.24	C	Good	
Р.	D; Pkt. Poetry	29.0×17.8 2.23.16	С	Good	
p.	D; Pkt. Poetry	22.7×15.7 3.18.15	C	Good	
<b>P</b> .	D; Pkt, Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16.5×16.0 3.12.19	G	Old	

92 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्यावली Shri Devakumac Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

	2	3	4	5
1	Ta/44/20	Nirvāņa Kāņda	_	
1538	Ta/3/35	99 99	Bhaiyā Bhagavatid <b>ās</b> a	
1539	Nga/44/13/1	19 29		
1540	Nga/26/1/12	Omkārastuti	_	
1541	Nga/47/4/61	Pada	_	_
1542	Nga/47/5/8	19	_	
1543	Ta/18/15	••	Kusalsuri	_
1544	Ta/14/38	"	_	×
1545	Ta/30/3	<b>19</b>	_	
1546	Ta/28/2	,,	Amicanda	
1547	Ta/27/2	••	Jinadāsa	_
1548	Nga/44/13/9	,,		_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 93 (Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P	D; H. Poetry	22.5×15.0 5.12.31	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×8.5 4.6.13	С	Good	Starting three pages are missing.
Р.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 2.23.17	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.6 × 18.0 3.16.18	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 1.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 4.12.17	C	Old	
P,	D; H. Poetry	15.2×12.8 2.12.21	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	20.1 × 15.6 2.13.20	С	Old	
P	D; H. Poetry	19.8×17.2 1.14.18	С	Good 1948 V. S.	
<b>P</b> .	D; H. Poetry	19.7×16.5 2.14.21	C	Good 1948 V. S.	Copied by Amicanda.
Р.	D; H. Poetry	13.5×8.5 3.6.13	Inc	Old	

94 । श्री जैनं सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada		_
1550	Nga/48/4	>>	_	_
1551	Nga/44/19/7	"	-	_
15.52	Nga/37/2	**	<b>-</b> .	
1553	Ta/3/84	••	_	_
1554	<b>J</b> a/65/6	19	Jagarāma	
1555	Nga/37/13	,,	Ramcandra	_
1556	Ja/65	<b>&gt;</b> 7	Jagarāma	_
1557	Ja/65/2	,,	_	_
1558	Nga/37/12	<del>) 9</del>	Vṛndāvana	
1559	Ja/29	<b>,.</b>	_	
1560	Nga/31/1	Padasangraha	_ )	_

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 95 (Stotra)

6	7	8	9	10	11
Р.	D. H. Poetry	16.8×12.8 1.11.12	С	Old	
P.	D; H. Poetry	13.5×12.0 2.8.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 3.9.23	Inc	Old	
Р.	D; H. Poetry	17.4×11.0 5.7.17	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 6.12.31	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	11.5×10.0 53.10.14	С	Good	
P.	D; H. poetry	22.0×13.0 8.15.13	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	11.5×10.0 59.1 <sub>0</sub> .14	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	11.5×10.0 4.10.14	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.0×13.0 4.14.13	С	Old	
Ρ.	D; H. Poetry	21.1×14.0 3.15.15	Inc	Old	Closing is missing.
P,	D; H. Poetry	14.8×14.8 82.13.15	c	Good	

96 ] श्री र्जन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada samgraha	_	_
1562	Ja/21/2	Pada vinatí	_	-
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyanataraya	_
1564	Nga/37/10	Pada holí		_
1565	Ja/51/14	Padmāvati aş to ttara śatanāma	_	
1566	Nga/43/6/1	Padmāvati stotra		
1567	Nga/48/11/3	91 99	_	_
1568	Ta/39/5	,, ,,		
1569	Ta/42/82	29 39	_	
1570	Ta/30/5	), »,		
1571	Ja/51/17	,, ,,	_	_
1572	Nga/25/15	,, ,,	_	_

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

4				*	
<b>₹</b> 6'	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.0×15.3 12 11.14	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	22.8×18.2 31.16.13	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 0.24.17	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.0×13.0 4.15.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3×13.0 10.13.12	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	16.5×13.2 8:13.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 5.19.20	С	Old .	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
p.	D; Skt. Poetry	20.1×15.6 2.13.20	С	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1:13.35	С	Good	
P.	D; Skt Poetry	28.4×17.0 22.24.17	С	Good	et en en en egit tre skapan.

98 ] श्री जैन सिदान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5.
1573	Nga/25/9	Padmāvati stotra	_	
1574	Ja/51/12	" sahastranāma	-	
1575	Nga/48/11/1	19 29	<u>-</u>	_
1576	Nga/46/13	>> >>	_	<u>-</u>
1577	Ta/42/36	<b>99</b>	. —	, <del></del>
1578	Ta/39/15	<b>99</b> 9•	Sevārāma	
1579	Nga/44/12/2	" vinati	-	-
1580	Nga/48/1/4	» »	_	_
1581	Nga/44/17	Padmanandipaņca- vimsatikā	Padmanandi	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
1582	Nga/43/3/3	Pänco-namaskāra stotra	<b>-</b>	_
1583	Ta/16/4	» »	<u>-</u>	_
1584	Nga/44/10/11	Parameşthi stotra	_	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts

[ 99

			( ;	( Stotra		
5	7	8	9			

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 3.24.17	C	Good	
Ρ.	D; Skt. Poetry	32.3 ×20.1 7.13.35	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×13.2 14.12.17	С	Old	
P.	D; Skt. Prose	13,0×11.6 1.7.10	Inc	Old	Only first page is available.
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	С	Go∙d	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 14.22.17	С	Old -1827 V. S.	
<b>P.</b>	D; Skt./ H. Poetry	32.3×20.2 3.23.17	С	Old	
P.	D; H. Poetry	14.0×11.7 8.10.15	С	Old	
P.	D; H. Prose	11.0 × 10.2 12.11.9	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 5.9.19	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	15.5×9.5 13.8.17	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	С	Good	

100 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jajn Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	_	-
1586	Nga,'44/10/15	<b>39 37</b>	<del></del>	_
1587	Ta/42;86	Pārśwanātha stotra	<del>-</del> ,	
1888	Ta/42,74	,, ,,	<del>-</del>	_
1589	Nga/48/6/6	<b>15 2</b> 7	_	_
1590	Nga/43/3/4	) <b>,</b> ,,	_	· -
1591	Nga/30/2/3	» <b>, 19</b>	_	_
1592	Nga/41/2/8	<b>3.</b> 3.	Dyānatarāya	
1593	Ta/3/53	" stufi	Vinodīlāla .	-
1594	Ta/42/92	,, stotra	_	_
1595	Ta/18/5	Pārśwanāţhāştaka		_
1596	Ta/30/1	<b>99</b> 99	_	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 101 ( Stotra )

<u>-</u> 6	7	8	9	10	11
P.	<u> </u>	22.2×14.7 2.18.20	C	Old	
P.	D; Skt.	18.5×13.1 3.13.22	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3 × 19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	c	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 3.7.18	С	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 2.9.18	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 3.9 20	С	Old	
P,	D;Skt./H Poetry	14.5×11.0 3.9.17	C	Good	
Р	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P	D; Ski. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	11.0×11.0 3.13.19	С	Old	
<b>P.</b>	-D;H /Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing.

102 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakı mar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

2	3	4	1 5
Nga/47/4/56	Pārśwajina-ārati	Bhairoadāsa	_
Nga/48/20	Pratyangirā-siddhi- mantra-stotra	_	
Ta/42/81	Rşi-mandala Stotra		
Nga/31/1/7	",	<b>-</b> .	_
Nga/47/4/17	» »	_	_
Nga/26/10	>> >>	_	_
Nga/43/5	», »,		
Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banārasīdāsa	_
Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	_
Nga/26/1/13	)) )) ))	23	_
Ta/19/2	<b>19</b>	10	_
Ta/14/25	" ., stavana	Āśādhara sūri	-
	Nga/47/4/56  Nga/48/20  Ta/42/81  Nga/31/1/7  Nga/47/4/17  Nga/26/10  Nga/13/5  Nga/31/2/3  Ta/42/16  Nga/26/1/13  Ta/19/2	Nga/47/4/56         Pãrśwajina-ārati           Nga/48/20         Pratyangirā-siddhimantra-stotra           Ta/42/81         Pārśwajina-ārati           Nga/31/1/7         Pārśwajina-arati           Nga/31/1/7         Pārśwajina-arati           Nga/31/1/7         Pārśwajina-arati           Nga/31/1/7         Pārśwajina-arati           Nga/31/1/7         Pārśwajina-arati           Nga/31/1/7         Pārśwajina-arati           Nga/47/4/17         Pārśwajina-arati           Nga/47/4/17         Pārśwajina-arati           Nga/47/4/17         Parimandala Stotra           Nga/26/10         Parimandala Stotra           Nga/26/11         Parimandala Stotra           Nga/26/11/13         Parimandala Stotra           Nga/26/1/13         Parimandala Stotra           Nga/26/1/13         Parimandala Stotra           Nga/26/1/13         Parimandala Stotra           Pārimandala Stotra         Parimandala Stotra           Nga/26/1/13         Parimandala Stotra           Parimandala Stotra	Nga/47/4/56         Pärśwajina-ārati         Bhairoadāsa           Nga/48/20         Pratyańgirā-siddhimantra-stotra         —           Ta/42/81         #şi-mandala Stotra         —           Nga/31/1/7         "         —           Nga/47/4/17         "         —           Nga/26/10         "         "           Nga/13/5         "         —           Nga/31/2/3         Sādhū-Vandanā         Banārasidāsa           Ta/42/16         Sahasra-nāma-stotra         Jinasena           Nga/26/1/13         "         "           Ta/19/2         "         "

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 103 (Stotra)

6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	С	Old	
<b>P.</b>	D; Skt. Poetry/ Pros	17.9×18.5 24.7.22	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	12.3×16.6 7.16.14	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 4.24.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.4×12.3 26.13.15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P.	D; H Poetry	12.3×16.6 4.18.16	C	Good	
۶.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 4.33.37	С	Good	
р.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 6.23.17	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	10.3×9.5 54.7.9	С	Good	Sixteen pages have no folio and paging.
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 14.11.15	C	Old	

104 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasṛa-nāma-stotra	Jinasena	_
1610	Nga/31/2/8	,, ,, ,,	_	_
1611	Ta/29	<b>39 35</b>	-	_
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadra-stotra	-	_
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	_	_
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	_	_
1615	Nga/48/13	Sandhyā	_	
1616	Nga/47/4/58	Śantijine ārati		
1617	Ja/29/1	Śańti-stuti		_
1618	Ta/42/73	Śāṅtināthāṣtaka		
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidā <b>s</b> a	_
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	<del>-</del>	_

		1	Canadana
		(	Stotra
		•	

6	7	8	9	10	11
Р.	D; Skt Poetry	11.0×11.0 26.10.10	Inc	Old 1842 V. S.	
P.	D; H. Poetry	12.3×16.6 9.16.16	Inc	Old	Last sataka is missing.
	D; H. Prose	19.5×15.0 50.12.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 4.33.37	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.5.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3.21.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.0×10.2 11.6.19	С	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 2.12.14	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.35	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	C	Old	

106 ) धी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	1 2	3	4	
1621	Ta/42,18	Saraswati stuti	Malaya Kirti	
1622	Ta/42/75	,, stotra	- ·	<u> </u>
1623	Nga/48/9		_	-
1624	Ta/40	Sāstra Vinati		-
1625	Ta/42,96	Siddha-bhakti	_	_
1626	Ta/18,17	Sitā-Vinati	<b>-</b> ,	_
1627	Nga/41/2/7	Śripāladarśana		_
1628	Nga/37/1	Śripala Vinati	Sripālarājā	_
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti		
1630	Ja/16/1	Stotra	<b>-</b>	
1631	Nga/4 <sup>7</sup> /4/31	Sthāpanā Āratī	_	_
1632	Ja/32	Stuti	Hatidāsa	.,
		I	1	1

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 107 (Stotra)

					_
6	7	8	9	10	- 11
Р.	D. Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.7×11.7 6.14.12	С	Old	
P.	D; H. Poetry	13.7×9.7 3.11.10	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	11.0×11.0 13.9.8	C	Good	
P.	D; H. poetry	14.5×11.0 5.9.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	9.8×15.7 5.13.11	С	Good	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	23.3×19.0 4.15.18	С	Good	
Ρ.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×15.0 5.15.2)	2 <b>C</b>	Good 1965 V. S.	

Shri Devakuma: Jain Oriental Library, Jain Siddhant Rama Arrah

	-			wa 🎏
1	2	3	4	1.5
1633	Ta/42/88	Suprabhāta stotra	_	
1634	Ja/51/16	Sūrya-sahasra-nāme	-	
1635	Nga/47/4/26	Swayambhū stotra	-	-
1636	Ta/42/10	<b>33</b> 33'	-	-
1637	Ta/3/30	,,	_	-
1638	Ta/14/23	19 9•	_	_
1639	Ja/29/4	Vinati		
1640	Nga/25/8	**	_	_
1641	Nga/37/11	••	V <sub>r</sub> ndavana	_
1642	Ja/45/5	<b>)</b>	Bhūdharadāsa	- 0
1643	Ta/3/40	<b>9</b> 9	_	
1644	Ta/42/29	<b>,</b>	Jnánaságara	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 109 (Stotra)

I.				( 2,011, )	
6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt.	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32,3×20.1 3,13,35	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old	
₽.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
Р.	P; Skt. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 20.11.15	С	Old	
Р.	D; H. Fostry	21.1×14.0 16.13.13	С	Good	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 3.24.17	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13,0 5.15.14	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×11.3 3.10.23	С	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.31	С	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3 ×19.0 2.33.37	C	Good	

110 । श्रो जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

		_		1
1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinati	_	_
1646	<b>Ta/3</b> 0/6	**	Harşakirti	_
1647	Nga/48/23/5	<b>31</b>	- -	_
1648	Nga/44/19/3	••	_	_
1649	Nga/44/12/3		<del>-</del>	-
1650	Nga/47/4/75	,,	Bhūdharadāsa	-
1651	Nga/44/10/7	••	_	_
1652	Ta/3/8	Vinati-tribhuvana swāmi	_	· <b>–</b>
1653	Nga/44/10/9	Vişapahara stotra	Dhananjaya Kavi	_
1654	Nga/38/3	,, ,,	<b>,.</b>	_
_1655	Nga/26/1/5	py 99	99	. <b>–</b> ·
1656	Nga/48/21/4	<b>69</b> 99	**	
			l	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 111 ( Stotra )

	*				
6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.7×14.0 5.10.15	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.1×15.6 2.13.20	С	Good	
P.	D; H. Poetry	16.8 × 12.8 3.11.12	С	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 3.10.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×20.4 4.23.17	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	
P,	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	С	Good	
P	D; Ski. Poetry	15.8 ×9.0 6.9.22	С	Good	
P	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 4.21.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 8.12.12	С	Old	

112 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2		3	4	5
1657	Ta/9/8	Vişāpahār	a stotra	Dhananjaya Ka	avi
1658	Ta/4/4	••	<b>»</b> ;	"	
1659	Ta/42/65	,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	<b>&gt;)</b>		_
1660	Nga/47/4/9	,,,	: <b>35</b> 	<b>)</b> •	_
1661	Nga/44/10/3	,,,	<b>99</b> .	<del>-</del>	_
1662	Nga/47/4/14	,,	<b>11</b>	_	_
1663	Nga/44/12/4	**	••	- <del>-</del>	_
1664	Nga/44/13/2	***	<b>3</b> >	<b></b> , .	<u>.</u>
1665	Nga/25/4	**	<b>??</b>	_	· · · · · · · · · · · · · · · · · ·
1666	Ja/35/5	<b>,,</b>	<b>&gt;&gt;</b>		
1667	Ja/16/4	<b>)</b>	<b>3</b> 3		
1668	Nga/47/4/6	Vṛhat-saha	stra-nāma		-

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 113 (Stotra)

_4				( brottu )	•
6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.0×14.5 13.19.20	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 6.11.20	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.17	С	Old	
<b>♥</b> P.	D; H. Poetry	12.5×13.1 4.12.23	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×20.2 4.23.17	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	13 5×8.5 13.6.13	С	Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 4.24.17	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	18.3×11.5 5.16.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 4.15.18	С	Good	
Р.	D; Skt. Po <b>e</b> ţry	20.6×18.0 13.16.14	C	Old	

114 ] श्री र्जन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	V <sub>r</sub> hat-svayambhū	Samanta-bhadra	_
1670	Nga/43/70	,, ,, stoira	2)	<del>-</del>
1671	Nga/26/1/9	" ,,	***	_
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	<b>-</b>	_
1673	Nga/30/2/7	Abhişēka-vidhi	-	_
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā		
1675	Nga/41/Ta	91 99	-	-
1676	Nga/41/ḍha	Ādityawāra-pūjā	-	_
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣaṇa	-
1678	Ta/39/22	Ākṛtrima-caityālaya-Āratī	- -	_
1679	Ta/3/22	", ", Arhya	<del>-</del>	_
1680	Nga/26/2/8	,, ,, pūjā -	<del>-</del>	_

Catalogue of Sanskiit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 115 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ H. Poetry/	20.8×16.3 18.15.18	С	Old	
٥.	Prose D; Skt./ H. Poetry/	17.6×13.0 22.12.21	С	Good	
•	Prose 1); Skt. Poetry	29.0×17.8 13.23.17	С	Good	
•	D; Pkt./ Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
	D; Skt. Poetry	19.0×14 8 1.9.26	Inc	Old	It has no closing.
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 4.12.19	С	Old	
۶.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	С	Old	
	D;Skt./H Poetry	14.5×11.0 2.13.16	C	Old	
	D; Skt. Poetry	27 3 ×17.6 15.10.31	С	Good	
	D; Pkt. Poetry	20.0×12.0 1.24.18	С	Old	
	D; Skt, Poetry	22.5×15.0 1.12.32	С	Good	
•	D; Skt Poetry	30.3×17.5 2.16.16	С	Good	

116 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन म्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5.
1681	Ta/42/30	Ananta-jina-pūjā	<u> </u>	
1682	Ta/42/49	Anantā-pūjā-vidhi	_	
1683	Ja/51/22	19 29 27	_	_
1684	Nga/44/10/12	Ari-hanta-dakşiņī	. <del>-</del>	
1685	Ta/39/6	Aşţabijakşara-pūjā	- -	_
1686	Ta/14/28	Aştānhikā-pūjā	, <del></del> .	_
1687	Ta/35/6	99 19	-	_
1688	Ta/42/26	<b>)</b> , ))	_	_
1689	Nga/47/8/15	,, ),	; <u>.</u>	_
1690	Ta/3/33	,, ,,	Dyānatarāya	_
1691	Nga/47/4/24	Ațhāi-pūjā	<b>59</b>	<u>-</u>
1692	Nga/27/5	Bāhubali-pūjā	, <del>-</del>	· <u></u>

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 117 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

2	,	1				· **
6	7	8	9	10	, 11	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	,	
Ρ.	D; H. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good		
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.1 2.13.35	С	Good	:	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 4.13.32	Inc	Good		
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.0×12.2 4.19.20	С	Old		
P.	D; Skt. Poetry	15.2×I2.8 12.12.18	С	Old		
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.5×12.6 11.10.16	С	Old		
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good		
P.	D; Skt. Poetry	20.8 × 16.3 22.15.17	C	Old		
P.	D;Skt /H Poetry	22.5×15.0 7.12.31	C	Old		
<b>P.</b>	D; H. Poetry	20.6×18.0 8.16.18	С	Old		
P.	D; H. Poetry	18.5×30.5 6.21.20	C	Good		

118 ] भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्यावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā		_
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	<del>-</del>	_
1695	Ja/38/1	Bisā-Tīrthańkara arghya	<del>-</del>	_
1696	Ta/3/25	Bīsa-Virahamāne-pūjā	<del>-</del>	
1697	Nga/48/12/2	yy yy 09	_	_
1698	Ta/14/5	,, ,, ,,	_	_
1699	Nga/48/23/1	,, ,, ,,	_	_
1700	Nga/47/4/21	yy yy yy	- <u>-</u>	_
1701	Nga/41/2/2	Bīsa-Vidyamāna-pūjā	_	-
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tirthańkara-jakari	<del>-</del>	
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	<del>-</del>	<u>-</u>
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tirthank ara- Jayamālā	_	-

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 119 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

8					
6	7	8	9	10	11
Р.	D. H. Poetry	20.8×16.3 4.16.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 1.16.18	С	Old	
P.	D; H, Poetry	22.0×13.1 9.12.27	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 4.12.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×12.0 4.8.12	, <b>C</b>	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 3.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. poetry	16.8×12.8 4.11.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.17	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 4.9.17	С	Good	y
P.	D; H. Poetry	30.3×17.5 2.16.16	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	20.6×18.0 1.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×13.5 2.8.24	С	Old	

120 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Caṅdra-prabha-pūjā	_	<u> </u>
1706	Nga/17/1/1	• • • • • •	Ajitadāsa	- - -
1 <b>7</b> 07	Ta/42/15	Caretra-pūjā	or <del>y</del> safe c	_
1708	Ta/14/11	,, ,,	Narendrasena	
1709	Nga/47/4/30	<b>,,</b>	4 ( <b>34</b>	} + 1 <u>_ 9</u>
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakşiņi-pūjā	e je <del>r</del> enske po	
1711	Ta/39/8	" mātrkā pūjā		· , —:
1712	Ta/39/9	Caturanivišati- tirthankara-pūjā		
1713	Nga/33/1	33 39 39	<del>-</del>	<del>:</del> :;
1714	Nga/33/2	2) 2) 1)	· · ·	
1715	Ja/34/4	27 29 29	_	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •
1716	Nga/47/7	22 23 13	_	<u> </u>

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 121 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt.	16.5×16.0 5.12.19	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	25.0×15.0 3.19.21	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.12.16	С	Old	
P.	P; Skt. Poetry	20.6×18.0 0.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.15	· <b>C</b>	Old	
Ϋ.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.20	С	Good	
P.	D;H /Skt. Poetry	23.4×15.0 21.19.14	С	Good	Its two opening pages are damaged. Copied by Rāmcandra
P.	D; H. Poetry	22.5×13.4 4.16.12	С	Good	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	19.0×14.9 3.15.20	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.0×14.1 100.13.13	С	Old	

122 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

	201 201020-00			
1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturavinšati-jina Jayamāl <b>ā</b>	_	
1718	Nga/41/ņa	Caubisa-tirthankara-pūjā	-	
1719	Nga/48/3	- 22 24 25	-	_
1720	Ja/55	39 39 39	-	
1721	Ta/13	,, ,,	Caudhari Rämacanda	<b></b>
1722	Nga/46/10	Caubisi pūjā	_	_
1723	Nga/38/8	Caturavinsati tirthankara pada		_
1724	Ta/5/4	Cintāmaņi-pūjā	Sambhūnátha	_
1725	Ta/24/6	" pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	_
1726	Nga/47/8/16	), <sup>),</sup> <sup>),</sup>	_	
1727	Ta/39/1	n n	_	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
1728	Ta/42/38	99 °9 99	_	-
•			•	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 123 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D;H./Pkt Poetry	.) 15.2×12.8 3.11.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	С	Old	
P.	D; H. Poetry	40.9 × 15.8 2.40.15	С	-	
Р.	D; H. Poetry	35.0×18.0 71.11.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.0×13.3 113.10.22	С	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×17.8 4.13.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 10.24.16	С	Good 1793 V. S.	
<b>P</b> .	D; Skt. Poetry	30.2 × 20.0 16.37.33	С	Old 1819 V, S.	
P	D; Ski. Poetry	20.8 ×16.3 6.16.15	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2.19.20	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3 ×19.0 2.33.37	C	Good	

124 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintâmani Jayamāla	_	_
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pāṭha	_	_
1731	Nga/44/13/8	37 SS	_	_
1732	Ta/35/1	29 19	<u>-</u>	_
1733	Ta/42/61	" pūjā	_ .1	_
1734	Ta/42/13	,, ,,		_
1735	Nga/47/4/28	<b>29 29</b> .	Narendrasena	_
1736	Ta/3/29	Daśalākş <b>a</b> ņi "	<b>Dyā</b> natarāya	_
1737	Nga/47/4/25	<b>39</b>	<b>3•</b> 177	<del>-</del>
1738	Nga/44/10/14	,, ,,	Brahma Jinadasa	
1739	Ta/14//8	<b>37</b>	1 <u> </u>	
1740	Ta/42/59	99 39	Dyānatarāy a	-

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 125 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
Р.	D;Pkt./ H./Skt. Prose	20.0×12.0 1.23.19	С	1825 V. S.	
Р.	D; Skt. Poetry	16.5×13.5 2.8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×8.5 4.6.13	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 2.10.16	С	Old	
Ρ.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×00.0 2.33.37	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Old	
Р.	D;Skt./H Poetry	22.5×15.0 7.12.31	C	Good	
Р.	D;Skt./H. Poetry	20.6×18.0 15.16.18	C	Old	
<b>)</b> .	D; Skt./ H. Poetry/	18.5×31.1 4.13.22	C	Good	
	Prose D; Skt, Poetry	15.2×12.8 16.12.12	С	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	

126 ] यी र्जन सिद्धान्त भवन ग्रन्यावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5 .
1741	Ta/42/9	Daśa-lākşani-pūjā		_
1742	Ta/35/5	P) 29 39	_	_
1743	Ta/38/1	,, ,, jayamālā	_	_
1744	Ta/24/2	", ", Vratodyapana	_	_
1745	Ta/39/10	Digpālārcana	_	_
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājādhara Sūri	_
1747	Nga/25/14	31 gg	_	_
1748	Nga/14/4	,, ,, ·	<b>-</b>	_
1749	Ja/45		<del>-</del>	_
1750	Nga/27/2	., ., ., ., ., ., ., ., ., ., ., ., ., .	_	-
1751	Nga/26/2/13	y• y•	- ·	
1752	Nga/41/2/1	9, 29	<del>-</del>	: •

Catalogue of Sanskrit, Prakrit. Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāţha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	15.5 × 12.6 3.10.15	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	14.5 ×12.5 15.8.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 5.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.0×12.2 3.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 5.16.16	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28.4×17.0 6.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8 × 26.0 13.14.25	С	Good	
Р.	D; H./ Skt. Poetry/	15.0 × 11.3 36.11.33	C	Old	
P.	Prose D; Skt. Poetry	26.0×17.7 8.20.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30.3 ×17.5 2.19.13	Inc	Good	
Р.	D; Pkt./ Skt. Poetry	14.5×0.11 17.9.16	C	Good	

128 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

-	2014	<b></b>		
1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	_	· <u></u> ·
1754	Nga/44/2	<b>D</b> 7	_	
1755	Nga/47/4/18	<b>))</b>	Dyānatarāya	<u></u> -
<b>17</b> 56	Nga/44/3	<b>&gt;&gt;</b>	_	<b>-</b>
1757	Ta/14/4	20	_	_
1758	Ta/16/1		_	_
1759	Ta/18/2	> <del>&gt;</del>		_
1760	Nga/48/19	,,,	<del>-</del>	
<b>1</b> 761	Nga/48/23/1	<b>&gt;&gt;</b>	_	
1762	Ta/35/2	<b>&gt;&gt;</b>	_	_
1763	Nga/44/10/16	,,,	<u> </u>	. — · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
<b>1</b> 764	Nga/48/12/1	<b>&gt;&gt;</b>	_	_
			,	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 129 ( Pūjā-Pāţha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	22.5×15.0 5.12.36	С	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry/ Prose	20.5×16.0 9.15.17	Inc	Old	
P.	ł	20.6×18.0 12.16.18	С	Old	
P.	D; H./ Skt. Poetry/ Prose	20.0×16.0 26.14.19	С	Old	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	15.2×12.8 10.12.16	Inc	Old	
Р.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.5×9.5 11.6.18	Inc	Old	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	11.0×11.0 13.13.19	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	16 1×10.1 8.8.26	С	Old	
Р.	D;skt /H. Poetry	16.7×1 .9 12.10.16	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 7.10.16	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	С	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.5 × t2.0 17.8.13	С	Good	

130 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

				7
1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūj <b>ā</b>	_	_
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	_	_
1767	Ta/5/10	Deva-pratișțhâ Vidhi	_	_
1768	Nga/48/1/2	Dharaṇendra-pūjā	_	_
1769	Ta/39/3	yy 99		
1770	Ja/51/11	19 93	_	_
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyāṇaka	Rūpacanda	_
1772	<b>J</b> a/57	Giranāra-pūjā	, <del>-</del>	
1773	Nga/48/24	39 <b>99</b>	_	_
1774	Nga/47/8/11	99 19	<del></del>	_
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	<del>-</del>	_
1776	Nga/14/7	Gurupūjā	_	
•	,	×3	•	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 131 (Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./ Skt Poetry	32.3×19.0 3.30.37	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.0×15.0 1.27.20	С	Good	
P.	D; Skt. Prose	13.7×12.0 89.10.13	C	Old	
P.	P; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.19.20	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.I2.31	<b>C</b>	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.4 10.15.21	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	16.2×9.5 8.6.21	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 6.15.17	C	Old	
P.,	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12. <sup>3</sup> 2	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.8 ×26.0 7.14.25	C	Good	

132 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodilāla	_
1778	Nga/47/9/42	27 29	_	_
1779	Ta/14/39	22 pr _	_	· _
<b>17</b> 80	Ta/42/8	99 99	Brahma Jinadāsa	_
1781	Nga/44/10/19	39 yy	_	_
1782	Ta/18/6	<b>31</b> 33	_	_
1783	<b>N</b> ga/26/2/5	), ),	Brahma Jinadāsa	_
1784	Ta/3/27	" "	Hemarāja	_
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	-	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	_	_ (
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna		· _
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	-	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 133 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

				*	
6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./H. Poetry	14.5×11.0 6.9.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4,16.18	. C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.2×12.8 3.14.19	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	11.0×11.0 4.13.19	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 3.16.16	С	Good	
P,	D; H. Poetry	22.5×15.0 5.12.31	C	Good	
<b>P</b> =.	D; Skt. Poetry/ Prose	14.0×11.7 12.10.12	С	Old	
P	D; Ski. Poetry/ Prose	30.2×20.0 1.37.33	С	Old	
, <b>P.</b>	D; Skt. Poetry/ Prose	25.0×15.0 68.21.17	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	C -	Good	

134 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	i 4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guṇa-sampati-pūjā	_	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vāṇī-pūjā	Brahma Jinadāsa	-
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swami-pūjā	-	_
1792	Ja/63	99 19	_	_
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	-	_
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	_	_
1795	Ta/14/10	19 99	Narendrasena	-
1796	Ta/42/14	59 99	<del>-</del>	-
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālini-pūjā		
1798	Nga/43/6/10	)) »)	<del></del>	_
1799	Nga/47/8/17	9) 2)	( <u> </u>	<b>-</b>
1800	Ta/42/40	Jyeştha-jinavara-pūjā	· -	

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit. Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 135 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6				·		
6	7	8	9	10	11	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 6.12.19	C	Old		; ·
P.	D;Skt./H. Poetry	22.5×15.0 6.12.31	С	Good		
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 8.15.17	С	Old		
P.	D;Skt./H. Poetry	16.7×12.8 11.8.22	C	Good		
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Old		
P,	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old		
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 7.12.16	C	Old		
Р.	D; Skt. Poetry	32.3 × 19.0 2.33.37	С	Good		
P.	D; H. Poetry	25.0 × 15.0 5.20.21	С	Old		
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 7.13.13	C	Old		
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 2.15.17	Inc	Old		
P.	D; H./ Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good		

136 ] श्री र्जन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhişeka	<u>-</u>	_
1802	Nga/41/Ka	Kalikunda-pūjā	_	_
1803	Nga/47/4/40	99 <b>)</b> 9		_
1804	Ta/42/22	<b>&gt;9</b>	- -	_
1805	Nga/44/10/18	" pārśwanāthapūjā	-	-
1806	Ta/14/12	29 31 31	_	
1807	Nga/26/2/6,7	, (F. V.)		_
1808	Ta/24/1	Kanjikā-vratodyāpana	Pandita Nandarāma	_
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	983	_
1810	Ta/42/24	Kşmā-vani ,,	a	
1811	Ta/30/9	Kşetrapāla ",	Viśwasena	_
1812	Ta/41/28	99 99	Subhacandra	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 137 (Pūjā-Pātha-Vidhāna)

-	-,				
6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	16.5×13.5 5.8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 2.13.17	С	Old	Opening pages are missing.
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	С	Good	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 4.12.15	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 5.16.16	С	Good	
<b>P.</b>	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 2.37.33	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	$20.8 \times 0.0 \\ 23.14.25$	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.1×15.6 26.13.20	С	Good	
<b>P</b> .	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 0.33.37	С	Good	

138 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

		•	•	
1	2	3	4	5
1813	Ta/39,12	Kşetra-pâla-pūjā		_
1814	Ta/30/7	p, ,.	-	_
1815	Ta/42/31	<b>,,</b> ,,	Viśwasena	_
1816	Nga/43/6/16	,, ,,	Vijayapāla	_
1817	Nga/41/Dha	<b>,,</b> ,,	_	
1818	Ja/51,8	,, ,,		_
1819	Ta/42/23	Labdh-vidhâna-pūյ≅		_
1820	Nga/47/9/3	Laghu-karma-dahana- pūjā	_	
1821	Nga/47/9/1	Laghu-pańcakalyāṇaka- vidhāna	_	_
1822	Ja/29/2	Mahāvira arghya	<del>-</del>	_
1823	Nga/78/26/3	Mangala	_	_
1824	Ta/42/91	Mańtra-vidhi	_	· <b>-</b>
1	,	,		

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 139 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

<del>,,</del>				1	
6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	20.0×12.0 4.19.20	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 6.33.37	С	Good	
P.	D;Skt./H, Poetry	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 15.13.16	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3.13.35	С	Good	
P.	D; Skt. poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.9 7.13.19	C	Good 1928 V. S.	
P	D; H. Poetry	20.5×15.9 12.13.29	C	Good	
Р.	D; H. Poetry	21.1×14.0 1.12.13	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	16.5×13.5 5.8.24	С	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	

140 । श्रो जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokşa-paidi	Banarasidāsa	·
1826	Nga/29/2	Nandíśwa va-pūjā	-	<u>-</u>
1827	Nga/28/5	,, ,,	_	<b>-</b>
1828	Nga/44/10/23	" dvipa-pūjā		· <u>-</u>
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā		
1830	Nga/27/1	12 21		
1831	Nga/36/1	,, ,,	-	_
1832	Ja/51/7	,, ,,	Jinasāgar	_
1833	Nga/46/7	», »,	-	_
1834	Ta/39/11	<b>99</b> 19	_	_
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-trinsat- pūjā	_	
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalasa-pūjā	_	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 141 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12.3×00.0 4.16.16	С	Good	
P.	D; H. Poetry	13.2×21.0 34.17.11	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.6×14.1 23.12.15	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 28.16.21	С	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	26.0×16.7 20.19.16	С	Good 1913 V. S.	·
P.	D;Skt./H Poetry	13.6×17.8 32.9.26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 4.13.35	С	Good	It centains chart of nine grahas.
P.	D; 3kt./H Poetry	23.2×15.0 24.16.15	С	Old	
p.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3.19.20	С	Old	·
Р.	D; Skt, Poetry	20.6×18.0 4.16.18	С	Old	
Р.	D; H. Poetry	10.9×9.6 25.7.13	Inc	Old	Page no. one to thirty seven are missing.

142 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

	Sitt Devakumai Jain Offentai Liotaty, Jain Statuti							
1.	2	3	4	5				
1837	Nga/44/19/4	Neminātha Jayamālā	_					
1838	Ta/14/37	Nhavaṇa-pūjā	-	_				
1839	Ta/42/11	,,	-	_				
1840	Nga/47/4/37	,, ka⊽ya	_					
1841	Nga/47/5/13	Nirvāņa pūjā jayamālā	. · · · <u>-</u>	_				
1842	Nga/44/9/1	,, ,,	_					
1843	Nga/47/4/33	31 39	-	-				
1844	Nga/33/4	33 35 36						
1845	Ta/42/21	<b>29 31</b>	-	£ —				
1846	Nga/44/10/27	,, ,,	Bhagavatidāsa	_				
1847	Ta/14/30	,,, 29		_				
1848	Nga/47/5/5	92 22	, <del>-</del>	-				
1848	Nga/47/5/5	) » »	- <del>-</del>					

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 143 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2.10.19	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.12.18	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old	
Р.	P; Pkt. Poetry	16.5×16.0 3.12.19	С	Old	
Р.	D; Skt./ Pkt. Poetry	11.0×10.5 8.11.12	С	Good	Sixteeng opening pages are missing.
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	22.7×15.7 2.18.16	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Old	
<b>P.</b>	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.2×12.8 5.12.17	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 3.12,19	C	Old	

144 ] श्री जॅन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

		•	·	***
1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvāṇa-pūjā		_
1850	Nga/47/8/5	Nirvāṇa-kṣetra-pūjā		_
1851	Nga/47/8/1	? <b>?</b>	_	_
1852	Ta/3/34	" kalyāṇaka "	-	_
1853	Ta/3/37	»,	Rūpacanda	_
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	-	
1855	Nga/37/5	Pada-Lāvani	_	_
1856	Ta/39/4	Padmāvats-pūja-vidhāna	_	_
1857	Ja/51/13	29 99	Cārūkiṛti	_
1858	Ta/42/35	,, ,,	_	
1859	Ta/42/37	99	<u>-</u>	_
1860	Ta/39/14	,,	_	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 145 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

1						
6	7	8	9	10	11	f
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.33	С	Good	:	
Р.	D; H. Poetry	20.8×16.3 7.15.18	С	Old		
P.	D; H. Poetry	20.8 × 16.3 2.15.18	C	Old		
P.	D;H./Skt. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Old		
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.J2.31	C	Old	<i>!</i>	
P.	D;Skt./H. Poetry	17.8 ×13.7 24.14.15	. <b>C</b> .	Good		
P.	D; H. Poetry	20.8×13.0 4.14.12	С	Old		
P,	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2.19.20	C	Olđ		
Р.	D; Skt. Poetry	32.3 × 20.1 4.13.35	С	Good		
P	D; Ski. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	С	Good		
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	Ç,	Good		
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 8.20.16	C	Old ;	• 1	

146 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmāvati-pūjā	· <u>-</u>	. त
1862	Nga/41/4	<b>39</b> 19	-	
1863	Ja/51/9	" vratodyāpana	-	
1864	Nga/41/1	Pancabālayati-pūjā	-	_ (
1865	Ta/33	Pańca kalyāņka-pūjā Pātha	Bhagawána Prasad	
1866	Nga/47/4/2	Pańca-kalyanaka-patha	Rūpacańda	_
1867	Ta/42/1	,, ,, ,,	>>	_
1868	Nga/14/2	", ", Pūjā	_	_
1869	Nga/47/4/82		-	_
1870	Nga/26/2/1	", ", dohā	_	
1871	Ta/5/1	,, ,, pūjā	_	-
1872	Nga/47/8/6	Pańca-kumāra-pūjā	_	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit. Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 5.13.13	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5 ×11.0 4.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 5.13.35	C	Good	
P,	D; H. Poetry	16.0×9.5 6.7.25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.7×15.8 44.17.16	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 8.18.21	С	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.30.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8 × 26.0 24.14.25	С	Goed	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 28.16.21	С	Old	
P.	D; H. Poetry	30.3×17.5 21.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 17.28.21	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 4.16.21	С	Old	

[ 147

148 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Panca-kumāra-vidhāna		
1874	Ta/18	Pańca-mańgala-pāṭha	- · · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<del></del>
1875	Nga/25/13	; - 29 22 21	Rūpacanda	
<b>187</b> 6	Nga/41/2		••	<b>-</b>
1877	Ja/26/1	", meru pūjā		_
1878	Ta/3,32	Panca ,, ,,	Dyānatarāya	_
1879	Nga/47/4/23	,,	,,	
1880	Nga/44/10/21	,. ,,		_
1881	Ta/42/25	"	Bhūdhardāsa	
1882	Nga/47/8/14	;;      ;	-	_
1883	Ta/42/57	,, ,,	Dyānatarāya	- 
1884	Ja/57/4	Panca-parmeșți-Arghya	_	-
1	i	,		

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry/ Prose	32.3×20.1 2.13.35	С	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	. 11.0×11.0 9.13.19	С	Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 4.24.17	С	Good	
Р.	D; H, Poetry	14.5×11.0 14.8.19	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×15.0 22.18.14	С	Old	
Ρ.	D;Skt./H Poetry	22.5×15.0 4.12.31	С	Good	
P.	D; H. poetry	20.6×18.0 6.16.18	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	С	Old	
Р.	D;Skt./H Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 13.15.17	C	Old	
Р.	D; H. Poetry	32.3×19.0 0.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	С	Good -	

150 | श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

	-			
1	2	3	4	5
1885	Ta/3,23	Panca-parmeşthi Jayamâl	ā —	
1886	Ta/33/2	" " Pāṭha	_	<b>-</b>
1887	Ta/5/8	,, ,, Pūjā	Dharmabhūşaṇa	
1888	Nga/47/9/2	,, ,, ,,		_
1889	Nga/33/3	99 9, ,,	_	_
1890	Nga/14/1	., ,, ,,	Yaśonandi	
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	<del>-</del>	
1892	Nga/48/1/1	", Pūjā	_	_
1893	Nga/47/5/9	», · »,	_	_
1894	Ja/51/10	29 29		_
1895	Ja/51/5	,, ,,	_	-
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 151 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	1 11
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15.0 2.12.33	С	Good .	
P.	D; H. Poetry	19.7×15.8 4.17.16	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 15.23.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.9 8.13.19	С	Good	
P.	D;Skt./H Poetry	23.5×14.5 18.16.11	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.8 ×26.0 39.14.25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	12.0×18.3 4.17.17	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.7×12.0 14.10.14	С	Old	1 to 11 pages are missing.
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 5.12.19	С	Old	
p.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 4.13.35	С	Good	
P.	D; Skt, Poetry	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

152 ] श्री र्अन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratișțhā-țilaka	Narendra Sena	_
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhātmya	Vinodilāla	_
1899	Nga/44/2	" Samgraha	-	_
1900	Ja/19	,, ,,	_	_
1901	Ja/29/5	", Vidhāna	_	_
1902	Nga/46/4	Puṇyāha-Vācana	_	_
1903	Ja/51/2	99 99	_	_
1904	Nga/48/19	) )) ))	_	_
1905	Nga/43/6/14	», »,	_	-
1906	Ta/3/1	,, ,,	_	_
1907	Nga/46/11/1	,,	<u></u>	-,
1908	Nga/44/5	Puşpānjali Pūjā	Lalitakırti	_

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 153 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

-6	7	8	9	10		11	
<b>P.</b>	D Skt. Poetry	32.3×19.0 15.33.37	С	Good		•	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good			
P.	D; H. Poetry	18.5×13.5 102.13.26	Inc	Old	The	Mss. is no	ot in order.
P.	D; H. Poetry	23.7×15.0 27.20.17	С	Good			
ř.	D; H. Poetry	21.1×14.0 119.13.13	C	Good			
P.	D; Skt. Poetry	36.0×19.0 5.12.44	С	Good	^		
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×20.1 4.13.34	С	Good			
P.	D; Skt. Poetry	16.8×14.0 16.10.15	С	Old			
Р.	D; Skt. Prose, Poetry	17.3×13.0 5.13.13	C	Old			
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	21.0×10.9 16.8.18	С	Good 1866 V. S.			
<b>P</b> .	D; Skt. Prose	36.4×19.0 1.12.39	С	Good			
Р.	D; H. Poetry	20.5×15.5 3.12.26	С	Good	Y.:-		

154 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली किया क्रिक्टिक क्रिक्टिक

			- AZAMES	
1	2	3	4	
1969	Ja/34	Ratnațraya-Pūjā	Dyānatarāya	
1910	Ta/42/62	., .,	,,,	_
1911	Ta/42/12	1) ),	_	
1912	Ta/3/31	1)	Dyānatarāya	_
1913	Nga/41/Kha	*, ,,	_	_
1914	Nga/47/4/27	. ,, ,,	Dyānatarāya	_
1915	Ta/14/9	,, ,,	Narendra Sena	_
1916	Ta/38/2	., Jayamālā	_	_
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvab <b>hūş</b> aṇa	_
1918	Nga/47/4/1	" Pūjā		_
1919	Ta/42/33	<b>))</b>	<u></u> -	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
1920	Nga/48/10	Ŗji-maṅḍala Pūjā		_
	,			•

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 155 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	19.0 ×14.9 3.15.15	С		
Р.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3 ×19.0 1.33.37	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	14.5×11.0 5.13.17	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.1 .15	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	14.5×12.5 6.8.13	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.9 11.17.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.18.21	C	Old	
<b>P</b> .	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	12.0×16.5 7.13 14	C	Old 1818 V. S.	Hemarāja seems to be the copier of this Mss.

156 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

		•	•	
1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Ŗşi-mandala Pūjā	_	
1922	<b>Ta</b> /5/5	<b>,</b> , ,,	-	
1923	Nga/13/1/2	<b>9*</b> 9,	-	
1924	Nga/22	Sahasranāma "	Sikhara-Canda	
1925	Ja/51/1	Sakali-Karaņa		-
1926	Ta/16/2	", ", Vidhi	_	
1927	Ta/16/5	33 33 77	_	
1928	Nga/44/6	35 35 F3		_
<b>192</b> 9	Nga/38/15	Samādhi-maraņa	Dyanataraya	_
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāṭhā	Jayacanda	_
1931	Nga/36/3	" Vacanikā	, ,	_
1932	Ta/6/20	Samavaśarna	_	
ı		i	1.	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 157 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

in .			``	•	
6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.0×16.0 25.13.20	С	Good 1956 V. S.	
Ρ.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 18.25.20	C	Good	There are four pages blank.
Р.	D; H. Poetry	24.4×18.5 25.21.20	С	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.6 8.14.35	C	Good 1942 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×20.1 2.13.34	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.5×9.5 18.6.18	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Prose	15 5×9.5 22.9.25	С	Old 1921 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	20.0×16.0 9.13.14	С	Good 1955 V. S.	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	С	Good	
Р.	D; H. Poet <b>ry</b>	23.5×11.0 59.9.29	С	Good	
<b>P</b>	D; H. Poetry	20.0×12.0 76.15.12	С	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 1.13.18	Inc	Old	Closing pages are missing.

158 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली अध्यानिकार Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

				Marine Server Comme
1	2	3	4	i i
1933	Nga/31/2/4	Samavasaraņa		
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	· <del>-</del>	
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Râmcañdra	_
1936	Nga/33/6	99 1 <b>9</b> 99	_	_
19.7	Ja/33/6	<b>99</b> 99 19	_	
1938	Ta/3/14	" Vidhāna	Gangādāsa	
1939	Nga/47/8/10	", ", Pūjā	_	-
1940	Nga/47/8/4	39 PS - <b>39</b>	_	_
1941	Nga/44/10/24	,, ,, ,,	_'	_
1942	Nga/47/8/2	Samuccáya-Caubis-Pūjā	_	_
1943	Ja/56	Sântinātha-Pūjā	—. —.	_
1944	Nga/46/12/3	<b>39 3•</b>		

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 159 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	12.3×16.3 14.13.14	С	Good 1974 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 2.24.18	С	Old 1819 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	С	Good .	
P.	D; H. Poetry	23.9×13.3 9.18.12	С	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 24 12.17	С	Old 1920 V. S.	
Р.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 8.12.36	С	Good	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 16.15.17	С	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 21.15.18	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	С	Old ·	
p.	D; H. Poetry	20.8×16.3 4.15.18	С	Old	
P.	D; H. Poetry	28.8×15.0 9.22.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×13.0 5.18.13	С	Old	

160 [ Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arran

1	2		4	5
1945	Nga/47/4/39	Sānti-pāṭhā		
1946	Ta/3/24	39 39 X	-	
1947	Nga/48/23/4	19 <b>j</b> ø	_	-
1948	Ta/42/4	,, ,,	_	_
1949	Nga/43/6/18	Śānti-Cakra-pūjā	_	
1950	Nga/43/4/1	Säntidhärä	_	-
1951	Ta/42/88	19	_	_
1952	Nga/46/11/2	,,	_	_
1953	Ta/42/27	Saptarşi-pūjā	_	_
1954	Ta/14/41	99 19		_
1955	Ta/41	·	_	_
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadasa	- y
{	1	1	•	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit. Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 161 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 1.12.00	С		
Р.	D; Skt. Poetry	16.8×12.8 3.11.12	С	Old	
Р.	D; Skt, Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 7.13.13	С	Old	
Р.	D; Skt. Poet: y/ Prose	16.3×14.0 3.11.20	Inc	Old	Last page is missing.
P.	D; Skt. poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	·
Р.	D; Skt. Prose	36.4×19.0 2.12.39	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3,33.37	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 3.12.18	C	Old	
Ρ.	D; Skt. Poetry	12.5×8.6 5.9.19	Inc	Old	
Р.	D;Skt./H Poetry	30.3×17.5 4.16.16	C	Good	

162 । भी र्धन सिद्यान्त भवन वन्यादवी
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

	<u> </u>			
1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Sāstra-pūjā	Dyānatarāya	<b>—</b>
1958	Ta/39/19	. ,,	Malayukiṛti	_
1959	Nga/41/2/6	,,	<del>-</del>	<del>-</del>
1960	Nga/47/4/36	» »	_	_
1961	Ta/14/29	<b>39</b> - 59	_	_
1962	Nga/14/8	99 99	_	_
1963	Ta/3/20	" Jayamālā	_	_
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūşana	_
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	_	_
1966	Nga/44/10/17	9 <b>,</b> 91	_	_
1967	Ta/35/3	· 99 • • •	_	_
1968	Ta/14/6	99 •9	<b>-</b>	_
,	·		1	1

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 163 ( Pūjā-Pāţha-Vidhāna )

<b>X</b>			(		
6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; Skt, Poetry	20.0×12.0 2.24.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 7.9.17	С	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	2 <sub>0.6</sub> ×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Postry	15.2×12.8 5.12.13	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 4.14.25	С	Good	
P.	D; Skt Poetry	22.5×15.0 2.12.33	С	Good	
Ρ,	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 16.16.15	С	Old	
Р	D; Skt. Poetry	20.8 × 26.0 6.14.25	C	Good	
} <b>P</b>	D; Ski. Poetry	18.5×13.1 7.13.22	С	Old	
Ρ.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 5.10.16	С	_	
Р.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 6.12.15	С	Old	

164 । श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली
Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

DI.				
. 1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā		<b></b>
1970	Nga/47/4/19	27 22	Khuśālacanda	-
1771	Nga/41/2/3	2) ))	-	_
1972	Ta/3/26	33 91	Khuśālacanda	-
1973	Nga/48/23/3	», »		_
1774	Nga/48/18/2	», »	<del>-</del>	_
1975	Nga/48/12/3	,, 59	-	_
<b>197</b> 6	Ta/42/6	y. y,	_	<b>-</b> .
1977	Nga/26/2/9	sy 97	-	<b>-</b> .
1978	Ja/29/3	. 39 93	-	_
<b>19</b> 79	Ja/51/6	12 22		_
1980	Ta/3/13	Siddha-kşetra-pūjā	<u></u>	- -
			ŧ	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 165 ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

	(Pūjā-Pāţha-Vidhāna)						
6	7	8	9	10	11		
<b>P</b> .	D Skt. Poetry	11.0×11.0 4 13.19	С	Old			
Р.	D;Skt./H Poetry	20.6×18.0 6.16.18	С	Old			
Р.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 7.9.17	С	Good			
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 7.12.32	С	Good			
<b>P</b> .	D; Skt. Poetry	16.8×12.8 6.11.12	<b>C</b>	Old			
Р.	D; Skt. Poetry	16.0×10.1 5.9.21	С	Old			
P.	D; Skt. Poetry	13.5×12.0 6.8.12	С	Good			
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	С	Good			
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 3.16.16	С	Good			
₽.	D; H. Poetry	21.1×14.0 3.12.10	C	Old			
P.:	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	С	Good			
P.	D; H. Poetry	22.5×15.5 2.12.36	C	Good			

166 ] भी र्धन सिद्धान्त भवन प्रन्यावली Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
1981	Ja/54	Siddha-cakṛa-pūjā	<u> </u>	· <u>-</u>
1982	Ta/20/2	"	-	·
1983	Nga/27/4	Siddha-kşetra-pūjā	_	
1984	Ta/42/43	00 31 33	_	<b>-</b>
1985	Nga/44/14	Šikhara-vilāsa-pūjā	_	-
1986	Nga/28/3	Sila-vatțisi	_	_
1987	Nga/47/6	Sinhasana-pratișțhă		_
1988	Nga/41/ṭha	Šītalanātha-pūjā	_	
1989	Ta/20/3	Snāna-pūj <b>ā-vidh</b> i		
1990	Nga/14/9	Soļaha-kāraņa-pūjā		_
1991	Ta/35/4	23 22 39		
1992	Ta/38/3	,, ,, ,,	<b>-</b>	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

_		<u> </u>			
6	7	8	9	10	11
Р.	D; H. Poetry	18.6×11.4 113.22.22	C	Good 1965 V. S.	
Р.	D; H. Poetry	10.9×9.6 40.8.11	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. H.	18.5×30.6 6.21.22	С	Good	
Р.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry/ Prose	15.5×9.5 9.8.26	Inc	Old 1942 V. S.	Opening tweenty pages are missing.
Р.	D; App. Poetry	14.6×14.1 7.13,18	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.7×14.5 20.14.16	С	Old 1955 V. S.	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	10,0×00.0 26.8.12	С	Good	:
Р.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 5.14. 5	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 4.10.15	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	14.5×12.5 13.11.18	Inc	Old	Closing is missing.

168 ] श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library Jain Siddhant Bhavan, Arrah

		•		
1	2	3	4	5
1993	Ta/14/7	Solaha-kāraņa-pūjā	31	<u> </u>
1994	Nga/44/10/13	., ., ,,	<u></u>	_
1995	Nga/47/4/22	11 11 11	Dyānatarāya	* <u>.</u>
1996	Ta/3/28	,, ,, ,,	<del>-</del>	
1997	Ta/42/7	Şodaśa-kārana "	_ `	_
1998	<b>Ta/39/17</b>	Solaha-kāraņa ",		
1999	Ta/42/58	)) )) <u>)</u>	Dyānatarāya	<u> </u>
2000	Nga/29/1	<b>6 19</b> , 194		· · ·
2001	Ja/44	,, )1 )1	Dyānatarāya ·	_
2002	Nga/47/5/3	Sonāgiri-pūjā		· <b></b>
2003	Ta/3/3	Stavana Jayamālā		<del></del>
2004	Ta/42/93	Swādhyāya-pāṭha		
			1	

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 169 ( Pūjā-Pāţha-Vidhāna )

L.					
6	7	8	9	10	11
Р.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 4.12.16	С	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 6.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
<b>P.</b>	D;Skt./H. Poetry	22,5 ×15.0 5.12.31	С		
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3.21.18	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	С	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×19.7 33.15.15	С	Good	
P.	D; H. Poetry	18.0×11.5 4.7.18	С	Good 1965 V. S.	
<b>P.</b>	D; H. Poetry	16.5×16.0 6.12.19	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.0×15.0 2.12.30	С	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

170 [ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Syāmala-yakşa-pūjā	Ajita Dāsa	_
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāsţaka- jayamālā	_	-
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	_	_
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-samvandhi-pūjā	_	_
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi "		_
2010	Ta/5/3	99 19 91	Bhāvaśar <b>m</b> ā	_
2011	Ta/5/2	Udyāpana	<del></del>	_
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vṛndāvana	_
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāţhā	,,	-
2014	Ta/39	" " pūjā		
2015	Ta/24/5	,, jinanama	_	
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa- tirthankara pūjā		~

Catalogue of Sanskrit, Prakrit. Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 171 ( Pūjā-Pāţha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	25.0×15.0 4.19.21	C	Old	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.5 111.14.31	Inc	Old	Closing para is missing,
Р.	D; H. Poetry	20.8×16.3 7.15.18	C	Old	
Ρ.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 5.28.25	С	Good	
Р.	D; Skt. Poetr <b>y</b>	25.0×15.0 29.25.16	C	Good	
P.	D; Skt. poetry	25.0×15 0 5.28.20	С	Good	The chart of tirthankara is on its last page.
Р.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 6.12.19	С	Old	
Р.	D;H./Skt. Poetry	23.3×19.0 64.18.23	С	Good 1952 V. S.	Published.
Р.	D; H. Poetry	22.6×13.8 100.12.36	С	Good 1890 V. S.	Copied by Raghunatha Sharma.
Ρ.	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 16.37.33	С	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8 ×26.0 3.14.25	С	Good	•

172 ) श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

1	2	3	4	5
2017	Nga/26/2/10	Vidyamāna-bīsa- Tirthankara-pūjā	<del>-</del>	
2018	Nga/24	", ", pūjā vidh <b>ā</b> na	Śikharacańda	_
2019	Ta/42/5	pp 35 35	_	_
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	_	_

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts [ 173 ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	30.3×17,5 5,16.16	С	Good	
Р.	D: H. Poetry	29:0 × 17.0 49.21.16	С	Good 1929 V. S.	
Р.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	<b>C</b>	Good	
Р.	D: H. Poetry	14 5×11.7 12.11.22	C	Good	

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

( संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी ग्रन्थ-सूची )

## परिशिष्ट

१- पुराण, चरित, कथा

#### ६६८. अनन्त चौदश-कथा

Opening : श्री जिनवर ची गीसोंनमो, सारद प्रनमो अघनीर्गमो ।

भावे गनधर प्रनमो पाय, भावे वंदो श्री गुरुराय।।

Closing । जे कोइ इह व्रत भाव करें, ते नर मुक्तरमण कर धरें।

श्री भूषन पद प्रनमी सही, कथा ग्यानसागर मुनि कही।।५६।।

Colophon: इति अनंतवत कथा समाप्तम्।

#### ६६६ अनन्तचौदश-कथा

Opening : देखें, ऋ० ६६ ६।

Closing । देखें क० ६६ म ।

Colophon । इति श्री अनंत चौदश जी कथा समाप्तम् ।

#### १००० अनन्तव्रत कथा

Opening: अनंत देव बंदी सदा, मनमैं कर बहु भाव।

सुर असुर सेवत सदा, होइ मुकति परचाव ॥१॥

Closing: तब इह कथा करी चित्त लाइ, तैसी शास्त्र मैं करी वनाइ।

विध पूरव पाले जो कोइ, ताको मुक्ति निहर्च करि होइ

113811

Colophon: इति अनंतन्नत कथा।

#### १००१ अनन्तनाथ कथा

Opening : वृषभ आदि चौवीस जिन, नमूं ताह सिरनाय ।

दू जे गुरु गौतम नमूं, तीजी सारद माय।।

Closing । वतन लालपुर जानीयो आवगधर्म जु सोय ।

पढ़े पढ़ाने मनभरे ताकू सुभगत होय ।।६६॥

Colophon: इति भी अनंत भौदस की कथा समाप्तम् ।

#### ২ সীৰ্জন মিত্তান্ত মবন যুদ্যাবলী Shri' Devakumar Jain Oriental Library Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १००२. अष्टान्हिका कथा

Opening: श्री जिन सारद गणधरपाय, " " " ।

वत अष्टान्हिका कथा विचार, भाष्ं आगमनें अनुसार ॥१।

Closing: ए वत जै नरनारी करें, ते भवसागर से तरें।

श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहे इह सार।। ५३।

Colophon: इति श्री अठाई व्रतं कथा सम्पूर्णम् ।

## १००३ अष्टान्हिका कथा

Opening : यादव वंसि नेमकुमार, भाव धरि वंदो भवतार।

कही अष्टारिहका सार ॥१॥

Closing । तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरषनिधि शिखामण सारी ।

भणो सूणो नरनारी ॥१६॥

Colorhon: इति नंदीश्वर वृत कथा संपूर्णम् ।

### १००४ अठाईकथा

Opening : पंचपरमेष्टी चरन कूँ धारौ निस दिन ध्याँन ।

सौ मेरी रक्षा करी जाते होय कल्यान ॥

Closing । श्रावग धर्म सुजान, वतन कालपुर जानियो

भैरी कही बखान, भव्य जन सुनिये चित्त दे ।।७६॥

Co ophon । इति श्री भैरौं जी कृते बठाई रासा समाप्तम् ।

## १००५ आदित्यवार-कथा

Opening : रिसहणाह प्रणमी जिनंद जा प्रसाद मन हीय आनंद,

प्रणमी अजित प्रणासै पाप दुख दालिव भव हरे संताप ।।

Closing : कम्में विष्यी कारण मत भई तब यह धर्मकथा मन ठई।

मनधर भाव सुनै जो कोव सो नर स्वर्ग देवता होय।।

#### ₹

# Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apaphramsa & Hindi Manuscripts (Purana, Carita, Katha)

Colophon: इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६ आदित्यवार-कथा

Opening: देखें, १००४।

Closing: कमक्षय कारण इह मति भई तब या धर्म कवा अरनई।

मृति धरि भाव सुणैं जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई।।

Colophon: इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा

संपूर्णम् ।

१००७ आदित्यवार-कथा

Opening । श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमी भव्यपयोज दिनेस ॥

Closing: यह ब्रह जो नरनारी करै, सो बहु नहि दूरगति परै।

भाव सहित सुरनरसुख लहै, बार बार जिन जी यों कहै ॥२५

Colophon: इति श्री रवित्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening: देखें, क॰ १००७।

Closing : देखें, कः १००७।

Colophon: इति श्री रिव कथा जी लघु तमाप्तम्।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening । प्रथम सुमिरि जिन चौबीस, चौदह सै त्रैपन जु मुनीस ।
सुमिरौ सारद मिक्त बनंत, गुरु देवेन्द्र जु कीर्ति महंत।।१।।

Closing : रवित्रत तेव अताप भई लिखमी फिरी आई क्रिया करि धरनेंद्र और पदावती माई ।

४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

> जहां " "तहां रिद्धि सब छोर जू पाई मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई। पढ़े सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुवृद्धि, तिनको धरनेंद्र पद्मावित देहि सर्वथा सिद्धि।।

Colorhon:

इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम् ।

१०१०. आकाश-पंचमी-कथा

Opening । पडिवा प्रथम कला घट जागी, परम प्रतीत रीत रस पागी।

प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वह प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing : काष्टासंघ सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धर्म निवास ।

तास शिष्य बोली चंग, बहा ज्ञानसागर मन रंग।।

Colophon: इति आकाश पंचमी कथा

१०११. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : श्री जिनसासन पय अनुसरू गणधर निज वंदिन

करूं।

साध संत प्रणमूं पाय, जे हथी कथा अनोपम थाय ॥१॥

Closing : देखें - ऋ० १०१०।

Colophon: इति श्री आकाश पंचमी वैतकथा समाप्तम्।

१०१२. भविष्यदत्त-कथा

Opening । स्वामी चंद्रप्रभु जिननाथ, नमोचरण ६रि मस्तक हाथ।

लांछन बन्यौ चंद्रमा जासु काया बाल अधिक प्रगासु ॥१॥

Closing । यह कथा संपूरन भई, सकल भव्य को मंगल भई। पढ़ें सुने औं करें बखाण, सो पावे शिवपुरि पद थाण।।

1199811

Catalogue ot Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purāna Carita, Kathā)

Colophon: इति श्री श्रुतपंचमी कथा भवसुदत्त चरित्र संपूणंम्। संवत् १८४८ वर्षे मिति पौस विदि ६ श्री पार्श्वचंद्र सूरि गछौ श्री गुरुजी श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु ज्ञासिरदारमल्लेन श्री मफातपूरनगरमध्ये चतुरमासकृतम्।

१०१३. चंदकथा

Opening: सिढि सुबुढि दातार तुब गौरीनंदकुमार।

चंद कथा आरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ॥

Closing: उबुधरेषा अचपला जोग, तीजो और परमला भोग।

... .. ••• ••• ••• आपणो राज ॥

Colophon: इति चंदकथा संपूर्णम्।

१०१४ चतुर्दशीकथा

Opening: देखें कि हहा।

Closing; देखें कि हहा।

Colophon: श्री चतुर्दं ती व्रत कथा समाप्तम् ।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

Opening: विक्रमादित्योरूप. परदेशिद्विजाच्चतुर्वचनानि ।

बादयति यस्तस्मात् हारियत्वा तमेव परिणमति ॥

Closing : चतुर्वचनां महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीयं भोगा-

ः नुभवनं कूर्वन् शर्म्मणाकालं महाश्रेयो युक्तो अभूत ।

Colophon: इति चउकोली कथा संपूर्णम्।

१०१६ दानकथा

Opening: देव नमी अरहत सदा, अरु सिद्ध समूहन की चितलाई,

्**त्रिः बन्नः रजः की** प्रमों, प्रणामी जु उपाध्याय के नित पाई।

६ श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्यावली Shri Davakuwar Jain Oriental Library Jain Siddhant Bhavan, Arra.h

> साधुनमों निरग्रन्थ मुनी गुरु, परम दयाल महा सुखदाई, नि पंचा गुरु एत मैं सुनमूं इनके सुमरे भवताप नसाई ।।१।।

Closing । दान कथा पूरण भई, पढ़ै सुनें सब कीय । दुःख दरिद्र नासै सबै, तुरत महासुख हीय ॥७६॥

Colophon । इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत संपूर्णम् । देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० रि, क० २६ ।

१०१७ देशलाक्षणी कथा

Opening । धर्म जुदश लांछन कहै तिनको करू वखान । जो जिय निहने चित्त धरै ताकौ होय कल्यान ॥१॥

Closing । इह विध वत नर जो करै, पार्व शिव पद थान । बूढ़ै दुख संसार के, भैरी कहै बखान ।

Colophon: इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।

१०१८. दशलाक्षणी कथा

Opening : ऋषभनाय प्रैणमूं सदा गुरु गनघर के पाय । तीन भवन विख्यात है सब प्रानी सुखदाय ॥१॥

Closing । सत्रह सै इक्यावनवा भादव मास सुखसार ।

शुक्ल तिथ त्रययोदशी सुभ रविवार विचार ॥६९॥
भूला चूका होय जो लीजी सुकवि सुधार ।

मोह दोस दीजी नहीं करी जू भव हितकार ॥६२॥

Colophon: इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्। देखें — (१) जै० सि० भ० प्र० रि, पृ० २८।

१०१६. दशलाक्षणी कथा

Opening । प्रथम नमन जिनवरमै करूं, सादर गणधर पद अनुसरूं। दशलाक्षिण वृतकार्य विवास, श्रीपू जिन आगम अनुसार। १।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Mauuscripts (Purāṇa, Crita, Kathā)

Closing । भट्टारक श्री भूषणधीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।

तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म सानसागर सुविचार ॥५५॥

Colophon । इति श्री दसलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

Opening । देखें - कर् १०१६।

Closing : देखें - क॰ १०११। '

Colophon । इति श्रीदसलाक्षणी वृत कथा संपूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening । देखें — त्र० १०१६।

Closing: देखें--- क॰ १०१६।

Colophon: इति दशलाक्षणी व्रत कथा।

१०२२. दशलाक्षणीवत कथा

Opening: -- "" ""

पंचामृत अभिष्क उदार।

ु जिन चौविस सतरमों भडार,

अष्ट विध पूजा करो परकार ॥१७।

Closing : देखें — ऋ० १०१६।

Clolophon: इति श्री दसलासीची त्रत कथा समाप्तृम् ।

१०२३. दर्शनकथा

Opening ! नमों देव अरहत पद, नमों सारदामाय ।

ेनमी गुरु निरम्भन्य जे, अघहर मंगल दाय ।।

Closing: दरसन कर पूरन भयी मनीवित की सुखदाय।

ं तीस कवा फल पायक शुभ गति लई सिवदाय ॥५७०॥

द श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon:

इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम्।

विशेष---

२०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल है। लगता है कि पद इनी से संयुक्त है अतः इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है।

# १०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening । अयोध्यानगरे रैं।जासिहसेनी राज्यं करोति ।

तन्मत्रीबुद्धिसेनो धम्मंन्याय अत्रं करोति ।

राजा दुराचारासस्यपरधनदारहरणलक्षणान्याय विदधाति।

Closing । ... तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जम्मु ।

सर्वेव धर्मबुद्धिः करणीया । सर्वेलोकस्वायमुपदेशः ।

Colophon: इति धर्मपाययुक्तयोः कथा संपूर्णम् ।

# १०२४ ध्रपदशमी कथा

Opening :

पच परम गुरु बंदन करूं, ताकरि मम अब सब हरूं।

Closing:

श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार।

भाषासार बनायके सुखत खुशियाल अपार ॥१४३॥

Colophon:

इति संपूर्णम् । संवत् १९४६ भारता सुदी २ लिखाइतं यमराज जी लिखितं मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मंदिर मध्ये ।

### १०२६. दुधारसंत्रत-कथा

Opening:

प्रथम नमी श्रीवीरजिनंद वंदी सदगुरु पद अर्रावद ।

जासु प्रसाद कहूं सुभक्या, गोतम गणधर भाषी यथा।।

Closing:

श्रेणक आगल गोलम स्वामि एह कथा भाषी अभिराम ।

ए दुधारस बतनी कथा चंद भने में भाषी तथा ॥४३॥

Colophon 1

इति दुधारस जी की कथा समाध्तम ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Purana. Carita, Katha )

# १०२७. हरिवंशपुराण

Opening : सिद्धं संपूर्ण तत्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ॥

प्रशस्त दर्शनज्ञानं चरित्रप्रतिपादनम् ॥

Closing: संकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि॥

द्वीजं सुहपावे लहो तं सुह पावेहि तुह्य हु जनए।।

Colophon : इतिश्री हरीवंस पुराण की भाषा चौपाई वंध संपूर्णम् ।

देखें, जे० सि० भ० ग्र० र, ऋ० ४६।

# १०२८ हरिवंशपुराण

Opening : देखें, ऋ० १०२७।

Closing: " और अरिष्ठा पांचवा नरक उस विषे इंद्रन की

भूमि की मृटाई कोस ३ । और श्रेणीवद्धों की कोस ४।

और प्रकीर्णकों की कोस सात ७॥ २१॥

Colophon: अनुपलब्ध

१०२६. हरिवंशपुराण

Opening : महाधीर बहुश्रुत विराजे श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करें

और वा मंडप के समाप चार मंडप " ।

Closing: "देवते मनुष्य होय निरंजन पद पार्वेगी सातत्रीं

पटरानी गौरी 🕆 😬 🥶 ।

Colophon : अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

Opening : श्री अरिहंत नमो सदा, अरी न आवे पास।

अष्टकर्म दूरे टले आठो गुन परकास ॥

१० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing: उपर रचा मुखराज ते, श्री नीमंधर देव।

भाव भगति चित लायके सब जन करते सेव । ५२३॥

Colophon: इति जंबूचारित्र जी सम्पूर्णम् । लिखितं राज्य कुमारचंद

आरामपुर नगरे स्वगृहं संवत् १९३३ मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ७ तिथौ रिववासरे निजाठनार्थे पुन: भव्यजीव

पठनार्थम् । जूभमस्त् कल्याणमस्तु ।

१०३१. लब्धिविधानकथा

Opening : प्रथम ननीं श्री जिनवर पाय दूजी प्रणमीं सारदमाय ।

लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाष्ंजिन आराम छै

यथा । १।।

Closing : श्री भूवण गणनायक धीर " " होसी सीध ॥५६

Colophon: इति श्री लब्यि विधान कथा समाप्तम् ।

१०३२. महावीर-पुराण

Opening: इण विधि किह्ती जंबु कुमार सुनि सो कहसी निरधार।

मागी के षिजतू इकनारी मरनू चाहिलयौ ततकार ।२१।

Closing: यातैं श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,

राखी भवि उरके विवें सुरग मुक्ति पदपाय ॥६३॥

Colophon: इत्यार्षे त्रिषष्ठिजअणमहापुरागसंग्रहे भगवद्गुण महाचार्यत्र गीतानु-

सारेण श्रीउत्तरपुराणस्य मात्रायां श्रीवर्द्धं मानपुराण परिसमान्तम् । इति श्री उत्तरपुराण समान्तम् । ग्रुभ सम्वत् १८६६ शाके १७३४ मासोत्तमेमासे ग्रुक्लेपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे पुस्तकि । पूर्णम् । रघुनाय समेंणे लेखि पट्टनपुरगायवाट मध्ये निवसति ।

लेखक पाठकयो मंगलमस्तु ।

१०३३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समे जो समुद्र विजे छारि कामधनेम को व्याह रचो है, गावत मंगलाचार वधु कुल में सबके जो उछाह मचो है, Citalogue of Sinskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts (Purana Carita, Katha)

तेल चढ़ावन को जुबतीं अपने-अपने कर थाल सची है, मेग करैं सब ज्याहन को घर मंडप चित्र विचित्र खिंचो

है 1911

Closing:

नैम कुमार ने की गली वो दिन छपन लो छदमस्त रहो है, केवल ज्ञान भएव प्रभु को तब आठवी भूत महानुमहो है, सात सै वर्ष विहार की घो उपदेशते धर्म महानुमहो है, निर्वाण गये मुनि पांच से छपन लाल विनोदिने संग गही है।

Colophon:

इति श्री मैमनाथ जी काच्याहुला संपूर्णम्।

१०३४. निःकांक्षित-गुण कथा

Opening :

प्रेनमूं आदि जिनेंद की फुन गुरु गौतमराय । सारदमाय प्रसादतें करू कथा मन लाय ।।।।।

Closing .

निः कोक्षितं गुन की कथा भेँ रैं कही बखान ।

सो निहर्च कर पाल है, पाव शिव पद थान ।।

Colophon:

इति नि काक्षितगुन कथा समाप्तम् ।७६॥

१०३५. निशल्याष्टमी कथा

Opening:

देखें, ऋ० १०३६।

Closing

काष्ट्रासंघ कलावरचेद, श्री भूषण गुरु परमानन्दै।

तेस पद पंकंक मधुकरतार, ज्ञानसमृद्र कथा कहैं

विचार ॥६६॥

Colophon :

इति निशन्यौष्टमी कथै।।

इसमें निर्दृख सप्तमी कथा भी है।

१०३६. निर्दोषसप्तमी कथा

Cpening :

श्री जिनसरण कैमल अनुसरुं, सारद निज गुरु मनमें धक्तं। निरदोष सप्तभीकी कथा, बोली जिसअः गम छी यथा। १॥ 9२ श्री जैने सिद्धान्त भवने ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : ए वृत जे नरनारी करै, ते नर भवसागर उत्तरै।

अंजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इम कहै।।४९।

Colophon । इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।

देखें, जै० सि॰ भ० ग्र० I, ऋ० ७८।

१०३७. पंचमी कथा

Opening । वंदो श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर।

भव सागर तारण तरण, शरण हरण पर पीर ॥१॥

Closing : हस्तिकंतिपुर में यह सची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची।

यह विधि ब्रतुपाले जो कोई, सो नरनारी अमर

पद् होई ॥६०॥

Colophon: इति पंचमी कथा समाध्ता।

१०३८ पार्क्पुराण

Opening : मौहं महातम दलन दिन तैप लिक्ष्मी भरतार,

ते पारस परमेंस हो उ सुमति दातार अभा

Closing: सैवत् सत्रह सै समै और नवासी लीय।

सुदि अषाढ़ तिथि पंचमी ग्रन्थ समापत कीय ।।

Colophon: इति श्री पार्श्वनाथ पूराण भाषा सम्पूर्णम् ।

श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास कें वास्ते लेखक लाला चंदुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोको

के रोज पूरा हुआ।

देखें जै० सि० भ० ग्रेट 🛪 ० ६० ।

१०३६. पार्कपूराण

Opening : वीज सरिव फलभोगव जो किसान जगमाहि ।

त्यो चत्री नृप सुख करें धर्म विसार नाहि ।

Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purāṇa, Carita, Kathā)

Closing । सीलह कारण भावना परमपुन्य को खेत ।

भिन्न असो लही तीर्थं ड्वर पद हेत ।।

Colophon: अनुपलब्ध।

१०४०. रत्नत्रयकथा

Opening: श्री जिन चरण कमल नमूं, सारद प्रणमी अघ निगमूं,

गौतम केरा प्रणम् पाय, जेहथी वहुविधि मंगल थाय ॥१॥

Closing: यांमै मणि माणिक्य भंडार पद-पद मंगल जयजयकार।

श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलै सुविचार ॥४५॥

Colophon: इति श्री रत्न त्रयकथा सम्पूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० रि. ऋ० १०३।२

१०४१ रत्नेत्रयकथा

Ocening: देखें, क० १०४०।

Closing : देखें, ऋ १०४०।

Colophon: इति रत्नेत्रय कथा।

१०४२ रतनत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, कर १०४०।

Closing : देखें, ऋ० १०४० ।

Colophon: इति श्री रत्नत्रयकथा संपूर्णम् ।

१०४३. रत्नत्रय-व्रत-वर्धा

Opening: देखें, कर १०४० ।

१४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रिन्थविली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Artah.

Closing : कुंजवरिन स - 😁 होए।

द्रत दुनीया ले नर सीऐ। पुण्या तणी संच भंडोर

पर भव पांव भोक्षि उवार ॥२७ ।।

Colophon: महीं हैं।

१०४४. रविव्रतकथा

Opening : श्री सुखदीयक पास जिनेश, प्रणमी भन्य पर्योज दिनेश !

सुँमरों सारद पद अरविंद, दिनकर वत प्रगटी सानेंद (१)

Closing: करमें रेख कारणे मित भंड, तेव इह धर्म कथा अर्हे ठंड ।

मीन धरि भाव सुणै जो कोइ, सी नर स्वर्ग देवता

होइ ॥१४८॥

Colophon: इति रविवर्त कथा।

देंखें, जै॰ सिं॰ भंद ग्रं॰ I. ऋ॰ १०४।

१०४५ रिवव्रतकथा

Opening । देखें, कर १०४४।

Closing । यह बत जो नरनारी " भीनु की रात मुनिवर यो

कहै ॥२४॥

Colophón: इति राजिश्रेत कथा सँपूर्णंम् ।

१०४६. रविव्रतकथा

Opening : चौबीसेतीर्थंकर जी कूं नमस्कार कर मैं रोहतीज कैंथा

वर्तें कहिए हैं। इह जंबूदीप है तामें भरतं क्षेत्र है तामें आर्य खण्ड

है, धर्यापुरी नामीं नगरी बसे हैं।

Closing: देखें, कर १०४५।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts (Purāṇa, Carita, Kathā)

Colophon : इति रवित्रत कथा संपूर्णम् । विशेष—इसमें रोटरीज व्रत कथा भी सम्मिलित है ।

# १०४७. रात्रिभोजन-त्याग-कथा

Opening : ससोसरन सोभा सहित, जगत् पूज्य जिनराज ।

नमूं त्रिविध भव उदधि कौं त्यारन विरध जिहाज ॥१॥

Closing: कथामांहि चउपई करै कवि वीनती ॥१८॥

Colophon: इति रात्रि भोजन कथा तथा नागसिरी चरित्रनी भोजन

त्याग व्रतकथा समाप्तम् । मिति पौह शुक्त पंदरस १४ । संवत् १६५१ का । शुमं लिख्यतं अमीचद श्रावक जैसवाल पालम का वासी ।

१०४८. रोहिणी-कथा

Opening: बासपूज्यं जिनं नत्वा कथां वक्ष्ये जिनागमात् ।

दुर्गं धा च व्रतेनाभूद्रोहिणी पुण्यरोहिणी ॥

Closing : श्रीगौतममुखक्तथा श्रुत्वा श्रेनिकः सह र्गेप्रहमागता ।

अन्योपि कोपि रोहिणी विधानं करोति नारि वा नरो

वा सेवविधानं प्राप्नोति ॥

Colophon: इति रोहिणी कथा।

# १०४६. रोहिणी-कथा

Opening: वासुपुज्य जिनराज भवदिध तरण जिहाज सम।

भव्य लहे सुब साज नाम लेत पातिक हरे ॥

Closing: रोहिनि बतु पाले जो कोई, सो नर ना ी अमर पद होई।

मन वच काय सुध जो धरै कमते मुक्ति वंधु सुख भरै।।

Colophon: इति रोहिनी कथा समाप्तम्।

१०५० रोहिणी-वृत-कथा

Opening: वासुपूज्य जिनराज की वंदो मन वच काय।

ता प्रसाद भाषा करौं सुनौ भक्ति चित लाइ।

98 श्रीजैन मिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing: जो यह बत निहर्च धरी, करी रोहिणी सोय।

निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय।।७६।।

Colophon: इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम् ।

देखे, जै ० सि० भ० ग्र० 1, ऋ० ११०

# १०५१ रोटतीज-कथा

Opening : चौवीसों जिन को नमी श्री गुरु चरण प्रभाव ।।

रोटतीज वृत की कथा कहीं सहित चित चाव ।।

Closing: गणधर इंद्र न करि सकें तुम विनती भगवान ।:

द्यानत प्रीति निहारिके की जै आपसमान ॥

Colophon ; इति सम्म्पूर्णम् ।

# १०५२. रोटतीज-कथा

Opening : इह जबू द्वीप हैं तामें भरत क्षेत्र है, तामें आर्य खंड है,

धन्यपुरी नाम नगरी वसै है।

Closing: और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज वृत करें

भलि गति पावै।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा।

१०५३. रोटतीज-कथा

Opening : ३ वें, ऋ० १०४२।

Closing: खेंदे, क • १०५२।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता ।

१०५४. रोटतीज-कथा

देखें, ऋ० १०५२।

Closing: देखें, ऋ० १०५२।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramía & Hindi Manuscripts
(Purāṇa, Carita, Kathā)

Colophon:

ं इति रोटतीज कथा समाप्तम् ।

### १०४४. सजूनाकथा

Opening:

प्रथमिह प्रथम जिनेन्द्र चरण चित लाइए,

प्रथम महात्रत धर्म सुताहि मनाईए।
प्रथम महामुनि लेव सुधर्म धुरंधरी,
प्रथमधर्म प्रकासन प्रथम तीर्यं करी।।

Closing:

मुनि उपसर्ग निवारनी कथा सुनै जो कोय।

करूणा उपजै चित्त मैं दिन मंगल होय ।।१८।।

Colophon:

इति श्री विनोदीनाल कृत श्री सल्ना कया समाप्तम्।

### १०५६ शीलकथा

Opening:

पार्सनाथ परमातमा वंदी जिनपद राइ।

मोही धर्मवाश न करौ कहौ कथा मनलाइ ॥१॥

Closing:

सील कथा पूरी भई पढ़े सुनै नित सोई।

दुख दरिद्र नास सब तुरत महा सुख होई ॥ ५६॥

Colophon;

इति श्री सील कथा मल्लसेनाचार्यकृत संपूर्णम्।

### १०५७. शीलव्रतकथा

Opening:

प्रयमही प्रणमौं श्री जिनदेव 🕶 " जिनराज अनूप । १।

Closing 1

जो देखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान।

पंक्ति अरथ विचारिक पढ़ियो शुद्ध सुनान ॥५३॥

Colophon:

इति सील कथा संपूर्णम् ।

विशेष—पद भी जो २०१६ पर उल्जिखित है इनी से सम्बन्धित है। अतः इसका भी लेखक भारामच्त्र ही हो।। चाहिए। दोनो ग्रंशों को

#### 9 श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan ,Arrah.

पढ़ने से ऐसा लगता है कि पहले कथा वर्गरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो।

देखें, जै० सि• भ० ग्र॰ I, क० १२८।

# १०५८. शीलवतीकथा

Opening : जीवितादप्पधिकत्वेन पालितो नियमोऽरुनर्भवाय भवेत् ।

Closing: ततोऽनयंमूलं तं वित्रं शीलवती सत्कृत्य बहुमानास्पदं-

कृतवान् ।

Colophon: इति शीलवती कथा संपूर्णम् ।

१०५६. सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चौविसौ नमूं, सारद प्रगमि अवनिगमूं।

निज गुरु केरा प्रणमूं पाय, सकल संत प्रणमी सुख्याय । १।

Closing: यामें सकल भीग संयोग, टर्ज आपश रोग विरोग।

श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानपागर कहै सार ।३६।

Colophon: इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम्।

१०६० सोलहकारणकथा

Opening: देखें, क० १०५६।

Closing: देखें, क॰ १०५१।

Colophon: इति सोलहकारण कथा संपूर्णम्।

१०६० शोडशकारणकया

Opening । देखें, कः १०५६।

Closing: देखें का १०५६।

# Catalogue of Sanskrtt, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purāņa, Carita, Kathā)

Colophon । इति षोडशकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening । प्रथम नसूं श्री जिनबर पाय, प्रणमूं गणधर सारद माय ।

सद् गुरु पद पंकज मन धरुं, सार कथा वारसनी करूं।।१।।

Closing : रोग सोग संतापह टलें, मनवां छत फल पूरण मिले।

श्री भूषण सुत दाए लहै, ब्रह्मजान तागर हम कहै।।

Colophon: इति श्रवणद्वादशी कथा।

# १०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्ये सिद्धचकं च सङ्गुरुं निजमानसे ।

श्रीपालचरितं वक्ष्ये सुगम शिष्यहेतवे ॥

Closing: जीवराजेन रचितं श्रीपालचरितं शुभम्।

प्रीतसुन्दरेनाशुलिखितं श्री सद्गुरुप्रसादत: ॥

Colophon: इति श्रोपालचित्र गद्यवंद्ये चतुर्थ प्रस्ताव:। शुर्भ भूयात् ।

सं० १६०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मंगलवारे लिपी

इतेयं प्रीट:श्री दिक्रमपूर मध्ये चउक्कासीस्थताः।

# १०६४. श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहंत अनंतगुण, धरीये हिय में ध्यान :

केवल ध्यान प्रकाश कर पूर हरण अध्यान ।।।।।

Closing : कहै जिम हरष भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा थु'णिज्यो रे ।

गुण पंचासँ ढालें गुणि ज्यों निज पति किछण लु णिज्यो रे ॥

Colophon: इति श्रीपाल महाराजा चौपई समाप्तम् ।

२० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

# १०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening : श्री जिन शारद मन मैं धर्र सद गुरु नै नित वंदन करूं।

साधु संत पद वंदों सदा, कथा वहूं दशमीनी मुदा ॥१॥

Closing: ए छत जे नर मारी करें, ते भवसागर वेगें तरे।

छांहै पाप सकल सुख भरें, ब्रह्मज्ञानसागर उच्चरे ॥

Cclcthon: इति सुगंध दशमी कथा।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० १४५।

# १०६६. सुगंधदशमी कथा

Opening : सुगंध देशमी बत सुनि कथा, वर्द्ध मान प्रकाशी यथा।

पूरब देश राजग्रह नाम, श्रेणिक राजे करे अभिराम ॥१॥

Closing । हेमराज बीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी सही ।

मनवचकाय सूनै जो कोई, सो मर स्वर्ग अपर पति होई ।।३ छ।।

Colophon: इति सुगेंधवशमी कथा समाध्ता।

१०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening: देखें, क० १०६४।

Closing: देखें, ऋ० १०६५।

Colophon । इति श्री सुर्गधदशमी कथा जी समाध्तम् !

१०६ . सुगंधदशमी-कथा

Opening: देखें, ऋ प्रदूध।

Closing : देखें, क० १०६१।

Coloption : इति श्री सुनंध दशमी कथा समाप्तक्।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purana, Carita, Katha)

### १०६६ स्वरूपसेनकथा

Opening:

कौसाबीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियंस्तस्यपुत्र-

ध्यमभूत् । ज्येष्दो रूपसेनो लघुर्देवसेना ।

Closing:

धूरसेनोपितया सहसंसारिक सुखमनुभूय

प्राते स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ॥

आदायालोचितदु:खकम्मा \*\*\* \*\*\* आससाद् ॥

Colophon:

इति मिन्ने स्वरूपसूरसेन कथा संपूर्णम्।

# १०७०. वीरजिणंद

Opening:

वीर जिनंद समीस राजी वंद मेघकुमार,

सुण देसण वद्दाणीय जी इह संसार असार रि माई उन

मति देह मुझ आज ॥१॥

Closing:

तप तन सो सीतहागइ जी

पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी

ते पामसि भव पार हु स्वामी अम्ह०।।

Colophon:

इति घीर जिणंद समाप्तः ।

# १०७१. विष्णुकुमारकथा

Opening:

देखें — फै० १०४४ ।

Closing 1

विष्णुं कुमार मुनिद्र की करनी कथा रसाल सुनो।

भव्य जैन वाव सौ कही विनोद्दोलाल मुनि उपसर्ग निवाः

रनी कथा सूनो।

जो कोई करूना उपजै चित मैं दिन दिन मंगल होय।

Colophon;

इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण।

देखें, जै० सि भ० ग्र० 1, त्र० १५१।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

# १०७२. अरिहंतकेबली

Opening । श्रीमद्वीरजिनं नत्वा वर्द्धमानं महोस्सवम् ॥१॥

Closing । वैरिणां वैरमुक्तश्च मित्रबाधवहेतवे । धर्मवृद्धिर्भवेस्त्पर्थं सर्वधानात्रसंशयः ।।३ ।

22

Colophon: इति तकारादि चतुर्थप्रकरणम् ।

इति अरहंति केवली संपूर्णम् । संवत् १६९७ मिति चैत्रकृष्णः

१०। बुधवासरे लिप्पीकृतं ब्राह्मण रामगोपाल बासी मौजपूरः

कालकलेपुर मध्ये लिखी । शुभं भूयात् ।

#### १०७३. आराधनासार

Opening : विमलयरगुणसमद्धं सिद्धं सुरसेण वंदियै ।

सिरसा णमिऊण महावीरं वोच्छं आराधनाः गरं

Closing : अमुणियतच्चेण इमं भणियं जं पि देवसेणेण ।

सोहं तं चामुर्तिदा अधिक जद पवयण विरूद्धं !!

Colophon: इति आराधनासारसमार्थतः i

देखें -- जै० सि० भ० ग्र॰, 1, ऋ० १६५ ।

### १०७४, आराधना प्रतिबोध

Opening । श्री जिनवर वाणी नर्मेवि गुरुनिर्ध थ पाय प्रणमिवि । कहुँ भाराधना सुविचार संक्षेपिसारो उद्धार ॥१॥

Closing । जे सुणें नरनारी जे जीइ भवनेपार। श्री दिगम्बर इति कहुँयो विचार आराधना प्रतिवीधसार ।।

Colophon । इति आराधनाप्रतिबोध संपूर्णः ।

Catalogue ot Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purāṇa, Carita, Kathā)

### १०७५. अर्थप्रकाशिका

Opening । बहुरि ज्ञानक् े अरूपाक्षर करि प्रधान कहया तोहू, अल्पाक्षर तैं पूज्यपणां प्रधान है। अर दर्शन पूज्य है।

Closing । चरतो भन्यनि उर विषे स्यादद्वाद उज्जास । यातै निज परतत्व सरिव होय जु अर्थ प्रकाश ।।

Colophon: इति श्री तस्वार्थं सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त ।

गुभं भवतु । कल्याणमस्तु ।

#### १०७६. आत्मानुशासन

Opaning । वीरं प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्यौतिताऽखिलपदार्थमनस्पपुण्यम्, निर्वाणमार्गमऽनवद्मगुणप्रवर्धे आत्मानुशासनमहं प्रवरं प्रवक्ष्ये।।

Closing : श्री नाभेयोजिनोभूयाद भूयसे श्रेय सेसव:। जगद्ज्ञान जलेयस्यद द्याति कमलाकृति ।।

Colophon : इनि श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन काव्य प्रवंध संपूर्णम् । लिखितं पंडित परमानंदेन टकौत नामनगरे, संवत् १९२८ का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दश्यम्या गुरुवासरे उपाध्याय विद्व वरिष्ठ श्री १०६ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं परमानंद शुभंभूयात् । श्रीरस्तुः । देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1, क्र० १०२ ।

# १०७७. बनारसी विलास

Opening : प्रथम सहस्रनाम सिन्दूर प्रकरधाम वावनी सर्वया वेद निरने

पंचासिका।

त्रेसिक सिला का मारंग ना करम की प्रकृति कल्यान मंदिर

सापूर्वदन गुवानिका।

२४ - श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

पैडीकर्म्म छतीसी पिब्बइ ध्यान बतीसी आध्यात्म बतीसी पचीसीग्यान रासिका ।
सित्र की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म कागति
षोडस निवासिका ।: १।।

Closing , सत्रह में एको तरे समी नेत शितपाख । दुतिया सो पूरन भई यह वनारसी भाष ।।

Colopohn: इति बनारमी विज्ञास संरूपित् । शुनंभूयात् संवत् १८६० माभीसमे मात्तभाद्रोमासे शुक्लेपक्षे एकादश्यां सोमवासरे । पुस्तकमिदं रज्ञाय शर्मणे लेखि । पट्टनपुर मध्ये आलमगंज निवास । पुस्तक संख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छन्नै (३६००) लिखि आरे में बाबू परमेष्ठी सहाय का ।

१०७८ बारह भावना

Opening । पंच परम पद वंद हूँ, मन वच सीतनिवाय ।

भावें बारह भावना, निज आत्तम लव लाय।।

Closing: भूला चूका होय जो, भव्य जन लेह सुधार।

मोह दोस दीजै नहीं, भैरौं कहैं बिचार।।

श्री जिन घरम न विसारिये।।

Colophon: इति श्री बारह भावना जी समाप्तम् ।

१०७६. बारह भावना

Opening । राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असतार ।

मरना सबको एकदिन अपनी अपनी वार ॥१॥

Closing : जांचे सुरतरु देय सुख चितन चिता रैन।

विन जांचे विन चितये धर्म सकल सुख देन ।।

Colophon: इति बारह भावना सम्पूर्णम् ।

#### Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purana Carita, Katha)

### १०८०. बारह भावना

Opening । आदिदेव जिनमें नमों, वंदो गुरु के पाय ।

बरनौं बारह भावना सुनऊ चत्र चित लाय ॥१॥

Closing । जहां संवर तहां निर्जरा, जहां आश्रव तहां बंध ।

इसनी कला विवेक की और बात संबंध ।।१४।।

Colophon: इति।

### १०८१. बीस तीर्थं कर नामावली

अक्षरमात्र पदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविविजितरेफम् । साधुभिरत्र मम क्षन्तन्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ।।

Closing । नियमप्रभ जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-

बीर्ष जी ॥२०॥

Colophon: इति श्री वीसतीर्थं कर के नाम संपूरण।

विशेष-- इसी में भविष्यत चौवीसी भी अन्तर्भूत है।

१०८२. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत वहुरि श्री सिद्ध निमज्जे ।

भाचारिज उवज्झाय तासु पदघंदन किज्जै।

साधु सकल गुणवंत संतमुद्रा लखि वंदी।

श्रावक प्रतिमा धरन चरन निम पोप निकंदौ ।

सम्यत्कवंत स्वसुभावधर जीव जगत महिंहों । जिस तित नित त्रिकाल बंदत भविक भाव सहित सिर नांईनित

11911

Closing । बहुत बात कहिये कहायनी यहै जीव त्रिभुवन को धनी ।

प्रगढ होइ अब केवल ग्वान शुद्ध सरूप वहै भगवान ॥

Colophon । इति श्री भैयाभगौतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । मासां-

Shri Devkumar Jain Oriental library Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथौ ६ गुरुवारक दिन पृस्तकसमा-प्तम् । लिख्यतं काशीमध्ये राजमादेरसीतला घाट देवि क दरवाजा । लिख्यतं गौड बाह्मण शिवलालक हस्त लिखतं जोसीवर वर जीवण । पुस्तक लाला शंकरलाल जी लिखाईत पठनार्थं उपकारार्थं श्री भगवान समर्पपणमस्तु । ग्रंथ संख्या

मंगलं कैंखकानां च पाठकानां च मंगलम् । मंगलं सर्वेलोकानां भूमिपतिर्मं गलम् ।। देखें--(१) जै० सि० भ० ग्र० ों, ऋ० १८६ ।

१०८३. ब्रह्म विलास

Opening:

देखें, ऋ० १०८२।

8500 1

Closing:

देखें, ऋ० १०=२।

Colophon:

इति श्री भैयाभगौती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम् । श्री संवत्
१६६७ । शाके १७६२ मासानां मासे उत्तम माध
मासे शुक्लपक्षे तिथौ । १६ । भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई ।
लिख्यतं गौड ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमिवर सीतलाघाट । पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थं परोपकारार्थम् ।
यादृशं पुस्तकं .... .... .... न दीयते ।।१।।
लेखिनी पुस्तकां .... मदंता ।।२।।
जले रक्ष यले — पुस्तकं ।।४।।
ग्रंथ संख्या ४६०० चारहजारबाठ सी
पत्र संख्या-१६६।। श्री पांश्वंनाथाय नमः ।
मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ।
मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मंगलम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts (Purāna, Carita, Kathā)

# १०८४ चैत्यवंदना

Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेसु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।

यावन्ति चैत्यायतनामि लोके, सर्वाणि बंदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥

Closing: णवकोडि - " अकिट्टिमा बंदे ।।

Colophon: इति चैत्य वंदना।

देखें—(१) दि० जि० ग्रे० र०, पृ० १२७ ।

(३) रा० सू० IV, पृ० ३६४, ३८७, ४३२।

१०६५. चैत्यवंदना

Opening : सद्भनत्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणां निकाये,

नक्षत्राणां च निवासे ग्रहंगणपटले ताराकाणां विमाने ।

पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त साम्द्राधकारे,

श्रीमत्तीर्थं कराणां प्रतिदिवसमहं तत् चैत्यानि वंदे ॥

Closing । जन्म-जन्म-कृते पापं जन्मकोटिमुपाजितम् ।

जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ।।१२॥

Colophon: इति संपूर्णम्।

देखें, दि० जिं० ग्र० र०, पूं० १३२।

१०८६. चातुमीसव्याख्या

Opening: स्मारं स्मारं स्फुरद्ज्ञानधामजैन-जगतम्।

कारं कारं क्रमाभोजे गौरव प्रणिति पुनः ॥१॥

Closing : अक्षयादितृतीयायाः व्याख्यानं वीक्ष्यप्राक्तमम् ।

अलेखि सुगमं कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकैः ॥१॥

Coiophon: इत्यक्षयानृतीया व्याख्यानम् । ग्रंथाग्रमनुमानतः श्लोको सप्तिति।

116911

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arfah

विशेष - इसमें चतुमीस के साथ ही अष्टान्हिका व्याख्या, दीवाली-व्याख्या, सौभाग्य पंचमी व्याख्या, ज्ञानपंचमी व्याख्या, मौन-एकादशी, पौष -- दशमी व्याख्या, मैक तेरस व्याख्या, होलिका व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

१०८७. चौदहगुण स्थान

Opening : गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परिन नाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनास

३ मापक कौदह स्थानक जीवन जाननाम् ।

Closing: जथा पाषाणते सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण निः; कलंक शोभै त्यों
अपनी अनंत शक्ति करि विराजमान केवलस्थान ॥२॥ केवल
वर्णन ॥२॥ अनंत वीर्ष ॥३॥ छाइक सम्यक्त ॥४॥
वैतन्य भाग् ॥४॥ "" "परमात्मा कहीये ।

Colophon: यह चौदह गुन स्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र वर्णन जिनवानी अनुसार कथन कर पूरन किया। देखें, जै० सि॰ मै० ग्रे० I, कै॰ २०४।

१०८८, चौदह गुणस्थान

Opening : तिस मुक्त के स्थान जाने की इहं चौदेहं सीढ़ी है सी प्रथम मिथ्यात गुन स्थान ही मैं यह जीव अनादिकाल से पड़ा आया है तहीं कछुं भी इसकीं अपनाभला खुरा होने का ग्यान नहीं हुआ सी मिक्यात का पांच प्रकार का भेदें हैं—

Closing : जन्म मर्न इत्यादिक संसार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर अमर की प्राप्त हुआ।

Colophon: इति श्री चौदहगुणस्थान की वरवा सम्पूर्णम्। समाप्तम्।
गुन्नभकतु।

# Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purāṇa, Carita, Kathā)

२०६१. चत्वारिदंडक

Opening : चतारिमंगलं अरिहंतमंगलं सिद्धमंगलं ।

साहुमंगलं केवलीपण्णत्तीधम्मोमंगलं ॥१॥

Closing : बंदेहिणम्मलयरा आचेइं अहियं पयासंता ।

सायर इष्यंभीरा सिद्धसिद्धि मम दिसंतु ॥ ८॥

Colophon: इति थोस्सामिदंडक संपूर्णम्।

१०६०. चौबीस दण्डक

Opening । वंदौं बीर सुधीर कौ महावीर गंभीर।

वदं भान सम्मति महादेव देव अतिवीर ॥

Closing । अंतहकरण जु सुख होय, जिन धरमी अभिराम ।

भाषा कारण करण कूँ, भाषी दौलतराम ॥१७॥

Colophon: इति संपूर्णम्।

१०६१ चौबीस दण्डक

Opening : देखें - कर १०६०।

Glosing ; देखें — कर १०६०।

Colophon: इति श्री चौवीस दंडक चौपाई संपूर्णम्।

१०६२ चौबीस दण्डक

Opening: प्रथम दंउकिन के नाम तहाँ नारक १, भवनवासी देव १०,

ज्योतिषी १, व्यंतर १, वैभानिक १, पृथ्वी १, अप १, तेज १,

#### ३० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : " - "तेजकाय वायुकाय विषेभी उपजे हैं ऐसे चौबीस

दंडकिन का कथन लिख्या सो त्रिलीकसार ... अवि

ग्रन्थिन ते सीधि करि लेवे।

Colophon: अनुपलब्ध।

१०६३. चौबीसठाणा

Opening : गइंइंदियं च काए जीए वेए कषायणार्गय ।

संयमदंरणलेस्सा भब्विया समत्तसिणाबाहारे ॥१॥

Closing : अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय ।

वनस्पती । वेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर ।

पंक्षी । चौषदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

Colophon: इति श्री चौबीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पौष

कृष्ण बुधवरि । सम्वत् १८७४ ।

वीहा-- करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।

लिख्यो जाति अति कवित तै सब जानत आसान छ

शुभंभवतु ।

१०६४. चर्चा-संग्रह

Opening : धम्माधुरंधर आदि जिन, आदि धम्म करतार ।

जमू देवअवरंण तै सर्व विधि मंगलसार ॥१॥

Closing : एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अंच्छरा नृत्य करें ऐसे सर्व

मिलि सैताईस कोड होय छै ऐसा जानमा ।

Colophon: इति चर्चासंग्रह समाप्तम्। शुभं भवतु ।

वैखें, जै सि म प्र ग्र I, ऋ प्रश्र

Catalogue of Sanskrtt, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Purāṇa, Carita, Kathā)

### १०६५ चर्चासमाधांन

Opening । जयोवीरजिन चंद्रमा उद्दैअपूरव जासु ।

कलिजुग काले पाष में कीनो तिमिर विनास ॥१॥

Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार।

चहुं सव्व मंगलकरण प्रियकारणि कुमारि ॥१६॥

Colophon: इति चरचा समाधान ग्रंथ भूधरदास कृत समाप्तः ।। संवत्

१८६३ । माघ शुक्ल ११।

देखें, जै० सि० भ० म० फ० १९६।

### १०६६. चरचानमाधान

Cpening: देखें, ऋ० १०६५।

Closing : देखें, ऋ १०६४।

Colophon । इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रंथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१ समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इदं पुस्तकं लेखनीयम् ।

# १०६७. देशास्कंध

Opening । नमः सर्वज्ञया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवान महावीरे ।

Closing । वस्सावा सम्पाद्या सवियाणं कष्पई निमन्थाणं वा ... तथ्येववायणं कत्य ।।

Colophon: इन्नेयं संगच्छिरियं घेरकप्पं अहासुत्तं अहाकप्पं अहासम्यं अहातच्यं सम्मं काएणव फासित्ता पालित्ता सोमित्ता वीरित्ता किहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगद्द्या समगा निग्गंथा तेणेव भवग्गहेणेजं सअत्यं सडभयं सवागरणं \*\*\* \*\*\*

इति वैमि पण्जो सवणाकप्पो सम्मत्ते दसासू असकंधस्स अट्टम-

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

ज्झयणं ग्रंथाग्रं श्लोक १२१६ संवत् १७३४ प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे सौम्यवारे सप्तमीकर्मवाद्यां श्रीमत् वृहत् खरतरगच्छा तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचंद्रसूरिणादानां शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रौण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज डांगे श्री।

### १०६८. दोनवावनी

Opening : वंदो अरि जिनंद व्रत तीरथ परगास्यौ।

णमो श्रेयंस नरिंद दान तीरथ अभ्यास्यौ ॥

Closing । रतनत्रै आभरन विराज वीरनंद गुरु गुन समुदाय।

तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय ।

तव श्री पद्मनंदने कीने दान प्रकाश काव्य सुखदाय।

पद्मनंद वनाइ दानवावनी द्यांनत राय ।।

Colophon: इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम् ।

१०६६. दोनवावनी

Opening : देखें, ऋ० १०६ वा

Closing : देखें, ऋ० १०६८।

Colophon: इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम ।

११०० दा-शील-भावना

Opening : प्रथम जीनेसर पाय नमी यामी सुगुरु पसाय ।

दान शील तप भावना बोली सुबह संवाद ।।१।। 🦸

Closing । दान शील तप भावना रचीं संवाद भगता गुणता भावसूरैं ।

रीढि समृढि सूप्रसादीरे धर्म हीयेधरी ॥१॥

Colophon: इति श्री दान शीलतेष भाषना सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manucripts (Purāņa Carita, Kathā)

### ११०१. देवागम

Opening: देवागमभोयान चामरादिविभूतयः।

मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

Closing : अयति जगित ।। समुपासते ।।

Colophon : इति श्री समतमद्रपरमाहेताचार्यविरचितं देवागमसूत्रं संरूर्णम् ।

दोहा: श्री देवागम ग्रंथ को पौष कृष्ण नव जान।

" एक परमान ॥१॥
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,
हरिदास सुत अजित को आरा देस मझार ॥२॥
सो जयवंतो नित रहो जब लग सूरजवंद,
यह जिन सासन त्रिजन हित पूरन सिव सुखकंद ॥३॥
सुभं भूयात् । शुभम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रे० 1, ऋ० ४५४ ।

११०२ दिगम्बरआम्नाय

Opening : श्री भद्रबाहुँ स्वामी पीछे दिगम्बर संप्रदाय में केतेक वर्ष

अंगनि के पाठी रहे।

Clusing संप्रदीय में जथावत आचार का ती अभाव ही है जो कही होग

ती दूरे क्षेत्र में होयगा, परन्तु मोक्षमार्ग की प्ररूपणा तो प्रंयनी

के महात्म तें वर्ते है।

Colophon: इति दियम्बर आम्नाय ।

्रश्रीय है। ११०३: धर्मग्रंथ

Opening : मंगल बीकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महेते ।

साधु केवली कथित वर धरम सरण जयवंत ।।

भैश े श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan ,Arrah

Closing : स्याद्शद् अगम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सदोष ।

स्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विचय ध्यान निर्धार ।।

Colophon: इति श्री धर्मरत्न संपूर्णम् ।

११०४. धर्मग्रन्थ

Opening : ••••• दोव्रनिका न्यारा-न्यारा मानना ।

Closing : ••• ••• एकेन्द्रिय तो सर्वत्र हैं ही, अर कर्मभूम

Colophon । अनुपलन्ध ।

११०५. धर्मामृतसार

Opening : अनंतर अविनासी भगवान ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिनिक्

प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है।

Closing : अर नाभिराज कमल मंडित तलाब की उपमाक धरें उदय

होणहार भगवान रूपे सूर्यं ताकि अभिलाषा करता निरंतर

निरषता संतापरमज्**ययक्**प अतुलर्धमं की धारताभया ।

Colophon: श्रीश्रीश्री।

११०६ धर्माष्टक

Opening । मैं देव निति अरिहंत चाहूँ सिद्ध की सुमरण करी।

मैं सुर गुरु मुनी तीन पदमय साध पद हिरदे धरी ॥ १॥

Closing : यह भावना उत्तम सदा भानु तुम सुनो जिनराज जी,

तुम कृपानाथ अनाथ चानत दया करनी ग्याव जी।

दुष्ट कर्म विनास ज्ञान प्रकास मोक् कीजिए,

करि सुमति गमन समाधि मरण सुभगति चर्ण की दीजिये।।।।।

Colophon: इति धर्मचाष्टक भाषा सम्पूर्णम्।

Catalogue ot Şanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Purana, Carita, Katha)

# ११०७. धर्मपरोक्षा

Opening : पणमूं अरहंत देवगुरु निरगंथ दयाधरम ।

भवद्धितारन अवर सकल मिध्यात मणि।।

Closing : भनत गुनत यह भाषिर अहनिसि होइ भा ४ न्द ।

धरमसुण्यातै उपजै यामै परमाणन्द ।।७५॥

Colophon । इति श्री धम्में रशिक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ संवत्

१८७१ । शाके १७३६ पीष शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तक-

मिदं सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टमपुर सध्ये

गायघाट स्थाने ।

११०८ धर्मरत्न

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महेत ।

साधु केवली कथितवर धरम शरण जयवंत ॥१॥

Closing । श्रुतकेविल गुरु के अवगाढ़ केविल प्रमु के परम अवगाड़ ।

बात्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराही ॥

Colophon । नहीं है।

११०६. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening : देखें — ७० ११० हा

Closing : धर्मरत्म की ज्योति फैलो बहु दिस

जग तम शिव मार्ग उद्योत जयवंती वर्ती सदा ।।

Colophon: महीं है।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Artah.

# १११०. धर्मरहस्य

₹

Opening : पंचनि में कहिये परमेश्वर पंचहु अक्षर नामदिये ते।

उ नमकार सबै सिअ ऊपर पंचनि ते उत्तपत किये ते।

लोक अलोक त्रिकाल में नाहि कोई तीन की समदेष हिमें ते ।१।

Closing : धर्म पचास कवित्तज भैज्जत भग्त विराग स्वज्ञान कथा है।

भापनि औरनि को हितकार पढी नरेनार सुभाव तथा है।

अक्षर अर्थ की भूलि परि जहां सोध तहां उपकार जथा है।

द्यानत सज्जन आप विषेत्त होय वारिध शब्द मधा है।

Colophon: इति धर्मरहस्य कवित्त वावन सम्पूर्णम्।

### ११११. धर्मसार सतसई

Opening : बीर जिनेश्वर प्रणम् देव, \*\* ""

••• - सुमिरत जाके पाप नसाय ।। १०।।

Closing । गुन थौर - " क्ल बीर ॥१० वा

Clolophon: इति श्री धर्ममार भट्टारक श्री सकलकीरत उपदेशक पंडित

सीरोमण दास विरिचित श्री पंचकत्यानक महिमा संपूरम लिखतं धरमसंनेही नै । इति श्री धरमसार ग्रंथ संपूर्णः । संवत्

१८३२ । शाके १६६७ मीति वैसाध शुदि सोमवासरे

संपूर्णः ।

## १११२. द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीवं देव्वं जिणवरवसहैण जेण णिहिट्टं।

दैविदविदवंदं वंदे तं सञ्वदा सिरसा।।

Closing : वञ्चसंगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयनुदासुदप्णणा ।

सोधयंतु तण् सुसधरेण मेमिसंदमुणिना भनियं जं ॥६०॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Putana Carita, Katha)

Colophon: इति श्री नेमिचंदिवरिचतं द्रव्यसंग्रहं समाप्तम्।

देखें, जै० रि० भ० ग्र० I, कि० २१३।

१११३. द्रव्यसंग्रह

Orening । देखें कि १९१२।

Closing : देखें-+क०-१९१२।

Colophon: इति मोक्षमार्गमित्रपादकः तृत्तीयोध्यायः इति श्री द्रव्यसंग्रह जी

समाप्तम् ।

१११४. द्रव्यसंग्रह

Opening : वरं प्राणपरिस्थागो न वरं मानखंडनम् ।

प्राणक्षये क्षणं दुखं मानखंडे दिने दिने ॥६॥

Closing । देखें - क १११२।

Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक नृतीयोध्यायः । इति द्रव्यसंग्रह समान्तः

१११५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, कः १९१२ ।

Closing : संवत् सत्रह सी इकसीस । साथ सुदी दसमी शुभ दीन ॥

व नगलेकरण परम शुख्याम । इब्युसंग्रह प्रति करुं प्रणाम ।।

Colophon । इति भी क्रमसंग्रह कवित्राचंग्र संपूर्णम् । संवत् १८७१ पीष

धुक्ल एकादस सनिवार को लिखा।

१११६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, कर १९१२।

### ३८ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : ••••• विरूद भावटाली करी साची सूत्र भाव कास्यो

छद्द जिणइ।।

Colophon: इति धर्माधा पञ्चतनु वालावोधे द्रव्यसंग्रह सूत्र समाप्तम् ।

१११७. द्रव्यसंग्रह

Opening । तहाँ प्रथम या ग्रंथ की पीठिका औसें को या ग्रंथ में तीन

बधिकार है तहाँ पहिला तो घट्टव्यपंचास्तिकाय की प्ररूपणा

का अधिकार है तहीं आदिगाया तो मंगल अर्थ है तहाँ एक

गाणा उक्तं च सव इंद्र के संख्या का है। .... ॥।

Closing : मंगल श्री अरहत वर मंगल सिधि सुसूरि ॥

उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सव दूरि ॥१॥

Colophon: इति श्री द्रव्यसंग्रह ग्रंथ समाप्ताः।

१११८ द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क॰ १११२।

Closing : देखें, क ० १११२।

Colophon: इतिद्रव्यसंग्रहसूत्रं समाप्तम् ।

१११६. द्वादशानुप्रेक्षा

Opening : जिनवर भासि ... - सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥ १॥

Closing : स्यणत्त्रय गुण्।।
Colophon । इति द्वावशानुप्रका समान्ता।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

Opening । ॐ निः संगीहं जिनानां सदनमनुपर्म त्रीपरीर्ततिभक्त्या, स्थित्वानत्वानिषद्य प्रणपरिणतीतः समेहंस्त्युग्मम् ।

Catalogue of Sanskrtt, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Purāṇa, Carita, Kathā)

भाले संस्थाप्पबध्या मम दुरितहरं कीर्तियः शक्रबंद्यम्, निदादूरं सदाप्तं क्षयरहितममुज्ञानभानु जिनेन्द्रम् ॥

Closing । पापिष्ठेन दुरात्मना जड़िक्यां मायाभिनालोभिनां,
रागद्वेषमलीमशेषमनसादुः खकम्मैयं निभितम् ।
भैलोभ्याधिपते जिनेंद्रभगवत् श्रीपामूलेंधुना,
निंदादूरंमहं जजामि सततं निर्मृत्तये कर्मणाम् ॥

Colophon: इति ईयीपथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

Opening : स्थर्गच्युत्तानामीहजीवलोके चस्वारिनित्यमुद्यं वसंति ।
दानप्रसंगो मधुरा च वाणी देवाच्चेनं सदृग्रह सेवनं च ॥

Closing : बह्वाशी नैव संतुष्टों, मायानुष्तप्रपंचक: । मूढस्य पलानस्चैव तिवंग्योन्या गतोनरः ॥

Colophon: इति गतिलक्षणं समाप्तम्।

११२२. गोम्मटसार

Opening : वंदी ज्ञानानंदकर नैषिचंद गुनकंद ।
माध्य वंदित विमलपद पुण्य पतीनिधिनंद ॥१॥

Closing । अपर्याप्त में मिश्रगुणस्थान नाही ताते कुल्ल लश्या का भिश्र गुणस्थान विषे देव विना तीन मति हैं इत्यादिक यथा संभव अर्थ अभिश्रंपनिकरि कहिए हैं, अर्थ सोजानमां .......।

Colophon: इति आचार्व योम्मटसार द्वितीयनाम पंचसंग्रह ग्रन्थ की जीव-तत्व प्रदीप का नाम संस्कृत टीका के अनुसारि सम्बन्धान

षद्रिका नामा भाषा टीका व्या व्या व्या । रेखें, बैं० सि० म० प्र० I. क० २४४ । ११२३. ग्यान के आठ अंग

विजन वयसमग्रह । • • • वस्त्रंगर ।।

Opening:

४० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah,

Closing । अते ज्ञान के आठ अंग हैं भो धर्मात्मा जीवन करि धारवे योग्य हैं।

Colophon: इति ग्यान के अब्दर्अंगु सम्पूर्णम् ।

११२४. हणवन्त अणुप्रेक्षा

Opening : सिद्धाणिजीय जीव वणस्सई कालू पुगमाच्येत ।
सन्वमलोगागासं अच्येव अणतया भणिया ।।

Closing : इयचारियाइं सुर्णेवि - " - " "

Colophon: इति हणवंत अणुप्रेक्षा. समाप्तम् । पंडित बछराजू लिखितम् ।

११२५. जिन गायत्री त्रिकाल संध्या

Opening : अयोज्यते त्रिवर्णानां गौचाचारविधिकमः । प्रातरेक समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनेश्वरम् ॥९॥

Closing: - संघोषासने ।। १।। चैति सप्तकम्मीण क्रमण कुट्यांदिन तितदाह तमो होने भगवने समार सागरित्रगानानाय अर्ह्य जलित्रमैद्यामि स्वाहा । २।। ॐ ही हीं ।

# ११२६ जिनगुणसम्पति

Opening संस्तुवे अर्वदा,देवं गोपेकां गीपति परभ् ।
वर्णनादप्पेनं पश्यन् त्रैलोक्यं द्विगुणायते ।।१।।

Closing : इति व्रतमहिमानं विदितपुराणं संकिलिय्यं भो विबुधजनाः ।
कृष्टतं सलीलं व्रतमिक्रस्यं शिवसीष्ट्यं यदि प्रान्तमनाः ।।७।।

Colophon : कि जिनगुणतस्पत्ति विकान समाप्तः । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । जुभगस्तु । Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha & Hindi Manuscripts (Purāṇa, Carita, Kathā)

# ११२७ जिनमहिमा

Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।

धरि प्रतीति जे जयत, ते सफल करत अवतार ॥

Closing : अद्भुत अतिसे तुम धरे वीतराग निज लीन ।

पूजक सहजै उच्च ह्वै निदक सहजै हीन ॥७॥

Colophon: इति जिनमहिमा संपूर्ण।

११२८. जीवराशि क्षमावाणी

Opening : हिवराणी पद्मावती जीवराश विमार्व .... • ।

\cdots 🕶 🕶 जे मैं नीक विराधिया।।

Closing : रामवयराडी जे सुनैं 💌 " तत्तकाल ॥३२॥

Colophon : इति जीवराणि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२६. णनपचीसी

Opening : सुरनरितर्यंग्योनि मैं निरहै निगोदिअवृत ।

महामोह की नींद मैं सोए काल अनंत ॥१॥

Closing : कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।

आप समझावै आप कूंजपै कर्म के हेति।२४॥

Colophon: इति श्री ज्ञान पचीसीसंपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानांर्णव-वचनिका

Opening : पिंउस्थं पदस्थं च रूपस्थं रूपवर्जितम् ।

चतुद्धियानमाम्नातं भव्यराजीवभास्करैः ॥१॥

Closing । अक्षर पदकूँ अर्थ रूप ले ध्यान मैं,

जें ध्वावै उस मंत्र रूप एकता नमी,

्र श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devkumar Jain Oriental library Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

घ्यान पदस्थाज्ञ नाम कहयो मूनीराज नै ।

जे या मैं ह लीन लहै निज काज मै ।।१।।

इति श्री गुभचन्द्राचार्य विराचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-Colophon:

नाम संस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका विषे पदस्थध्यान

का प्रकरण समाप्त भया। श्रीरस्तु।

११३१. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening: ्पणमियः सिरसोः गेमिः गुणरयणविहसणं महावीरं

सम्मत्तरयणणिलयं पयडिसम्कित्तणं वोच्छं ८६ ॥१॥

पाणवधादीस् रदो जिण प्रयासूम्खनगाविग्धयरो । Closing:

अज्जेइ अंतरायं ण लहइ जं इच्छियं जेण ।।

इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कम्मप्रकृतिग्रंथः Colophon:

समाप्तः ।

देखें, जि० रक्ष्मो०, पृ० ७२।

११३२. कर्म-बतीसी

Opening : पर्म निरंजन परम गुरु परम पुरुष परधान ।

वन्दी परम सम्धिमय भयभंजन भगवान ॥१॥

यह परभारथ पंथ गुन, अगम अनंत वदान। Closing:

कहैं बनारसी दास इम जथा सकत परवान ॥३२॥

इति ध्यान वतीसो संपूर्णम् । Colophon:

११३३. कार्तिकेयानुप्रका

तिहुवणतिलयं देवं वंदित्ता तिहुं अणिदपरिपुञ्जम् । वोच्छं अणुबेहासी भवियं जणाणदजणणीको ॥ Opening 1

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Purāṇa, Carita, Kathā)

Closing : मुनि श्रावक के भेदतै, धरमदोय परकार ।

ताको सुनि चिन्तो सतत, गहि पावो भवपार ।।

Colophon: क्ति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समान्तम् मिति चैत सुदि ७

संवत् १६३ वार मंगल ।

इति श्री

११३४ लघुतत्त्वार्थसूत्र

Opening: दृष्टं येन चराचरं केवलज्ञान चक्षुषा।

प्रणमामि महावीरे बंदे कांतां प्रवक्षते ॥१॥

\*Closing : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवाः । १३। पंचविधनिर्भयाः । १४।। त्रिविधा

सिद्धाः ।१४॥ द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ।।१६॥ अष्टौरेसिद्ध-

कुणाः ॥१७। द्विविधाः सिद्धाः ॥१८॥ वैराग्यं चेति ॥१६॥

Colop'ion इति लघुतत्वार्थं सम्पूर्णम् ।

विसे । - इसके पहले हेत्र में ही लिखा है कि भव 'अर्हत्प्रवचन'

कहेंगे। अतः इसका नाम भी वही होना चाहिए।

देखें - जै० सि० भ० ग्र०, I, ऋ० २६० ।

११३४ लघुसामायिक

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोक कभावने ।

नमः श्रीवद्धेनानाम नद्धेमानजिनेसिने ॥१॥

Closing : एवं सामायिक सम्बक् सामायिक खडित: ।।

वर्तनामुक्तिमानम्य कस्य पूर्णयसमिनः ॥१४॥

Colophon: इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम्।

४४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

११३६. लघु सामायिक

Opening : सिद्धवस्तुवची भवतया सिद्धान्त्रणमतः सदा ।

सिद्धकार्यः शिवं प्राप्तः सिद्धि ददत् नोव्ययम् ॥१॥

Closing: देखें, ऋ० ११३४।

Colophon: इति लघु सामयिकम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६६।

११३७. लह्या स्वंरूप

Opening : आर्तरौद्रसदाकोधी मत्सरीधर्मवर्जित:।

निर्देयोवैरसंयुक्त "कृष्णलेश्याधिकोनर: ।।१।

Closing : किन्हाए जाई नरयं नीलाए थावरो होई कानुहुए तिरिय गई ।

पीताए मानुसी होई, पो माए देव गइ सुक्काए पावई सासयं

ठाण

Colophon: इति लेश्यास्त्रक्षं सम्पूर्णम् ।

११३८. लीलावती प्रकीर्णक

Opening । प्रीति भक्तजनस्य यो जनयते विष्नं निविध्नंसमृतंस्तंवृंदारकवृंद

वंदितपदं नरवामतगीननम् ।

पार्टी सदणितस्य विच्यवतुरप्रीतिपदांस्फुटां संक्षिप्ताक्षरकोमला-

मलपदैलालित्पलीसावती । १॥

Closing : ... एक का बोलबाला रहा रहन दे और सोलह रहन

दे औसा अंक राखें और मिटाय डालें। अब एकका भाग सोलह

मैं देइ पाये सीलह दश अंक के सोलह दाडिय पायें।

Colophon: इति भास्कराचार्यं विरचितायां गणित - सीलावस्यां

प्रकीर्णकानि समाप्ता ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrspi (Purāṇa, Carita, Kathā)

११३६. मिथ्यात्व खण्डन

Opening । प्रथम सुमरि अरहंत की सिद्धन की धरिध्यान।

सरस्वती सीस नमाइक, वंदी गुरु जुग्यान ।।

Closing : ग्रंथ अनूपम रच्खी यह दे ग्रंथिनि की सारिथ।

मूरिष हाथि नदेहु भवि अधिक जतन सौँ राखि ॥

Colophon: इति मिध्यास्य खण्डन सम्पूर्णम्। शुभ संवत् १८७६ मीति

भैत्र सुदि । १। रिववासरे उपदेश ब्रह्मपद्मसागर जी लिखित

अनुश्राचक आरा नगर।

श्रीरस्तु।

निशेष-- इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है।

देखें, जैं । सि भ प्र प्र I, क २८ १।

११४० मोक्ष मार्ग

Opening : मंगलमय मंगलकरण वीतराग विज्ञान।

नमो ताहि जाते भए अरहंतादि महान्।।

Closing : जेसे बादरे के भी हस्त पदादि अंग होहैं। परन्तु जैसे मन क्षेते

से न होहै। तैसे मिथ्या दृष्टिनि कै भी व्यवहार रूप निसंकि-तादि अंग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्पक्तकै

ताम अने हा है, करे**यु अ**त्र निक्यम का तामका लिए तस्य

होइ तैसे न हो है।

Colophon; नहीं है।

🛂 १. मोक्षमार्ग पैडी

Opening: इक्क समें रूचियंत जो गुरु अच्छेहै सुनमल्ल।

जो तुम अंदर चेतना वहै तु साटी अल्ल ॥१॥

४६ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing । भव थिति जिनकी घटि गई तिनकी यह उपदेश ।

कहत बनारसीदासयों मूढ़ न समुझैलेस ॥२२॥

Colophon । इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

११४२. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : देखें, क॰ ११४१।

Closing । देखें, ऋ॰ ११४१।

Colophon: इति मौक्षपैडी संपूर्णः।

११४३ मृत्यु महौत्सव

Opening : मृत्युमार्गेप्रवृत्यस्य वीतरागी ददात् में।

समाधिवीधिपार्थयं यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ॥

Closing : स्वगरिक्यविचित्रनिम्मंलकुते संस्मयंमानाजर्नैः,

मूरवा मुक्तिविधायिनौ बहुविधि बाक्षानुक्यं फलीम् । मुक्तवा भीनमहीनशं परकृतं स्थित्वा क्षणभंडले,

पात्रावेशविवजेनामिवमृतं संती लभतिस्तत ॥

Colophon: इति मृत्युमहोत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।

देखें, जैं सि भ ग ग ।, क रूछ ।

११४४ म्वितस्कावली

Opening : दैवलींक ताकी घर आंगेन राजा ऋदि सेर्वतसुपाय।

ताके तन सौभागअपदि गुन केलि विस्तास करि नित आयु प

सों नर उतरत भवसागर निरमल होइ मीक्षणद पाय

इरव भाव विधि सहित बनारिस जो जिनबर हरिजमन लाइ

Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Purāṇa, Carita, Kathā)

Closing । सोलहसैइक्यानवै रितुग्रीष्म वैशाख । सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ॥१०४॥

Colophon : इति मुक्तिमूक्तावली भाषा समाप्ता ।
श्री: संवत् १६६८ वर्षेकात्रिकादिप्रतिपदायां शनिवासरे श्री
आगरामध्ये लिखितं लेखकेन केनचित् । लेखक पाठकयोः
शुभभवतु । इति श्री ।

विशेष— इस ग्रन्थ की अन्तिम पेक्ति के अनुसार संवत् १६६१ है लेकिन Colophon में १६६६ लिखा है।

११४४ नवकार महातम्य

Opening : श्राह्मी ॥१॥ चंदनवालिका ।२। भगवती राजीमति ।३। इ पदी ।४। कौशल्या ।५। मृगावति ।६। ••• •• ••• ।

Closing : अरि करि हरिसाइण डाइण भूत वेताल, सिव पाप प्रणासे थास्ये नगलमाल । इण सुमरण संकट दूरि टलइ ततकाल, जंपे जिनगुण प्रभू सूरिवर सीस रसाल ॥७॥

Colophon: इति श्री नवकार माहात्म्यसिकाय समाप्तम् ।

विशेष — इसमें सोलह सितयों के नाम भी दिये गये हैं।

११४६. नयचक

Opening । गुणाना विस्तरं वक्ष्ये .... -।
नत्वावीर्राजनेश्वरम् . - - - ।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति सुखबोधार्यमालापद्धतिः । श्रो देवसेनपंडितविरचिता

नय च ऋपरिसमाप्ताः।

११४७. नयचक

Opening : देखें, क० ११४६।

8=

Closing । देखें, ऋ० ११४६।

Colophon: इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपंडित विरचिता ।

इति श्री नयचकं समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन।

इति श्री।

११४८ नयचऋ वचनिका

Opening: वंदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल।

ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ॥१॥

Closing : सत्रह सै छ शीत के संवत् फाल्गुन मास ।

उजली तिथि दशनी जहाँ कीनो वश्रम विलास ।।

Colophon: इति श्री नात्यणदास हेमराज कृत नयवक वचनिका समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० प्रण I, ऋ० २१६।

११४९. नयचऋ वचनिका

Opening : देखें, क॰ ११४८।

Closing : देखें, ऋ० १९४६।

Colophon: इति श्री नयचक पंडित नरायनदास उपदेशशिष्य हैमराज कृत

सामान्य वचनिका संपूर्णम् । इति श्री नयचक जी की वचन

का सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ट वर्दि ६ । बुधवार । संवत् १६६३

मु। चंदैरी।

Catalogue of Sanskrit, Prakri, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Purāṇa Carita, Kathā)

# ११५०. निर्वाणकाण्ड

Opening : अठ्ठावयम्मि उसहो चंपासवास्सपुज्जिजणणांहो ।

उज्जंत णेमिजिणो पावासणि व्वुदो महावीरो ॥१॥

Closing : जो इपठयतियालं णिव्नुई कंकपीभावसुद्धीए ।

भुं जिनरसुरसुक्तं पठइ सो लहइ णिव्वाणं ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् । शुभं ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदो सदा, भाव सहित सिरनाय।

कहुँ काण्ड निर्वान की, भाषा विविध बनाय ॥१॥

Closing : संवत् सत्रह सै एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल ।

भेया वंदन करे त्रिकाल, जै निर्वानकाण्ड गुणमाल ॥२२॥

Colophon: इति निर्वाणकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।

श्री शुभं इति । ...

११५२. पंचींवसतिका

Opening । सन्त्रमलमायं उसिद्धं सिद्धगति हयगिदनदपुञ्जं।

णेमि ससिगुरबीरं पणिय तिय सुद्धिभवमहणं।

Closing : मोहाकुपुइणि चंद भवदूहसायरणं जाण पत्तमिणं ।

धम्मं विलाससुहदं भणिदं जिणदासबम्हेण ।।२६॥

Colophon: इति धर्मव्यंसितका लिक्स संस्पूर्ण करी।

११५३. पंच परमेष्टी

Opening । इस जीव के संसार में पाँच ही परमइष्ट है। तात इनको पंच

५० श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्य ावली Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing : बस्त्र का त्याग । १। दंतवन का त्याग । खडे होय अहार ले । १।

लघुभोजन एक बेरले। एवं सप्त ए अठाईस गुन साधु

महाराज जी का कहुया।

Colophon: इति श्री समुच्चय पंचपरमेष्टी की चर्ची स्वरूप संपूर्णम् ।

११५४. परमात्मप्रकाश

Opening : चिदानंदैक रूपाय जिनाय परमाहमने ।

परमातमप्रकाशाय नित्यं सिद्धांत्मने नमः।

Closing : परमायगथाणं भासनोदिव्यकार्ज,

भणित मुनिवराणं मुक्रवदी दिव्य जीउ । विसयसहरयाणं दल्लहो जीहु लीए ।

अयउ सिवसक्तो केत्रलो कोष्टिकीही ।।३४६॥

Colophon: इति श्रो योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश; समाप्तः ।

११५५. परमात्मप्रकाश

Opening । देखें, ऋ० १९५४।

Closing : देखें, क० ११४४।

Colophon: इति परमात्मप्रकाश: समाप्त । ग्रन्थाग्रै ४५ १ वर्लीक अर्नुर्व्युव ।

श्री। श्रीरस्त्। लेखकंगठकयोः शुभ भूयात्।

११५६ परीक्षामुख वचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेस र्रीव, तम अज्ञान नर्साय ।

शिवपथ बरतायौ जगित, वंदो मै तसु पाय ॥१॥

Closing : " कोटि जीव तुल्य कीन गणना में गणिये तीज हमें इस ग्रीध

की टीका करे हैं सो जैसे नवी का जल नवीन घट विषेकि छैंधा-

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manucripts
(Purāṇa Carita, Kathā)

लिये सोह शीतल होय पीने वाले को पुरुषिन के चित को प्रिय लागे तैसे तिस प्रभाचन्द्र के वचन ही अपूर्व ... -- ।

Colophon: नहीं है।

देखें, जे० सि० भ० प्र० , फ० ४६८।

११५७. प्रश्नमाला

Opening : आदि अंत चौबीसलों वंदी मन वच काय।

भव्यत की उपदेश दें करीं मंगलाचार ॥१॥

Closing । इस प्रध्नमाला की अपने कंठ में पहिरें ते भव्यात्मा कल्यान

के वांछित सुबुधी जुग भीमो में सोना पावेंगें। असी जान

इस प्रश्नमाला को धारण करहु।।

Colophon: इति श्री हिष्टतारंगनाम ग्रंथमध्ये अनेक ग्रंथान के अनुसार

प्रश्नमाला कथन वरननौ नाम संधि संपूर्णम्।

विशेष-- इसके बाद एक दोहा भी दिया गया है।

११५८. प्रवचनसार

Opening । सम्बंब्याप्यैकिषदूपस्वरूपाय परात्मने

स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय श्लानानंदात्मने नमः ॥१॥

Closing । ज्याख्येयं किल विश्वमात्मसहितं - एकं परं चित्।।

Colophon: इति तस्वप्रदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्तम् । शुक्षं

अस्तु । संवत् १६६२ वर्षे काल्गुनमासे कृष्णपक्षे । सनीवासरे काष्टासंघे मंदीतट " भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुत्रमेण

भट्टारक श्री चंद्रकीति भट्टाराजकीति तस्य शिष्य ब्रह्मधन जी

स्वहस्तेनालिखितम्। शुभाभुगात्।

देखों, जै० सि० भ० ग्र॰ I. ऋ • ३१२।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### ११५६ प्रवचनसार

Opening : देखें - क ११५६।

Closing : देखें - ऋ० ११५६।

Colophon: अनुपलब्ध।

५२

### ११६०. प्रवचनसार

Opening । स्वयं सिद्ध करतार करै निज करम सरम "" ""

··· एक विध अजरअमर

Closing : मूर्तिक पदार्थ को जाने है अति अंचल है अनंतज्ञान की

महिमा ते गिरा है अध्यन्त विकल है महामोह .... 🕝 ।

Colophon: नहीं है।

## ११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलंक: समन्तत: ।

प्रायश्चितं प्रवक्ष्यामि श्रावनाणां विश्रुद्धये ॥

Closing : प्रायम्चितं यः करीत्येवं देवं जाते दोधे तत्प्रशात्यर्थमार्थः

रास्ट्रस्यासौ भूमि: यस्यात्यनीपि स्वस्ताचास्यावस्थितं

शं तनीति ॥६०॥

Colophon: इति अकलंकस्वामिनिरूपितं प्रायम्बसग्रन्यं संपूर्णम् ।

देखें--- जै० सि॰ भ॰ ग्रे० I, ऋ० ३२५।

११६२. पाप-पुण्य माहातम्य

Opening : वर्द्धमान जिनवर नमूं, मन वच सीस नवाय ।

फुन गुरु गोतम की नमूं, जाते पातक जाय :1911

Catalogue ot Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Purana, Carita, Katha)

Closing : सत्रै सै इक्यानवै, पोष शुदी तिथ दूज।

सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन वानी कूंपूज ।। जे नर सुर धर गांवहीं, तथा सुनैं मन लाय । जिनवांभी सरधा करैं अंत सिद्धगत जाय ।।६।।

Colophon: इति अष्टद्रव्य सेती जिन पूजा करी समाप्तम् ।

११६३. पुण्य माहातम्य

Opening : पूरव पुन्न कियो जिन मोय, तेरां वस्तु जु प्रापत होय।

मानुष जनम जुपावै थाय, उत्तम कुल मैं उपजी आय ।।१।।

Closing : शक समान तपस्यां करे, दुष्ट शादमीसे तप करे,

इतने गुन निरमल जिस जोय, तासौं नमस्कार मम सोय ॥ ॥ ॥

Colophon । इति श्री पुण्य महात्तम समाप्तम् ।

११६४. सम्यक्तव कौमुदी

Opening : परम पुरुष आमन्दमय चेतनरूप सुजान ।

नमी सिद्ध परस्मा अग परकासक भान।

Closing : चंद सुर पानी 😬 तथ लग जैन प्रकाश ॥४६॥

Colophon: इति श्री सम्यक्त्व कौमदी कथा सादा जोधराज गोदीका विरचिते

उदितोदय भूप अर्हदोस संवादिकसर्गं गमनचरनतनांम एकादश परिच्छेद । इति श्री सम्यक्त कीमदी सम्पूर्णम् । संबत् १६४६ वर्षे मिति ज्येष्ट सुदि ३ वार मंगल श्रीपाश्वैचंद्र सूरि गच्छे श्री १०६ श्री खंद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत् झासि दारमल्लेन

श्री सफातपुर नगरमध्ये।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० ग्रः ऋ० ९१४ ।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### ११६५. समयसार गाथा

Opening: वीतरागं जिनं नत्वा ज्ञानानंदैकसंपदः।

XX

वक्ष्ये समयसारस्य वृत्ति तात्पर्यसंज्ञिकाम् ॥१॥

Closing : सुद्धोसुद्धावेसो णायव्यो परमभावदरिसीहि ।

ववहारदेसिदो पुणजेहुअपरमे ठिदा भावे ।।१५।।

Colophon: इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

११६६. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जग तिमिर हरत खग उरग लघन पगसिव मग

दरसी।

निरखत नयन भविक जल बरखत हरणत अमित भाविक

जन दरसी ॥

मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगति भगत

सवदरसी।

सजल जलद तन मुकुट प्रपत फन करम दलन जिन नमन

बनारसी ॥१॥

Closing : समैसार आतमदरव नाटक भाव अनंत ।

सोहै आगम नाम मैं परमारथ विरतंत ।।७२७॥

Colophon: इति श्री परभागमसमैसारनाटकनाम सिद्धान्त संपूर्णम् । श्रीरस्तु ।

कल्याणमस्तु । शुभंभवतु ।

देखें, जै॰ सि॰ भ॰ ग्रे॰ I, ऋ० ३४२।

११६७ समयसार नाटक

Opening : देखें, क ११६६।

Closing : देखें, क. १९६६।

Catalogue of Sanskrtt, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Purāṇa, Carita, Kathā)

Colophon: इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम्। स्वत् १८८४ भादौ शुक्त तेरस सौमवासरे जवाहरमल्ल

स्वाध्याय हेतवे ।

११६८ सनयसार नाटक

Opening: देखें, ऋ॰ ११६६।

Closing : देखें, कर ११६६।

Colophon: इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम् ।

रंघ्रचंद्र वसु सित अवधि भादव सित सितवार ।

द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन भई सवार ॥१॥

समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यांत विश्राम । पढ़त सुनत सुपसं उपजी भावित आसाराम ॥२॥

संवत् १८४० कार्तिंग शुक्ल १ रवि दिने लिखितं महुकमरामेण

पठनार्थमात्मारामः । शुभंभवत् ।

११६६. समवशरण

Opening : समोसरण मंडित नमी परमानम जिनरूप ।

सुरनरपति बंदित चरण, महिना अगम अनूप ॥१॥

Closing : इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुकत ।

अहिनिसि मंगलकाजे पढत सुनत सब कडुकरी ॥३०॥

Colophon: इति श्री समोसरणभेद।

११७०. समुद्घात

Opening : सीतसमुद्देवातं कहे वेदनां संमुद्देवातं ॥१॥ कवायं समुद्देवातं ॥२॥

मारणांतिक सर्बुद्धात ।।३।। वैक्रियं समुद्धात ।।४।। तैजस समुद्देवाते ।।१।। जाहारकं समृद्धात ।।६।। केवलि समृद्धात।।७।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्यावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan

Closing : अट्ठावीस योगन एकत्तो अट्ठावीस धनुष सष्ठ्योत्तर अपूर्

इतनी जंबूदी गकी परिधि।

Colophon: नहीं है।

¥Ę

११७१. षट्दर्शन

Opening ! शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष ।

भीमांसकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ॥१॥

Closing : रायपवानी ६ पूतीनचावन १० लोचन वडवा ११ घरधरमी

१२ कवित १३ राधा १४ वृषभनचावन १४ पेषजेवाई १६।

Colophon: अनुपलब्ध।

११७२. षट्पाहुड

Opening . कप्डण णमीयारं जिणवरवसहस्सवदुमाण्यसः।

दंसगमंगवा बोच्छामि जहा कम्मं समाशेण।।

Closing : अरहंनो सूहमना ••• ••• पूजा केरियं अर्ण ॥४८॥

Colophon: इति श्री कुंदक्ंदाचार्यं विरचित्तं शीतप्रामृतं समाप्रम् । संवत्

१७६५ वर्षे बैगाखमासे शुक्तपक्षे ति गै द्वादसी १२ मंगलवार

श्रीराम ।

११७३. षट्पाहुड

Opening : देखें, कः ११७२।

Closing : एवं जिण पण्णत्तं मौक्खरंस य पाहुई सुभत्तीए ।

जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासयं सुख्खं ॥

Colophon । इति श्री कुम्ब्रुदाचार्यविरचितं मोक्ष-पाहुड षष्टं समाप्तम् ।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Dharma-Dassana-Ācāra)

# ११७४. षट्लेश्याभेद

Opening ; कृष्ण नील कापोतले पीत पदम सुक जान।

सुभ असुभ जुकर्मके एषट्भेद बखान।।

Closing : यह षट् विध लेश्या कही सुनौ भविक दे काँन।

असुभ जांन निर वारिये भैरो कही बषान ॥

Colophon: इति श्री षट् लेश्या आरती।

११७५ सामायिक

Opening : देखें क॰ ११३६।

Ciosing देखें, ऋ ११३६।

Colophon: इति संपूर्णम्।

११७६. सामायिक

Opening : पडिक्तमामि भंते इरिया वहियाणं निराहगाए अगागुत्ते अ शमणे ।

Closing : गुरुव: पातु वो नित्यं ''' मोक्षमार्गोपदेशका ।

Colophon: इति सामायिकं समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ । प्र० I, भ ० ३६४ ।

११७७. सामायिक

Opening । देखें — ऋ० ११७६।

Closing । देखें कि ११७६।

Colophon : इति सामायिकम् ।

### श्री जैन सिद्धान्त भवने ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## ११७८. सामायिक

Opening । देखें, 🗫 १९३६।

ሂട

Closing : देखें - 🛪० ११३६।

Colophon । इति लघु सामायिक संपूर्णः । अध्य १० व दीजे ।

११७६ सामायिक

Opening : नमः श्रीवर्द्ध मानाय निर्द्धतकलिलात्मन ।

सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्यादर्पणायते ॥१॥

Closing : अथय पौर्वान्हिकदेववंदनायां पूर्वाचायांनुक्रमेण,

सकलकमेक्षयार्थं भावपूजावेदनास्त त्रसमेतम् ।

Colophon: इति लधुसामायिकसंपूर्णम् ।

११८०. साषाचार

Opening : वंदी देव युनादि जिन, गुरु गणधर के पाय ।

सुमरू देवी सारदा, रिद्ध सिद्धे वरदाय ॥ १११

Closing मंगर्ल भगवान वीरो मंगर्ल गौतमा गणी।

मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधमौस्तु मंगलम् ॥

Clolophon: इति साषाचार जिनमत की संपूर्णम् ।

११ इ१. साततत्त्व

Opening : जीव । श अजीव । २। आसिव । ३। वंद्य । ४। सँवर्र । १।

निज्जेरा ।६। मोक्ष ।७। एहि सात तत्त्व है इनमें पुन्य और

पाप मिलिके नो पदारथ कहिए हैं।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts (Dharma-Darsana-Ācāra)

Closing । इस पाप का सरूप विचार कर के स्थागनां जोग है। एही नी पदारथ समान रूप कहा। विशेष " निर्वर्त होय है। १।।

Colophon: इति श्री सातत्तस्व नव पदार्थं की वरचा संक्षेप मात्र जनाया है सो संपूर्णम् । शुभं भवतु ।

११८२ सिद्धान्तसार

Opening । तीन जगतपति जिनको धर्मराज के नायक शिवसुखदायक हैं। इस पंचगुरू कों प्रणाम करि के आवे भवन उदिधिकों कथन सुनों भाषु अवे ॥१॥

Closing । जे इह मध्य सुलोक विर्ष जितराज के मंदिर हैं अघखण्डन।
श्री निर्वाण सुभूमि जहाँ न समोक्ष गये करिकर्म विखण्डन।
जेइ सर्षत्रकी अनजाणये सबकी करि भूषित आंतन।
ते इय सायक देहुं मुझै करि जोरि करौं सबकौं नित बंदन। २४॥

Colophon: इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीति प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषायां मध्यलोक वर्णनीनाम दसमोध्यायाधिकार ॥१०॥

११८३. सिंदूर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening: सोभित तप गजराज सीस सिंदूर पूरव विवोध।
.... वनारिस जोरि कर।

Closing । सोरह से इक्यानवे रितु ग्रीष्म वैशाष ।
सोमवार एकादश्री कर नक्षत्र सितपाष ॥३॥
नामसुक्तिमुक्तावली द्वाविशति अधिकार ।
शतसि लोक परवान सब इति ग्रंथ विस्तार ॥४॥

### ६० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति श्री सिंदूरप्रकरण सुक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ समाप्तम् ।

संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ वृहस्पतिवासरे लिखितं यति

लालचन्द पठनार्थं लाला गोवरधनदासजी।

विशेष — दि० जि० ग्र० र०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य

है तथा टीकाकार हर्षकीर्ति है।

११८४. सिन्दूर-प्रकरण

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपकरि " " पार्श्वप्रभो पातु व: ।

Closing : किं जातैः बहुभिः करोति हरिणी "" " यानिर्भयी।।

Colophon: इति सिंदूरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखितं पंडितं परमानन्देन

मिति चैत्र कृष्णे पंचम्यां शुक्रवासरे रात्री श्री जिनचैत्यालये

संवत्सर १६२८ का। शुभं भूयात्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1, ऋ० ५२६।

११८५. सिंदूर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening: देखें, ऋ० ११८३।

Closing : देखें, ऋ० ११८३।

Colophon: इति सिन्दूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ सम्पूर्णम् ।

११८६. शीलव्रत

Opening : समजुपीय चतुर 🕶 😶 परनारिसौँ ॥१॥

C'osing : सीयल गुण कहणकौ "" वषानै ।।

Colophon: इति श्री सील कडवा समाप्तम्।

११८७ श्रावकाचार

Opening : राजंत केवलग्दान - - सहज सुभाव ॥१॥

Catalogue of Sankrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Dharma-Darsana-Ācāra)

Closing : "एक सर्वेज वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार ।

कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अंगीकार कर

श्रद्धोन कर।

Colophon: इति कुदेवादि का वरनन संपूर्ण । इति श्रावकाचार ग्रंथ

संपूर्णम् ।

देखें जैं सिं भा प्रत I, का देवहैं।

११८८ श्रावक प्रतित्रमण

Opening : जीवप्रमादजनिताः प्रचुराप्तदोषा ,

यस्मात्प्रतिक्रमणतः प्रलयं प्रयाति ।

सस्मास्तदर्थममलं मुनिबौधनार्थम्,

वक्ष्ये विचित्रभवकम्मीवशोधनार्थम् ॥

Closing : अक्खरपंगत्यहीनं मत्ताहीनं च जं मए भणियं।

तं खमउ ः दुक्खक्खमं दितु ॥

Colophon: श्वाबकप्रतिक्रमणं समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३७६ ।

११८६. श्रीवक प्रतिष्ठाक्रमोपण

Opening । देखें, क॰ ११६८।

Closing । देखें क ११८६।

Colophon: इति श्रावकंष्रतिश्रमापणम् ।

११६० श्रीवक् व्रतसंध्या

Opening । अपवित्रः पविश्रो "" श्रमुक्यते ॥

६२ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : श्रीमत्सिद्धजिनं प्रणमामि सततं ज्ञानामृतं भूषणम् ।

वंदे श्री जिनसेवकं प्रतिदिन संध्या त्रिकालं कुरु।।

Colophon: इति श्री संध्या संपूर्णम्।

११६१ श्रावकव्रतसंध्या

Opening : देखें, कर ११६०।

Closing : देखें, ऋ० ११६०।

Colophon: इति जैनसंध्या संपूर्णम् ।

११६२. श्रावकव्रतविधान

Opening : वारां व्रत श्रावग तने, तिनको करूं बखान।

जो जिय निहचै चित्त धरै ताकौ होय कल्यान ॥५॥

Closing : वरत जुबारैं इम कहैं, सुनौ भविक दें कान।

सी निहर्ने घर पालीयी भैरों कहै बखान ॥

Colophon: इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

११६३. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्धे मन घरसंत, उदघाटै जुगपाट तुरंत ।

घर वार भरम भजिगयो, पुन्यहि फलते दरसनभयो।

Closing : तीर्थं ङ्कर वंदी जिनदेव सीसनवाय करीपद सेव।

गुद्धभाव जाके मन भयो सम्यक्दृष्टि मुकतिह गयौ ॥

Colophon: इनि श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

११६४. श्रीपालदर्शन

Opening : देखें, कर १९६३।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramia & Hindi Manuscripts
(Dharma-Darsana-Ācāra)

Closing : देखें, क॰ ११६३।

Colophon: इति श्रीपाल देरसमे सम्पूर्णम्।

११६५ सुदृष्टि तरंगिणी

Opening । तैसे जे मुनि सम्यंक सहीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म

की जीरा वरी तै मोह की प्रवलता करि सम्मक राजपद छुटि

गया हो - "।

Closing: अगि अक्षर ज्ञान कहीए है सो उह प्रभाव समास के अन्तभेद में

एकं भेदें और मिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो बह अर्थाक्षर नाम

ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के संक्षेप मै भाम यह अक्षर

ज्ञान है।

Colophon पहीं है।

११६६. तत्वसार

Opening : भ्राणिगिदट्ठकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसन्भावे ।

णमिकण परमेसिद्धे सुतच्चेसारं पदीच्छामि ॥

Closing : मोऊण तच्चसारं रहवं मुणिणाहदेशसेणेण।

जो सिह्ट्ठी भावइ सो पावइ सासग्रं सोक्खं।।

Colophon: इति तत्त्वसार समाप्तः।

देखें, जै० सि७ भ० ग्र० I, ऋ० ३१३।

११६७. तत्वार्थसूत्र

Opening र श्रीकाल्यं द्रव्ययटकं 🗢 🤭 सर्वेः शुद्धदृष्टिः ।।

६४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : तवयणं वयधरणं - ••• निवारेइ ॥

Colophon: इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत संपूर्णम् ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ४०४।

११६८ तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें - कर १९६७।

Closing : देखें, कर ११६७।

Colophon : इति तस्वार्थसूत्र संपूर्णम् ।

११६६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क० १९६७।

Closing । तत्वार्थसूत्रकर्तारं " " उमास्वामीमुनीश्वरम् ॥

Colophon: इति उमास्वामिकृत तस्वार्थसूत्रं समाप्तम् ।

१२००. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क॰ १९६७।

Closing : "धर्मास्तिकायाभावात् ॥६॥ क्षेत्रकागतिलिङ्गतीर्थंचारित्र-

प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्या

Colophon : इति तत्वार्याधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽघ्याय. ।

१२०१. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ० ११६७।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manuscripts
(Dharma-Darsana-Ācāra)

Closing । देखें, क॰ ११६६।

Colophon: इति श्री तत्वार्थं उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम् । संवत्

१६२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष ।४। चंद्रवासरे लिखितं नी नकंठ

दासशर्माऽहं। श्रीकृष्णाय नम:।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम् ।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये ॥

Closing : देखें ऋ० १९६७।

Colophon: इति तत्वार्थसूत्र समाप्तः।

१२०३. तत्त्वार्तसूत्र

Opening : देखें, क॰ १९६७।

Closing । देखें, क॰ ११६६।

Colophon: इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र ममाप्तम् ।

१२०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क० ११६७।

Closing: देखें, ऋ० १२०६।

Colophon: इति तत्वार्थसूत्र सम्पूर्णः।

१२०५. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें क १९७!

### ६६ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : तपण्चरण करिबो, वृत धरिबो, संयम शरणको करिबो ......

··· चतुरगति के दुःख ते छ्टे।

Colophon । इति समाप्ता ।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening , देखें, ऋ० ११६७।

Closing : देखें, कः ११६७।

Colophon: इति।

१२०७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening । देखें कर १९१७।

Closing: देखें, क १२०५।

Colophon: नहीं है।

१२०८ तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ०, १९९७।

Closing : अरिहंतभासियत्थं गणहरदेवेहि गंथियं सम्म ।

यणमामि भत्तिज्तो सुदणाणमहोवहं सिरसा ।

Colophon: इति सम्पूर्णम्।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ ० १९६७।

Closing : णवमे संवर्तनज्जर दसमें मीवखं वियाणीह ।

इय सत्ततन्यभणियं, दहसुर्ने मुणिदेहि ॥६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Dharma-Darsana-Ācāra)

Colaphon: इति श्री उमास्वामि विरचितं तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

संवत्सर १६३७। मिति माघ वदी १२ वार वृहस्पति । इति ।

१२१०. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ० १११७।

Closing : देखें, क ० १२०५।

Colophon: नहीं है।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, कः ११९७। Closing : देखें, कः ११६६।

Colophon: इति श्री दशाध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ॰ १२०२।

Closing : देखें, ऋ० १२०० ।

Colophon । इति तत्वार्याधिगमें मोक्षणास्त्रे दशमोऽध्यायः समाप्तः ॥

१२१३ तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ ११ ७।

Closing । देखें, ऋ० १२०० ।

Colophon: ६ति तत्वार्थाधगमे मोक्षणास्त्रे दशमोध्याय: समाप्त:।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, ऋ० १९६७।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shii Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : देखें, त्र० १ १६७।

€ 5

Co'ophon: इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम्। श्रावणमासे शुक्लपश्चे तिथौ द

भोमवासरे, संवत् १६५५ श्रीरस्त्।

१२१५. तत्वार्थसूत्र

Cpening , देखें, कर १२०२।

Closing : पढमे पढमं णियमा विदिए विदियं च मध्वकालिमा ।

जंपूण खाईयसम्मं जिम्म जिणा तिम्म कालिम ।

Colophon: इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्तः। श्री पटणा-

मधे साहब विलदाश तस्य पुत्र साहभगवितदास तस्य पुत्र आलम-चन्द पठनाय सम्वत् १७७२ वर्ष कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ

स्रोम दिने सम्पूर्णम् ।

१२१६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें कः १९६७।

Closing: देखें, ऋ० १२०४।

Colophon: इति श्री समाप्तः।

१२१७. तत्वार्थंसूत्र वचनिका

Opening : श्री वृषभादि जिनेश्वर अंत नाम शुभवीर।

मनवचकाय विशुद्ध करि वंदी परम शरीर।

Closing : समयमार अध्यातमसार प्रवचनसार रहिस मनधार ।

पंचासतिकाया ए जीन, नाटकत्रयी कहार्व पीन । तत्वारथ सूत्तर की टीका, सर्वारथिकिद्धि नाम सुठीक

द्वीन तस्वारथ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तर्भत्तक ।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Dharma-Darsana. Acara)

Colophon: नहीं है।

१२१८. त्रेपनिकया

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पट्ट ।

विशेष-- यह ग्रंथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है। बीच के पन्न

भी अपठनीय हैं।

१२१६. त्रेपनिकया

Opening: जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु ।

··· •• • सब्बसाहणं।

Closing : अस्पस्ट ।

Colophon । अस्पष्ट ।

१२२०. त्रिकाल चतुर्विशति

Opening । निर्वाण जी 191 सागरजी । ३। महासाधु जी । ३। विमल

प्रभु जी।४। मुद्धाय जी।४। श्रीधर जी।६। श्रीदत्त जी।७।

अमलप्रभ जी ।८।

Closing : कंदर्प जी।२०। जयनाथ जी।२१। श्री विमल जी।२२ दिव्य-

षाद जी।२३। अनंतवीर्यजी।२६।

Colophon: इति त्रिकाल चतुर्विसति का नाम संत्र्णम्।

१२२१. त्रिवर्णाचार

Opening : त्रैलोक्ययात्रां चरितुं प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवंति यस्याः।

प्रसादती वर्त्तत एव लोके सारस्वति सा वस्तात्मनोद्धे ॥१॥

### ७० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : सारस्वत्या प्रसादेन काव्यं कुर्वन्ति पंडिता ।

ततस्सैषा समाराध्या भक्त्या शास्त्रे सरस्वति ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमःद्भगवन्मुखारविदिविनिगंते श्रीगौतमिषपादपद्मारा-

धकेन श्री जिनसेनाचार्येन विरिचते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्यय-

नसारोद्धारे ग्रहिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पंचमं पर्वाः।

१२२२ त्रिलोकसार

Opening । त्रिभुवनसार अपार गुन गायक " ।

... भी अरहंत महंत ॥१॥

Closing : सुखनाम निराकुलता का है। निराकुलता वीतराग भावनिते

हो है। तार्त परम वीतराग भावरूप शुद्धात्म रूप जनित परम

आनंद की प्राप्ति करहुँ।

Colophon: इति।

देखें, जैं सि० भ० ग्र॰ I, क ४२७।

१२२३. वचनिका

Opening: वंदों श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थं करतार।

नमें जासपद इंद्रसत शिवमारग रुचिधार ॥१॥

Closing : हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु। तब भगवान कहते भये।

हे राम शोक न करि, तूचल देव हैक एक दिन वासुदेव सहित

इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि। जिनेश्वर का इत धरि।

Colophon: नहीं है।

१२२४. वैराग पचीसी

Opening : रागादिक दोषन तजै, वैरागी ओ देव।

मन वचसीसनवाय के,कीज तिनकी सेव ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Rasa-Chanda-Alankāra)

Closing : एक सात पंचास में सब बर सुखकार।

प्रोष सुकल तिथि धर्म , जै जै निसपतिवार ॥

Colophon: इति श्री वैराग्य पचीसी सम्पूर्ण।

१२२५. योग

Opening : यह आत्मा संसार अवस्था में जीवात्मा कहावे है और जब यह

ही अपनी अंतरंग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप

सकल सामग्री के पावे है।

Closing : भाल आदि दश ध्यान में ध्येय थापि मन लाए।

प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥

Colophon: इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम्।

१२२६. योगीरासा

pening ; अदि पुरुष ग्रुग आदि ... ... आदि जती आदि नायौ।

आदि जगत गुरु जोग पयासिङं। जब जय जय जगनाथी

িlosing । योगीरासा सीखो रे श्रावक दोस न कीई लीजें।

जिणदास त्रिविध करि जंपई सिद्धह सुमिरण कीजई ।

Colophon: इति योगी रासा सम्पूर्णम्।

देखें, रा० मू० 111, पू० ४२ 1

१२२७. अक्षर बत्तीसी

Dpening : कहे करम वस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै।।

Closing । यह अक्षर बत्तीसिका रची भगवती दास ।

बाल ख्याल कीनो कछुलही आतम परगास ॥

७२ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति अक्षर वत्तीसी सम्पूर्णम्।

१२२८. अक्षर बावनी

Opening । ॐ सु अलव परब्रह्म की धरौ सदाचित ध्यान । जा प्रसाद निहचै मनुज होत सुकृत को थांन ॥१॥

Closing : हरष होत प्रभू दरस तैं लहत अनेक अनंद ।

लक्ष्मी चंद्र समान जस सुविध सीस सुखचंद ।।४५४।।

Colophon: इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम्।

१२२६. अन्यमत इलोक

Op ning : अहिंसा सत्यमन्तेय त्यागो मैं (नवर्जनम्

पञ्चस्वेतेषु धरमेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठता ॥१॥

Closing : अनुदिते नभमा देवस्य महर्षयो माहर्षिभिः जुहेया जनकस्य

जतस्य सायका रक्षा भवत् शान्तिर्भवत् तुष्टिर्भवतु वृद्धिर्भवतु

स्वस्तिभवतु श्रद्धाभवतु ..... ॥

Colophon: , नहीं है।

१२३०. अठाईरासा

Opening : वरत अढाई जे करैं ते पार्वे भवपार प्राणी ।

जंबूद्वीप सुहावणो लष योजन विस्तार प्राणी ।।१।।

Closing : मन वच काया जे पढे ते पावे भवपार ।

विनयकीरत स्वम् भनै जनम सफल संसार प्राणी ।।

Colophon: इति श्री अढाई र संजी सनक्तम्

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhrasam & Hindi Manuscripts

(Rasa-Chanda-Alankara-etc.)

## १२३१. अढाईरासा

Opening : देखें, कः १२३०।

Closing । देखें, ऋ० १२३०।

Colophon: इति अढाई पूजा रासी संपूर्णम् । शुभं भवतु ।

१२३२. बारहमासा

Opening : विनवे उप्रसेन की लाडिली ... समुझाबहु मोहि ये हे

सगरी ॥१॥

Closing : बारह मास पूरे भये " प्रति उत्तर लाल विनोदि गाई।

Colophon: इति बारहमासा समाप्तम् ।

१२३३. बारहमासा

Opening : देखें --- ऋ० १२३२।

Closing: देखें — ऋ० १२३२।

Colophon: इति श्री वारहमासा जी समाप्तम् ।

१२३४. चंद्रशतक

Opening । अनुभी अभ्यास में निवास शुद्ध चेतन की,

अनुभी सरूप शुद्धबोध की प्रकाश है।

अनुभी अनूप रूप रहत अनंत ग्यान, अनुभी अतीत त्याग ग्यांन सुख रास है।

अनुभी अपार सार आपही की आप जाने

आपही मैं व्यापदीसे जामें जड़ नास है।

## ७४ श्री जैन सिद्धान्त भवेन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Attah,

अंनुभी अरूप है सरूप चिंदानम्दे चेंद, अनुभी अतीत आठ कर्म सौ अफास है ॥१॥

Closing:

गुण ठाणो मिथ्यात अनुत तन छुटै च्यारगत सासावन गुण थांन नरक तजि होई तीन रत । मिश्र पीन संजीग तहाँ जीव मरहि ने कोई सुनि अजोग गुन थांन छुटै प्रगटै सिव सोई सपत सेब गुण थे छुटै एक गत देव की कहा। अरथ गुरु ग्रंथ मैं सित वचन जिन सेवकी ।।

Colophon:

इति श्री चंदशतक समाप्तम्।

. १२३५ - चंचीशतके

Opening 1

जै सरवग्य अलीक लोक इके अंडवत देवे ।

हसतामल ज्यों हाथ लीक ज्यों सरव विशेषे ।

छदों हवे गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम ।

दप्पैण जैम प्रकाश नाश मेंल कॉर्म महातम ।

परमेष्टी पांची विधनहर मंगलका ी लोक मैं ।

मने वच काय सिरनायभुव आणंद सौं द्यी द्योक मैं ।। १। १।

Closing :

चरचा मुख सो भनै सुनै प्रांनी जिह कानैन।
केई सुने घरि जाहि नाहि भाषै फिरि आंनन।
तिनि को लिख उपगार सार यह सतक वनाई।
पढ़त सुनत ह्वै बुँढ सुँढ जिनवानी गाई।
इसमें अनेक सिद्धान्तकों मथन कैंथने चानत कहाँ।
सब माँहि जीवकों नाम है जीव भाव हम सरदहा।।१०४।

Colorton:

इति चरचा शर्तक समाप्तम्।

१२३६ चौबोल पचीसी

Opening

दरव षेत अस्कास भाव दरव घट तर्दि नव।

ग्यायक दीनदयाल सो अरिहंत नमीं सदा।

Catalogue ot Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Rasa-Chanda-Alankara etc.

Clasing : कवित्त बनाए साविन सुनाए मन आए गाए गुन ग्यान ।

चरचा कूप अनूपम वानी हंसभूप चिद्रूप निसान । गोमटसार धार द्यानत नै कारन जीव तत्व सरधान ।

अक्षर अरथ अमिल जो देखी लेखो सुद्ध छिमां उर आंन ॥२५॥

Colophon: इति दरव चौबोल पचीसी संपूर्णम्।

१२३७. दसबोल पचीसी

Opening : छप्पय - एक सरूप अमेद दोय ..... ...।

··· जह तिह विघ भवजल तरौं ।।१।।

Closing : वृषभक्षेत्र गुणक्षेत्र " - " यह पुर्गलमरजायहै ॥२४।।

Colophon: इति दसबोल पचीसी संपूर्णम्।

१२३८. दसबोल पचीसी

Opening : देखें, ऋग् १२३७।

Closing : देखें, ऋ० १२३७।

Colophon इति दसगोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३६ दशथान चौबीसी

Opening : रिषमदेव रिषमदेव छीर गंभीर धीर धुनि।

चार वीस जगदीश ईश ते ईस दुगुन गुन । सुरग ढांम निज नाम मातपुरतात बरन तन । आब काय सुभचिन्न मुकृत आसन दस वरनन ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

जसगाय पुन्न उपजाय बुद्ध पाय करो मंगल अमर। सिरनाय नर्मी जुग जोर कर भो जिनंद भी तापहर ॥१॥

Closing : जै जै मल्ल ब्रह्मचरिज अटल बल सकल बनाए।

एक एक जिन स्वांम नाम दस दस गुन गाए । सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख संतत प्रांनी । द्यानतराय उपाय गाय जिन पाय कहांनी !

गद जनम जरामृत नहि मग एक उषदविगर।

सिरनाय नमी जुग जोरि कर भी जिनंद भी तापहर ॥३०॥

Colophon: इति श्री वसणान वीवीसी संपूर्णम्।

७६

१२४०. ढालगण

Opening : देव धरम गुरु वंदिके कहूं ढाल गण सार।

जा अवलोके बुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥२॥

Closing : अव जनमे नाही या भवमाही सबके साई सबजानी ।

तुमको जो ध्यावै तुमपद पावे कवी कहावै अधिकानी ।।६२।।

Colophon: इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१२४१. ढालगण

Opening । देखें, ऋ० १२४०।

Closing । देखें, क • १२४०।

Colophon: इति श्री ढालगण सम्पूर्णम्।

१२४२. दोहा

Opening : अपनी पव न विचार जै अहो जगत के राइ।

नववन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि विसराइ ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Rasa-Chanda-Alankara etc)

Closing : इपचंद सद्गुष्ठिनकी, जनु बलिहारी जाइ।

भापुन वै सिवपुर गए, भग्यनु पंथ दिखाई ॥१०१॥

Colophon: इति श्री पंडित रूपचंद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्ता।

शुभं भवतु ।

१२४३. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोदते प्रगटे शिवपुर राह ।

वे जिनेंद्र मंगल करो नितप्रति नयो उछाह ॥१॥

Closing : जो सम्यक्त सहित .... सोना और स्गन्ध ।।

Colophon: नहीं है।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I, ऋ० ५० छ।

१२४४. दोहावली

Opening : देखें, क॰ १२४३।

Closing : देखें, ऋ० १२४३।

Colophon । नहीं है।

विशेष- चार जगह दोहावंली शीर्थक देकर दोहे लिखें गवे हैं। चारो में

चार-चार पत्र हैं जिनमें एक समान दोहे दिये गये हैं।

१२४५. दोहावली

Opening । देखें. ऋ० १२४३।

Closing : देखें, कं १२४३।

Colophon: नहीं है।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १२४६. द्विपञ्चाशतिका

Cpening : अतिसुछिम करि " "" लेपये छानियै ॥२२॥

Closing : बावन कवित एती मेरी मतिमान लए।

हंस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ॥४५२॥

Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपंचाशतिका समाप्ता ।

१२४७. फुटकर-काव्य

Opening : अत्र हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं

सो सर्व सभासद सज्जन महासयों कूं श्रद्धान करण योग्य है। १।।

Closing : देहे निर्ममता गुरौ विनयता नित्यं श्रुताश्यासता ।

चारित्रोज्वलतामहोपशमता संधारित्वें स्ता 🕶 🕶 ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

95

१२४८ ज्ञानसूर्योदयनाटक

Opening । अनाद्यनंसरूपाय पंचवणीत्ममूर्त्तये ।

अनंतमहिमात्राप्त सदाकार: नमोस्तु ते ।।१।।

Closing : अस्पब्ट ।

Colophon : इति श्रीवादिचद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक संपूर्णम्

श्री पाठकानां गुभं भूयात् । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु जिखितं पडित परमानंदेन मिति माच कृष्ण तिथौ तृतीयायां रिववासरे संवत् १६२= का लक्ष्मणपुरसमीपे पैतुरनगरे जिन चैत्यालये ।

देखें, रा० सू० III, त्र० दह।

## १२४६. जैन-रासौ

Opening : अर्हता छियाला सिद्धा अट्टे सूर छाीसा।

उन्झाया पणबीसा अट्ठाईसा हवेई साहूणं ।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Rasa-Chanda-Alankara-etc)

Closing ; जे नैर आप घात कर मरी होइ तिरजंच चिहूं गति फिरी।

संसारा दुख भोगवी दिख भापु धनुरी षाई .... 🅶 ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

रा० सू॰ III, पृ० १४१,

१२५०. जकड़ी

Opening : अब मने मैरे वे सुनि सुनि सिख संयानी ।

जिनवर चरनो व किए करि श्रीत सज्यानी ॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सब सुखदायक तिहुपन में।

जिन सो समझ परी सब भूदर सदा सरन इस भाव वन में ।।

Colophon: इति सिस्य जकड़ी संपूर्णम् ।

१२५१. जोगीरासो

Opening ! ऑदि पुरुष जो आदिज गोत्तमु, आदि जति आदिनाथो ।

आदि जगत गुरु जोग पथासिउ जय जय जय जगनाथो।।

Closing : धोगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै।

जो जीनदास हंत्रि विधि हिए सिद्धह सुमिरण कीजै।।४२॥

Colophon: इति जोगीरासु समाप्तो ।

रा० स्० ।।।, पृ० १६४ ।

१२५२ कवित्त

श्री जिनराज गरीबनेवाज सुधारम काज सबै सुखदाई। दोनदशाल बड़े प्रतिपाल दया गुनमाल मदा सिरनाई।। दुरगति टारन पाप निवारन हो भवतारम की भवताई। बारंगर पुकार करो जन की विनती सुनिए जिनराई॥

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Colsing : हो दीनबन्धु श्री पति करूना निधान जी।

ये मेरि विथा वयौ न हरो वार क्यों लगी।।

Colophon । इति ।

50

१२५३. कवित्त

Opening : श्री जिनवर के नाम की महिमा अगम अपार।

धरि प्रतीति जे जपत हैं सफल करत अवतार ॥१॥

Closing ! अद्भृत अतिसै तुम धरै वीतराग निज लीन।

पूज्यक सहिजै उव्वन्है निदक सहिजै लीन ॥६॥

Colophon: इति सम्पूर्णम् ।

१२५४. कवित्त

Opening : भी जल मांहि भरयो चिरजीव सदीव अतीत भव स्थिति गाठी।

राग विरोध विमोह उदैव मुकम्में प्रकृति लगी अति गाठी। पेच पर्यो दिढ पुग्गल सो इह भांति सही बड़ी आपद गाठी।

सम्यक् ध्यांन भज्यो जबही तबही सवकर्मनि की जडकाठी ।।

Closing : कहै वेदवके कहें आप सुनि वेके कहें आप जो जायके

कहें इष्ट कहं मित्र है।

कहुँ जोग विधि जोगी, कहुँ राज रस भोगी कहुँ वैद कहुँ रोगी

कहं कटक कहे मिष्ट है।

कहंलता के छ।या कहं फूल के फूल्यी कहं भीर कै भल्यी कहं

रूपके दिखाए है।

सकल निवासी अविनासी सर्वभूत वासी गुपत प्रगासी आपै

सिख आपै सिष्ट है।

Colophon: इति कवित्त।

देखें, जै० सि० भ० ग्र॰ I, फ० ५०६।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Rasa-Chanda-Alankara-kavya)

## १२५५. कृपणपचीसी

Opening : एक समदेहरा मैं पंचसब जुरे हुते संघ इनवात जिहाँ जातकी

चलाई है।

चालो भले गिरिनारि नेमनाथ परिस्येवेकों जनम सफल तिहा

कोर्ति बढ़ाई है।।

तहाँ एक बैठी हुती किरपण पुरिषनार उने सुनी बात आंनि घर में

चलाई है।

सुनि हो पियारे पिउ जोथारे आवै जिनु हमें नुमें दोउ बोलो

वली वन आई है।।१।।

Closing : कहे लालविनोदी भव सुनो धन पाय जस लीजिये।

करिजाज प्रतिष्ठा जग्य जिनसुदान सुपात्रां दीजिये ।।

Colophon: इति श्री कृपणपचीसी समाप्तम् ।

१२५६. मालपचीसी

Opening । सुरलोकासमुतीर्थ्या सौधर्मेण निर्मिता।

माघे चैत्रे वृहद्दारे भव्यैर्माला प्रतिष्ठिते ।।१।।

Closing: माला श्री जिनराज की पार्व पुन्य संजोग।

जस प्रगटै कीरति बढै धन्य कहै सब लोग ।।३६।।

Colophon: इति मालपचीसी।

१२५७. नाममाला

Opening: तंनमामि पर परमगुरु कृष्ण कवल दल नैन।

जग कारन करूना निधे गोकुल जाकी अन ॥१॥

Closing । जमल जुगल जुग द्वंद्व है, उभय मियुन विविधीय ।

जुगल किसोर सदा वसी, नंददास के हीय ।।२५६।।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति श्री नंदरासेन कृता मानमंजरी नाममाला संपूर्णम् । शुभम्

अस्तु । पाठकस्य शुभं भूयात् । संवत् १८०६ । शाके १६७१ ।। पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआं नगरे फतेहपूर ग्रामे श्री

सेद पाण्डेय पृस्तकमिदं लेखि ।

१२५८. नवरत्न-कवित्त

Opening ; धन्वंतरि छिपनकअमरघटकर्प्वेताल ।

वररुचि-संकु-वराहमिहर्रकालिदासनवलाल ।।।१।।

Closing : कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै वंधु न मानै वन्धु हित ।

सन्यास क्षरिधन संग्रहै ए जगमें मूरख विदित ।।

Colophon: इति नवरत्न कवित्त समाप्त: ।

१२५६. नेमिचन्द्रिका

Opening : अस्पष्ट।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष-- यह ग्रंथ एक गुटका है, जो बहुत ही अस्पब्ट है। बीच के

कुछ पत्र पढ़े जा सकते हैं।

१२६०. नेमिचंद्रिका

Opening : आदिचरण हिरदे धरी, अजित चरणचित लाइ।

संभव सुरत लगाइके अभिनंदन मनु लाइ ।।१।।

Closing : तौ होई ब्याह को साज काज वहुविधि सो कीन्हो ।

देस देस प्रति नुपति सबनि को "॥

Colophon। अनुपलब्ध।

१२६१ नेमिचंद्रिका

Opening । वेखें, क० १२६० ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manscripts (Rasa-Chanda-Alankāra-kāvya)

Closing । नेम चंद्रिका जे पढ़े जाकी पुन्य प्रकाश ।

आसकरन लघु वीनवै जिनवानी कौ दास ॥२१६॥

Colophon : इति नेमचंद्रिका संपूरन।

१२६२. नेमिनाथ बारहमासा

Opening : देखें, ऋ० १२३२।

Closing : देखें, क॰ १२३२।

Colophon: इति श्री नेमनाथ राजुलमती का बारहमासा प्रतीकृतर संपूर्णम ।

देखें, रा• सू॰ III, पृ॰

१२६३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समैं जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को व्याह रची है।

गावत मंगलचार वधू कुल में सपके जो उछाह मदो है।

तेल चढ़ावन को युवति अपने अपने कर थाल सच्यो है।

नेंग करें सब व्याहन को घर मंडप चित्र विचित्र खिको है।

Closing : नेम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लों छदमस्त रहो है।

केवलज्ञान भयो प्रभु को तब आठिविभु तम दांन मही है।

सात से बर्ष विहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है।

निर्वान गये गुनि पाँच से छप्पन लाल विनोदिक ने संग गही है।

Colophon । इति श्री नेमिनाथ का व्याहुला समाप्तम् ।

्देखें रा सू० III, पृ० द४।

ँ १२६४. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, ऋ० १२६३।

Closing : देखें, क॰ १२६३।

Colophon । इति श्री तेष्टनाथ का व्याहुला सम्पूर्णम् ।

## ६४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १२६५. नेमिनाथ विवाह

Opening । देश

देखें, ऋ० १२६३।

Closing 1

देखें, ऋ० १२६३।

Colophon:

इति श्री नेमनाथ का व्याहुला समाप्त।

१२६६. पखवारा

Opening : पडिवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी !

प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजान वहै प्रतिपदा नाम कहानै ॥१॥

Closing : पून्यौ पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गूण पूरन परगासी ।

पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी वनवासी ।।

Colophon: इति पषवाराजी समाप्तम्।

१२६७. परमार्थजकड़ी

Opening : अरहंत चरन चित त्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो।

वंदौ जिन मुद्राधारी निग्रंथ जती अविकारी ॥१॥

Closing : न अधाय यौ हीरमैं निस दिन ए कछि नहूँ ना चुके।

निह रहै वरज्यो वरजदेष्यो बार बार तहां धुके। श्री जिन सिद्धान्त सरोज सुदर ताहि मध्य लगाईए। रामकृष्ण इलाज याकी कीए एही सुख पाईए।।।।।

रामकृष्ण इलाज याका काए एहा सुख पाइए।।द

Colc phon: इति श्री रामकृत जवरी संपूर्णम्।

देखें, रा∙ सू III, पृ० **१३७** ।

१२६८ पिंगल

Opening : मुरलीघर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद।
कवि विनोद मो यह कियो उत्तम छव विनोद।।।।।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Rasa-Chanda-Alankāra kāvya)

Closing: रूपक घनाक्षरी में गुर लघु नियमन वितस वरन वर रिचये चरन वर रिचये चरन

की जै विसरामंतित आठ आठ अक्षर पैं अंत एक लघुतौ नियम

करि करि धारि।

या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के काज बुद्धि के विचारी।।

भाषा सिंधु तरिवेको आधे छंद करिवेको पिंगल वनायौ पढियै से सुद्ध कै सूरि।

Colophon: इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतौ वर्नवृत्त परिच्छेदो-नाम षोडसमो विनोद ।

दोहा—- घीरगा पत्या पस्य रस रस वसु ससिवामंक। सुभ भद्रा सित्त पक्ष दिण अगारक मितवंक ॥१॥

अपरंच — विधितिनिदुभ पुनर्वसुवेला लाभ विराजु।
राम सहाय लिखितिमदं पिंगलग्रंथ सुसाजु॥२॥
इति श्री पिंगल समाप्तम्। शुभम् अस्तु।

१२६९. राजुल-पचीसी

Opennig : प्रथम सुमरौं अरिहंत देव " सौं विनती करी।।

Closing : यह लाल विनोदी गावें सुनत सब जन गहवरे

राजुलपति श्री नेमि जिन सब संघ कौ मंगल करे । २६॥

Colc phon: इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखें, रा० सू॰ III, पृ० =४, १३१, १४६।

१२७०. राजुल-पचीसी

Opening: देखें, क॰ १२६६।

Closing : देखें, ऋ० १२६६।

द६ \* श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति राजुल पचीसी संपूरन ।

१२७१. राजुल-पचीसी

Opening : सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित त्याइए।

सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing : गावै विनोदीलाल हरिषत भविक जनन सुनावई ।

और गावै नर नारी सोउ अमर पद पावई ।।२५।।

Colophon: इति राजुल पचीसी संपूर्णम् ।

१२७२. राजुलपचीसी

Opening: देखें, क० १२६६।

Closing : देखें, क॰ १२६६।

Colophon: इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

१२७३. राजुलपचीसी

Opening : वंदी वे प्रथमही •• राजमित जस गाई सो जीवे ।।

Closing : अस्पष्ट।

Colophon: इति संपूर्णम्।

१२७४. रिस्ता

Opening : कीऐ श्रीनायक तीनी हिए व्यापत है।

तिहारे दर्शन \*\*\*\*\* पाप नासत है ॥

Closing: नहे जिननाथ को 🚭 🖚 जागे है।।

Colophon: इति रेक्ता समाप्तः । 🗁 🕾

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Rasa-Chanda-Alankara Kavya).

## १२७५. रिस्ता

Opening : मुझे है चाव दर्शन का निहारीगे तो क्या होगा।

गही अब तो सरन तेरी उबारोगे तो क्या होगा।।

Glosin 3 : हरो दुख मो त्तमा अबही, लगा जू संग साग है।

प्रभु यह अरज चित्त धरिये नवल वेरा तुम्हारा है।

Colophon: इति रेषता। इति श्री पूजा जी की पोथी जी समाप्तम्।

संवत् १८५३ शाके सत्रै सै अठार आश्विन सुदी ६ वार बुद्ध की लिपकरी नजबगढ़ मध्ये पूज्य रिषि श्रीश्री पूज्य रिषि महाराज जी पेमारिष जी शिष्य हंसराज जी तत् शिष्य रामसुख लिखा-

पितम् ।

## १२७६. रिस्ता

Opening: मेरा मन महावीर सो लगा।

खडे हाथ जोर के आए, दरस टुक दीजिए हमको।

सरन है आज जिनवर का ।।१।।

Closing : एक बुरा कुगुर उपदेश सुणैं मित माना।

तेरी अलग उमर खिरि जाय नरक उठ जाना ।।

Colophon: इति समाप्तम्।

१२७७. रूपचन्दशतक

Opening : अपनो पद न विचारहू, अहो जगत के राय।

भव वन छाया कहा रहे, सिवपुर सुधि विसराय ॥१॥

Closing : रूपचंद सद् गुरुनिकी जनु विलहारी जाई।

आपुन वै सिवपुरी गए, भव्यन पंथ दिखाई ॥१०७॥

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति श्री पाण्डे रूपचंद शतक समाप्तम् ।

55.

१२७८. सतसङ्या

Opening : श्री गुरनाथ प्रसादते होय मनोरथ सिद्ध ॥

🕶 🖚 ज्यौं तरू वेलि दल फूल फलन की वृद्धि ॥

Closing । आई अवधि विवेक की देखी कोन अनुषाय ।।

काग कनक कै पीतरै -हंस अनादर भाय।।

Colophon: इतिश्री वृंदावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १४ संवत् १६५३

गुरुवार आठ बजे रात्रि को आरामपुर में बाबू अजित दास के

पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया।

विशेष-- डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत तीर्थङ्कर महावीर और उनकी

आचार्य परम्परा नामक पुस्तक में वृन्दावन की प्रवचनसार,

तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अहंत्पाशाकेवली

वृन्दावनिवलास आदी ग्रंथों का उल्लेख है लेकिन सतसइया का

कोई उल्लेख नहीं है।

१२७६. समिकताधिकार

Opening । श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसित सुपसाय।

समिकत गुण फल वर्णउं इह पर भवि सुखदाय ।।१।।

Closing । विजय दशमी श्री झृठापुर वर संघ सुकल सुखदाई जी।

वाचक मानव दइ सुखदायक सुणतां लील वधाई जी।।

Colophon: इति समिकताधिकार श्री अरहदास संबन्धः। संबत् १७०२ वर्षे

भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्यां दिन गुरुवार लिखितं श्री काला

कुन्है ग्रांमे । शुभं भवतुनः सदाश्री।श्री।

१२८०. सम्मेदशिखर माहातम्य

Opening : श्री जिनवर के पूजीपद सरस्वति सीस नवाय ।

गनधर मुनि के चरन निम भाषा कहो बनाय ।।६।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts (Rasa-Chanda-Alankara Kavya)

Closing । व्यालीस मुनी अनागार । मुक्त गये जग के आधार ।।

पाहि कूट को हरस न करे। कोड उपवास तनो फलभरे।।

Colophon: अनुपलब्ध।

१२८१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : देखें कि १२६२।

Closing : समोसरण मैं जायक वंदे वीर जिनेन्द्र।

अहो नाय तुम दरसन तें कटैं करम के फंद ।। इक्ष

Colophon : नहीं है।

१२८२ सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री संसेवित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।

श्री सिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाईक ह

अनिमत सुख उद्योत कम्म वैरी धनधाइक । ज्ञान भान परगास पद सब सुखदाइक ।

ऐसे महंत अरिहंत जिनन्द निसि दिन भावसी।

पात्री प्रमाण अविचल सदन वीतराग गुन चावसी ॥१॥

Closing । बीस हजार वरष बीतंत मानसीक तह असन करंत ।

दस दुनि पखवारे गए परिमल सिंह ... ... ... ।।

Colophon: Missing.

१२८३. शिखरमाहातम्य

Opening: पंचगुरु को नमों दोकर सीसनवाय।

श्री जिन भाषित भारती तांकी लागी पाय ॥१॥

Shri Devakumar Jam Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : रेवा सहर मनोग वसै श्रावग भव्य सब ।

आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयो ॥३७॥

Colophon: इति श्री सम्मेद शिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक

श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचंद विरचिते सुवरवरकूटवर्णनो

नाम एकविंशतिमः सर्गः समाप्तः । सम्पूर्णमिति ।

दोहे:-- सम्वत् अष्टादश शतक वानवे अधिक सुजान ।

फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ॥ ॥

रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम।

वाचै सुनै सद्दंहै पावै सर्व सुखधाम ॥

## १२८४. शिखरमाहात्म्य

Opening : अजितनाथ सिद्धवर कूट। अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख

मुनि सिद्ध भये बतीसं कोटि उपास का फल इस कूट के दर्शन

काफल है।

Closing : पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट । सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ

जिनेंद्रादि मुनि एक करोड़ चौरासी लाख पैतालीस हजार सात सौ व्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड़

उपास का फल है।

Colophon: अनुपलब्ध।

१२८५ सोलहकारणरासा

Opening : वीर जिनेस्वर नमसकरी \*\*\* \*\* जहाँ हेमप्रभ धन यसा ॥१॥

Closing : सकलिकरत ए रासा कीयौ ए सोलह कारण।

पढ़ै गुणै जे संभले तिण शिव सुहकारण ॥७॥

Colophon: इति सोलहकारण रासा जी समाप्तम् ।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Rasa-Chanda-Alankara-Kavya)

# १२८६. श्रुतपंचमीरासा

Opening : वरत अठाई जे करें ते पावे भवपार प्राणी।

जबूढीप सुहामणी लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणै, मन वच रुचि गावहि ।

सुख संपति आणंद लहै, बक्कित फल पावहि ॥१०१॥

Colophon: इति श्रुतपंत्रमी रासा।

बिशेष-इसके साथ अठाई रासा भी है।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ५१६।

## १२८७. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्धे मन्धर संत उदघाटे जुग पाट तुरम्त ।

उघटवार भरम भिज गमो पुण्य फलै दरसन तुम भयो ॥१॥

Closing : बिनुथुलैं सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति बाढें अनंद !

अजघना 🕶 🐃 🥶 \cdots 🔐

Colophon। अमुपलब्ध।

देखें, रा० सू॰ III, पृ० १४३।

## १२८८ सुभाषितावली

Opening । पारात्सारं प्रवक्ष्यामि कथितं ग्रंथकोटिभि:।

परोवकाराय पुण्याय पापाय परवीडनम् ।: १।।

Closing । मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।

आत्मवत् सर्वभूतेषु पंडितं तद्विदो विदुः ॥

Colophon नहीं है।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

# १२८६ बाहुबलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतबाहुबल वीर ।

१३

अति साज चले रण लरिवेकौ अतिधीर ।।

Closing : सत्रे सै चलहोत्तर भादी सुदि सुमवार !

सुकल पक्ष तेरस भनी गावै मंगल च्यार।

Colophon: इति श्री भरत बाहुबलि भाषा समाप्तम् ।

१२६०. विवेक-जकड़ी

Opening : वेतन तेरो वानी चेतन दानी चेतन तेरी जाति वेवेही

हातै मित खोई जाति विगोई रह्यो प्रमादिन भांति वेवेहा ।।

Closing । कुंदकुंद आचारज गुरुवयणीह सूरख जिनन संभालै।

आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ॥

Clolophon: इति विवेक जकरी।

१२६१. ब्यवहारपचीसी

Opening : सम्यम् पदवारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लीम परिहारि असी

महाराज है।

संबकौं समान गिना राग दोच भाव विना नाही पास तिना सक-

सो को सिरताज है।

ताही को क्यान्यी धम्मं सोई सांच सोई पर्म और को कहुया

अधर्म झूठ को समाज है।

सिंवपुर वाट के वटाउनि को संवल है सुख को दिवैयो महाकाज

मांहि नाज है ॥१॥

Closing : चाह्त धन संतान " आनंताहि वहे है ॥२६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Mantra, Karmakanda)

Colophon: इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening । इत्यं यथा तव विभूतिरभूजिनेंद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ।

यादृक् प्रभादिनकृतः प्रहतान्धकार तादृक्कुतोग्रहणस्य विकाशनोपि ॥ ॥

Closing: श्री भक्तामरश्री की महिमा बहुत भारी है भारी जानना यामे जेति सिद्धि अरु मंत्र है सो संपूर्ण सिद्धि मंत्र उपकार के वास्ते एक एक काष्य के एक-एक मंत्र का थोड़ा-थोड़ा फल विध सुधा लिखा ऐसा जानना।

Colophon । इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाय स्वामी का स्तोत्र श्री मान-तुंगाचार्य विरक्ति समाप्तः ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणामुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा वास्त्रवनं भवजले पतिता जनानाम् ।

Closing : ऋिं मंत्र जिपवा यंत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत् जाप्य नित्य की जै दिन ४६ सर्व वस होवें जिसकी नामींचते सो वस होवे क्रत की जै।।४६।।

Colophon । कुछ नहीं है।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ४५५ ।

१२६४. चौबीस-तीर्थकर-मंत्र

Opening : ॐ हीं श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट चिचकाउरूभेईमवा सर्व-शान्ति कुरू कुरू स्वाहा। ६४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing । अमोघ लक्ष्मी मिले ताज संग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय।।

Colophon; इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१२६५. गायत्रीमंत्र

Opening । ॐ भूर्भवः स्व तत् सिवतुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयोयोनः प्रचोदयात् ।

Closing । भूतप्राणादामं प्रवर्तकेन तीर्थं द्ध्यरदेवेन वृषभसेनादिगौतमाते

गणेशमहर्षिणा गायत्री इंदसा गायत्रीसमाष्यनाऽनेन दिव्यमत्रेण

त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसंक्षेपेण ननु निरूपितः

Colophon: इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

१२६६. घंटाकर्णमंत्र

Opening । ॐ घंटाकर्णी महावीरः सर्वव्याधिविनाशका. । विस्फोटकभयं प्राप्तिः रक्ष रक्ष महाबलाः ॥१॥

Closing । नकाले मरणं तस्य न च सर्प्पेण डंस्यते । अग्नि चौरभयं नास्ति ॐ हीं श्री घंटाकर्णी नमोऽस्तुते ॥४॥

Colophon: इति घंटाकर्ण मंत्र।

देखें, जै० सि॰ भ० ग्र॰ 1, ऋ० ५६५।

१२६७. घंकाकर्णमंत्र

Opening : देखें, क ० १२६६।

Closing : देखें क॰ १२६६।

Colophon: इति घंटाक में मंत्र ।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Mantra, Karmakānda)

## १२६८. होमविधि

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमर्त्यनाथ

भास्वति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् ।

त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणवं प्रणस्य

होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुक्षपामि ॥

Closing । शांतिनाथं नमस्कृत्य सर्वविष्नोपशांतये ।

सर्वभव्योपशांत्यर्थं होमायमुच्यते ॥

Colophon । इति होमविधानं सम्पूर्णम् ।

१२६६ जैनगायत्री

Opening : आनादिनिधनं मंत्रं पंचित्रशत् तदक्षरम् ।

पंचाक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्देशमथापि च ।।३।।

Closing । अनादिनिधनो मंत्रो गायित्रीमंत्रसंयुता ।

नित्यं च जाप्यते योऽयं महामंगलदायकम् ॥१०॥

Colophon; इति श्री जैनगायित्री सम्पूर्णम् ।

१३०० जैनसंकल्प

Opening : ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभव्यजनानां स धर्मश्रावणाया-

रोग्येश्चार्याभि। वृद्धिरस्तु ... 🕶 🕶 ।

Closing : ••• देवोहं अमुकमंत्रस्य सत्यष्टोत्तर ••• अमुक

लाभाय जपं करिष्ये।

Colophon । नहीं है।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

Opening । ततो गंधकुटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।

पूजयामास गंधादौरभिषेकपुरःसरम् ॥

Closing : लक्ष्मीवानिभषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रज्ञो विभु:

द्रात्रिशमुकुटप्रबंधमहितक्ष्माभृत् सह \*\*\*

Colophon: इति स्तोत्र समाप्तम् ।

१३०२. कामदा-यंत्र

Opening : दिवाली के रात को लिखना भोजपत्र पर अष्टगन्य सो

भुजा में बांध राखै।

Closing : अगर मिश्री घी इन सबकी धृप देय।

Colophon: लिखतं मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

### १३०३. क्रियाकाण्डमंत्र

Opening : ॐ भूभू व: स्व अर्ह असि आउसा सम्यक्दर्शनज्ञानचारिधारिकेभ्यो

नम:। बार १०० नित्य जिपये।

Closing : मध्यम तर्जनीऽनामिका अंगरीनिजीवन स्वांस ।

अंगुष्ठासी जपमाल रूचि गुणै एक बहुतास ॥

Colophon: नहीं है।

विशेष— यह ग्रंथ इतना पुराना एवं सड़ा हुआ है कि पढ़ा नहीं जा

सकता ।

१३०४. महालक्ष्मी

Opening : मंत्र— ॐ ऐं श्रीं हीं कीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू

स्वाहा ।।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Manira, Karmakānda)

Closing : दिन २१ तक जप करना, धूप पेवना गुगुल, अगर, तगर, नाग-

रमोथा, छल्छड़ीला, कचूर, गिरीदाष, वदाम छोहारा, मिश्री

घी, का होम करना लक्ष ॥१२५०∙०। सर्वसिद्धि होय शत्रुभय

मिटे लक्ष्मी मिले।

Colophon; कुछ नहीं है।

१३०५. मंत्र

Opening : ॐ नमो नृषभनाथ मृत्युंजयाय सर्वजीवशरणाय परममंत्राय

पुरुषाय चतुर्वेदायतताय ...

···· मम सर्व कुरु-कुरु स्वाहाः ।।९।।

Closing : ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हसमहांहसः परमहसः कोहंसः

अर्हहंसः पक्षिमहाविपक्षि ह्रूं फट् स्वाहा ।

Colophon: इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मंत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपाश्वंनाथाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय

ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थंभय-२. ॐ को प्रों

प्रीं प्र. ठः ठः स्वाहा ।

Closing । अभिषेक सुद्धि तिहका नाला तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त

ंकरैं जुपाली पाषी देय वें का हाथ को अहार लेणूं

नहीं ।

Colophon: इति संपूर्णम्।

१३०७. मंत्रसंग्रह

Opening : ॐ हों हीं हूँ ही हैं ह: अमिआउसाय नमः अपराजित

मंत्रीयं विष्न नासय नासय कुरू कुरू स्वाहा ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : ॐ छों छों छ: अस्मिन्पात्रे अवतर अवतर स्वाहा:।

विधि ॥ पेड़ा ३ ॥ बार १०८ ॥ मंत्रसों पठकी आनाही-

बोलेता "": ।

Colophon । नहीं है।

१३०८. मंत्रयंत्र

Opening : ॐ कों कौं कौं कौं कौं सहीं अमुकी नामान्याः पतत्याः सर्वत्र-

जयसौभाग्यं प्रियवल्लभत्वं पतिपूजादिसौख्यं ... ... = ।

Closing : ••• नींवृको चुहा के विलमें गाडिये उपर जूती तीन

नाम लेके मारिये दिन तीन तांई जूती मारिये न म लेता जाईये।

Colophon: इति मंत्र यंत्र समाप्तम्।

१३०६. नमोकारमंत्र

Opening । कहा सुर तरु कहा चित्राविल कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस

के पाएं ते।

कहा रसपाय औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो

लक्ष्मी के आऐ ते ॥

Closing : कान्हबल धाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हबल लगाइवे को

काहु के उधार के।

कहत विनोदीलाल जपतहों तिहुकाल मेरे है अतुलबल मंत्र नव-

कार को ॥

Colophon । इति णमोकार मंत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

१३१०. पद्मावतीदंडक

Opening: ॐ नमो भगवते त्रिभुवन संकरी।

सर्वाभरणभूषिते पद्मासने पद्मनयने ।।१।।

Catalogue ot Sinskrit, Prakrit, Apabhra nsa & Hindi Manuscripts
(Mantra, Karmakanda)

Closing ! जुंभे हीं मोहनीय हिलि हिलि " " मां रक्ष पद्मे ॥ । ॥

Colophon: इति पद्मावती दंडक संपूर्णम्।

१३११ पद्मावतीकल्प

Opening : कमठोपसर्गदलन त्रिभुवननाथं प्रणम्य पाव्वंजिनम् ।

**ब**क्ष्येभीष्ठफलप्रदभैरवृषद्यावतीकल्पम् ॥**१**॥

Closing : अपराजितेक वा अमुकी मीहय-मोहय स्तिभिनी ••• • ···

मम वश्यं कुरु-२ स्वाहा ।

Colephon: नहीं है।

१३१२. पद्मावतीकल्प

Opening : ॐ अस्य श्री पद्मावती मंत्रस्य सुरासुरविद्याधर-नागेन्द्र-महाऋषि-

पतिवृद्धिगायत्री छंद श्री पद्मावती देवता कमलबीजं वाग्मवं

शक्तिप्रणवकीलक मम धर्मार्थकाममीक्षार्थं जपे विनियोग:।

Closing : जुभे हीं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्द मर्द प्रमर्द दृष्टे

निकांधकारे दह दह दहने हैल ... हाँ हीं

हीं हुँ प्रसन्ने-प्रहसित बदने रक्ष माँ देवि पद्मे ।

Colophon: इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम ।

१३१३ पद्मावतीकवच

Opening । देखें ऋ० १३१२।

Closing । इस कवन ज्ञास्वा पदाया स्तोति यो नर:।

कल्पकोटि शतेनापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥ १८॥

Colophon: इति पद्मावती कवचम्।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

## १३१४. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री पंचमुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचंद्रऋषिकृत

अनुष्टुपछन्दः पंचमुखीपद्मावती देवता ॐ अं मुनिसुव्रति इति बीजंॐ चिन्तामणिपार्ध्वनाथ इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति कीलकं श्री रामचन्द्रै तव प्रसादसिद्धयर्थे सकललीकोपकारार्थे

पंचमुखीपद्मावती स्तोत्रं जर्प विनियोगः।

Closing : नवबार पर्टेन्नित्यं राजभोगं समाचरेत् दसबार पर्टेन्नित्य श्रैलोक्य

ज्ञानदर्शनम् ।

एकादश पर्वेतित्यं सर्वेसिद्धिर्भवेन्मर: कथचस्मरणेनैव महाबल-

र सन्वितम् ॥

Colophon: इति पंचमुखीषद्मावतीकवच संपूर्णम् ।

१३१५. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री मंत्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीचरणांबुजेश्यी नमः।

Closing : ॐ हीं श्री पद्मावस्य महाभैरवी नमः।

Colophon: इति पद्मावतीकवच संदूर्णम्।

१३१६. पद्मावतीकवच

Opening : देखें कि १३१४।

Closing : साक्षात् शिव पद का दाता ये इंट मंत्र है, निश्य जपने से सबे

मंगल हीय है।

Colophon । नहीं हैं।

# Catalogue of Sanskrit, Prakcit, Apabhramia & Hindi Manuscripts (Mantra, Karmakanda)

## १३१७. पद्मावतीकवच

Opening । देखें, क॰ १६१४।

Closing : देखें, ऋ० १३,१४।

Colophon: इति श्रीराचचन्द्रऋषिकृत पंचमुखीपद्मावती कवच समाप्सेम्।

# १३१८. पद्मावतीमंत्र

Cpening ! ॐ णमो जिणाण हीं हीं हीं हैं है है।

Closing : अथवा मूंगा के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजे।

Coloph in : इति श्री पद्मावतीदेवी मन्न संपूर्णम् ।

१३१६. पद्मावतीमांत्र

Opening ! ॐ आ को ही क्नी पद्मावती देवी हूँ क्ली ही नमः। जाप्य

३००००० कीजे।

Closing : अत्रसाहननुजनाभवृषभ - कालछ्या नित्यश: ।।

Colophon: इति पद्मावती स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१३२०. पद्मावतीपटल

सहारिणा चामुंडा।

Closing : हां ही प्ली प्लू हां हां ... प्रमावती धरणीं धरणींद्र

भाजापयति स्वाहा ।

Colophon: इति पद्मावती पटल संपूर्णस् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १३२१. पन्द्रहयंत्र-विधि

Opening : आहतरैं की चाल हैं भणों की घोड़े की चाल पहली सुं नवकों हैं में भरियें एक अंकसुं माड़ कैं नव अंक सुं माड़ कें नव अंक लिखियें सब को हे में इसकी विशेष विधि कहियें देंस वार लिखें तो लोक सर्वमोहित हुवें वीस वेंर लिखें तो आर्थण हुवें तीस बार लिखें ती पृथ्वी में जय पार्व ।

Closing : दाधामाषतीलं चैव शर्कराधृतसंयुत्तम् ।
कुष्णपक्षे तु चाष्टम्यां वर्ति दहेवां संविदके ? ॥४३॥

# १३२२ पार्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening । श्रीमद् बेन्द्रवंदामलमुकुटमणिज्योतिषां चैत्र ।

••••• पार्श्वनाथीत्र नित्यम् ।।

Closing : इस्यं मंत्राक्षरोध्यं वचनमनुपमं पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।

··· - स्तौति तस्येष्टसिद्धिः ॥

Colophon : इति पांश्वैनाथ स्तीत्रं सम्पूर्णम् ।

१३२३. पार्वनाथस्तीत्र-मंत्र

Opening : ॐ तमी चरडोग्न पार्श्वनाय-तीर्थं कराय धरणैन्द्रपद्मावती सहि-

ताय ।

Closing : " वोरीपसर्गविनाशनाय हुं पट् स्वाहा।

Colophon: इति बडोग्रपार्श्व नायस्तोत्र संपूर्णम् ।

902

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Mantra, Karmakānsa)

## १३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पाश्व व: पातुवो नित्यं जिन: परमशंकर: ।

नाथः परमशक्तिश्च शरणं सर्वं 😁 ॥

Closing : त्रिसंध्यं यः पठेत्रित्यं नित्यमाप्नोति संश्रियः।

श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्वं भोबुधासुकृत् ॥

Colophon । इति श्री पार्श्वनाथस्तीत्र समाप्तम् ।

१३२५. प्रातगायत्री

Opening : पार्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिदेवदेवश परमेश्वरः पुरातनः

वदुरवपरयात्रीत्यावित्राणो संधि वंदनं मद्भक्तानां हितार्थाय

वराण परमेश्वर सन्यासंध्यानयुक्तं च सूर्याध्यादि सुमाधनं ।

Closing । इति महावाक्यं ॐ गायत्री चैकपदी द्विपद्री चतुस्पद्यपदिसनिहि

पद्यसः नमस्तेतुरीयाय पदाय तुसीय पदर्दाशताय नमो नमः एवं

चतुर्थाश्रमेन गृहस्थानां प्रसंगेन प्रदर्शित ।।

Colophon: अय प्रातनावती विषये तंतूर्ण समान्त.। संवत् १६२५ कार्तिक

मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तकं लिख्यते हरयस मिश्र।

कासि जी में लिखी।

१३२६ सकजीकरणविधान

Opening : स्नानानुस्नानशुद्धोधृतशितसुद्धोधन्तरीयोत्तरीय,

संकल्पाचम्य प्राणामिति तममृतं परिसेचनं तर्पंणं च।

आचम्या तस्य शुद्धि पुनरिप सततं शान्तमंत्रं षडांगम्,

दिवसं जत्पात्रिवारं परमजपयुत्तं स्तोत्रदिक्षस्वयभूः ॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : ॐ णमो अरिहंताणं णमोसिद्धाणं णमो आयरियाणं ।

णमोउ बन्झायाणं णमो लोए सन्त्रसाहूणं ।

इति पंचपदं जपेत्।

Colophon; जिनवरदासस्य पठनिनिमत्ते लिखितं टीकारामेन आरानगर

मध्ये शुभम्भूयात् लेखक-पाठकयो आयुरारोग्यमस्तु ।

१३२७. सामयिकविधि

Opening : विधिपूर्वक पिंडलेह्य उपगरण प्रमाजित स्थानकइ स्थापनाचार्य

घापितई

Closing : ज्ञानपंचमी तपग्रहण कुजमालाविधि: ॥२७॥ पोसहपडिकमणा

वावण विधि. ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon: नहीं है।

१३२८. शान्तिनाथ-मंत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिन्यतेजोमूर्त्तये,

ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व्वपापप्रणाशाय 😁 🗀।

Closing ! संपूर्ण जप संख्या अड़तालीस लक्ष प्रमाण निष्ठा मना जपै पश्चाद

संपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै।

Colophon! नहीं है।

१३२६. सरस्वती-मंत्र

Opening : ॐ अहंन्मुखकमलनिवासिनी पापाईमक्षयंकरी

••• ं ··· मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ हीं श्रीं क्लीं महालक्ष्मी नम. धारकस्य भाण्डागारं ऋदि

वृद्धिअन्नधन्नपूर्ण पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apa'shramsa & Hindi Manscripts
(Mantra, Kar.nakan/a)

जाप सवालक्ष १२५००० दशांस होम पंचामृत को करें तो

प्रभाव वृद्धि होय।

Colop.101: इति विजयप्रतापमंत्र सम्पूर्णम् ।

१३३०. सरस्वतीमांत्र

Opening : ॐ हीं श्री वाग्वादनी सरस्वती सारदा वुद्धिवर्द्ध नी देवी

कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : इति । मंत्र अष्टोतर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ ।

Colophon: नहीं है।

वशेष--- इसमें मात्र एक ही मंत्र है।

१३३१. सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ हीं श्रीं क्लीं ब्लीं वद वद वाग्वादिनी भगवित सरस्वित

परमब्रह्म मुखीदूते श्रुतांगिः विद्वादशांगेयो नम । मम विद्या-

प्रसाद कुरु तुभ्यं नम. ॥१॥

Closing : ॐही अर्ह णमोपादाणुसारिण ।। न।।

ॐ हीं अर्ह णमो संभिन्न सोदराणम् ॥६॥

Colophon: नहीं है।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐं हीं श्रीं मत्ररूपे विवृधगननुतेदेवदेवेन्द्रवंद्ये।

··· - मनिस सदा सारदे तिष्ठदेवी ॥१॥

Closing : ॐ हीं क्लीं कू श्रीं हीं रों नमः लक्ष जापते सिद्धि होय।

Colophon : इति सारदा स्तुति ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१३३३. सोलहकारण मंत्र

Opening : ऊँ हीं दर्शनविशुद्धये नमः।

Closing : ॐ हीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः।

Colophon: संपूर्णम्।

१३३४. सूतक-विधि

Opening : इम सूतक देव जिनंद कहै, उत्पत्ति विनास द्विभेद लहै।

जनमै दस वासर की गनिए, मरिहै तब बारह को भनिए।।।।।

Closing : ग्रंथ संस्कृत ते यहै भाषा कीनीसार।

जो मन संयय उपजै देखी मुलाचार ।।२४॥

Colophon: इति श्री मृतक विधि समुच्चय सूतक विधि संपूर्णम् ।

१३३५. तंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : अंहि हीं हुं हुं हैं हैं हैं हैं हैं। असिआउसा सम्यग्यदर्श-

नज्ञानचारित्रेभ्यो हीं 💛 " नमः आचार्य श्रीरिवसेनकस्य

रक्षां दृष्टिदोषनाशं कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ऊँ हीं एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभांडागारे स्थिताय मम ईप्सितं

पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्टं निवारय निवारय के हीं नमः पोतपुष्पैजीप १०००० पश्चाद् नैवेद्यं दसांस होम एकम्-

मुखी रुक्षास · • - ।

१३३६. त्रिवर्णाचार मंत्र

Opening : ॐ हां हि हीं हुं हुं हैं हैं हीं हा असिआउसा

सम्यग्दर्शनज्ञानिचारित्रेभ्यो ह्वीं नमः; ।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Manira, Karmakanda )

लिखे उत्तराभिमुखी पद्मासन वीत पुष्पते पूजे। Closing

७२००० प्रयोग लक्ष्मी के वास्ते।

Colophon: इति कूबेर मंत्र।

१३३७ वशीकरण-अधिकार

प्रशस्यते ॥ Opening: अथात संप्रवध्यामि

राज्ञां कुले विवादे च जपेन्नास्स्यत्र संगयः। Closing .

मानोन्नतिभवतस्य यंत्रराजप्रसादतः ।।

Colophon: इति ।

१३३८. वश्याधिकार

अतः परं देवि तव व्रबीमि दौर्भाग्यहं वृणि च कामिनीनम्। Opening:

यंत्राणि मौभाग्यविवर्द्धं नानि संमोहनानि प्रियकामुकानाम् ॥

सुभगारूपसंपन्नां पति प्रियवरा भवेत्। Closing :

ललिताख्यं महायंत्रं स्त्रीणां सीभाग्यकारकम् ॥

Colophon: इति ।

१३३६ व्रत-मंत्र

ॐ ह्रीं असिआउसा दसपूट्योणं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा । Opening :

पत्रं नैव करीय दारबटपे दोषो वसंतस्य किम्, Closing 1

> बिंदु नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य कि दूषणम्। नालोकाय दिपस्यते यदि दिवा सुर्यस्य कि दूषणम् । यत्पन्नं विधूना ललाटलिखते तन्मार्यतंकक्षयः ॥१॥

श्रीरस्तुमिदं शुभं भवतु । Colophon:

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १३४०. विसर्जन-मंत्र

Oponing : सुभ्राक्षतप्रसवसकुलरत्नदीर्पः मानिक्यरत्नमयकांचनभाजनस्थैः :

श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्रव्याग्नै सन्मंगल।त्तिकमहं स्ववतार-

यामि ॥१॥

Closing : जयजय जगदंबे ज्वालिनिस्रष्टिवि गजगमनिवलिवे नागयुगें ध्र-

नितंबे ।

हतधनुजगदैवे भालखण्डेन्दुविबे नतजन्विवहरेवे याहिभक्तावलंबे ।।

Colophon; इति विवर्जन संपूर्णम्।

## १३४१. विवाह-विधि

Opening । या सदनं गच्छेत् मंडपे तोरणान्विते ।

कन्याया जमनी बेगादागत्य पूजयेद्वः भ् ।: १।।

Closing । कैलाशे वृषभस्य निवृतिमही वीरस्य पावापुरे।

चंपायां वसुपूज्यसज्जिमपते सम्मेव ... ।।

Colophon: अनुपलब्ध।

# १३४२. यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : गहाँ हिमानस्त्रिपुरे मदीयने प्रदो निवानं कुरुविष्वनेत्रै

गृह्यस्व वर्ति च पूजी।

Cloting : वीदश अदीतवार के दिन मद भांडाने मेल जैतो भदपाणी

भवति ।

Colophon । इति संपूर्णम्।

१३४३. यंत्रमं संाह

Opening : ॐ में मंखंखं विविदेर को कांग्री शैं अमुकस्यो च्यारय-२,

मारय-मारय चूरय-चूरय वृद्धि भृ शै कुरू-२ स्वाहा । "

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts
(Ayurveda)

Closing । पद्मगुत्री विसहरी एक सहस्र " बगर सात पठने तमाची मारी जै सर्वे विष उतरे ।

Colophon: महीं है।

१३४४. अष्टांगहृदय

Opening । इति ह्यस्मादगुरात्रेयादयो महर्षयः
जातमात्रं विशाव्यो स्वास्वालसैंधसिपिषा ।
प्रमूतिश्लोशितं चानुबला तैलेन सेचयेत्
अश्मनोवदिनं चास्य कर्षमूले समाचरेत् ॥

Closing : चिकित्सितं हितं पथ्यं प्रायश्चित्तं भिषिजितम् । भेषणं शमनं शस्तं पर्यायै समृतमौषधम् ॥

Colophon: इति चिकित्तिते द्वापिशोऽध्यायः । इति वाग्भट्टविरचितायां अष्टागहृदयसंहितायां विकित्सास्थानं चतुर्थं समाप्तम् । देखें, रो० सू० III, पृ० २४६ । जि० र० को०, पृ० १९ ।

# १३४४ चिकित्साशास्त्र

Opening : र्णवा होती पुंडाार्के इलीज ह। दूधमू पीज इसवैरोग जीई ॥१॥

Closing : बिन्दु आठ केंड दोण प्रमाण, दुई होंगे इक सूर्य की मान । दोई सुर्व की द्रोणी इक खासी दांखी ।।

Colophon े नहीं है।

विञ्लेष-- इसकी लिपि भिन्न २ लोगों द्वारा निखी गई है जिससे यह संग्रहें ग्रंथ भालूम पड़ता हैं।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १३४६. चिकित्सासार

Opening : च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ। तीनि पाव जल मै औटाइ॥

अरध रहे जल से छिनवाइ। खाड़ टांक चालीस मिलाइ।।

ताको नरम किमाम बनाइ। घोंट डंडसों सीसे पाइ।।

दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ॥

Closing : सांस की दवा-धतूरा पंचांग कूट के चिलम में पीव हुक की

तरह सै सोस जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय।

Co'ophon: नहीं है।

990

१३४७. ज्वरहर-यंत्र

Opening : ज्वरेत्यादिना केवलं ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयति किस्वपरा । १।

Cloing : इदं ज्वरहरं यंत्रं मया प्रोक्तां तवानधे।

उपकाराय लोकानां साधूनां च हिताय वै।

गोप्यं त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ॥२२४॥

Co'ophon: इति।

१३४८ कुट्टककरण छाया व्यवहार

Cpening : भाज्यो "" दुष्टमुखिष्टमेव ॥१॥

Closing : गुद्धिजीजातो गुणएवराशित्वेनांगीकृतः ॥१४॥

पंचगुणी ॥७०॥ हर ॥६३॥ हतशेष ॥१४॥ दशगुणे ॥१४०॥ हर ॥६३॥ हतशेष ॥१४॥ एवं बहुत्वे गुणनामैवयं

भाज्यं अज्ञाणामैक्यमग्रं प्रकल्प्यसाध्यम् ॥

Colophon : इति भास्कराचायं विरचितोलीलावायां कुट्काध्यायः समाप्ता ।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Ayurveda)

## १३४६. मदनविनोद निघंटु

Opening : बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां बीजं जडानां महदादिकानाम् ।

आग्नेयमस्त्रं भवपातकानां किचिन्महश्यामलमाश्रयामि ॥१॥

Glosing ; .... यो राजा मुखतिलकः कढारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण

निर्मिते च प्रंथेन्मदनिवनोदनाम्नि संपूर्णो .... • पं० गुणग-

णमिश्रकोऽयं ॥

Colophon: इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ मिश्रपवर्गस्त्र-

योदश ॥१३॥ इति मदनविनोदे निघंटौ समाप्तम् ।

संवत् १६१२ का० सु० लिखापितं श्री मानसिघ जी ...

पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ॥

### १३५०. नाड़ीप्रकाश

Opening : नाड़ी तीन प्रकार के है। इंगला चद्रमा है सो वाया है। पिंगला

सूर्य है सो दाहिना है। दोनो चले सो सुख मन है। कृष्ण

पक्ष सूर्यका है। शुक्ल पक्ष चंद्रमाका है।

Closing : दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पाँच तारका जान ।

तीन नाक जीह्वा एके का सभेद पहचान।।

Colophon: अनुपलब्ध।

१३५१ निदान

Opening : प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितसंहारकारकम् ।

स्वर्गापवर्गायोद्धारे त्रैलोक्ये शरणं शिवम् ।।१।।

Closin : ग्रहण्यां समधातः समग्निण्य समदीयमलंकियः

प्रसन्नातमेंद्रियं मनाः स्वस्थामित्यभिधीयते ॥

99२ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति निदान ग्रंग समाप्त । ग्रुभमस्तु । संत्रत् २७४६ । विशेष— यह ग्रंथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवा- चार्य हैं।

ंदेखें, दि० जि० ग्र० र , पृ० १५८।

१३५२. पंवदशविधान

Opening ; अथातः संत्रवक्षामि सुन्दरीयंत्रमुत्तमम् ।

तदंकं तु प्रवक्षामि श्रृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥१॥

Closing : इत रीयुगत करके यो राजा-प्रजा सर्वेसकारी सिद्ध होय।

Colophon: नहीं है।

१३४३. रामविनोद

Opening : सिद्धि बुद्धि दायक सकल गवरि पुत्र गणेश ।

विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ॥

Closing : द्रोनि मनक को चार - राम विनोदी विनोद सौ ॥

Colophon: इति श्री रामिवनोद भाषा समाप्तम् । संवत् १६०६ मानोतमे

मासे वैशाषमासे शुक्लपक्षे द्वितीयायां बार भौमवारे का लिखि के संपूर्ण भई मितन्त गोती संघई लाला छेदीलाल तस्य पृत्र उजागर लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र बदलीदास ने पोथी लिखी

पठनार्थ अपने हित हेतवे वंस अग्रवाल का है।

यादृशं पुस्तकं 🏲 🕶 दीयते ॥१॥ जलं रक्षेत् … … पुस्तकम् ॥२॥

१३५४. रूपमंगल

Opening : जमालगोटा अर मिरच बराबरी आदी का रस मैं गोली करे

मिरच प्रमाण संध्या प्रातः खाय ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Ayurveda)

Closing : नित्यज्वरवालाने दीजे पाडी का मूत्रसू ते जरात्रा नाने दीजे निब-

कार ससूं चोथावालाने दीजी इति सर्वज्वर जाय।

Colophon: इति मंगलरूप संपूर्णम् । शुभं भूयात् ।

१३५५. शारदा-तिलक सटीक

Opening । श्री तीर्थेशं जिनाधीशं केवलज्ञानभास्करम् ।
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्षे मूत्रपरीक्षणम् ॥ १ ॥

Closing । पानटं २ सुपेदकथटं २ अफीमटं १ इकत्र कर गोली करनी मासे

१ प्रमाण तंदलोदकेन समीपं अतिसार जांहि ।

Ciolophon: इति श्री सारदातिलक ग्रंथ समाप्तम् । लिखितिमदं नित्या-नन्देन नारनौल मध्ये लिखायतं पंडितजी श्री चेतनदास जी-कस्मिन्सम्बत्सरे संबत् १९६०६ का० वर्षे कार्तिक शुक्ल २ गुरुवा-सरे अलिखदिदं पुस्तकं यथा स्यात् तथा । श्रीरस्त

१३५६. सारंगधर संहिता

Opening : श्रियं संदद्याद्भवतां पुरारिर्यदंगतेज प्रसरे भवानी ।

विराजते निर्मलचन्द्रिकायां महीषधीव ज्वलिता हिमाद्री ॥१॥

Closing : विविभगदाति दरिद्रया ? नाशनं याहग्निमपि चकार वियोगरत्नै।।

बिलसतु शारंगधरस्य संहिता सा कविहृदयेषु सरोजिनमिलेषु ॥

Colophon: इति श्री दामोदरसूनुना गारङ्गधरेण विरचितायां संहितायां

चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्यायः समाप्तोयमुत्तर खंड।

१३५७. वैद्यभूषण

Opening । सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ।
कुमित विनासन मुनतकर मंगल नुदन करेड।।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : वैग्रंथ प्रमाण सब ढूढ़ लिया तस लोक। छह से सही सब जरा का आधार।।

978

Colophon: इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्मवे स्त्री
पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता। संवत् १७६६
वर्षे मिती आषाढ़ सुदि १५ मंगलवार लिखितं पूज्य स्थिविर जी
ऋषि श्री गणेश जी तत्शिष्यणी लिखितं आर्याषुस्यालो शुभं

भवति।

### १३५८. वैद्यमनोत्सव

Opening । प्रणम्य नित्यं शिवसूनुमृद्धिदं सिद्धि ददः तिथितथानि धिय ।
कुबुद्धिनाशं सुमति करोति मुदं तथा मंगलमेव कुर्यात् ॥१॥

Closing । चतुर्भिराटकै द्रोण कलसोप्यल्वणोमत: । उन्मनश्च घटोराशिः द्रोणपर्यायवाचकः ॥६॥

Colophon । इति परिभाषा । इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्मिश्रविरिचतं वैद्यमनोत्सवं संपूर्णम् । संवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्यां
गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिदं पुस्तकं नित्यानंद
ब्राह्मणेन लिखायतं पंडित श्री चेतनदास जी । श्रीरस्तु ।

१३५६. योगचितामणि

Opening : यत्र वित्रासमायांति तेजांसि च तमांसि च ।

महीयस्तदयं वंदे चितानंदभयमहम् ॥

Closing : यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्व योगशतं यथा ।

तथैवायं विजयतां योगचिन्तामणिश्चिरम् ॥

Colophon: इति श्रीमत्रागपूरीयतपोगणनाय्क श्रीहर्षकीतिसूरि संकलिते

वैद्यकसारो श्रीयोगचितामणौ सार संग्रहे मिश्रिकाध्याया मध्यमा

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrriots
(Stotra)

समाप्ता । इति श्री योगचितामणि शास्त्रं समाप्ता । सूत्रार्थं मिलिनेन ग्रंथमान ६५०० संवत् रामगणोदिधितू प्रमिते संवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्यां सोमवारे लिखितम् । पूज्य श्री ऋशि स्थिवीर जी श्रीगणेश जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ५६६।

## १२६०. यूनानी चिकित्सा

Opennig : विघन विघ्न) विनासन देवकूँ, प्रथम करुं परनाम ॥१॥

Closing : हरताल ३ अरद ६ दिरम सुर्ष ६ दिरम, करूरवाई ६ दिरम माजू
२० दिरम, जंगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम,
अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कै बीच

मिरके के गलावे २ हप्ते वीच धूप के रखे बाद कर्श करै।

Colophon: नहीं है।

१३६१ आंचार्य-भक्ति

Opening : सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरूपाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान् ।।

Closing : इच्छामि भंते आयरियभक्तिकाउस्सग्गोकउ तस्साले चेउ सम्मणाण सम्मदंसणसम्मचरित्त जुताणं, पंचिवहाचाण्णं आयरियागं
आयारादिसुदणाणो वंदेसियाणं उवझायाणं तिरयणगुण पालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि, पुज्जेमि वंदािम ।
सगद्दगमणं समाहिमाणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मण्झां।।

### १९६ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

**2** 

Colophon। इति आचार्य भक्तिः।

देखें, जि॰ र॰ को॰, पु॰ २४। जै॰ सि॰ भ॰ ग्र॰ I, ऋ॰ ६०९।

## १३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening : जाके करनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद

सोधाअतिभारी है।

कहत विनोदीलाल मन वच तिहूं काल ऐसे नाभिनंदन की

वंदना हमारी है।।१।।

Closing : तुम तो जिनंददेव जगते ..... ...

••••• लिभुवननाथ गति मेरि यो बनाई है।।

Colophon: इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम् ।

१३६३. आदिनाथ आरती

Opening : आदिनाथ तुम जगताधार, भवसागर उतारन पार ।

मैं तुम चरन कमल की दास, आदि नाथ मेरी पूरौ आस ।। पा

Closing : तुम अनंत गुन है प्रभु, कैसी पाऊ पार।

थोड़ी कर मानौं घरी भैगों कहैं बखान ॥७॥

Colophon: इति श्री आदिजिन आरती समाप्तम् ।

१३६४. आदिनाथस्तोत्र

Opening : आदिनाथं जगन्नाथं पाश्वं वंदै गुणाकरम् ॥१॥

Closing : तद्गृहं कोटिकल्याणश्रीविलसति लालया ।

क्षुद्रोपद्रवश्वतादि नश्पते व्याधिवेदना ॥७॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Colophon: इति श्री आदिनाय स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६४६।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening । आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयौ।

नाभिराम मरूदेवी नंदन नगर अयोध्या जनम लीयौ।।

Clasing: जो जिनवर् ध्यावै भावना भावै मन वच काया भाव धरे।

पाप निकंदने भवय भंजन मुक्तिवरांगणा सो वरए ॥२२॥

Colophon: इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम्।

१३६६. अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening : ॐ हीं जय जय परमेश्वरी अंबिके अभ्रहस्तेमहासिहयानस्थिते "

सर्वलक्षणलिक्षतांगे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निस्कते

निर्मले नि प्रपंचे।

Closing । अंबेदंतावलंबत्वा माइशां भवतीत्यणः

श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेविके ॥४॥

Colophon: इति अविकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुनलपक्षे

तिथौ ४ श्री संवत् १६५:।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening । सिद्धप्रियैः प्रतिदिनं प्रतिभासमानैः,

जन्मप्रबंधमथनै:प्रतिभासमानै ।

श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,

प्रापेजनैितनुपदवीक्षणेन ॥

१९८ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : वुष्टि देशनया जनस्य मनसे ..... सतामीशिताः ॥

Colophon । इति श्रीदेवनंद्याचार्य कृत चौवीस महाराज " काव्य महा-

स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखें, जि•र•को०, पृ० १। जै०सि०भ•ग्र० Ⅰ, ऋ०६०२।

### १३६८ आरती

Opening । जैजै श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू। नाभिराय मरुदेदी नन्दन संसार सागर तारण जू। जैजै ।।।।।।

Closing । जे पढ़ै पढ़ावैं मन सुद्ध ध्यावैं इह आरत सूं सफल भया ॥५२॥

Colophon: इति श्री निम्में ल कृत आरती समाप्तम् ॥

१३६६. आरती

Opening : अब्टदरबकरसत्र एकठा जीमना आंकड़ी मनाहो।

जिन जी के चरण चढ़ाइ श्री जिन पूजी जी भाव सौ ।। १।।

Closing : इयणर देवें णिय सूयसत्तिय जिणच उवीस विधा भत्तिया

ए जिणवर जो अणुदिणुत्तापइ सो संसारिनपछइ आवर् ॥१॥

Colophon । इति आरती संपूर्णम् ।

१३७० आरती

Orening: आरती श्री जिनराज तुम्हारी

करम दलन संतन हितकारी ॥ आर० ॥

सुर नर असुर करत तुम सेवा

तुम हो सब देवनि के देवा ॥ ॥१॥ अः द० ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakcit, Apabhramia & Hinda Manuscripts
(Stotra)

Closing : छवी इग्यारह प्रतिमाधारी

श्रावक वंदित आणंदकारी । इ०।

सातमी आरती श्री जिनवाणी

द्यानत स्वर्ग सुगति सुखदांणी ॥४॥ इ० ॥

Colophon: इति आरती संपूर्णम्।

१३७१. आरती

Opening । आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई।

जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि जाई ॥१॥

Closing : जिन आरती की जै " " गति सहित निकलक ॥

Colophon: इति आरती समाप्तम्।

१३७२. आरती संग्रह

Opening : आरती की जैस्वामी नेम जिनंद की।

सब सुखदायक आनंद कंद की ।। टेक ॥

Closing : जय-जय आरती शांत तुम्हारी ।

तोरे चरन कमल की मैं जाव बलिहारी ॥

Colophon; इति आरती श्री शांन्तिनाथ की सम्पूर्णम्।

१३७३. अष्टक

Opening : पद्मतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनैः

कुंकुमादि गंधसार चंदनादिमिश्रितैः।

कामधेनुकल्पवृक्षचिंत्यरत्नयंत्रकम्

स्वर्गमोदसंग्दान् तं गरणं जदे ॥१५

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing : इत्यं श्रीजिनराजमार्गविदितं · • वासरं प्रत्यहम् ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening : सुर तरनी परिदोहि सटरे लाघउ नरभवसा ।

आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचानिक ॥१॥

Closing : आरंम छाडी आतम रे, पीय संजम रस पूरि ।

सिद्ध बधू सर्जाजम रमर इम दौलइ रे श्री विज् ई देवसूर कि ।।

॥ चैतो रे चित प्रांणी १९४॥

Colophon : इति सज्ञाय समाप्ता ।

बड़े न हुजउ गुन बिना, बिरद बड़ाई पाई कहत धतूरें सू कनक, गहनी गढ़यो न जाई ॥१॥ कनक कनक तै सीगुनी, मादकता अधिकाई

इति पाइये बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ॥२॥

१३७४. भजनावली

Opening : अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,

तुही आधारा रासुजस तव जगमें अनूपे

नहि पारावारा गुन सुजस अरू च स्वरूपे।

तुही कर्त्ता धर्त्ता नृपहि पहरं काहि भूपे ।।१।।

Closing : पनकारिन सुखहारिन दुखदुर्गति ग्रहवरने वरना ॥

जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ॥७३३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening । ध्यान में जिनके सभी आराम होना चाहिए।।

हवस सब अब की दफा सब काम होना चाहिए ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Closing । मनमानता वरदान की दातार तु ही है।।

तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है।।

Colophon। नहीं है!

१३७७. भजनावली

Opening : जंजै जै जिन चंद वंद दुख दहने वारा,

भीर भयंकर हार सार सुब सपित सारा। दीनानाथ अनाथ नाथ सव जिय हितकारी.

असरन सरन सहाय होत जन सुनत पुकारी ॥१॥

Closing : भुजचारि उदार भडार अपार :

सनी सुषसार समस्त भरो वो।

दरसे परसे पद पंक जई।

सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ।।

Colophon: नहीं है।

१३७८. भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज ।

Closing : अज्ञानवंत अनंत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।

असरान परी क्या केंहू जी \*\*\* ॥

Colophon: नहीं है।

१३७६. भजन

Opening । छल सुज सम हि भाव ही कीरत को नहि अंत।

भारी भारी भीर हरी जहाँ जहाँ सुमिरन्त ॥

Closing : जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पै करूना।

भवि वृंद को अब दीजिये यह शील का शरना।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति श्री शीलमहातम जी भाषा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।

विशेष- इसमें भजन के अलावा सील महातम' वृंदावन कृत भी संकलित है

१३८०. भक्तामरस्तोत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणा-

मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम्।

सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगंयुगादा-

वालंबनं भवजले पतितां जनानाम् ॥१॥

Closing : स्तोत्रश्रजं तत्र जिनेन्द्रगुर्णै निवद्धां,

भक्त्या मया रूचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।

धत्ते जनो य इह कठगतामजस्त्रम् ।

तं मानत्ंग मवसा समुपैतिलक्ष्मी ॥४८॥

Colophon: इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६०७।

१३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening । देखें, क॰ १३८०।

Closing । देखें, ऋ० १३८०।

Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम्।

१३८२. भक्तामरस्तोत्र

Orening ! देखें, कः १३८०।

Closing : देखें, क० १३८०।

Colophon: इति श्रीमानतुंगाचार्यं विरचितं भक्तामरस्तवनं समाध्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhrama & Hindi Manscripts
(Stotra)

### १३८३. भक्ताम्रस्तोत्र

Opening ; देखें, क॰ १३८०।

Closing : देखें, ऋ० १३८०।

Colophon: इति श्री मानतुंगाचार्यं विरचितं मक्तामरस्तोत्रसनाप्तम् ।

१३८४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क॰ १३८०।

Closing : देखें, क० १३८०।

Colophon: इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३८०।

Closing : देखें, ऋ० १३८०।

Colophon: इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३८०।

Closing देखें, ऋ० १३८०।

Colophon: इति भक्तामरस्तोत्रम् संपूर्णम् ।

१३८७. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, कि १३८०।

Closing : देखें - क॰ १३८०।

Colophon: इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम्।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhan: Bhavan, Arrah.

### १३८८. भक्तामरस्तोत्र

Opening । देखें, ऋ० १३८०।

Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ सुन जो कोई।

हेमराज सिव सुख सहै तस मनवांछित होई ।।१।।

Colophon: इति श्री भनतामरस्तोत्रस्य टीका पहित श्री रंगविमल लिपि-

कृता सम्पूर्णम् । भादौ सुदि ७ शनिवासरे । संवत् १८४६ ।

### १३८६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क ०१३८०।

Closing : देखें, ऋ० १३८०।

Colophon इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

### १३६०. भक्तामरस्तोत्र

Cpening । देखें, कर १३=०।

Closing : देखें, ऋ० १३८०।

Colophon: इति श्री मानतुंगाचार्य विरचिते भक्तामर स्तौत्रसंपूर्णम् ।

१३६१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३८०।

Closing : अस्मिन लोके य पुरुष: ता माला कंठगता अजस्र निरंतरं धत्ते

धारयति तं पुरुषं मानतुं गं इव सा लक्ष्मीः समुपैति या लक्ष्मीः

मानतुं गेन प्राप्ता सा लभते ।

Cloophon: इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पंडित शिवचन्द्ररचित बालावबोध

टीका समाप्ता ।

मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयायां पंडित शिव-

चंद्रेण कृता इयं संपूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

# १३६२. भक्तामरस्तोत्र

Opening देखें, ऋ० १३८०।

Closing : देखें, क॰ १३८०।

Colophon:

इति श्री भक्तामरस्तवनं समाप्तम्।

१३६३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३६०।

Closing : देखें क १३८०।

Colophon: इति श्री भक्तामरस्तोत्र संस्कृत श्रीमानतु गाचार्य कृत सम्पूर्णम् ।

१३६४. भक्तामरस्तोत्र

Opening ! देखें. क॰ १३६४।

Closing : देखें, क॰ १३६५।

Colophon: इति श्री भाषा भक्तामर जी समाप्तम्।

१३६५. भवतामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीस जिन, आदि सुविधि करतार

घरमधुरंघर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥

Closing: भाषा भक्तामर कियी हेमराज हित हेत

जे नर पढें सुभाव सौं ते पाव शिव खेत ॥४६॥

Colophon: इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बंध संपूर्णम् ।

१३६६ भनेतामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ॰ १३६५ ।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing: देखें, क॰ १३६५।

Colophon: इति श्री भनतामर जी स्तोत्र संपूर्णम्।

१३६७. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३९५।

Closing : देखें, क॰ १३६५।

Col phon: इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम्।

१३६८ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क १३६४।

Closing । देखें, क॰ १३६५।

Colophon: इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता।

१३६६ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३६४।

Closing : देखें, ऋ० १३६५।

Colophon: इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समात्तम् ।

१४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening । देखें, ऋ॰ १३६५।

Closing : देखे, क॰ १३६४।

Colophon: इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम्। मिति वैशाख

वदि १४ संवत् १६३६, वार आदित्यवार । शुभम् श्री।

#### Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

## १४०१. भक्तामरस्तोत्र

Opening:

देखें, ऋ० १३९५ ।

Closing : देखें, ऋ॰ १३६४।

Colophon:

इति श्री भाषा भक्ताम रस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२. भवतामर वचनिका

Opening

देव जिनेश्वर वंदिकरि वाणी गुर उर लाय ।।

स्तोतर भक्तामरतणी कर वचनिका भाय।। मातृत्ंग वरसूरिनै रच्यो भिवत उर धारि ।।

श्री जिनेन्द्र अनुभावते बंधन धरै उतारि ।।

Closing:

संवत्सर शत अष्टदश सत्तरि विकमराय ।।

कातिक वदि बुद्ध द्वादसी पूरण भई सुभाय।।

Colophon 1

इति श्री मानत् ग आचार्यकृतं भक्तामर नाम देशभाषामय बच-

निका समाप्त ॥

### १४०३. भक्तामर वचनिका

Opening:

देखें ऋ० १४०२।

Closing:

देखें, ऋ० १४०२।

Colophon:

इति श्री मानतुंगाचार्ये कृत भवतामरनाम देशभाषामय बचनिका

समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष--यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है।

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १४०४. भक्तामर-टीका

Opening । जो देवनंमृमुगुटि सुभरत्नकांति तीर्तोवकास करि ते जिनपाद

दीप्ति ।

जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी वुडी भव जली जनहो

जुगादि ॥१॥

Closing : माड्या मनात भरला मुनि शक मुर्ति तो स्तोत्र पाठवदला गुरु

पुन्यकीति ।

मीवोलहा चिनमिले जिनसागराला करी क्षमािनवितो वुध

पडिकाला ॥५०॥

Colophon: इति श्री देवेन्द्रकीति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भवतामर स्तोत्र

महाराष्ट्रभाषा संपूर्णम् ।

१४०६. भक्तामरस्तोत्र

Opening: धरासू निकल ता मंदिर जाणो।

जदि रसता माहि उच्चार करणो ।।

Closing । देखें, ऋ० १३८०।

Colophon: इति श्री मानतुंग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवा-

धिदेव भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ।

१४०७. भक्तिसंग्रह

Opening : सिद्धान् उद्भृतकमंत्रकृतिसमुदयान् " "भावोपलब्धि: ।।

Closing : सुगइ गमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं ।

Colophon । इति सप्तभक्तयः समाप्ताः ।

विशेष — इसमें सिद्धभित, श्रुतभित, चारित्रभिक्त, आचार्यभित,

निर्वाणभनित, योगभनित, नंदीश्वर भनितयां संकलित हैं।

देखें, जै सि भ प प I, ऋ ६४०।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

### १४०८. भैरवाष्टक

Opening : अतित)क्ष्णमहाकायं कल्पांतपवनोपम् ।

भैरवाय नमस्तुभ्यं मानभद्रतमोहर ॥

Closing ; अपुत्रो लभते पुत्रं बद्धो मुंचित वंधनात्।

राज्यचोरभयं नैव भैरवाष्टककीर्त्तनात् ।।११।।

Colophon: इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र संपूर्णम्।

देखें — जै० सि० भ० ग्र०, I, ऋ० ६३५।

### १४०६ भैरवाष्टक

Opening : देखें, ऋ० १४० ६।

Closing : चाहै तो १ लाख जाप करें दिन ३ उपवास के

पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनेर का फूल

करणा तेज प्रताप आपि करे।

Colophon: इति भैरवाष्टकम्।

१४१०. भैरवस्तोत्र

Opening : यं यं यक्षरूप दसदिसचरितं भूमिकं पायमानम्,

सं सं संहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेषरं चंद्रविम्बम् । दंदंदंदीर्घकायं विकृतनखमुखं उर्द्यरोमं करालम्,

पंप पंपापनाशं प्रणमतशततं भैरवं क्षेत्रपालम्।।

Closing : भैरवाष्टकिमदं पुण्यं छः मास पठते नरः ।

स याति परमस्थानं यत्र देवो महेश्वरः :। ६।।

Colophoo: इति क्षेत्रपाल स्तोत्र संपूर्णम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

# १४११ भूपाल-चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतनं महीकुलगृहं ..... जिनाधिद्वयम् ॥

Closing : हे देव अद्य मया गम्यते .... पुन पुन: बारं वारं दर्शनं

भूयात् ।

930

Colophon; इति श्री पंडित शिवचंद्रनिम्मीपितं भूपालचतुर्विशतिकायाः

वालाववोध टीका संपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्तादारभ्य चैत्रं कृष्ण द्वितीयायां पंडित शिवचद्रेण कृता इयं पंचस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्यां सोम-

वासरे संवत्सर १६२७ का सम्पूर्णम् लिखितं पंडित परमानंदेन

पठनार्थम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र. I, ऋ० ६४२।

### १४१२. भूपाल-चौबीसी

Opening ! देखें, क॰ १४११।

Closing । दृष्टस्त्वं जिनराज " " भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon: इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम्।

१४१३. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखें, ऋ० १४११।

Closing : देखें, ऋ० १४१२।

Colophon। अनुपलब्ध।

१४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening । देखें, क १४११।

Closing । देखें, क १४१२।

atalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

Colophon: इति भूपाल चतुर्विशतिका।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखें, क० १४११।

Closing : उपसम इव मूर्तिललितं - - चरिष्टमोयस्यधि-

न्वंति वाचः । २७।।

Colophon: इति श्री भूपालस्तीत्र समाप्तः।

१४१६ भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ १४११।

Closing । देखें, ऋ॰ १४१२।

Colophon: इति श्री भूपालचीबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७ भूपालस्तोत्र

Opening: परमातम सम्यक वरन परमभावना सार।

श्रीभूपाल वरेस कवि करत सुपर हितकार ॥१॥

Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद।

जग जीवन जीवन लभ्यौ हीर अवाध अनिद ॥२७॥

Colophon : इति भूपाल चौवोसी सम्पूर्णम्

१४१८. भूपाल-चौबीसी-भाषा

Orening । देखें, क० १४१७।

Closing : देखें, ऋ० १४१७।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति भूपाल चौबीसी भाषा जी समाप्तम् ।

१४१६ वीस विरहमान-आरती

Opening : आरती की जै वीस जिनंद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकंद की।

श्रीमंदर जुगमंदर स्वामी, वाह सुबाह प्रभू शिवगामी अआरती॥

Closing : अजित बीर्य प्रभु है सिरन।मी, भैरों सरन चरन तुम स्वामी । आरती

Colophon: इति श्री वीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१४२०. ब्रह्मलक्षण

Opening : ब्रह्मचर्या भवेमुलं सर्वेषां ब्रह्मचारिणांम् ।

ब्रह्मचर्यस्य भोगेन वृतं सर्वनिरर्थकम् ॥

Closing : दृष्टिपूत .... - .... नवमं ब्रह्मलक्षणम् ।।

Colophon: नहीं है।

१४२१ वैत्यालय-स्तोत्र

Opening । इष्टं जिनेद्रभवनं भवतापहारी \*\*\*\* प्रकरराजविराजमानम् ।।।।।

Closing । द्रष्टमपाय मणिकांचनित्रतुंग सकलचन्द्रमुनिद्रवसम् ॥१०॥

Co'op'ion! इति चैत्यालय स्तोत्रम्।

१४२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : श्रीनक्रेनकभीमे ललितवरभुजे लीलया दोलयन्ति.

चकं विद्युत्प्रकाशं ज्वलिनसतमुखं खखगेंद्राद्यरूढे।

तत्वैरूद्भतभावे सकलगुणनिधेत्वं महामंत्रमूर्ते

कोधोदिस्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमायांति मां देविचके ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hind i Manuscripts
(Stotra)

Closing : यं स्तोत्रं मंत्ररूपं पठित्रनिजमतो भक्तिपूर्व्वं श्रुणोति,

त्रैलावयं तस्य वस्यं भवति बुद्धजने वाक्पटुत्वं च दिव्यम् ।

सौभाग्यं स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,

डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भयं चऋदेव्यास्तवेन ।:८।।

Colophon: इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम्।

देखें, रा० सू० IV, ३८४, ३८७।

दि० जि० ग्र० र०; पृ० १२ ।

१४२३ चक्रे स्वरी-स्तोत्र

Opening: देखें, क० १४२२।

Closing : देखें, क॰ १४२२।

Colophon । ईति चक्रेश्वरी स्त्रोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४२४. चन्द्रप्रभा-स्तोत्र

Opening : प्रभुभव्यराजीवराजीदिनेशं शुभं शंकरं सुन्दरं श्रीनिबेशम् ।

सुरैदीनवैमीनवै: लिप्तसेवं जिनं नौमि चंद्रप्रभं देवदेवम् ॥

Closing : चन्द्रप्रभं नौमि यदंगकान्ति जोत्स्नेति मत्वा द्रवेतेंदुकांतान्

चकोरयथंप्पवति ? स्फुटंति कुष्टोपि पक्षे किलकैरवनानि ॥

Colophon: इति श्री चंद्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

१४२४ चन्द्रप्रभा-सतोत्र

विशेष— यह दूर्णतः जीर्ण- ीर्ण है।

१२४ श्रो जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १४२६; चारित्र-मक्ति

Opening । येनेंद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयू रहारांगदान्,

भास्वन्मौतिमणिप्रभाप्रविसरोत्तुं गोत्तमांगान्नतान् ।

स्वेषां पादपयोरूहेषु मुनयश्चकुः प्रकामं सदा,

वदे पंचतपंतमद्यनिगदन्न चाश्मभ्यचितम् ।। १।।

Closing । इछामि भेते चरित्तभीतकाउस्सम्मो काउ तस्सा लाचेड ....

.... ... -- जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झे ।।

Colophon: इति आचोना चरित्र भक्ति।

देखों, जैं० सि० भ० ग्र० 1, ऋ० ६५१।

## १४२७. चतुर्विशति-स्तोत्र

Opening । आदौ नेमिजिनं नौमि संभवं सुविधि तथा।

धर्मनाथं महादेवं शांति शांतिकरं सदा ॥१॥

C'o ing : सकलगुणनिधानं यंत्रमेतं विशुद्धं,

हृदयक्रमलकोषे धीमतां ध्येयरूपम् ।

जगित विदिततत्वी यः स्मरेत् शुद्धचित्तौ,

भवति सुखनिधानं मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ॥

Colophon: इति चतुर्विशति-स्तोत्रम्।

१४२८. चतुर्विशति स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४२७।

Closing : देखें, ऋ० १४२७।

Colophon : इति चतुर्विशतिस्तोत्रम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

१४२६. चतुर्विशतिसतोत्र

Opening:

देखें, ऋ० १४२७।

Closing ;

देखें, ऋ० १४२७।

Colophon:

इति चतुर्विशतिः स्तोत्रम् ।

१४३०. चतुर्विंशति-जिन-सतोत्र

Opening

आदिनाथं जगन्नाथं अरनाथं तथानिम ।

अजितं जितमोहारि पार्श्वं वंदे गुणागरम् ॥१॥

Closing:

भवभिसुखमनेकं तस्य यो मानवश्च

विमलमतिमनिद्यं स्तोत्रमेतद्वितंद्रः ।

पठित परमभक्त्या प्रातक्त्याय शक्वत,

मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो वभाणः ॥ ।। ।।

Colophon:

इति श्री चतुर्विंशति जिनानं स्तोत्रं समाप्तम्।

१४३१. चौबीस-तीर्थं कर-पद

Opening

अब मोहि तारौ दीनदयाल सब ही मत देखें।

मै जित तित तुमहीं नाम रसाल ।।१॥ अब ॥

Closing

पाठक श्री सिद्धिवर धन सदगुरु विलास,

पाठक तिहि विध सौं श्री जिनराज मल्हाए । ५। ६हि० ॥

Colophon:

इति श्री चौवीस तीर्थंकराणां पदानि सपूर्णम्।

१४३२ चिन्तामणिस्तोत्र-

Opening:

कि कर्ष रमयं सुधारमसयं कि चंद्ररे चिर्मयम्,

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

कि लावण्यमयं महामणिमयं कारूण्यकेलिमयम् । विश्वानदमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयम्, शुक्लाध्यानमयं वपुर्जिनपते भूयाद्भवालवनम् । १।।

Closing । इति जिनपति पार्श्वपार्श्वाख्य यक्षम् । प्रदलित दुरीतोघ-प्रीणीतं प्राणसंध्यम् । विश्वनजिनवाध्यं दानचिन्तामणीस, शिवपदतस्वीज व्याधिबीजं ददातुम् ॥१२॥

Colophon: इति चितामणि स्तोत्रम्।

१४३३. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीश सतेन्द्रं सुपूज्यं नमो नायसीसं मुनिन्द्रं गणेन्द्रं नमो जोरिहाथं नमो देवि चितामणि पार्श्व-

नाथम् ॥

Closing । गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान ।।

खानत प्रीति निहारके की जे आप समान ।।

Colophon: इति सम्पूर्णम्।

१४३४. चिंतामणिपाइर्वनाथ-स्तोत्र

Opening । देखें, क॰ १४३२।

Closing । मदनमदहरः श्री वीरसेनस्य शिष्यैः
सुभगवचनपूरै राजसेनप्रणुतै ।
जपति पठित नित्यं पार्श्वनाथाष्टकं यः,
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिसीमंतिनीशः ।।

Colophon: इति श्री पार्श्वनायाष्टकं समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhransa & HinJi Manuscripts
(Stotra)

१४३५. चौबीस-जिन-आरती

Opening : रिषभ आदि चौबीस जिन लक्षन लेहु विचार।

जो कछ सुने सुकहत हूँ, भव्य जन लेहु सुधार।

Closing । लक्षन जिनवर के कहे भव्यजन लेहु सुधार।

भूला चुका फिर धरी भैरों कहै विचार ॥

Clolophon: इति श्री चौबीस जिन लक्षन आरती।

१४३६. चौबीस-जिन-आरती

Opening : अतिपरमपवित्रं जनितसुचित्रं वरविचित्रमंगलकरणम्।

प्रणमामि जिनेन्द्रं प्रणतशतेन्द्रं भवसमुद्रतारणतरणम् ॥१॥

Closing : परमजितेश्वराः भुविपरमेश्वराः कालवयकल्याणकरा ।

संघप्रमवंतं चरणभजतं विस्तरन्तु मंगलमधिरा ।।

Colophon: इति चौबीस जिन चिह्न आरती समाप्तम् ।

१४३७. चौबीस-दंडक-विनती

Opening । वंदो बीर सुधीर को महाबीर गंभीर।

वर्द्ध मान सनमत नमों, महादेव अतिधीर ।।१।।

Closing : अंताकरन जो सुद्ध होय जिन धरमी अभिराम।

भाषा कारन करन कों, भाषो दौलतराम ॥५६॥

Colophon : इति श्री चौबीस दंडक विनती संपूर्णम्।

१४३८. दर्शन-ज्ञान-चारित्र-आरती

Opening : सम्यक दरसन ग्यांन व्रत, इन बिन मुकत ना होय।

अंध्रपंग अरु भालसी जुडे जलैं दक्लेग्य ।।

१३८ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Orienfal Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : इय अग्बु विधारिव भवभय हारिव,

करि विचित्त सुयसस्स मणु।

भवि भवियण धण्णउ सुह संपण्णउ

लहइ सम्गु मोक्खविसयलु ॥

Colopion । इति रत्नत्रयपूजा क्षिमावाणी समाप्तम् ।

१४३६. दर्शन-स्तुति

Opening : देखें, ऋ० ११६३।

Closing : देखें, ऋ० १९६३।

शुद्ध भाव ताके मन भयौ सम्यक दृष्टी मुकति हि गयौ।।

Colophon: इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४०. दर्शनाष्टक

Opening : आद्याभवत्सफतता नयनद्वयस्य, देव त्वतीय चरणांत्रुजवीक्षणेन ॥

अद्यस्त्रिलोकतिलकं प्रतिभासनो मे, संसारवारिधिरियं चुलकः

प्रमाणम् ॥

Closing : अद्याष्टकं पठेद्यस्तु गुणैनिदितमाधवः ।

तस्य सर्वार्थसंसिद्धि जिने । । १९॥

Colophon: इति दर्शनाष्टकम्।

१४४१. देवस्तवन

Opening : श्रीमद्वेपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,

या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।

संसारागमदोषविस्तरगतः सेवासमीपस्थितः ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Closing । इन्द्रमपि भगवति वृत पुष्पालंकारलंकृतम् ।

स्तोत्रं कंठं करोति यश्च दिव्यश्रीस्तं समाश्रयति ॥३६॥

Colophon: इति देवस्तवनम्।

Ì,

देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1, ऋ० ६५७।

# १४४२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकी नावंगत इव मया यः स्वयं कर्मबंधी,

धोरं दु:खं भवभवगतोदुनिवार: करोति । तस्याप्यस्य स्विय जिनरवे भक्तिरून्मुक्तचेत्,

जेतुं शक्यो भवति न तया कोपरस्तावहेतुः ।।

Closing : वादिराजमनुशाब्दिकलोके, वादिराजमनुर्दिकिस्हिः।

घादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनुभव्यसहायः ॥२६॥

Colophon : इति श्री वादिराज विरिचते श्री एकी भावस्तोत्रसमाप्त ।

देखों, जैं० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६५८।

## १४४३. एकीभाव-स्तोत्र

Opening । देखें, क० १४४२।

Closing । देखें क० १४४२।

Colophon: इसि श्री एकीभावस्तीत्र संपूर्णम्।

## १४४४. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४४२।

Closing : देखें, क० १४४२।

Colophon ; इति एकीभावस्ते।त्रम् ।

Shei Devakamar Jun Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१४४५. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क॰ १४४२।

980

Closing : देखें, ऋ॰ १४४२।

Colophon: इति श्री वादिराजमुनि विरुचिते एकी मावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४४६. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४४२।

Closing : देखें, क० १४४२।

Colophon: इति एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

१४४७. एकीभाव-स्तोत्र

Cpening : देखें, ऋ० १४४२।

Closing: देखें, कः १४८२।

Colophon : इति श्री एकीभावं स्तीत्रं समाप्तम् ।

१४४८ एकी भाव-स्तोत्र

Opening । देखें, कः १४४२।

Closing । धूपैसुगंध कृष्णागस्चंदनोधी।

कृत सुगंध कृतसारमनीहरानी ।। तीर्थकरावा

Colophon: अनुपलब्ध।

विशेष— एकीभाव के पहले भूगाल चतुर्विशति करीब १०-१९ पत्र में हैं।

१४४६ एकीभाव-स्तोत्र

Opening । देखें क १४४२।

Eatalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manscripts
(Stotra)

Closing : देखें, कि १४४२।

Colophon: इति वादिराजमुनिकृतं एकीमावस्तोत्रं समाप्तम् ।

११५०. एकीभाव स्तोत्र

Opening : देखें, क १४४२।

Closing । विद्वांसः अक्षरमात्रापदस्वरहीनं सोध्यता अल्पज्ञानेन वालोपका-

राय केवल मया रचितान तुज्ञानगर्वेण।

Colophon । इति एकीभाव टीका संपूर्णम् ।

१४५१. एकीभाव-स्तोत्र

Opening ! वादिराज मुनिराज की वढतो सुहित उद्गार।

स्वरूप रूप अनुभी कथा, कहत सुपर हितकार ॥

Closing : वादिराज मुनिराज अनुशाब्दिक तार्किक लोक ।

काव्यकार सहकार जग जीवन हीर सुधोक ।।

Colophon: इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम्।

१४५२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४५१।

Closing : देखें, क १४४१।

Colophon इति श्री एकीभाव संपूर्णम् । श्री ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

# १४५३ गणधर-स्तुति

Opening ः इति प्रमाणभूतेयं व≆तृ श्रोतृ परंपरा ः महाधियम् ।

Closing : स्वक्श्र्वद्भिरोधेन मुनिवृ दारकै रत्नदा ।

प्रसादितो गणेद्रोभुदूतिग्राह्मा हि योगिनः ॥

Colophon। सम्पूर्णम्।

982

## १४५४. गीतमस्वामी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजसूनवें।

समग्रलब्धिमाणिक्य रौहणार्येद्रभूतये ॥१॥

Closing । इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहम् ।

श्री जिनप्रभसुरिस्त्वं भवसर्वार्थसिद्धये ॥ दः।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तीत्र सम्पूर्णम् ।

१४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening । देखें, कर १२६६।

Closing : देखें क॰ १२६६।

Colophon: इति घंटाकर्ण स्तोत्रम्।

संदर्भ के लिए भी देखें, ऋ० १२९६।

१४५६. गुरुभक्ति

Opening । वंदी दिनंबर गुरु चरन जम तरन तारन जानी।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts
(Stotra)

जे भरम भारी रोग को है राजवैद्य समान।। जिनके अनुग्रह विन कहुं नहीं कटैं करम जंजीर। ते साधु मेरे उर वसों मेरी हरी पातक पीर।।

Closing : करजोरी भूधर विनवै कब मीलेवै मुनीराज ।
आसं मन की तव पुरै मेरे सरे-सगले काज ॥
संसार विषम विदेह मै विना कारन वीर ।
ते साधु मेरे मन वसौ मेरी हरौ पातक पीर ।।=॥

Colophon: इति गुरु भगती संपूरन।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर वसै ते भव जलिध जिहाजु।

आप तिरै पर तार्रीह, अँसे श्री ऋषिराज। ते गुरु।।

Closing : देखें, ऋ० १४४६।

Cloophon! इति गुरुस्तुति संपूर्णम्।

१४५८. गुरुविनती

Opening ; देखें, कर १४५७।

Closing : वे गुर चरन जहाँ धरै जग मै तीरथ होय।

सो रज मम माथे लगे भूधर मांगै एह ।।१४॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १४५६. गुगावलि

Opening । श्री अरिहंत अर्णत गुण, सेवइ सुरनर इंद ।

पाय कमल जसु प्रणमतां, लहीयै परमाणंद ॥१॥

Closing । श्रीखेम साखै सो भता वा शांति हरष मुणिद,

तसु सीस कहै जिन हर्ष मुनि गुरु नामै हो दिन-२ आणद ।।

Colophon: इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

१४६०. गुणाष्टक

Opening : गुणाधीश योगी मुनि : सकल जन के काम शरते ।।

Closing ! मुनो गामैं थाते .... आदि परमा।।

Colophon: इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।

विशेष— गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक संकलित हैं।

१४६१. जैनपदसंग्रह

Opening । णमो अरिह्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।।

एसो पंच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि पढमं हवइ मंगलम् ॥

Closing : ये रे सांवितया तेरा नाम जप छुट जात भव भाविरिया।

🕶 🟲 जो भवसागर से तरिया। येरे ॥

Colophon: नहीं है।

१४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening । सञ्ज्ञक्त्या देवलोके रित्रशाशिभुवने व्यंतराणां निकाये,

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने । पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्राधकारे, श्रीमतत्तीर्थं कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥१॥

Closing : इन्द्रंश्री जैन चैत्यं स्तविमदमिनशं ' प्रणमतां चित्त-

मानंदकारी ॥

Colophon: इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्त:।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१४६३. जिनदेव स्तुति

Opening : जिनराजदेव की जिये मुक्त दीन पै करूना।

भविवृंद को अब दीजिये यह शील का शरना ।। टेक ।।

सुचिशील के धारा में जो स्नान करे है।

मत कर्म को सो धोय के सिवनार वरे है।। टंक।।

वतराज सो वेताल व्याल काल हरे है.

उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है।। जिनराज ।।१।।

Closing : जस सील का कहने में थका सहस वदन है।।

इस सील से भव पाय भगाकर मदत है।

यह सील ही भविवृद को कल्यान प्रदन है

दस पैंड ही इस पैंड से निर्वान सदन हैं ।। १४॥ टेक ॥

Colophon: सम्पूर्णम् !

१४६४. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : ॐ हीं श्रीं अहँ अहंद्भ्यो नमो नम:। ॐ हीं श्रीं अहँ सिद्धेपोयो नमो नमः। ॐ हीं श्रीं अहं आचार्योभ्यो नमो

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह उपाध्यायेभ्यो नमो नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्ह श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः।।।।।

Closing ! श्री रुद्रपरुतीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाञ्जहंसः । वादीन्द्रचुडामणिरेव जैंनः जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्यः ॥

Colophon: इति जिनपंजर स्तोत्र समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६७६।

### १४६५. जिनपंजर-एतोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४६४।

988

Closing । वातः सन्बुच्छाय " मनोव छितपूर्णीय ॥२४॥

Colophon: इति जिनपंजरस्तोत्र सम्पूर्णम् । पंडित अजयचन्द्र ।

## १४६६. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening । देखें, कः १४६४।

Closing । अस्पष्ट।

Colophon: इति वज्रिंपजरस्तोत्रं समाप्तम् ।

१४६७ जिनरक्षा-स्तवन

Opening : श्रीजिनं भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याहलाददायकम् ।

जैनरक्षामहं वक्ष्ये देहिनां देहरक्षकम् ॥१॥

Closing : राकायां ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम् ।

पूजाविधि समायुक्तं कर्त्तंव्यं सज्जनैज्र्जनै. ।।२९।।

Colophon: इति जिनरक्षा स्तवनम्।

१४६८. जिनसह∄त्रनाम

Opening : पच परम गुरु को नमों उरधरि परम सु प्रीति ।

तीरथराज जिनंद जी चौवीसों धरि चित ।

Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, वन्यौ अनुपम रास ।

जो पढ़सी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ।।

Colophon: इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।

मकरमासे गुक्लपक्षे तिथौ-२ चंद्रवासरे "" ""।

सूवा औधदेश मुल्क हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध जिला है नवावगंज बाराबंकी नाम है।

टिकइत नगर सुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरव सरैयां-

भलो ग्राम है।

वास स्थान लेखक सुभगवान दीन नाम अंत्रजल के स्ववस

आयो यहि ठाम है।

भोज नृप देश जिले शाहाबाद आरा नग्न राय जी वुलाकचंद-

मंदिर मुकाम है।।१।।

श्री सहस्रनाम पाठ जी को चढ़ाया श्री चंद्रप्रभु स्वामी जी के

मंदिल में वत उद्यापन का मुसम्मात "" कुँ अर भार्या

बाबू रामा प्रसाद अग्रवाल श्रावक दिगम्वर आन्नाय धारक

आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादौं सुदी द संवत् १६५६।

१४६६. जिनेन्द्रदर्शन सतोत्र

Opening : देखें, क॰ १४४०।

Closing : जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमजितम् ।

जन्ममृत्युजरान्तकं हन्यते जिनदर्शनात् ।।१४॥

100

5.5

१४८ श्री जैने सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति जिनदर्शन संस्कृत सम्पूर्णम् ।

१४७० जिनदर्शन

Opening : प्रभु पतितपावन मैं अपावन चरैन आयो शरण जी,

यों विरद आप निहार स्वामी मेंट जामन मरण जी।

Closing : या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव।

मैवल नवल गुण गाय के जै जै जै जिनदेव ।।

Colophon: इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।

विशेष— प्रारम्भिक स्तुति कविवर बुधजन कृत है।

१४७१. जिन इर्शन

Opening । देखें, कर १४७०।

Closing : जाँचों नहीं सुरवास ... वीजीए शिवनाथ जी ।।

Colophon: इति श्री भाषा जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१४७२. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमीभगवते चन्द्रप्रमजिनेन्द्राय शर्शाकशंखगीक्षीरहारधवल ।

गोत्राय घार्तिकम्मेनिर्मलोछेदनाय जाति जरामरणविनाश-

नाय :

Closing : वां कों क्षां क्ष्रं क्षां क्षः ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon: इति श्री चंदप्रभतीर्थं कर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल

दु खहरन मंगलकर विजयकर स्तोत्र संपूर्णम् ।

विशेष- इसके आगे एक मंत्र भी दिया गया है।

देखें, जै सि० भणग्र० I. ऋ० ६७६।

रा० सू ॥, पृ० २३६ ।

१४७३. ज्वालामालिनी स्तोत्र

Opening । देखें, क० १४७२।

Closing : भृ'गारतांगेलवरदर्प्ण चामराणी श्रकचंदनादिनवरस्तविभूषितांगे

दैश्यास्तितापरिजनै करकंजयुग्मे ॥६॥

Colophon; अनुपलब्ध।

१४७४. ज्वालामालिनी सतोत्र

Opening: देखें, ऋ० १४७२।

Closing : दहदह पच पच छिद छिद भिद भिद हो ही हु है

फुट स्वाहा। अनेन मंत्रीण होम कुर्यात् सहस्र १२००० ---

अनेन मंत्रेण गजेन्द्रं नरेन्द्रं सर्वेशत्रू वशीकरणं पूर्वमंत्र स्मरणोति

Colophon । इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमंत्रविधि कल्प सम्पूर्णम् ।

१४७५. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १८७२।

Closing : चंद्रहास्य खङ्गीन छेदय छेदम, भेदय भेदय डह डह

छरु छरु स्फुट झंझां मां कों क्षीं क्षूं क्षीं ज्वालामालिनि ज्ञाप-

यते स्वाहा ।

Colophon: इति ज्वालामालिनी स्तोत्र संपूर्णम् ।

१४७६ ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष- पूर्णतः जीर्ण-शीर्ष ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

## १४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४७२।

940

Closing : .... तस्याभरणं पीतवर्णं खङ्गित्रशुलपाससरासनायुर्ध

उत्तमासनेन स्थापितं तस्याग्रे जाप्यं रक्तपीतउज्वलफलानि

मध्यरात्रे 🕶 🤭 ।

Colophon ! अनुपलब्ध ।

१४७८. ज्वालामालिनी

Opening । स्नेहाच्छरणं प्रयांति भगवन् पादद्वयं ते प्रजा,

हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णव ।

···· छायानुरागं रवि ॥**१॥** 

Closing : अंदय छेदय भेदय भेदय इंस इक छक् छक्

हरू हरू स्फूट स्फूट घे घे ... ... ...

- ··· ज्वालामालिन्यां ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon: इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष — इसमें शान्त्याष्टक भी गींभत है।

१४७६ कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening । कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीतामयप्रदमिनदितमिङ्घपद्मम् ।

संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पौतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य १॥

Closing जननयमकुमुद्रचंद्र प्रभासुराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।

ते विगलितमलनिचया अचिरात्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥

Colophon: इति श्री कल्याणमंदिर संस्कृत समाप्तम् ।

देखें जै० सि० भ० ग्र. I, ६८२।

१४८० कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४७६।

Closing । देखें, क० १४७६।

Colophon । इति श्री कल्याणमंदिर जी संस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क॰ १४७६।

Closing : देखें, ऋ० १४७६।

Colophon: इति श्री कल्यागमंदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२: कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४७६।

Closing : देखें, ऋ० १४७६।

Colophon: इति श्री कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening । देखे, क० १४७६।

Closing : देखें, क० १४७६।

Colophon । इति कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४ कल्याणमंदिर स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४७६।

Closing : देखें, क॰ १४७६ ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Col phon: इति श्री कुमुदचढाचारयंविरचित श्री कल्याणमंदिरस्तोत्र

समाप्तम् ।

१४८५. कल्याणमंदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening : देखें, ऋ० १४७६।

Closing । अस्मिन् क्लोके स्तोत्रकर्ता कुमुदचंद्राचार्यस्य नामोऽपि

प्रकटो जात. ।

Colophon: इति कुनुदचंद्राचार्यकृत कल्याणमदिरस्य अर्थावजीय टीका पंडित

शिवचंद्र निम्मीपिता अलमगमत्।

१४८६. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।

वंदौं परमानन्द मैं सो घट-घट अंतरलीन ।।

Closing ; यह कल्याणमंदिर कियौ, कुमुदचंद्र की बुद्धि ।

भाषा कियो बनारसी, कारण समाकत शुद्ध ॥

Colophon: इति कल्याणमंदिर पूरन ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६६१ ।

१४८७. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : श्री नवकार जपी मन रंगे श्री जिनशासन सार री माई।

सर्वे मंगल मै पहिलो मंगल जपतां जय जयकार री माई ॥१॥

Closing : देखें, क० १४८६।

Colophon: इति श्री कल्याणमंदिर भाषा संपूर्णम् ।

### १४८८. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening:

देखें, ऋ० १४८६।

Closing:

देखें, ऋ० १४८६।

Colophon:

इति श्री कल्याग मंदिर स्तोत्र नाषा संपूर्णम्।

१४८६. कल्याणमंदिर

Onening : देखें, ऋ० १४=६।

Closing:

देखें, ऋ० १४८६।

Colophon:

इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम्।

१४६०. कल्याणमंदिर

Opening : देखें, ऋ० १४६६।

Closing : देखें, क ० १४८६।

Colophon:

इति श्री कल्याण मंदिर को भाषा संपूर्वम्।

१४६१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening:

श्रीमत्सर्वज्ञदेवंनिजमुकुटतटाभ्यंतरे संदधानम्.

चंचच्चामीकराभं खचितमणिशतैः भूषणैभू षितांगम्।

स्फुर्जत्काम्याभिलासप्रदममलतरं वेत्रयष्टिदधानम्,

स्तोष्ये श्री क्षेत्रपालं जिननिलयगतं विघ्नविध्वंसदक्षम् ॥

Closing

ॐ आं कों हीं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवध चिह्न-

सपरिवारसिहतमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ट तिष्ठ ठ: ठ: मम संन्नि-

हितौ भव भव वषढ् स्वाहा, इति ठः ठ स्वस्थान गच्छतु स्वाहा।

१५४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: संपूर्णम्।

१४६२. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening । देखें, ऋ० १४६१।

Closing : इमं स्तवं यो मितमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्त्ते,

भवत्यातिकाल सततं पवित्रं भवत्यसौ सारदचन्द्रकीतिः ॥

Colophon: इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६३. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखें, क १४०६।

Closing : भैरवाष्टकमिदं - 🕶 ... भैरवाष्टककीर्तिनात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४६४. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : ॐ हीं नमो भगवति पद्मावती हा हा कात्यायनी हू हू योगिनी

नवकूलनागबंधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ 🖚 .... ।

Closing । अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुञ्चित बंधनात् ।

त्रिसंध्यं पठते यस्तु सर्वंसिद्धिभवाष्नुयाद ॥१६॥

Colophon: इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम्।

१४६५. लघुसहस्रनाम

Opening । स्वयंभुवे नमः तुभ्यमुत्पाद्यातमानमात्मिन । स्वात्मनैव तथोद्भृत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ॥१॥

Closing । नामाष्टकसहस्राणां ये पटंति पुनः पुन: ।

ते निर्वाणपदं यान्ति निश्चयेननात्रसंसयः॥

Colophon: इति श्री लघु सहस्रनाम जी सम्पूर्णम्।

१४६६. लघुसहस्रनाम

Opening : देखें, क॰ १४९५।

Closing । देखें, क॰ १४६५।

Colophon: इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम्।

१४६७ लघुसहस्रनाम

Opening । देखें, क॰ १४६८।

Closing : देखें, क॰ १४६५।

Colophon: इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ।

संवत् १८४२ वर्षे शा० १७०७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरौ।

१४६८. लघुसहस्रनाम

Opening : नमः त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।

वक्ष्ये तस्यैष नामानि मोक्षसौख्याभिलाषया ।।१।।

Closing : देखें क॰ १५६५।

Colophon: इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम्।

देखों, जै० सि० भ० ग्र० ।, ऋ० ७ ०।

१४६६. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती।

मवृद्धकालो विरतो रतो ।

१५६ Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

जराहजा जन्महता हता हता।

पार्थ्व फणे रामगिरी गिरी गिरी ।।१।।

Closing:

सर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौसले,

विख्यातो भवि पद्मनंदिस्धियस्तत्वस्य कोशं निधिः।

गंभी रं यमकाष्टकं भणति यः संभूयसा लभ्यते ।

श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मञ्जलम् ।।

Colophon:

इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सिंह भे० ग्रं०, फ्रं० ७३७।

दि॰ जि॰ ग्र॰ र०, प्र॰ १४०-१४१।

जिं र वो०, पृ० ३३४।

## १५००. लक्ष्मीस्तीत्र

Opening:

देखें, ऋ० १४६६।

Closing:

देखें, ऋ० १४६६ ।

Colophon:

इति लंडनीस्तोत्रम् ।

१५०१. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening :

देखें, 🛪 १४६६।

Closing

देखें, ऋ० १४६६।

Colophon:

इति श्री लक्ष्वीपार्श्वनाथस्तवनम् ।

१५०२. महावीर आरती

Opening:

आरतीं करी जिनवीर की, सुन पिया सेनिकराय ह

जैन्म-जन्में सुख पाईए, दुरित सकल मिटि जाय ।।१।

Closing:

जिन आरती की जै सुख लही जे छी जै कर्म कलक।

सीवपूर पाई जै सो नर पूजि जै भक्ति सहित निकलंक ॥

Colophon: इति आरती सम्पूर्णेम् ।

१५०३. मंडलोद्धार-स्तोत्र

Opening : संपूर्वे सूरिभिराम्नातं क्षेत्रपालसपर्य काः ।

तथाहं मंडनं वक्ष्ये सर्वविष्नोपशांतये ॥१॥

Closing : यथापूर्वि मया श्रुत्वा तथा एवं मया कृतम्।

क्षेत्रपालविधि दिव्यां विघ्नदु.खप्रणाशकम् ।

Colophon इति मंडलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४. मंगल आरती

Opening : मंगल आरती कीजे भीर विधन हरन सुभ करन किशोर । ट्रेक ।

बरहंत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जिपये सुखदाय ॥१॥

Closing । कहै कहाँ लो चुम सब जानी, द्यानत की अभिलाष प्रमानी।

करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ॥करो॥

Colophon: इति आक्ती महावीर जी की सम्पूर्णम्।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening । देखें, ऋ० १४० %।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करें १२५००० दिन तीन में जब

उपवास के सरने चरमो बनाये या लाल वस्त्र जाप माला कनेर

फुल 👑 ।

Colophon: नहीं है।

## १५८ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१५०६. मंगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट - ""कुर्व तु ते मंगलम् ॥१॥

Closing : इत्यं श्रीजिनमगलाष्टकिमदं " कुर्व तु मंगलम् ॥१०॥

Colophon: इति मंगलाष्टकं संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ७०५।

१५०७. मंगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करै तुम सेवा।

अद्भुत हैं प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलपमित मेरी ॥

C'osing : निस्तार के तुम मूल स्वामी बडे भागन पाइए ।

रूपचंद चिंता कहा जिन चरण सरणिन आइए।।

Co'opho 1: इति रूपचंद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

१४०५ मुनीश्वर विनती

Opening : वंदी दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान,

जे भरम भारा रोग को हैं राजवैद्य महान । जिनके अनुग्रहें बिन कवि नहि करें कर्म जंजीर, तै साधु मेरे उर वसे मेरी हरो पातक पीर ॥१॥

C!osing : कर जींड़ मधर वीनमें वे मिले कब मुनि राय।

इह आस मन की कब फलैं मेरे सरे सगले काज।

संसार विषम विदेस मे जे बिना कार वीर ॥ ते साधुः ॥ ॥

Colophen । इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।

## १५०६ नमस्कार

Opening : देखें, ऋ० ११६३।

Closing । देखें, ऋ० ११६३।

Colophon: इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम्।

१५१०. नमस्कार

Opening : देखें, क ० १२८७।

Closing । देखें, ऋ० १५०६।

Colophon: इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम्।

१५११. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि .... विरहित-निलयान् ॥१॥

Closing ; अन्यब्ध स्वपन् जाग्रन् तिष्टन्नपि पथि चलन् ... स्तोत्रं

सुकृती ॥१९॥

Colophon : इति संपूर्णा।

देखें — जै० सि० भ० ग्र०, I, ऋ० ७०८।

१५१२. नंदीश्वर-भक्ति

Opening । देखें, क॰ १४११।

Closing : " उन्खखन्त्री कम्मनखन्नी वीहिलाओ सुगइ गमणं समाहि-

मरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

Colophon: इति नंदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति सप्तभवतयः समाप्ता ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १५१३. नरक-विनती

980

Opening । आदि जिनंद जुहारीये मन धरि अधिक उल्हासो जी।

मन वव काया गुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना

दु:ख दोहिल ॥१॥

Closing : प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइये ।

इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयै ।।

Colophon: इति श्री नरक विनति स्तवनं सम्पूर्णम्।

१५१४ नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

Opening : ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमंत्रस्य भागवऋषिः अनुष्टुप् छंदः

श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्धयुर्थे जपे

विनियोगः।

Closing : श्रीध्यायेत्वां प्रहसितमुखो कोटिवालार्कभासम्,

विद्युद्वर्णा वरवरधरां भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।

बीजापुरं सरसिजयुगं विभ्नंतीं स्वर्णंपात्रम्,

भत्रीयुक्तां मुहुरभयदां महामय्यच्युतश्री; ॥१०४॥

C nophon: इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदयं संपूर्णम्।

## १५१५. नवग्रह-स्तोत्र

Opening । जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।

ग्रहशांति प्रवक्षामि लोकानां सुखहेतवे ।।

Closing : भद्रवाहु: महाश्चेव पंचमश्रुतकेवली ।

तेन विद्यानवादाचं ग्रहशांतिरूदीरितः ॥२१

Colophon। इति नवग्रह स्तोत्रम्।

देखें, जि० र० को०, पृ० २०६।

## १५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening:

अर्कचन्द्रकुजसौम्य 🕶 🕶 🕶 जिनपूजनात् ॥१॥

Closing:

भद्रबाहुरूवाचेदं पंचमश्रुतकेवली ।

विद्याप्रवादतः पूर्वाद्ग्रहशांतिः विधि श्रुता ॥१९॥

Colophon:

इति नवग्रह शांति स्तोत्रम् ।

१५१७. नवकारढाल

Opening:

पहिलो लोक अलोक ए ढाल छै समरौ श्री नवकार

सार पूरव तणो नव निध सिद्ध आपै सदा ए।

महिमा मोयी जास संकट सवि टलै मिलय मनोरथ संपदा ए।।

Closing:

दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवंछित सुखयाय । नमुंन० ।

दया कुशल वाचक बढ़ै धर्ममंदिर गुण गाय ।।२३। नमुं न ।।

Colophon:

इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८. नवकार-स्तोत्र

Opening:

हस्तावलं वोर्हतां पापाद्वा सचराचरस्य जगतः ।

संजीवनं मंत्रराट ..... ॥ ॥ ॥

Closing:

अन्यच्च

🕶 सुकृतिः ॥१२॥

Colophon;

इति पंत्र नमस्कार स्तोत्रम्।

१५१६. नवकारमंत्र-स्तोत्र

Opening 1

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम्।

आत्मरक्षाकरं वर्ज्ञं पंजराभि स्मराम्यहम् ॥१॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing । यश्चैनां कुरूते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।

तस्य न स्याद्भवं व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥ । ॥

Colophon: इति नवकार मंत्र स्तोत्रम्।

982

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ७ ह।

## १५२०. नेमिनाथ आरती

Opening : आरती की जै स्वामी नेम जिनंद की ।

सब सुखदायक आनंद कंद की ।। आरती० ।।१।।

Closing : भैरौं सरन चरन तुम अ।यौ।

भव भव मैं प्रभु होइ साहायो ।। आरती ।।६।।

Colophon । इति भेरौंजी कृत आरती ।

१४२१. नेमिनाथ-स्तोत्र

बिशेष यह पूर्णतया जीर्ण है।

१५२२. निजामणि

Opening । सकल जिनेश्वर देव हमत पाये करिने सेव।

निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे संसार ॥१॥

Closing । श्री सकलकीत्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीत्ति गुणगाउ।

ब्रह्म जिनदास भणे सार एनिजामणी भवतार ॥ १४॥

Clolophon: इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास विरचिते क्षपक निजामणि संपूर्णम्।

१५२३. निर्वाण-मक्ति

Opening । विवुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।

अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामयं प्राप्तम् ।

Closing : देखें, क० १४१२।

Colophon: इति निर्वाणभक्ति:।

5

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ७१७। जि० र० को०, पृ० २१४।

## १५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening । वीतराग वंदी सदा, भाव सहित सिरनाई।

कहूँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई।

Closing : संवत् सत्रहसै इक ताल आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।

भैया वंदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र0 I, ऋ० ७१५।

## १५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क॰ १५२४।

Closing: देखें, ऋ० १४२४।

Colophon । इति निर्वाणकांड भाषा संपूर्णम् ।

१५२६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, ऋ० १४२४।

Closing: देखें, ऋ० १४२४।

Colophon: इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १५२७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, ऋ० १५२४।

958

Closing : देखें, क० १५२४।

Colophon : इति श्री निर्वाणकांड भाषा सम्पूर्णम् ।

१५२८ निर्वाणकाण्ड

Opening । देखें, क॰ १५२४।

Closing : देखें, ऋ० १५२४।

Colophon: इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा समाप्तम् ।

१५२६. निर्वागकाण्ड

Opening : देखें. क० १५२४।

Closing : देखें, 🗫 १५२४।

Colophon: इति श्री निर्वाणकाण्ड समाप्तम्।

१५३०. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें क १५२४ !

Closing । तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वैदन की जै तहाँ।

मन वच काय भाव सिरनाई वंदन करौ भविक सिरनाई !!

Colophon । इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा संपूर्णम् ।

१५३१. निर्वाणकाण्ड

Opening । अट्ठावयिम्म उसहो चंपाएवासुपुज्ज जिण-णाहो ।

उज्जते णेमिजिणो पावाए णिन्वुदौ महाबीरो । १॥

Closing : जो पढइ तियालं णिब्बुइ कंडंपि भाव सुद्धीए ।

भुंजदि णरसुरसुक्खं पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

Colophon : इति निर्वाणकांड समाप्तम् ।

देखों, जै० सि० भ० ग्र० , ऋ० ७ १४।

## १५३२ निर्वाणकाण्ड

Opening ; देखें क० १५३१।

Closing : देखों, ऋ॰ १५३१।

Colophon: इति श्री णिव्वागकांड की गाथा संपूर्णम्।

१५३३. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क॰ १५३१।

Closing : देखें, ऋ० १५३१।

Colophon: इति श्री निर्वाणकांड समाप्तम्।

१५३४. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क ०११३१ ।

Closing : देखें, ऋ० १५३१।

Colophon: इति निर्वाणकां इसंपूर्णम्।

१५३५ निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क० १५३१।

Closing : देखें, ऋ० १५३१ 1

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening । देखें, क॰ १५३१।

१६६

Closing । देखें क॰ १५३१।

Colophon: इति निव्वणिकांड प्राकृत संपूर्णम् ।

२५३७. निर्वाणकाण्ड

Opening । देखें, ऋ० १५३१।

Closing : देखें क० १५३१।

Colophon; इति निर्वाणकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८. निर्वाणकाण्ड

Opening : श्री अर्ह त अनंत गुन सिद्ध सूर उवझाय।

सर्वंसाधु के चरण जुग वंदो मन वचकाय ।।१।।

Closing: देखें, क॰ १५२४।

Colophon: इति श्री निर्वाणकांड भाषा समाप्तम्।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening । रावण के सुत आदिकुमार,

मुक्त गये रेवा तट सार।

कोडि पांच अरू लाख पचास,

ते बंदी .... ... ।।

Closing : देखें, क० ५५२४।

Colophon : इति निव्यणिकांड सम्पूर्ण: ।

## १५४० ॐकार स्तुति

Opening । ॐकारं विस्फुरच्चन्द्रकलाबिंदुमहोज्वलम् ।
नामाग्राक्षरनिस्पन्नं पंचानां परमेिठनाम् ॥
धम्मर्थिकाममोक्षाणां दातारं विश्वपूजितम् ।
हत्कंजकर्णिकासीनं ध्यायेत् ध्यानी शिवाप्तये ॥

Closing । सर्वावस्थासु सर्वत्र महामंत्र शिवार्थिभि: ... । सहस्रतस्रोटिभि: ॥

Colophon। नहीं है।

१५४१. पर

Opening : मोर्यानी हिस्दैं नाय श्री जिनसात की । जा वानी तैं सब सुख उन्नै, सोई हमैं सुहाय ।। श्रीजि० ।।

Closing : सेवक जान दया कर स्वामी, फिर न फिरौं भव फेरी ।।प्रभु०

Colphon; इति पद।

१५४२. पद

Opening : अब चल संग हमारे, तोहें बहुत जतन कर राखो रे काया ।। टेक निस दिन पल पल रहे है एकठे अब त्रयुं नेह निवारे रेकाया।।।।।।

Closing : जिनवर नाम सार भज अंतम काया भरम संसारे ।
सुगुर वचन परतीत धरत शुभ आनंद भए हैं हमारे रीकाया

Colophon: इति पद चेतावनी सम्पूणंम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

#### १५४३. पद

Opening : आज गई थी समवसरण मां जिनवचनामृत पीवा रे।

आवा श्री परमेसर वदन कमल छवि हरषे निर्वेवा रे

।।आवा, ।।१।।

Closing : परम दयाल कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजै

परम भगति जिनराज तुहारौ अपणौ कर जाणीजै ।३।। कु॰ ।

Colophon: इति श्री जिन कुसलसूरि जी गीतम्।

#### १५४४. पद

Opening ; मिल जाओ .. ... गुरु के वचन मोती कान में।

Closing : सात विसन आगे ... आवागवन निवारो ।। वृ० ।।

Colophon । सम्पूर्णम् ।

985

#### १५४५. पद

Opening : विना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है।। विना ।।

चौरासिलाष में भटको बहुत सी देहधारी है।

मुसीबत जो पड़ी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है।। बिना ।। ।।१।।

Closing : देव त्वदीय " " तव दिव्यघोषम् ॥४।।

Colophon: इति काव्य संपूर्णम् ।

#### १५४६. पद

Opening: देखो मतलब का संसारा, देखो मतलब का संसारा।। टेक ।।

Closing । भाग चंदमा चंद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याकी निहार

स्याद्वाद की उचरनी

परनति सब जीवन की तीन भांत वरनी ॥ परनति ।।४॥

Colophon: इति पद सम्पूर्णम् । मिति भादव वदी ३ वार सनिश्चरवार सम्वत् १९४८ का । लिख्यतं अमीचद श्रावक पालमग्राम मध्ये ।

#### १४४७. पद

Opening : तुम भजी निरंजन नाव मुक्ति पद पाई।
ये अचल अखंडित जोति सदा सुखदाई।। टेक।।

Closing : अब जैनधर्म हितकार सदा मैं चाहूँ। अब लख चौरासी मांहि फीर नहीं आऊँ।। कोई जिनवें यूं निणदास भावनी गाई।। तुम भजी।।

#### १५४८. पद

Opening ! दिन वारन बोल दुनिया मीतक बमारोपाय जी ।।

Closing : षतरी मारग जावतार साम मिल गया चोर,

षतरी बाण भया ''' ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

#### १४४६. पद

Opening : नेमि सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो।
संतु खग दिवारि सील जो न किया जोर जुगती सो तारी लगीहो।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing : " नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो।

Colophon: पद संपूर्णम्। संवत् १६९६ मिति चैत्र वदी १४। बाबू

हरलाल जी अग्रवाल गांगिलगोत्रस्य पुत्र बाबू वंधनलाल जी तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायन जी भार्या मधुत्रन बीबी पुस्तक

लिखापितं आरे मध्ये संपूर्णम् ।

१४५०. पद

Opening : मुझे है चाव दर्शन का ..... उवारोगे तो क्या होगा ।।

Closing । अधम उद्धार पूरन के " "नीकारोगे तो क्या होगा।।

Colophon : इति पूर्णम्।

१४४१. पद

Opening : शरण पिया जैओ होसी रघुवीर ।।

Closing : भेरी बार क्यों विलम्ब करो रे।।

Colophon: नहीं है।

१४४२. पद

Opening । तारण वाला न कोई ए जी का।

आप तरे आप ही ए तोरे देखो चित में जोई।

लाख बात की बात है चेत न जाने सिवसुख होइ ॥ए जी का ॥१॥

Closing : वादि न क्यो न विचारी चेतन अवहु हो हु खरे।

जव सुध आवे चेतन प्यारे की तब सब काज सरे ।। ए चेतन ।।

Colophon: नहीं है।

ः १४५३. पद

Opening : किये आराधना तेरी हिये आनंद व्यापत है।

तिहारे दर्शन देखे सकल ही पाप नाशत है ॥१॥

Closing : दुरूर्लभ है नर अवतार नहि बार बार श्रावक 🥆 😬

--- ... सब साघुन ने भाई ।।१२।।

Cloophon: इति द्वादशानुत्रेक्षा समाप्तम् ।

विशेष — पर के साथ ही द्वादशानुप्रेक्षा भी संकलित है।

१५५४. पद

Opening : जाके वंदत पद्दयत हैरी: मुक्ति महासुख खानि ॥ माध्री ॥

Closing : सबही चाहै भोग सजोग, तै मिल तै तिज लीनौं जोग ।

सील बरत चित्त मैं दृढ़ राखि, जग भाषो तेरी उत्तम साखि।

Colophon: इति।

१५५५. पद

Opening । कर जोड़ी माथ नाए नमो है बेरी बेरी।

हे नीर पीर हरिये सिताबी से अब मेरी ॥ टेक ॥

Closing: प्रभु जी तुम तीन ज्ञानधारी,

सच्चे हौंगे ब्रह्मचारी,

तजी तुम राजुल सी नारी,

भऐ हो गिर के तपधारी,

धर्मचंदनी रामचंद गावै जिन शरण लिया,

हम को छाँडि चले सखी री साजना ॥ ४॥

Colophon: इति सम्पूर्णम् ।

१४४६ पद

Opening : प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जातरे

च्कत जे औसर ते पीछै पछितात रे ॥ प्रा० ॥

१७२ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : माधुरी जिनवानि चली री सुनिह,

विपुलाचल परि बाजै वाजैत भुनक परी मेरे कान। वर्द्धमान तीर्थं द्धुर आयेरी, वंदे निज गुर जानि।।

Colophon: नहीं है।

१५५७. पद

Opening । सिद्धचक की सेवा की जे, नवपद महीमा धारी है।

अरीहंत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी हैं।।

Closing : अरज सुना बेहरमान वंदो नितमेव रे

चेतन को तार लेव मत वीसारो टेव रे ।। प्र॰।।

Colophon: इति पद सम्पूर्णम्।

१५५८. पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारावाना है ।

मत मेरी बार अबार करो मोही देहु विमल कल्याना है।। टेक ।।

Closing : हो दीनानाम अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,

उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी हैं, ज्यों आप अवर भवि जीवन की तस्काल विथा निरवारी है,

त्यों वृंदावन कर जोर कहैं प्रभु आज हमारी ही बारी है ।।टेकः।

Colophon: इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१४४६. पद

Opening : मोह नीद मेरी उर भ. है, भोत दीना में जाया । जीन ॥१॥

Closing : अस्पष्ट।

Colophon: नहीं है।

## १५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है।

तिहारे दरस के देखें सकल ही पाप नासत हैं।।।।।

Closing: केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं।

जिनंद वकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colorhon: इति पदसम्पूर्णम् । मितिमाघ वदी १।

१५६१ पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नहीं, ध्यान तो लगता नहीं मन तो सैलानी ।।

खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंढा पानी

चावने को पान वीड़ा और पीकदानी

ऊँचे नीचे महल चाहिये तांबु आसमानी ॥

Closing : तीन खंड के नाथ धनी तुम हरि त्याये जो परनारी।

यह कैसे छुटे लगा कलंक कुल में भारी ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

१५६२ पद-विनती

Cpening । सुमरण ही मैं तारे प्रभु तौ ।। सु॰ ।।

Closing । जिनराज छवि मनमोह लियौ

महाराज सवी मन मोह लियो ।। टेक ।।

Colopt on : अनुपलब्ध ।

१४६३. पद-हजूरी

Opening: धरी धन आज की आई सरे सर काज मी मन के " ।।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah,

Closing : तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मन हाथ मरौ।

द्यानत की अर्ज बीनती जामन मरन हरी।।

Cclophon: पद संपूर्णम्।

१४६४ पद होली

Opening : सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टेक ॥

विसतीर्थं कर बीस कूट में कर्म काटि सिद्ध पाई। तिनके चरण कमल नित वंदौ मन वच तन लवलाई,

पाप सब जाई पलाई ॥ १ ॥

Closing । चेत चेतन वेचेत तुम्हें बार बार समझाई।

कहत शिखर मन वच तन सेती भज ले श्री जिनराई।

याहि ते शिव सुख पाई।

ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

Colophon: इति सम्पूर्णम्।

१४६४. पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

Opening : नमोनेकांतदुर्वामांरष्टतदृशभानुवे।

जिनाय सकलाभीष्टं ध्यायनिःकामधेनवे ।

Glosing : दिव्यं स्तोत्रमिदं महासुखकरं आरोग्यसंपत्करम्,

भूतप्रतिपिशाचराक्षसभयं विध्वसिनिर्णाशनम् । आनरसते ? वाक्षितं सुनिलयं सर्वेषि मृत्यु जयः, दिव्यं व्याप्तकरं कवि च जनकं स्तोत्रं जगन्मगलम् ।

Colophon: इति पद्मावती अष्टोतर्शतनामावली संपूर्णम् ।

१४६६ पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक स्फूटमुक्टताटीदिव्यमाणिक्यमाला,

ज्योतिज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाच्ष्टपादरविदे ।

> व्याचीहरूका सहस्रज्वलदलनशिखा-लोलपाशांकुशासम्, आं कों हीं मंत्ररूपे क्षयितदलमरे रक्ष मां देवि पद्मे ॥१॥

Closing:

अह वानं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां अर्च्च न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी । ३३॥

Colophon:

इति श्री पद्मावती स्तोत्रम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० । त्र० ७२२ ।

जि॰ र० को०, पृ० २३४।

Catg. of \*kt. & Pkt. Ms , P. 655.

१५६७. पद्मावती-स्तोत्र

Opening :

देखें, क० १४६६।

Closing : त्वं न मस्मरणाइ ब्रजीत नितरां "दु: शिक्षदावानलम् ॥

Colophon;

इति श्री पद्मावती स्तोत्र संपूणंम्।

१४६८. पद्मावती-स्तोत्र

Opening:

देखें, ऋ० १५६६।

Closing:

आयुर्व द्विकरी जयामयकरी सर्वार्थ सिद्धिप्रदाः,

सद्य प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती तां स्तुवे ॥३६॥

Colophon:

इति पद्मावतीस्तोत्रं समाप्तम् ।

१५६९. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखें, क॰ १४६६।

Closing:

पठितं भणितं गुणितं जयविजयरम -निवन्धनं परमन्

सर्वव्याधिहरस्तोत्रं त्रिजगतः पद्मावतीस्तोत्रम् ॥३३।

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।

सन्दर्भ के लिए देखें, ऋ० १४६६।

१४७०. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : चंचच्चारूशशांकपूर्णवदना · संयोज्य हस्तद्वयम् ॥१॥

Closing । लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्सुखकरा " पद्मावती पातु व: ।।

Colophon: इति पद्मावतीस्तोत्र संपूर्णम् ।

१५७१ पद्मावती-स्तोत्र

Opening । ॐ जयंतीभद्रमाताङ्की सर्वेपापप्रणाशनी ।

सर्वेदु खक्षयंकारी महापद्मे नमोनम. ॥१॥

Closing । अपुत्रो लभते पुत्रं धनार्थं लभते धनम्।

विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम्।

Colopbon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५७२. पद्मावती -स्तोत्र

Opening । देखें, का १४६६।

Closing : भन्याः कुर्वेन्ति मां पूजां सद्भवत्याभीष्टसिद्धये ।

एवं पूजाविधिलोंके जीयादाऽऽचंद्रतारकम् ॥

Colophon: इति इष्टप्रार्थना पुष्पांजिल इति यद्मावतीपूजा समाप्तम्।

## १५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening

जिनसासनी ह्ंसासनी पदमासनी माता।

भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता।।

Closing:

जिनधर्म्म से डिगने का कही आपरे कारन

ती लीजियौ उबार मुझे भक्ति उदारन । न कर्म के संजोग सो जिस जोनि में जावो । तहां दीजियो सम्यक जो शिवधाम को पावो ।।

Colophon:

इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्रागी, ऋ० ७२९।

## १५७४. पद्मावती सहस्रनाम

Opening

प्रणम्य परमा भक्तया देव्या पादांबु बस्तिद्या ।

नामान्यष्टसहस्राणि वक्षे तद्भक्तिसिद्धये ॥१॥

Closing

भो ? देवि ! भो मात ....संक्ष्यम्यति प्रीतिफलाप्नोति॥१३५॥

Colophon:

इति पद्मावतीस्तोत्रं सहस्रनामस्तवनं सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ७२७ I दि० जि० ग्र० र०, प्र० १४२ I

## १५७५. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening 1

देखें, ऋ० १५७४।

Closing:

भो देवी भीमा

न क्षम्यति प्रीतिर्पलायने किम्।

Colophon:

इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening:

देखें, ऋ० १५७४ ।

965

Closing : देखें, कर १५७४।

Colophon:

नहीं है।

१५७७. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening:

श्रीमत्पार्श्वेशमानम्य पद्मावत्यामहाश्रियाः ।

नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भवत्या मनोमूदा ॥१॥

Closing :

भक्त्या पठत्विदं स्तीत्रं हितोपकृतमुत्तमम्,

आचन्द्रताःकं जीयात्सद्भव्यसुखहेतवे ।।३४।।

Colophon:

इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्तः।

१५७८. पद्मावती-सहस्रमाम

Opening 1

देखें, ऋ० १५७४।

Closing 1

जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीसमन्विता।

ते जनाः सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालयः ॥१४॥

Colophon:

इति पद्मावती उद्यापन पंचांग पूजा समाप्तम् ।

लिखितं पंडित सेवाराम, संवत् १८२७ क्वार कृष्णपक्षे नौमि

शुक्रदिने लक्ष्मगपुरनगरे कौशलदेशे।

१५७६. पद्मावती-विनती

Opening: देखें, ऋ० १५७३।

Closing । देखें, क॰ १४७३।

Colophon: इति श्री पद्मावती जी की वीनती संपूर्णम्।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening: देखें, क० १५७३।

Closing : देखें, ऋ • १५७३।

Colophon: इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

🥕 १५८१. पद्मनंदिपंचविशितिकाः

Opening : हृदयं भुवि : " सुभन्यम् ॥

Closing : ताते धर्मकुं धारगकर पुण्य का संचय करो।

Colophon: नहीं है।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४७ ।

Closing : देखें, ऋ० १५१८।

Colophon: इति पंचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३. पंचनमस्कार

Opening । ॐ नम: सिद्धेभ्यः । अथ कतिपय पंचपरमेष्ठिनां संप्रादाया-

··· लिख्यते पंचनामादि पदानां पंचपरमेष्ठं ··· • ।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon। नहीं हैं।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १४५४. परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखें, कर १५१६।

Closing : देखें, ऋ० १५१ ।

Colophon: इति श्री परमेष्टीस्तोत्रम् ।

### १४८४. परमानन्द-स्तोत्र

Opening । परमानंदसंयुक्तं निर्विकारं निरामयम् ।

ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।

Closing : काष्टमध्ये यथा वित्तः शक्तिक्षेण तिष्ठित ।

अयमात्मा गरीरेषु यो जानाति स पंडित: ।

Colophon । इति श्री परमाणंद स्तोत्र समाप्त: ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, त्र० ७२१।

वि॰ जि॰ ग्र॰ र॰, पृ० १४४।

Catg, of Skt, & Pkt. Ms. P. 665.

### १४८६. परमानंद-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ॰ १५६५।

Closing । देखें, क॰ १४८४।

Colophon: इति श्री परमानंद स्तोत्रं समाप्तम् ।

## १४८७ पाइर्वनाथ-स्तोत्र

Opening । देखें, क॰ १३२२।

Closing । देखें, ऋ० १३२२ ।

Colophon: इति पार्श्वनाथस्तोत्रम्।

## १५८८ पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : अजरअमरपारं वारदुर्वारवारं गलितवहलस्वेदं सर्वतत्वानुवेदम् ।

कमठमदिवदारं भूरीसिद्धान्तसारं विगतवृजनयूथं नौमि य

पार्श्वनाथम् ॥१॥

Closing : तीरथपति पारसनाथितलो भणतां यसवासरवासभलो

मनिमत्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रभुपारस आसफलो ॥१४॥

Colophon: इति पार्श्वनाथ चितामणि स्तोत्रम् ।

१५८६. पार्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है।

१५६०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसपोंस्मृतः,

श्मामो मेघ निर्घरोपि च घटाश्याम चरान्निखलम्।

वर्षामूसलधार-वीरमखिलं कायोत्सर्गे नतां,

धरणेंद्रो पद्मावती युगस्वरं श्री पार्श्वनाथं नम ॥१॥

Closing : इद स्तोत्रं पठेजित्य त्रिसध्य च विशेषतः,

ग्रहे भवति कल्याणं पार्श्वतीर्थं स्तवेन च ॥ ।। ।।

Colophon: इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम्।

१५६१. पाइवनाथ-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १३२२।

Closing : देखें क १३२२।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon । इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६२ पाइवनाथ-सतोत्र

Opening : नरेन्द्रं फगीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीसं सतेन्द्रं सुपूज्यं नमो नायशीशम् ।

मुनीद्रं गणेन्द्रं नमो जोरि हाथं नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-

नाथम् ॥

Closing : गणधर इंद्र न कर सके तुम विनती भगवान।

द्यानत प्रीत निहारिक की जै आप समान ।। १०।।

Colophon : इति पार्श्वनाथंस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६३. पाइर्वनाथ-स्तुति

Opening : जाकी देह मरकतमिन सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-

देव छवि हटकी।

अंब्रज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे सीस पे सरपफन सोभा

है मुकुट की ।।

Closing । तुम सो करुना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखदंदन की,

कर जोरि के लालविनोदी कहे विल जाऊँ में वामा के

नंदन की।।

Colophon: इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

१५६४ पाइर्वनाथ-स्तोत्र

Opening । ॐ हीं मात श्रीं पद्मावते नमः, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वना-

थाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय

Closing । जो निय कंठे धारइ कम्पमिमं कप्परुखु सारित्यं।

अविकप्प सोकामिय कप्पण कप्पट्टुमो सुहई ॥२३॥

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Colophon: इति पाश्वनाथ मंत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५६५. थार्श्वनाथाष्टक

Opening : खीरजलनिधिनीरनिर्मलिमश्रदिमकरवासयम्,

धारात्रयं भृगारभरिकरीजन्ममरणविनासनम्।

पूज्यभवजीवसौक्यदायक दुरितकल्मषषंडनम्,

श्रीपार्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वंदनम्।

Closing । नीरचन्दन ... मूलनायकवंदनम् ।

Colophon । इति पार्श्वनाथाष्टकम् समाप्तम् ।

२५६६. पाइर्वनाथाष्टक

Opening : क्षीर पयोनिधि को जल उज्वल निर्मल सीतल सू भरिडारी।

पाप मिटे जिन मत्रह के सुधि जिनाम्र पदांबुजधारकरी ॥

अति सुंदर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम्।

शत इंद्र समर्चित पादयुगं सुभवांबुधि तारन पापहरम्।।

Closing : दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगना सेवित पादपद्मम् ।

श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो यं ददातु सर्वं समीहितानि ॥१६॥

Colophon: इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५६७. पाइर्वजिन आरती

Opening : स्वामी पार्श्वेकुमार ह्रूँ करुं वीनती आपीए।

तुम त्रिभुवन पतिधार मैं तुम सरन चरन गहिए।।१॥

Closing । श्री जिनधर्म प्रभाव मनवंछित फल पावई ए।

भैरो पर होय सहाय अपनी उंड ? निवाहगर्य ए।।

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah-

Colophon: इति श्री पार्श्वजिन आरती।

१५६८ प्रत्यंगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं यां कल्पयंतिनो अवधं .... ब्रह्मणा अपिनिर्णयः ..... ।

Closing ; यस्य देवे च मंत्रे च गुरौ च त्रिषु निर्मला,

न व्यवछिद्यंते भक्तिस्तस्य सिद्धिरदूरतः ।।

Colophon: इति श्री रूद्रजामले पार्वती स्वरसंवादे छराजोगमूलपाणि तंत्र

विनिगंते प्रत्यंगिरा सिद्धमंत्रस्तोत्रं संपूर्णेन् ।

१५६६. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं ज्याप्य यत् स्थितम् ।

अग्निज्वालासमताद् विन्दुरेखासमन्वितम् ॥२॥

Closing : इति स्तोत्रं महास्तोत्रं स्तुती शामुनमं पदम्,

पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदमन्ययम् ॥६३॥

Colophon: इति ऋषिमंडल स्तोत्रम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, 1, 🛪 ० ७४६।

दि॰ जि॰ ग्र० र०, पृ॰ १४७।

Cagt, of Skt. & Pkt. Ms.P. 629

१६०० ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening ; देखें, क॰ १४६६।

Closing: देखें, क॰ १४६६।

Colophon: इति ऋषिमंडलस्तोत्र सम्पूर्णेम् ।

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hind. Manuscripts (Stotra)

#### १६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opennig : देखें, ऋ० १५६६।

Closing : देखें, क॰ १५६६।

Colophon: इति श्री ऋषिमंडलस्तीत्र समाप्तम्।

१६०२ ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखें क ० १५६६।

Closing : दृष्टेशासर्हतेबिबे भवेत्सप्तमके ध्रुवः।

पदमाप्नोति विश्वस्तं परमानंदसंपदा ॥

Colophon : इति रिषीमंडल स्तोत्र संपूर्णम् ।

श्विष — इसके साथ एक मंत्र भी लिखा है।

१६०३. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : आद्यं पदं शिरोरक्षेत्परं रक्षतु मस्तकम् ।

तृतीयं रक्षेन्नेत्रे चतुर्थं रक्षेच्च नासिकाम् ॥६॥

Closing : यावच्चंद्रार्थ्यमा च ... सद्विमानाकूलागाः ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

१६०४. साधु वंदना

Opening ; श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुषराग ।

कहों मूलगुन साघु के परमिति विशति आठ ॥

Closing : अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदीष ।

सो मुनि कहत बनारसि पार्व अविचल मोक्ष ॥

Colophon: इति साधु वंदना समाप्ता।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १६०५. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening ! देखे, क० १४६५।

956

Closing : वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,

अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ॥११॥

Colophon: इति श्री जिनसेनाचार्यविर्याचतं युगादिवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्रं

समाप्तम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३४।

### १६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखें, क॰ १४६५।

Closing: देखें, कः १६०५।

Colophon: इति श्री जिनसेनाचार्यविरचितं युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम

स्तोत्र समाप्तम् । संवत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृतं

वुजीरामेण आरा मध्ये। श्रीरस्तु।

१६०७. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १४६५।

Closing : देखें, क० १६०४।

Colophon: इति श्री जिनसेनाचार्यविरचितं युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम

स्तोत्र समाप्तम् ।

१६०८. सहस्रनाम-स्तवन

Op:ning ; प्रभो भवांगभोगेषु .... शरण्यं करुणार्णवम् ।

Closing : एतेषामेकमप्पर्हन्नाम्नामुन्चा .... जिनायात: ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manuscripts (Storra)

Colophon: इस्याशाधरसूरिकृतं जिनसहस्रनामस्तवनं समाप्तम् ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयंभूर्वृषभः श्रम्भवः शंभुरात्मभूः ।

स्वयप्रभा प्रभुभौतितविश्वभूतिपुनर्भवः ॥ १॥

Closing : देखें, क॰ १६०५।

Colophon: इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीतं जिनसहस्रनामस्तवनं सम्पूर्णम्।

संवत् १८४२ वर्षे मीति आसाढ़ सुदी ४ मथेनभाउ परताप-

गढ मध्ये लिखतम्।

१६१०. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम देव परनाम करि, गुरुको करो प्रणाम ।

बुद्धि बल वरनी ब्रह्म के सहस अठोतरनाम ।।

Closing : सगुन विभूति वैभवी सेसुखी ससंबुद्ध ।

सकल विश्वकर्मा ••••• विश्वलोचन शुद्ध ॥

Colophon: इति श्री दुरितदलन नाम नवम सतकं संपूर्णम् ।

१६११. सहस्रनाम

Opening : तुम स्वयंभू अनादि सिद्ध अजन्मा सो तिहारे ताई नमस्कार

होहु। त्वम आपक्तं आप करि आप विषे उपजाय प्रगट भये हो। उपजी है आत्मवृत्ति जिनके अर अचित्य है वृत्ति जिनकी।

Closing : भगवान स्वयंभू समस्त तत्यिन के ग्याना जगतपति विहार

करैं ही तिनकूं इन्द्र के मुख तें ए प्रार्थना के वचन नीसरे ते

पुनरुक्त समान होते भये। २६।

Colophon: इति श्री भाषा सहस्रनाम संपूर्णम्।

Shri Devakumai Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

#### १६१२. समन्तमद्र-स्तोत्र

Opening : नताखंडलमौलीनां यत्पादनखमंडलम्।

खडेन्दुशेखरीभूतं नमस्तस्मै स्वयंभुवे ।।

Closing : अर्ह् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वेसाध् निह ।

पंचनमस्कारो भवभवे मम सुह धंतु ।। ।।

Colophon; इति समंतभद्रस्तोत्र संपूर्णम्।

१६१३. सम्मेदशिखर-स्तृति

Opening: मैं आयो सरणते तेरे।

Closing : मो करणी पे नजर न की जे छीमा करो प्रभु मेरै।

दीनवन्धु तुम पतित उदारण सेवक चरण गहो रे। मैं आयो० ।।

Colophon । इति सम्मेदशिखर की पद संपूर्णम् ।

१६१४. सम्मेदाचल स्तोत्र

Opening । सम्मेदशैलं ... भनितभरेण नौमि ॥१॥

Closing : तीर्थानामुत्तमं तीर्थं निन्वाणपदमग्रिमम् ।

स्यानानामुत्तमं स्थानं सम्मेताद्रे समं नहि ॥२३॥

Colophon: इति सन्मेदाचलमहारमस्तोत्र समाष्तम् । श्रीरस्तु संवत् १६२८ ६ व

आषाढ़ द्वितीय वदि अष्टम्यां आदित्यवारे लिखतं लक्ष्मणपुर-

मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये। शुभं भवतु।

१६१४. सन्ध्या

Opening : वामे वहुत कुशान प्रणव गायस्यां रात्रां क्र्यात ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Closing : --- ततः प्रणिपस्य विसर्जयेत्।

Colophon: इति संध्या समाप्ता।

१६१६: शांतिजिन-आरती

Opening : आरती की जै स्वामी शांत जिनंद की।

सब सुखदायक आनंद कंद की ॥ विश्वसैन राजा जी के नंदन । दरसन करत मिटै भवफंदन ॥

Closing । भैरों जे नर आरती गावै। मन वंछित फल सोई पावै।। आरती ।।

Colophon : इति श्री शांति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७ शांति-स्तुति

Opening । जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज संसै तम भाना ।

मोह महागिर वज्र सुपेवा, सुर नर असुर करैं तुम सेवा ।।

C!osing । है जिनवर में जायो ये ही हो हु सकल कल्यान अछेही।

भैं निज आतमीक गुन पावो सिधालै में सिध सुजावें।।

Colophon: इति शाँति जी पूर्ण भई।

१६१८. शांतिनाथाष्टक

Opening । सकत्रगुणिन अनं सर्वेसत्वे समानं मदनमदिविशाशं मुक्तिकान्त िवास ।

मरुजकमलिमित्रं सर्वे विधपिवत्रः अनुपमसुख लक्ष्मी वर्द्धतां

शांतिनाथः ॥१॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : शांत्याष्टकं सुरनरेण सेव्यमानम्,

भन्येषु ये परिपठिन्त समस्तनीयम् । ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,

धर्मार्थकाम-समसा-द्यहीयात्तिमानः ॥

Colophon : इति शांतिनाथाण्टकम्।

१६१६. शारदाष्टक

Opening : ॐकार घुनि सुनि अरथ गनधर विचारै।

रिच आगम उपदिसै भिवक अब संसै निवारी। सो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आंति। छंद भुजंग प्रयातमै अष्ट कही बखानि।।।।।

Closing : जे हित हेतु बनारसी देहि धर्म उपदेश।

ते सब पावहि परम सुख तजि संसार कलेस ॥६॥

Colophon: इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

१६२०. शारदा-स्तुति

Opening : देवी श्रीश्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपंके रहा: सपूजयामी धुना ॥

Ciosing । अरिहंत भासिय "णमहोविहं सिरसा।।

Colophon: इति सारदा-स्तुति अध्टक-जयमाल समाप्तम् ।

१६२१ सरस्वती स्तुति

Opening : जन्ममृत्युजराक्षयकारणं : समयसारमहं परिपूजये ॥१॥

Closing : मनयकीतिताकी संस्तुति पठित ये. सततं मतिमान्नरः ।

विजयकीतिगुरोः कृतमादरात्सुमतिक स्पलता कलमण्युते ।।६।।

Colophon । ६ति सरस्वतिस्तुति ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manscripts
(Stotra)

#### १६२२. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : नमस्ते सारदा देवीं जिनास्यांबुजवासिनीम् ।

त्वामहं प्रार्थये नाथे विद्यादानं प्रदेहि मे ।।१।।

Closing । सरस्वती मया दृष्टे देवी कमललोचना ।

हंस स्कंध समारुढ़ा वीणापुस्तकधारणी ॥१२॥

Clolophon: इति सरस्वति-स्तोत्रम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1, ऋ० ७६८।

#### १६२३. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : जयत्पशेषामरमौलिलालितं सरस्वतित्वत्पदपंकजद्वयम् ।

हविस्थितं यज्जनजाड्यनासनं रजो विमुक्तं श्रयतीत्यपूर्वताम् ॥

Closing : कु ठास्तेषि वृहस्पतिप्रभृतयो यस्मिन् भवति ध्रवम्,

तस्मिन् देवि तव स्तुतिव्यतिकरे मंदानराके वयम् ।

तद्वाक-चापले मे तदा श्रुतवतामस्माकमेव त्वया.

क्षंतव्यं मुखरत्रवकारमती येनाति भक्तिग्रहः ॥३१॥

Colophon: इति श्री संपूर्णम्।

१६२४. शास्त्र-वनती

Opening : वंदों तु शास्त्र जिनेस भाषित महासुर्ग निधान ।

जा सुनत सब अज्ञान भाजत होत ज्ञान महान ।।

Closing : ते शास्त्र जी मेरे मन वसी, मेरी हरी भी भव भीर ।।६।

Colophon: इति शास्त्र की विनती संपूर्णम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १६२५ सिद्धि-भक्ति

Opening । सिद्धानुद्ध् तकम्मेप्रकृति-समुदयान् साधितात्मस्वभावान्

वंदे सिद्धिप्रसिद्धै तदनुषमगुणप्रगटाकृतितुष्टः ।

सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो छादिदोषापहाराद्योग्यो-

पादान् युवत्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥

Closing : " सुगइगमणं समाहिमरणं जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ।।

Colophon; इति सिद्धभक्ति।

982

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ७७०।

जि० र० को०, पृ० ४३०।

#### १६२६ सीता-विनती

Opening । प्राणी डारे अरहंत का गुणगाय अरे प्राणी,

जब लग सांस शरीर में जी ॥१॥

Closing : रामचंद्र मुकति पद्यास्यातौ सीता सुरपित थाय जी

जो नरनारी ए गुण गार्वै तौ देव ब्रह्म पदपाय जी ।

Colophon: इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम्।

१६२७. श्रीपाल-विनती

Opening : देखें, ऋ० ११ ६३।

Closgn । देखें, ऋ० ११ र ।

Colophon: इति श्रीपालविनती संपूर्णम् ।

१६२८. श्रीपाल-विनती

Opening : देखें, ऋ० ११६३।

Closing : देखें क ११६३।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Colophon: इति श्रीपाल राजा की विनती सम्पूर्ण।

१६२६. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।

लोकालोकविलोकन लोलितसल्त्रोकघनानि सदा ।।।।।

Closing : सुगइ गमणं समाहिमरणं जिगगुगसंपत्ति हो उ मज्झं ।।

Colophon: इति श्रुतज्ञान भक्ति।

देखों, जैं० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ७७३।

१६३० स्तोत्र

Opening : प्रभुपव्यराजी ... चंद्रप्रभं देवदेवम् ।।

Closing : सर्वपापविनिमुक्तिः सुभगोलोकविश्रतः।

वांछितं फलमाप्नोति लोकेस्मिन्नात्र संशयः ।।

Colophon: इति श्री शारदायास्तोत्रम्।

१६३१ स्थापना आरती

Opening : सुखयसयलमध्टि जिमजिणवर सुरणरकणपति सेवियं।

तिम चारित्रसयलधम्मदपर सामय पदवरसेवियं ॥१॥

Closing : इह भिवय णसावहो शिवसुह्यावहो चारित्रह्जयमालवरा,

इह भवि उहहरहो परभवसुलहो नासय कम्मठ्ठं नियरा

112211

Colophon: इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१६३२. स्तुति

Opening : हरुं प्रभात सुऐं नित उठत है, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत है।

वारविक भई छार रहेष के चाव दर्शन प्रचिभूत में धरे ।।१।।

Closing : यह भजन भये संपूर्ण सीता के वनवास की ।

हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लाई के ।।

Colophon: इति श्रावण शुनल सं० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा में

लिखे है।

१६३३. सुप्रभात-स्तोत्र

Opening ! श्री नाभिनंदन जिनोजितसंभवेसं देवोभिनंदन जिनो सुमितः

जिनेन्द्र: ।

पध्यप्रभो प्रणतदेव-सुपार्श्वनाथं चंद्रप्रभोस्तु सततं मम सुप्रमातम्

11911

Closing । श्रीपाश्वंनाथपरमार्थविदाम्बरेण " क नैवल्य वस्तुविशदं

जिन सुप्रमातम् ॥४॥

Colophon: इति सुप्रभातस्तोत्रम् ।

१६३४. सूर्यसहस्रनाम

Opening : तुहिण किरण विषं पोसयत्यंसुमाली,

जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यंसुमाली ।

रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृंदम्,

मुखरनरनागे सर्वदा वंदनीये।।

Closing । तेजोनिधिवृह्तेहा वृहत्कीत्तिवृहस्पति ।

अहिमान् श्रीमान श्री सूर्यदेवं नमोस्तुते ॥

Colophon: इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम्।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts (Stotra)

देखें, दि० जि० ग्र० र•, पृ० १५२। जि० र० को, पृ० ४५२।

## १६३५. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : येन स्वयं बोधमयेन लोका आस्वासिता केचन वित्तकार्ये ।

प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धम्मं दशधा करोति पूरुष स्त्रीवाकृतपरस्कृतम्,

सर्वज्ञ ध्वनिसंभवं त्रिकरणं व्यापारशुध्यानिशम् । भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिदापयन्, नित्यं संश्रियमातनौमि शकलः स्वर्गापवर्गस्थितेः ॥

Colophon: इति श्री स्वयंभू समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , ऋ० ७८३।

१६३६. स्वम्भू-स्तोत्र

Opening: देखें, क॰ १६३५।

Closing : देखें, क० १६३४।

Colophon: इति स्वयंभू समाप्त: 1

१६३७. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening: देखें, क॰ १६३४।

Closing । देखें, क० १६३५ ।

Colophon: इति स्वयं भू संस्कृत सम्पूर्णम् ।

### 9६६ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १६३८ स्वयमभू-स्तोत्र

Opening : मानस्तम्भासरांसि पीठिकाग्रे स्वयम्भू: ।।

Closing : ये संस्तुता विविधभक्तिः ... विमलां कमलां जिनेन्द्राः ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

देखें, जै० सि० भ० प्र० I ऋ० ७८४।

#### १६३६. विनती

Opening : करूना ले जिनराज हमारी करूना ले महाराज । टेक ।।

Closing । इति जितमाला अमल रसाला जो भव्य जन कंठ धरइ।

··· ••• ••• सुर शिव सुन्दर वरइ ।।

Colophon: इति पूजन समाप्ताः।

विशेष — ग्रन्थ में पूजा भी संकलित है।

१६४०. विनती

Opening : हो दीन बंधु श्रीपति करूनानिधान जी।

यह मेरी विथा वयों न हरी बार क्या लगी।।।।।।

Closing । करूना निधानवान को अब क्यों न निहारे।

दानी अनंतदान के दाता ही सम्हारो ॥

वृषचंदनंदवृदं को उपसर्ग निवारो।

संसार विषमसार से अवपार उतारो ।।

Colophon: इति विनती सम्पूर्णम्।

१६४१. विनती

Opening : देखें, ऋ० १६४०।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Stotra)

Closing: देखें, ऋ० १६४०।

Colophon: इति श्री विनती सम्पूर्णम्।

१६४२. विनती

Opening । त्रिभुवनपति स्वामी जी करूनानिधानामी जी,

सुनो अंतरजामी मेरी विनती जी ॥१॥

Closing : दुष्टन देहु निकास साधन को रख लीजै।

विनवै भूदरदास ए प्रभु ढील न की जै।।१२।।

Colophon: इति संपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : सारि तारि जिनराज मनवच तन विनती करों।

मैं जग बहु दु:ख पाय मुख ते किम वरनन करों ॥ १॥

Closing : ज्यों जाने स्यों तारि विरद आपनो जान कै।

हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ॥१०॥

Colophon: इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening । भवविघन विनासनी दुरीय मरासनी अवसानै सरण तुंही ।

जिन सासन जान्यो इन्द्रज माध्यो पहिलै पूज तुमरि करौ।।

Closing : सदा जिनविव धरै निज भाल सदा जिन सेणैकतरिर्महात्मा ।

संज्ञानसागर विवद्ध नचन्द्रमूर्ति जीयाज्जिनेंद्रवरक प्रविराजमानः ॥

Colop! on : अनुपलब्ध।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

#### १६४५ विनती

Opening : श्रीपतिजिनवर करूणायतनं दु.खहरण तुम्हांरा वाना है।

मत मेरी बार अवार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि " - प्रभु आज हमारी बारी है।

।। टेक ।।

Colophon: इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४६. विनती

Opening : चलो रे मनवा मांगीतुंगी दर्शनकरस्या प्रभु जी का।

सिद्धक्षेत्र की करो वंदना दुख टिल जावे दुरगित का ।।

विषम घाट पहाड़ विच परवत ऊँचा मांगीतुंगी का।

इन पर मुनिवर मुक्ति गया है कोड निन्यानव गिनती का

॥ चलो रे॥

Closing । उगणीसै की साल जेठ सुदि करी जातरा पंचसका।

हरषकीति कहै सुद्ध भाव सो मेरो चरण जिनेश्वर का । चलो।

119 \$ 11

Colophon : इति मागीतुंगी की विकती संपूर्णम्।

१६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनम् ।

श्री नाभिनंदन जगत वंदन आदिनाथ निरंजनम् ॥

Closing । मैं अधीन परवस पर विके तुम्हारे हाथ।

इतनो करिको जानिय लाख बात की बात ।)

Colophon: इति श्री विनती संपूणम्।

## Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

### १६४८. विनती

Opening ! देखें, कः १६४२।

Closing : भव भव सुख पार्व जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी।

पार उतारी वो जी।।

Colodhon: विनती सम्पूर्णम्।

१६४९ विनती

Opening ; हो दीनबन्ध्र श्रीपती करुना निधान जी

यह मेरी वो या क्यों न हरो .....। टेक ॥

Closing : कहनानिधानवान को 😁 अब पार उतारो ॥ टेक ॥

Colophon: इति विनती संपूर्णम्।

१६५०. विनती

Opening : देखें, ऋ० १६४२।

Closing : देखे, ऋ० १६४२।

Colophon: इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम्।

१६५१ विनती

Opening : देखें, क॰ १६४०।

Closing : तेरे दास निहारै नीरमै की जिए जी नर नारी गाव जी।

भव-भव सुख पावै जी, प्रभु होउ सहाई पार उतारीए जी ।

Colophon; इति विनती संपूर्णम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १६५२. विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening: देखें, ऋ० १६४२।

Closing : नर नारी गावै जी, भव भव सुखपावे जी।

प्रभु होह सहाई जी, पार उतारिए जी ॥ १६ ॥

Colophon: इति दिनती संपूर्णम् ।

१६५३. विषापहार-स्तोत्र

Opaning । स्वात्मिस्थितः सर्वगतः समस्तः व्यापारवेदीविविवृत्तसंगः।

प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ।।

Closing : वितरित विहितार्था - सुखानियशो धनजय च ।।

Colophon: इति विषापहारस्तोत्रं समान्तम् ।

देखें, जै सि० भ० ग्र० I. ऋ० ७८४।

## १६५४. विषापहार्-स्तोत्र

Opening: देखें, ऋ० १६५३।

Closing: देखें, ऋ० १६५३।

C गेophoa : इति श्री धन जयविरिचते श्री वियापहारस्तोत्र समाप्तः ।

१६५५ विषापहार-स्तोत्र

Opening: देखें, ऋ १६५३।

Closing । देखें, क॰ १६५३।

Colophon: इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sans'crit, Prakeit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

## १६५६ विषापहार-स्तोत्र

Opening:

देखें, ऋ० १६५३।

Closing;

नि शेषत्रिदशेंद्रशेखरशिखा रत्नप्रदीवावली,

्रसांद्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।

क्वेय श्री क्वचितस्पृहत्विमदिमखानि यशो धनंजयं च ॥४०

Colophon:

इति श्री धनंजयकृतं विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

Opening:

देखें, ऋ० १६५३।

Closing:

🗝 💳 येन तेन प्रकारेण बिहित। पुनः त्विय विषये

नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ताः च भक्तिः विद्यते ।४०॥

Colophon:

इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका संपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

Opening !

देखें, ऋ० १६५३।

Closing:

देखें, ऋ० १६५३।

Colophon:

इति श्री धनंजयसूरि विरचितं विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५६ विषापहार-स्तोत्र

Opening

देखें, ऋ० १६४३।

Closing:

देखें, ऋ॰ १६५३

Colophon:

इति विषापहारः।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१६६०. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क० १६५३।

Closing ! देखें, क॰ १६५३।

Colophon: इति विषापहार स्तवनं समाप्तम् ।

१६६१. विषापहार-स्तोत्र

Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वंदौ गुनवीस ।

ब्रह्मा विस्तु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहूँ मोहि वागेसुरी ।।

Closing ; भय मंजन रंजन जगत विषापहार अभिराम ।

संसै तजि सुमिरौ सदा सासी जिनेश्वर नाम ।।

Colophon: इति विषापहार संपूर्णम्।

१६६२. विषापहार-स्तोत्र

Opening ; देखें, क॰ १६६१।

Closing : देखें, कं १६६१।

Colophon: इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

१६६३ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, कर १६६१।

Closing : देखें ऋ० १६६१।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति संपूर्णम् ।

१६६४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १६६१।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Stotra)

Closing : देखें, क॰ १६६१।

Colophon: इति श्री विषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम्।

१६६५. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क॰ १६६१।

Closing : देखें, ऋ० १६६१।

Colophon: इति विधापहार स्तोत्र भाषा संपूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनंत गुन, स्वामी परमानंद ॥

सुर नर पूजित तासु पद वंदो ऋषभजिनंद ।।

Closing । भयभंजन गंजन दूरित विषापहार सुभाव।

वैरिन में सुमिरौ सदा श्री जिनवर के नाम।।

Colophon: इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम्।

१६६७. विषापहार-स्तोत्र

Opening । देखें, ऋ॰ १६६६।

Closing । देखें, क॰ १६६६।

Colophon: इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम्।

१६६८. रहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नम: \*\*\* चित्तवृतये ॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing ! इतिप्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयंमर्तुं जिगीयतः ।

पुनरूक्ततरावाच प्रादुरासन जितकमो ॥

Colophon: इति श्री वृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६६. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १६३८।

Closing : अनादि के कर्म कलंक पंक धाई चिहिलायकी

अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon: इति श्री स्वामी समंत भद्र पर्माहताचार्य विरचित वृहत् स्वयंभू

सम्पूर्णम् ।

१६७०. वृहत्स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १६३६।

Closing : देखें, ऋ० १६६६।

Colophon: इति श्री स्वामी समंतभद्र पर्माहंताचार्यं विरचित वृहत्स्वयंभूस्तीत्र

सम्पूर्णम् ।

१६७१. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखें, ऋ० १६३८।

Closing । ये संसुताविविधभक्तिसमंतभद्रै रिद्रा दिभिविनतमौलि मणिप्रभाभि।।

उद्योतितां चियुगलं सकलप्रवोधास्तेनोदशंतु विमलां कमला-

जिनेन्द्राः ॥

Colophon: इति स्वयम्भू बड़ा समतभद्र कृत समाप्ताः ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र॰ I, ऋ० ७८४।

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramáa & Hindi Manuscripts (Pujā-Pātha-Vidhāna)

### १६७२. योग-भक्ति

Opening : थोसामि गणधरराणं अणयाेेेेंगणं गुणेहि तच्चेहि ।

अंजलि मं जलिय हथी अभिवंदंती सविभवेण ॥१॥

Closing : इछामि भंते जोगभत्ति काउ सम्मो " " सम्पत्ति होउ मज्झं।

Colophon: इति योग-मक्ति।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८००।

## १६७३. अभिषेक विधि

Opening : श्रीमन् मंदिरसुन्दरे शुचिजलैढी ते च दर्भाक्षतै:,

पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितंत्वत्पादपृष्पस्रजा ।

इन्द्रोहं निजभूषनार्थममलं यज्ञोपवीतं दध,

मुद्राकंकणसेषरायपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥४॥ पवन " "।

Colophon: अनुपलब्ध।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयंभूदेवजू,

पिता नाभि मरुदेवि करैं सुर सेवजू।

कनक वरन तन तुंग धनुष पन सत तनो,

कृपा सिध्ात आइ तिष्ठ मम दुख हनो।

Closing । इत्थं श्री जिनराजकर्ममहिमास्तीत्रं पठेश: पुमान्,

प्रातः प्रातरदात्तभावसहितः सम्पनतशुध्याश्रितः ।

योगींदैश्चिरकाल तस्सतपसा यहप्राप्यते तस्सुखम्,

## २०६ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

तत्प्राप्नोति परं पदं समितमानानंदमुद्रांकित: ।।

Colophon । इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५. आदिनाथ-पूजा

Opening : सुष मदुषमितिथि मेटि कर्म प्रभु थापिह, नृप पद तिज वैराग्य

भये प्रभु आपही ।

ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थं करा, आह्वाहन विधि करुं

त्रिविध नमके षरा ।।

Closing : यह निज सारं अपारं जो भविजन कंठधरिई।

तेनिजर मरणाविल नासि भवाविल रामचंद्र सिव तियपाई।।

Colophon: इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

१६७६ आदित्यवार-पूजा

Opening । इक्ष्वाकुबंसकुल मंडणअश्वसेनो तद्बल्लम; प्रतिवताजिनवामदेवी ।

तस्या जिनं विमलभूति सुरेन्द्रवंद्यं त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपदं

नमामि ॥१॥

Closing । इति रिव व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही।
मनवचक्रमधाविह सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देतसही।।

Colophon । इति रविव्रत पूजा समान्तम् ।

१६७७. आदित्यवार-उद्यापन

Opening : श्री ार्यनायं प्रणनामि नित्यं, सुरसुरै: पूजितपीठवंद्यम् । रिवव्रतोद्यापनकं प्रवक्ष्ये भव्याय नूनं महतादरेण ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing । रिवन्नतमहापूजाश्लोकपिडीकृताधुना ।

पंचात्माविने मया विष्रं लेषकं चित्ततप्रवेकाः ।।

Colophon: इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरिचते । आदित्यवार-व्रत

उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८. अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : सकल सुहकारणं दुग इवारणं · · · · सुरसुन्दरम् ।

Closing : इह णंदीसर भावऊ- पूज्य सुहावऊ - " चंद्रकीर्ति सुहावऊ ।।

Co'ophon: इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७६. अकृत्रिम चैत्यालय अर्ध्य

Opening । वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।

यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वानि वंदे जिनपुंगवानाम् ।

अवनितलगतानां कृत्तिमाकृत्तिमानां,वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानण

इहमनुजकृतानां देवाराजाचितानां जिनवरिमलयानां भावतोहं

स्मरामि ॥१॥

Closing । दी कुन्देन्दु ··· ~ प्रयछंतुनः ॥ ।। ।।

Colophon: इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ।।

१६८०. अकुत्रिम चैत्यालय पूजा

Opening : देखें, ऋ० १६७६।

Closing : भव णालव चालीसा वंतरदेवाणहुंति वत्तीसा ।

कप्नामरच उवीसा चंदो सूरो णरो तिरिओ ।।

Colophon । इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनविंबेभ्यो नमः।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १६८१. अनन्तजिन-पूजा

Opening । क्षेत्रपालाय यज्ञे हिमन्न \*\*\*\* विद्नविनाशनम् ।।

Closing । भगतन की प्रतिपास कर सबैजीवन कौ काज सरैया।

नरनारी पूजित क्षेत्रपाल सदा मनवांछित आस भरैया ।।

Colophon। इति कवित।

१६८२. अनन्तपूजा-विधि

Opening : एकादशी कैंदिन पूजन कर व्रत थापन करें

तथा आचमन करैं तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करैं।

Closing : जीव समासा । १४।। अजीव । ११४।। गुणस्थान । ११४।। मार्ग । १४।

भूत ।।१४।। रज्जू ।।१४।। पूर्व ।।१४।। प्रकीर्णक ।।१४॥ मल ।।१४।। ग्रंथ ।।१४।। कुलकर ।।१४।। नदी ।।१४।।

प्रकृत । 19४।। रत्न । 19४।। चतुर्थदश पदार्थ चिंतन व्यौरा ।

Colophon: इति अनंतपूजन विधि।

देखें, जै० सि॰ भ॰ ग्र॰ रि, ऋ० ८०४।

१६८३. अनंत पूजा विधि

Opening : भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनंतव्रतद्धे इजे, मायास्नान

करावे, गुम्रवस्त्रतेसावे .... .... अध्टदलकमलकरावे ।

Closing ! ॐ ह्रीं श्रीं यसमस्मैददत्तानंतफलं "" नित्यं वेयाचे मंत्र ।

Colophon: इति अनंतपूजनविधि सम्पूर्णम् ।

विशेष-- ५ १।२३ में यज्ञोपवीत मंत्र हैं, जो इसीका अंग है।

१६८४. अरिहंत-दक्षिणी

Opening । गंगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृगार षरिवहीरा।

जन्म मृत्यु जराकृत दूर "" "" ।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

Closing : अस्पष्ठ—( जीर्ण )

Colophon: अनुपलब्ध।

१६८४. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऐं दक्षिणपत्रे श्री पश्चिमनत्रे हीं उत्तरपत्रे क्ली

ईशानपत्रे कौं अग्नियपत्रे ड्रौं नैऋत्यपत्रे कौं पवनपत्रे

ज्जीं कुबेरपत्रे यं इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम्।

Closing : विद्यादेव्या इमां " कामान् कुरूध्वं परान् ॥ १०॥

Colophon: इति पूर्णार्घं वृहत् द्रव्येन अर्घ ददात्।

इति षोडशविद्यादेवता पूजनविधानम्।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : संबीषडाह्य · · प्रतिमा समस्ताः ॥

Closing : यावंति जिनचैत्यानि विद्यंते भुवनत्रये ।

तावंति सततं भक्त्या त्रिः परीत्य न माम्यहम् ॥१८॥

Colophon । इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० म० र०, पृ० १६०।

जि० र• को०, पृ० २०।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : देखें, क० १६६६।

Closing : देखें, कः १६६६ ।

Colophon । इति बच्टान्हिका पूजा संपूर्णम् ।

२१० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१६८८. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : बाहूय संवीषडिति प्रणीत्वा ताम्यां प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान् ।

वषट् पदेनैव च सन्निधाय नंदीश्वरद्वीपजिनान्समर्च्ये ॥१॥

Closing : आरतिय जीवइ कम्मइ धोवइ संगाववग्गह लहु लहइ ।

जं जंमण भावइ तं सुह पावइ दीणु विकासुण भासुइ।।१८।।

Colophon: इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ताः।

देखें दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।

१६८६ अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मध्ये मंडपमालिख्येद्वरतरे 🕶 😁 तदच्ची ततः ॥१॥

Closing : आयुर्दें ध्र्यकरीवपूर्व 😁 भवतां देषाईतामहता ॥

Colophon: इति श्री नंदिश्वर पंक्तिवंध पूजा समाप्ता ।

१६६०. अष्टान्हिका-पूजा

Opening । तीर्थोदकैः भणिसुवर्णघटोऽपनीतैः, पीठैः पवित्रवपुषैः प्रविकल्पितीर्थैः ।

पाठः पावत्रवपुषः प्रावकाल्पतायः । लक्ष्मीसुता गहनवीजविदर्गगर्भः,

संरथापयामि भुवनाधिपति जिनेन्द्रम् ॥

Closing । नंदीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहै।

द्यानत लीन्हो नाम यहीभक्ति शिव सुख करै ।।१०॥

Colophon: इति नंदीश्वर द्वीप अध्टान्हिका जी की पूजा जययाला भाषा

संस्कृत सहित सम्पूर्णम् ।

१६६१ अढाईपूजा 🐇

Opening : सरव पख मैं बड़ी अठाई परव है,

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

नंदीश्वर सुर जाहि लेयबहु दरब हैं। हमें सकति सो नाहि इहां कर थापना। पूर्ज जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना।।

Closing : नदीश्वरिजनधाम प्रतिमा महिमा को कहै। धानत्त लीनौ नाम यही भगत सब सुख कते ।।१६॥

Colophon: इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम्।
१६६२ बाहुबलि-पूजा

Opening : बाहुमान जो षडबली चक्ररेन की,
लखी अनित संसार सबे विच्छेद की ।
धरो दिगंवर भेष शान्तमुद्रा वरी,
धातअघात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ॥

Closing : पूजन पंचकुमार तणी जे नरकरै, हरमत हरवलचक्रसकपद ते घरे । सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही, धर्म अर्थलहिकाम मोक्ष सुरपायही ॥

Colophon: इति श्री पंचकुमार की पूजन सम्पन्नम्।
विशेष— इसमें बाहुबलि पूजन और पंचकुमार पूजन दोनों हैं।

१६६३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig : देखें, ऋ० १९६२।

Closing : जे नर पढ़े विसाल मनोरत सुद्धसों।

ते पार्वे थिर वास छूटै संसार सो ॥ ऐसो जान महान जैन जिन धर्म कौ ।

देय अक्षे भंडार ध्याऊं अलख ध्यान की ॥२४॥

Colophon: इति श्री वाहुवल मुनी की पूजा सम्पूर्णम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१६६४. भैरो-राग

Opening : भली कीनी भौर भयै।

आए हो भवन हमारी, भली कीनी ये।।

Closing : आस कर उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ।। भली ।।

Colophon : इति भैरौं।

१६९५. बीस-तीर्थं कर-अर्घ्य

Opening : श्री मंदिर आदि जिनंद बीसों सुखकारी।

सुविदेह मौहि अभिनंद पूजत नरनारी ।।

थिति समवसरन के माहि त्रिभुवन जन तारक।

हम पूज अर्ध चढाय आनग्द के कारक ।।

Closing : इह वर्त्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,

तह श्री गुर स्गृन भंडार राजन हे सुमहा।

वसुदेव जथो चितल्याय है त्रिभुवन स्वामी,

हय पूजन पद सिरनाय कीजे मिवगामी ॥१॥

Colophon: इति।

१६६६ बीस विरहमान पूजा

Opening : पूर्वापर विदेहेषु विदामीनजिनेश्वराः।

स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्पन्तहेतवे ॥१॥

Closing : श्रीमंदिरा दिपं देवमजितवीर्यमूत्तमम्।

भूयात् भन्यसतां सौध्यं स्वर्गमुक्तिसुखप्रदम् ॥

Colophon ; इति श्री वीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts (Pūjā-Pātha-Vidhāna)

१६९७. वीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १६६६।

Closing । देखें, क० १६६६।

Colophon: इति श्री बीरहसान पूजा समाप्तम्।

१६९८. बीस-विरहमान-पूजा

Opening । देखें क० १६६।

Closing । ये वीस तीर्व करन की सेव तुम्हारी कीजिये।

कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए।।

Colophon: इति श्री वीस विरहमान पूर्वा समाप्ता।

१६९९. बीस विरहमान-पूजा

Opening । देखें क० १६६६।

Closing : देखें, ऋ० १६६६ 1

Colophon: इति श्री वीस विरहमान पूजा संपूर्णम्।

१७००. बीस-विरहमान पूजा

Opening : देखें, के १६६६ ।

Closing । क्षुमकौं पूजा वंदना करें धन्य नर सीय।

सारदा हिरदें जो घरें सो भी धरमी होय ।।६।।

Colophon । इति श्रीबोसविष्हमान पूजा जी समाध्तम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

## १७०१ बीस-विद्यमान-पूजा

Opening । देखें, ऋ० १६१६ ।

298

Closing । देखें, कः १६व६।

Colophon । इति श्री बीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

१७०२ बीस तीर्थं कर-जकड़ी

Opening । श्री मंदरिजण वंदस्पां जग सारहो, पुंडरीकिजणराय।

जंबूदीप विदेह मैं जगसार हो मेंरि पूरबदिसिभाय ।।

Closing । सातमा जिन समयनामी मोरिव जेसु दिगंबरा ।

भावनां भाव हरष सेती होइ मुक्ति स्वयंवरा ।।

Colophon । इति बीस बिरहमान की जखड़ी सम्पूर्णम् ।

१७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening ! प्रथम श्रीमंदर स्वामी जुगमंधर त्रिभुवण धारिए ॥१॥

Closing । इम बीस जिनवर संघ सुखकर सेव तुम्हारी की जिये।

करि जोर सेवक बीनवें प्रभु मणवंछित फल दीजिये।

Colophon: इति वीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१७०४. बीसतीर्थं कर जयमाला

Opening : देखें, क॰ १७०३।

Closing : प्रभुजी आनंद संदेस घ्यानी शिव सुख पाइये ।

एवीस जिने सूर संग जिनकी सेव नित प्रति कीजिय ।। १।।

करि जोर शंसी करे विनती मुक्तिफल पाइरे।।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Colophon: इति वीस तीर्थे द्धर की जयमाल संपूर्णम्।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening । सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाहीं।

अनंतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाहीं ॥

अह्वानन विधि कहूँ नाय सिध सुध करि मनहीं।

लोक मोह तम हरत दींप अद्भुत सिस जिनहीं।।

Closing : वसुद्रव्य ले सुधभावते जजू तिहारे पाय ।

देह देव शिव मुझ अवै अही चंददुतिराय ॥१४॥

Clolophon: इति श्री चंद्रप्रभु जी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०६. चन्द्रप्रभुप्जा

Opening : वरचरित चार गुन अकलधार भवपार वसे हैं।।

हें त्रिजगतार सहज ही उदार शिवनार रसे हैं।

Closing : चंद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवित होई।

चंद जिनन्द जजन्त निराकुल दंद न कोई ॥

चंद जिनन्द जजन्त चहन्त सबै मिलि जावै।

चंद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष वढ़ावै।।

Colophon: इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्ण।

१७०७. चारित्रपूजा

Opening : देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमहारम्नुः।

सम्यक्-चारित्र-रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपत्लेर्चनम् ॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing । अंधर आलस्यर पंगुल वि जिणवर भासियय ।

तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ।।

Colophon: इति चारित्रपूजा।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६३।

## १७०८. चारित्रपूजा

Opening : देखें, क॰ १७०७।

Closing : विरम-विरम संगान्म च मुंच प्रपंचम !

विमुजिमोहंसुजब विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।

कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्, कृरु कृष्ठ पुरुषार्थं निवृतानंदहेतु। ॥१४॥

Colophon: इति पंडिताचार्यं श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समात्ता ।

## १७०६. चारित्रपूजा

Opening । देखें, कैं० १७०७।

Closing : देखें, क॰ १७०७ ।

Colophon: इति श्री पंडिताबार्य श्री नरेन्द्रसेनबिरिबते। रतनत्रयपूजा जी

समाप्तम् ।

## १७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

Opening : चतुर्विशतियक्षेशान् पुज्यामि सदावरात् ।

बाह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयर्त्त स्थिरा भवेत् ॥१॥

Closing । अ ही चतुनिशतिकुलदेश्याय जिनसासने सन्त्रेनिष्नोपशांत्यर्थं

जिनयत्त्रविधाने पूर्णार्घं ददात्।

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pātha-Vidhana)

Colophon . इति चतुर्विशतियक्षिणी पूजा।

१७११. चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening ; आद्यं तीर्थकृतां सर्वा सर्व्यविध्नप्रशांतये,

प्रणम्य शिरसा जैनं स्थापनां प्रवदाम्यहम् ॥१॥

Closing : दिक्ये नीरैश्चंदनैरक्षतैस्तै ... ... कृतोयं सुभोषै: ।।

Colophon: इति चतुर्विशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विशति-तीर्थं कर-पूजा

Opening । सुभिरमत्रभवेभवतः पदांबुजनताजनताजनताम्पति ।

इति नतोस्मि भवस्यहमन्वहं .... दिने ॥

Closing : ॐ हीं अर्ह श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धरनेन्द्रपद्मावती

सहितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इदं जलंगंधं पुष्पं अक्षतं नैवेद्यं दीपं धुपं फलं अर्घं महाअर्घं

निर्पयामि ।

Colophon; अनुपलब्ध।

१७१३. चतुर्विंशति-तीर्थं कर-पूजा

Opening । वृषम आदि अंतवीर चतुर्विशति जिना,

ध्यान षडग गही हने कर्म वसु दुर्जना। सस्गूण जुत तसुघराव ये नव छारिकैं,

अह्वानन विश्वि करूँ गुणीघ उचारिके ।।१।।

Closing : जो को इह वृत भावी करी, ते कर मुकत पंथह वरो।

भी भूषन पद प्रनमी सही कथा ग्यानसागर मुनी कही।।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon : इति श्री अनंतव्रत कथा समाप्तो । रामचन्द्रेण लिपि कृतं

आरामध्ये लाला विजन लाल जी लिखापितम् । लेखकपाठकयो

शुभं भवतु ।

विरोष — इसमें कई पूजाएँ संप्रहीत हैं।

१७१४. चतुर्विंशतितीर्थं कर-पूजा

Opening : रीषभ अजित संभव .... - पूज्य पूजत सुरराय ।।

Closign । भुक्ति-मुक्ति दातार चौबीसों जिनराजवर ।

तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै।।

Colophon: इत्माशीर्वाद: इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा संपूर्णम्

सं० १९५० ।

देखें, जै॰ सि॰ भ॰ ग्र॰ I, ऋ॰ ८१६।

१७१५. चतुर्विंशति-तीर्थं कर-पूजा

Opening । देखें, कर १७१४।

Closing : देखें, ऋ० १७१४।

Colophon: इति श्री समुच्यय चतुर्विशति पूजा समाप्तम् ।

१७१६. चतुर्विंशति-तीर्थं कर-पूजा

Opening : देशकालादिभावज्ञो निम्मंम: शुद्धिमान्वर ।

साच्दारायादिगुणोपेत: पूजक: सोत्रशस्यते ।।

Closing : यावच्चंद्रदिवाकर -- कल्याणकोटिप्रदम् ॥

Colophon: इति श्री च ुर्विशति तीर्थं क्रूराणां संस्कृत पूजा सम्पूर्णं म्।

देखें, जि॰ र॰ को॰, पृ॰ ११६।

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

## १७१७. चतुर्विंशतिजिन जयमाला

Opening : वंदितानमर " - " पूरा इव ॥१॥

Closing : अनणुगुणनिवद्धा .... लक्ष्मीवधूनाम् ॥

Colophon: इति श्री चतुर्विशति जिन जयमाला समाप्ता । संवत् १६३२ वर्षे

चैत्र श्रदि १९ शनी।

१७१८. चौबीस-तीर्थ कर-पूजा

Orening : देखें, क १७१३।

Closing : ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयंकरि जो भविजनकं वि धरई।

हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचंद्र शिवतिय बरई । २५॥

Colophon: इति श्री चौवीसतीर्थं द्धूर पूजा समाप्तम ।

१७१६. चौबीस-तीर्धंकर-पूजा

Opening : श्री वृषमादि विरांतिमा चौवीसह जिनराय।

आह्वानन ठांडै करू, तिन बेर गुणगाय ॥१॥

Closing : जे जिब कुट्टक पट्ट तिज सुभभावन तै जिन पूज्य रच्चावै।

से जिव ह्वं धरणे द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावे ।।

Colophon: समाप्त: ।

१७२०. चौबीस तीर्थंकर-पूजा

Orening : स्टिबुद्धि दायक " पदकंज।।

Closing : वृषभ आदि चौवीस जिनेश्वर ध्यावही ॥

अधं करै गुणगाय सुर बजावही ।।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Colophon । इति श्री चतुर्विशति तीर्थं ङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ॥

१७२१ चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क० १७२०। Closing : देखें, क० १७२०।

२२०

Colophon: इति श्री चउनीस तीर्थङ्कर जी की पूजा संपूर्णम्। चौधरी

रामचंद्र जी कृत । संवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे

तिथौ पंचम्यां। शुभम्।

१७२२. चौबीसी-पूजा

Opening : देखें, कः १७१४। Cloing । देखें, कः १७१४।

Color hon: इति श्री समुख्य पूजा सम्पूर्णम्।

इहः पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन में बाबू परमेसरी सहाय जी की भार्या वनसी क्रुँअर ने चढ़ाया गांगील गोत्र

मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

१७२३ चतुर्विशति तीर्थंकर पद

Opening : आदिदेव रिषभ जीनराज ..... स्याची सेव ।।

Closing : चौवीसवां श्रीमहावीर - गौतम शीर ॥

Colophon ! इति चतुर्विशति पद संपूर्णम् ।

१७२४. चिन्तामणि-पूजा

Opening : जगद्गुरुं जगद्देवं जगदानंददायकम् ।

जगद्वं चं जगन्नाथं श्री गिर्व संस्त्वे जिनम् ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing । दीर्घायु सुभपुत्रवनिता आरोग्यसत्संपदम्,

प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरताः सद्गेहभूषादयः ।

भूय।सुर्भवतां गजाश्वानगर ग्रामप्रभुत्वादयः,

श्री चितामणिपार्श्वनाथवररतो मांगल्यमोक्षोद्यता ॥

Colophon: इति इति श्री चिंतामणि पूजाव्रत समाप्तम्। लिखितं संभू-

नाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० सूवाके लसगरमध्ये सं० १७६३

मगसिर सुदि १३, शनिवार।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८२७।

जि० र० को ०, पृ० १२३।

## १७२४. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Op.ning : देखें, ऋ० १७२४।

Closing: देखें, ऋ० १७२४।

Colophon : इति श्री चितामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता ।

संवर् १८१६ माघमासे कृष्णपक्षे तिथी पंचम्यां बुधवासरे लिखितं ज्ञानसागर पठनार्थं फकीरचंदजी । पोथी लीखी

सहजादपुर मध्ये लिषीतोयं शुभं भूयात्। श्रीरस्तु।

## १७२६. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening । देखें, क॰ १७२४।

Closing । कल्याणोदयपुष्पवित्त श्रीपार्श्वचितामणि ॥

Colophon: इति श्री चित्तामणि पाश्वंनाथपूजा सम्पूर्णम् ।

१७२७ चिन्तामि ।-पार्श्वनाथ पूजा

Opening : दखे, १७२४।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : इति जिनपतिदिग्यः स्तोत्रलक्षांतरेण ... सर्व्वदाम्वेषनीयम् ॥

Colophon: इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

१७२८. चिन्ताभणि पार्श्वनाथ-पूजा

Cpening : शान्तं विदूध्वरेषं ... संजायते पूजयेद्य: ।।१।।

Clasing : इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला - वंछिय

बहुपषारम् ॥१२॥

Colophon: इति चितामणि पार्श्वनाथपूजा।

२२२

१७२६. चिन्तामणि-जयमाल

Opening । तिहुयण चूडामणे भविय कमल दिनेस ...... जिणेसरहम्।

Closing : अस्याप्रे पुग्याह्वाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिनं सिसिनिर्मलवक-

मित्यादिपठनीयम् ।

Colophon : इति वृहद् चितामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्ता । संवत् १८२५,
पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्यां शुक्रदिने लिखितं पंडित
सेवाराम कौशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये ।
श्रीपार्श्वनाथ के भंडार की पोथी परसौ लिखी निज पठनार्थे

वा भव्य जीवस्य वाचनार्थं विधतां जिनशासनं शुभं भूयात्

लेखकपाठकयो ।

अनित्यं जीवितं लोके अनित्यं धनयौवनम् । अनित्यं पुत्रदाराश्च धर्मकीत्तियसस्थिरः ।।

१७३०. दर्शनपाठ

Opening : दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्, दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षाधनम् ॥

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhana)

Closing : जन्म-जन्मकृतं पायं, जन्म को टिमुपार्जितम् ।

जन्ममृत्युजरांतकां, हन्यते जिन दर्शनात् ॥१२॥

Colophon: इति श्री दर्शनं सम्पूर्णम् ।

१७३१ दर्शनपाठ

Opening : देखें, क० ७१३०।

Closing : देखें, ऋ० १७३०।

Colophon: इति दर्शनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१७३२: दर्शनपाठ

Opening : देखें, ऋ० १७३०।

Closing : देखें, ऋ० १७३०।

Colophon: इति जिनदर्शन सम्पूर्णम्।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign । चहुं गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार।

शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ।।१।।

Closing । सम्यक् दरसन रतन गही ज़ै • च इहां फेरिन आवनां ।।२३।।

Colophon: इति दरसन पूजा।

१७३४. दर्शनपूजा

Opening : परस्याभिमुखीश्रद्वा सुद्धचैतन्यरूपत ।

दर्शनं व्यवहारेण निश्चयेनात्मनः पुनः ॥

२२४ श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing । अतुलसुखनिधानं सर्वेकल्याणवीजम्,

जननजलधिपोतं भव्यसत्वैकपात्रम् ।

दुरिततरुकुठारं पुण्यतीर्यं प्रधानम् ।

पिवत् जित्विपक्षं दर्शनाख्यं सुधांशु ।।

Colophon: दर्शनपूजा।

१७३५. दर्शनपन्जा

Opening । देखें. ऋ० १७३४।

Closing : देखें, क॰ १७३४।

Colophon । इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरिचते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१७३६. दसलाक्षणी-पूजा

Opening : उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।

स्थापयेत्दशधाधर्ममुतमं जिनभाषितम् ॥

Closing : करैं कर्म की निर्जरा भव पींजरा विनास।

अजर अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास ।।

Colophon: इति श्री दसलाक्षनी जी की माषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७३७. दशलाक्षणी-पजा

Opening । देखें, ऋ० १७३६।

Closing : देखें, क १७३६।

Celophon: इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम्।

१७३८. दशलाक्षणी-पूजा

Opening । देखें, के १७३६।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : पाप तिमिरहर धर्मदिवाकर पढ़े गणे जे धर्म धनी ।

ब्रह्म जिणदास भासे दशधमंत्रकाशे मन वांछित फल वुधि धनी।।

Colodhon: इति दशलाक्षणिक लघु अंग पूजा समाप्तम् ।

१७३६ दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १७३६।

Closing : यो धर्मं दशधा करोति पुरुषः स्त्रीवाकृतोपस्कृतम्,

सर्वज्ञं ध्वनिसंभवं त्रिकरणं व्यापार-गुध्यानिशम् । भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजिल दापयन्,

नित्यं संश्रियमातनोति सकलं स्वर्गापवर्गास्थिते।।।

Colophon; इति श्रीदशलाक्षणी पूजा समाप्ता।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० १६५। जि० र० को०, पृ० १६८।

१७४०. दशलाक्षणी-पूजा

Opening । उतमक्षमा मारदव अरजव भाव हैं, सत्य सौच संयमतप त्याग

उपाव हैं।

आर्किचन ब्रह्मचरज धरम दस सार हैं, चहुंगति दुखतें काढ़

मुकति करतार हैं। ।।१।।

Closing : देखें, ऋ० १७३६।

Colophon! इति दशलाक्षणी पूजा।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८३२ I

१७४१. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क॰ १७३६।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : कोहाणलु चुनकउ होऊ गुरुनकउ जाइ रिसिंदिह सिट्टइं !

जगताइ सुहंकरु धम्ममहातरु देइ फलाइ सुमिट्रइ ॥

Colophon: इति दसलाक्षणी पूजा।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, I, ऋ० ८३३। दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५।

१७४२. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क० १७३६।

Clsoing : देखे, ऋ० १७४१।।

Colophon: इति दसलाक्षण पुजा संपूर्णम्।

१७४३. दशलाक्षणी जयमाला

Opening : पयकमलिजणंदिह तिहूवणचंदह पंणविम भावे गणहरहं।

पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहिम जह मुणिवरहं।।

Closing : मूलसंघपदृधरो धम्मचन्दगुरो सांतिदासुब्रह्म भणइ णिस ।

जिणदास हणंदणु दहलक्षणगुणु सूरदास तुम करहु थिस ।।

Colophon : इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्तः ।

१७४४. दशलाक्षणी वृतोद्यापन

Opening : विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्धं,

अभयवनसमुद्रं चिन्मयूख- प्रचडम् ।

इ.त दस विधिसारं संजजे श्रीविपारं,

प्रथम जिन विदक्ष्यं शुद्धताड्यं जिनेसम् ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscrripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing : श्री कैलासनिवासदेवनृषमं \*\*\*\*\*\* जिन देव सा निधिकरि कल्यानकारी सदा ॥ । ॥ ।। ।।

Colophon: इति श्री दसलाक्षणी त्रतोद्यापन समाप्ता। श्रीरस्तु कल्याण-

मस्तु। शुभं अस्तु।

विशेष इसके नीचे पूजा सामग्री का विवरण दिया हुआ है।

देखें, दि० जि० ग्र० र•, पृ० १६६।

जि० र० को, पृ० १६८।

रा० सू ॥, पृ० ६० ।

रा० सू॰ ॥।, पृ० ५४।

रा॰ सू॰। ८, ६६५।

जै० ग्र० प्र० सं०।, पृ० ८७।

## १७४५ दिग्पालार्चन

Opening : दिगीसासं · · प्रत्येकमादरात् ॥१॥

Closing : ॐ दसदिशा दिग्पालाय पूर्णार्घ ।

Colophon : इति दिग्पालार्चन विधाणं समाप्तम् ।

१७४६. देवपूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

····· णमो लोए सव्वसाहूणं।

Closing : इय जाणिय णामिंह दुरिय विरामिंह पणहविणामिय सुराविलिहि ।

जे अणिहऊ णाइहि समयकुवाःहि पणविवि अरहंतावलिहि।

Colophon । इति देवपूजाष्टकम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६७।

### २२८ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१७४७. देवपूजा

Opening : देखें, ऋ० ९७४६।

Closing; ""

यतीद्रसामान्यतपोधनाणां भगवान जितेन्द्र ।।

Colophon: इति देवपु जा सम्पूर्णम् ।

१७४८. देवपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७४६ ।

C.osing : की नै सकत समान विन सकते सरधा धरो।

द्यानत सरधावान अजर अमर सुख भोगवै।

Colophon: इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८३७।

१७४६. देवपूजा

Opening : जय ।३। जयवंत प्रवर्त्ती ।।३।। नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३।

णमो अरहंताणं । अरहंतिन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो सिद्धाणं । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआणं।

आचार्याण के अथि नमस्कार होऊ। \* - \* ।

 $\mathbf{C}$  osing । मेरे औसै प्रभात समय मध्यान्ह समय संध्या समये विषे पूजा करए।

सकल कम्में का छय निमित्त भावपूजा बंदना स्तुत अहँत भक्ति प्रतमा भक्ति पंचमहागुर भक्ति करिये कायोत्सर्ग किनीये उने

पाप है तिनक त्यागिए।

Co'ophon: इति श्री उत्पूरा अर्थ संयुक्त सम्पूर्णम्।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

१७५०. देवपूजा

Opening : सीगन्ध्यसंगतमधुव्रतझं कृतेन,

सौवर्णमानिमव गंधमनिद्यमादी ।

आरोपयामि विवुधेश्रवृदवंद्यम्,

पादारविंदमभिवंद्यजिनोत्तमानाम् ॥

Closing : ये पूजेजिनणास्त्रयमिना भक्तमा सदा कुर्वते,

त्रिसंध्याणविचित्रकाव्यरचनामुख्वारयतो नराः।

पुण्याद्यामुनिराजिकितिसहिता भूतास्तपो भूषगा-,

स्तेभव्याः सकलविवोधरूरिरं सिद्धिं लभंते पराः ॥

Colophon: इति श्री देवपुजा संपूर्णम्।

१७५१. देवपूजा

Opening : देखें, कः १७४६।

Closing : अपराजित मत्रोऽयं सर्वविष्न-विनाशन: ।

मंगलेषु च सर्वेषु प्रथम मंगलं मतः ॥

Colophon: कुछ नहीं है।

१७५२ देवपूजा

Opening । देखें, क० १७४६।

Closing : देखें, क ० १७५०।

Colophon: इति श्री देवतापूजा सम्पूर्णम्।

१७५३. देवपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७४६।

२३० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing ! गुरोभक्तिः गुरोभक्तिः गुरोभक्तिः सदास्तु मे ।

चारित्रमेव संसारवारणं मोक्षकारणम् ॥२५॥

Colophon: नहीं है।

१७५४. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७४६।

Closing : ॐ हीं नैम्मेलयमतिज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घम् ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

विशेष — इसमें चन्द्रप्रभु पूजा मितज्ञान पूजा के अधूरे पत्र भी है।

१७४४. देवपूजा

Opening । देखें, का १७४६।

Closing : मिथ्यात तपन निवारण (न) चंद समान हो।

अज्ञान तिमिर कारण भान हो।

काल कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो।

द्यानत सम्यक् रतन त्रैगुन ईश हो ।। १४।।

Colophon: इति वियालीस बोल आरती समाप्तम्।

१७५६ देवपूजा

Opening । देखें, क १७४६।

Closing : अणादि काल के जे कुवादि तिन के मिथ्यात कूं दूरि करने वाले

चउबीस तीर्थं कर हैं तिनहिं पूज ह।

Colophon। इति श्री चतुर्विशति तीर्थं कर जयमाल। ॐ हीं श्री ऋष-

भादि वर्द्ध माने नमः।

## Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhrasa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

## १५७. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७४६।

Closing । देखें, क० १७४६।

Colophon: अनुपलब्ध।

१७५८ देवपूजा

Opening : ॐ हीं क्ष्त्रीं स्नानस्थानभू; शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थानं शुचि-

जलेन सिचेत्।

Closing : श्रीमिज्जिनेन्द्रमिमवंद्य विशुद्धहस्तं ईर्यापथस्य परिशुद्धविधि

विधाय ।

स वज्रपंजरगताकृतसिद्धभक्तिः .... 😁 ... 🖚 🚻

Colophon: अनुपलब्ध।

१७४६ देवपूजा

Opening: देखें, ऋ० १७४६।

Closing : देखें, ऋ० १७४६।

Colophon: इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening । सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वेमिष्टार्थदायिने ।

सर्चलिब्धविधानाय श्री गौतमस्वामिने ॥

Closing । देखें, कः १७५०।

Colophon: इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

### २३२ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १७६१. देवपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७४६।

Closing : देखें, कर १७४६।

Colophon : इति श्री जयमाल संपूर्णम् ।

१७६२. देवपूजा

Opening : देखें, क॰ १६४६।

Closing : देखें, ऋ १ १ ४६।

Colophon: इति श्री जयमाल संपूर्णम् ।

१७६३. देवपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७४६।

Closing । देखें, कर १७४६।

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६४. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७४६ :

Closing : देखें, कर १७५०।

Colophon: इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६५. देवपूजा

Opening ; देखें, कर १७४६।

Catalogue of Sanskrit, Prakeit, Apabheamía & Hindi Manuscripts
( Fūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing ; जे तपसूरा संजमधीरा सिद्धवधू अणुरईया ।

रयणत्तय रंजिय कम्मह गंजिय ते रिसिवर मइ झाईया ।।

Colophon: इति देवपूजा।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८४१। दि० जि० ग्र० र०, प्र० १६९।

१७६६ देवजयमाला

Opening : वत्तागुठ्ठाणे .... परमपउ ॥

Closing : देखें, ऋ० १७४६।

Colophon: इति चतुर्विंशति तीर्थङ्कर जयमाल संपूर्णम् ।

१७६७. देवप्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रतिमाबीजमंत्र प्रसिद्ध नंदुमिसुरामकृतहरिने रूप ..... ।

Closing । ••• ••• सुरमंत्रजिनप्रभा।

Colophon ; इति सुरमंत्र समाप्त: ।

१७६८. धरणेन्द्रपूजा

Opening : पातालवासं वरनीलवर्णं फणासहस्रान्वितनागराजम् ।

तमाह्वये सत्कमठासनं च संस्थापये भूमिधरं सुभक्त्या ॥

विशुष— गंथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस में सटे हुए हैं। अलग

करने पर फट जाते हैं, जिससे Closing और Colophon

का पता नहीं चलता।

१७६६. घरणेन्द्रपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७७०।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing:

भक्तिजिनंश्वरे यस्य

··· तस्यैतत्सकलं भवेत् ।।३४ II

Colophon:

इति नागेन्द्र स्तीत्रम् ।

१७७०. धरणेन्द्रपूजा

Opening:

धरणयक्षविलक्षणसंहसै क्षिति बरोन्नतकच्छप्रवाहनैः।

त्रिदशवंदितपार्श्वजिनकमं प्रणितमौलिमणीसदलं श्रियै; ॥१॥

Closing:

श्रीपार्श्वनाथपदपंकजसेव्यमानं पद्मावती मजतिवाङ्मनवामभागम् :

घोपरोपसर्गहननं निजमाणदक्षं तं देवशुद्धिमतिगं प्रभजामि नित्य म्

Colophon:

इति पृष्पांजली धरणैन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१. गर्भ कल्याणक

Opening

पणविवि पंच परमगुरु गुरु जिनशासनं,

सकल सिद्ध दातार सुविघन विनासनं।

सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनं ।।

मंगल करि चौसंघह पाप प्रनासनं।

Closing

भासियो सुफल सुणि चित्त दंपति परम आनंदित भऐ,

छह मास परि नवमास वीते रयग दिन सुखसों गऐ।

गर्भावतार महंत महिमा सुनत सब सुख पाईये.

भणि रूमचंद सुदेव जिनवर जगत मंगल गाईये ।।८।।

Colophon:

इति श्री गर्मकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२. गिरनारपूजा

Opening:

श्री गिरनार सिषर परवत पर दक्षिणा दिस में सोहै

नेमनाथ जिन मुक्तधाम सब जन मोहै

कोड बहत्तर सात सतक मुनि शिव पद पायो

ता थल पूजन काज भन्य सब अति हरषायो

तिस तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर

पूजा त्रिजोग मन वच तन सुश्रावक जन गुण जानकर ।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāţha-Vidhāna)

Closing : तिहुं जग भीतर श्री जिन मंदिर बने अकीर्तम महासुखदाय,

नर सुर खग कर वंदनीक जे तिनकौ भवि जन पाठ कराय।

धन धन्यादिक संपति तिनकै पुत्र पौत्र सुसोहत भलाय चक्री सुरषग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुषयाय ।

Colophon: इति श्री तीन लोक संबंधी पूजा संपूर्णम्।

विशेष—इसमें सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लोक संबंधी पूजा भी संक-लित हैं।

१७७३. गिरनारपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७७२।

Closing : जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।

रामरतन सुंपुत्र भयो घर्मामृत पानी ।।

Colophon: इति श्री गिरनार जी की पूजा संपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी

३ । मंदवासरे । लीखितं जुनागढ़ श्री मंदिर जी काषेया

आनंद जी।

१७७४. गिरनारपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७७२।

Closing : जे नर वंदत भाव धर सिद्धक्षेत्र गिरनार।

पुत्र पौत्र संपति लहि पूरन पुण्य भंडार।।

Colophon: इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ़ सुदी

७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विषै ५३३ ॥ मुनि के साथ

श्री नेमनाथ जो उर्जयंत टोक सें जा जूंनागढ़ गिरनार परवत

पर है, सोरठ देश गुजरात में मुक्त पधारे। नेमपुराण से

देखना ।

विशेष —इसमें नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये हैं।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रम्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १७७४. गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण · · · पचमहाव्वयहं ॥१॥

Closing : ॐ हीं पुलाकवकुसकुमीलिनिर्ग्रं थस्नातके ध्यो नमः।

Colophon: इति गुरुजयमाल संपूर्णम्।

२३६

१७७६. गुरुपूजा

Opening : संपूजयामि पूजस्य पादपद्मं युगं गुरौ ।

तपः प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महारमने ॥

Closing : तेजिस्तिंत्रजमस्ति अंदमचमत्कारैकसंवारिकम्

कित्तिसारदशुभ्रमानधवलां निरसेषदिग्व्यापिनी ।

आयुदीर्घतर निरामध्वपुः लीलाघमणीकृतः,

श्रीद: श्रीनिकरं करोतु भवतामाचार्यभिवतः सताम् ।।१०।।

Colophon: इति श्री गुरुपूजा संपूर्णम्।

वेखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७२।

१७७७. गुरुपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७७६।

Closing : पार्वे अमरपद होइ चक्री कामदेव समानिया,

इक्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चकी मन प्रतीत जू आनिया।।

जै सकल पद सीव सौख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,

कहत लालविनोदी मन वच मनहि वंछित पाईया ।।

Colophon । इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७७८. गुरुपूजा

Opening : देखें, ऋ० १७७६।

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramía & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pāţha-Vidhāna )

Closing : देखें, कर १७६४।

Colophon । इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७६. गुरुपूजी

Opening । देखें ऋ० १७७६।

Closing : देखें, क॰ १७६४।

Colophon: संपूर्णम्।

१७८०. गुरुपूजा

Opening : देखें, क० १७७६।

Closing : देखें, क० १७६५।

Colophon: इति गुरुपूजा।

१७८१ गुरुपूजा

Opening । दिव्यमंडलके रम्यः चतुषुनोपसोभीतेः।

स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ।।१।।

Closing । निसंगिवरागाय ... प्रणमाम्यहम् ॥

Colophon: गुरुपूजा संपूर्णम्।

१७८२ गुरुपूजा

Opening : काव्यं सकलगुण - " सूरो स्थापयाम्यत्रपीठे ॥१॥

Closing । भाव सुद्ध पूरा करी सेवी गुरुचित्त लाय।

तीन काल आरित करौं रिद्धि सिद्धि सुखयाय ।।१७।।

Colophon: इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत्।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

### १७८३. गुरुपूजा

Opening : सिद्धान्तसूत्रसंकीर्णश्रुतस्कंघवने यने ।

२३८

आचार्यतां प्रपन्नस्य पादावभ्यचँयेन्मुनेः ॥

Closing : मुनिवर स्वामीनमू सिरनामी दोए करजोडी विनय करूं।

दीक्षा अति निर्मली द्योमुझउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरी।

Colophon: इति गृरुपूजाजयमाल सम्पूर्णम् ।

### १७८४. गुरुपूजा

Opening : देखें, कर १७०३।

Closing । कही कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर।

हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपर ॥१९॥

Colophon । इति श्री गुरुमहाराज ही भाषा आरती सम्पूर्नम् ।

### १७८५. होमविधि

Opening : तद्यथा ॐ हीं क्ष्वीं भूस्वाहा । पुःपांजली. ।

ॐ हीं अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।। क्षेत्रपाल विधिः ।।

Closing । इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्थां जिनं प्रतिमां सिद्धायतन यंत्रानि

पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यंतरे संस्थाप्य पुन पुनः नमस्कारं कृत्वा

नित्यत्रतं गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।

Colophon : इति होम संपूर्णम् ।

१७८६. जलयात्रा विधि

Opening : प्रथमतक्षागे गत्वा जलसमीपे 🕶 ... पाछै पूजा कीजइ ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : पश्चात स्त्रीनि की षोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाडे छपैया

पढत ईसान बेदी मध्य कलश थापी जइ तिसकी विधि आगै

विशेष है।

Colophon: इति जलयात्रा विधि संदूर्णम्। सवोत्तर जलइ सविधि पूर्व

लाइयै । श्रीरस्त् । श्रुभमस्तु ।

१७८७. जिनयज्ञविधान

Opening : नमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवझायाणं

णमो लोए सव्वसाहणं ... ...।

Closing : ॐ हीं सुद्धदृष्ट्ये नमः । ॐ हीं सुधावलोकिने नम: ।

Colophon: अनुपलब्ध।

१७८८. जिनवर विनती

Orening । श्रीपति जिनवर कहनायतन दुखहरन तुमारा " - "।

Closing । हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है।

उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोहि विथा विस्तारी है।।

Colophon: विनती सम्पूर्णम् ।

१७८९. जिनगुग-सम्पत्तिपूजा

Opening : वंदे श्रीवृषभं देवं वृषांकं वृषदायकम्।

षट्धर्मप्रणेतारं कर्मभूभृतवज्ज्ञकम् ॥

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवंशो यश्चिकणायस्य स्तुर्ति चकार ।

दानेश्रत्वं जिनपुंगवाय पुन स्तुवः श्रेयगणाजिनानाम् ॥

Colophon: इति जिन गुण-संपति-पूजा सम्पूर्णम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrab.

देखें, जि० र० को०, पृ० १३५ । रा० सू० ।।।, पृ० २०५. ३०५ ।

## १७६०. जिनवाणी-पूजा

Opening । प्रकटित परमार्थे सूत्रसिद्धान्तसारे,

जिनपतिसमयेऽस्मिन सारदासंदधानम् ।

जगति समयसारः कीर्तितः श्रीमुनिद्रौः,

स वसतु मम चित्ते सश्रुतज्ञानरूपः।

जगति समयसारं ते परं ज्योतिरूपैः,

सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूपं स्वरूपम् । १॥

Closing : अग्यानितिमिरहर ज्ञानिदवाकर पढ़े गुनै जो ग्यानधनी ।

ब्रह्म जिनदास भासै विवुध प्रकासै मनवांछित फल वुध धनी ।।

Clolophon: इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा संस्कृत

सम्पूर्णम् ।

१७६१. जंब्स्वामी-पूजा

Opening : चौबीसों जिनपाय पंच परमगुरु वंदिके ।

पूज रचों सुखदाय विघ्न हरो मंगल करो।।

Closing : ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जंबूस्वामिन् सकलगुण-

विराजमान् जलं चंदनं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घं

महार्घं निर्वपामिति स्वाहा ।

Colophon: इति श्री इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६२. जम्बुस्वामी-पूजा

Opening : देखें, क १७६१।

Closing : देखें, क १७६१।

Catulogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Pūjā-Pātha-Vidhana)

Colophon: इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६३. जयमालिकापूजा

Opening : उच्चलिया सुरसल्लिया पुणभक्तिय कुसुमजलि

अमरिदंहं सुरिदहं णिहय दुरिय ज्वाला

पढ़मंबिय सुरायणं भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,

Closing : तिण्यरहं सुहसुयरहं पय पंकयाणि खत्तिए।

िनरूभतिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपवित्तिए ।।

Colophon । इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७६४. ज्ञानपूजा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाघीशमधीशं सर्वसंपदाम् ।

सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजां वक्षे विधानतः ॥१॥

Closing : दुरिततिमिरहंसं मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,

व्यसनघनसमीरं विश्वतत्वप्रदीपम्।

मदनभुजगमंत्रं चित्तमात्तंगसिंहम्,

विषयसफरजालं ज्ञानमाराधयत्वम् ।।
Colophon: इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७६५. ज्ञानपूजा

Opening । देखें, क० १७६४।

Closing । देखें, क० १७६४।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरिचता सम्यकान पूजा समाप्ता ।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

#### Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

### १७६६. ज्ञानपूजा

Opening ! देखे, क॰ १७६४।

Closing : देखें, ऋ० १७६४।

Colophon: इति ज्ञानपूजा।

२४३

१७६७. ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig : जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।

जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मंगल दाई ।। जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे । जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ।।

Closing : पूजन संख्या छन्द की ..... - ।

Colophon: इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी

महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम्।

१७६८. ज्वालामालिनीपूजा

Opening । श्रीग्ली प्रमेशजिनपंकजसेविकन्या,

श्यःमाख्यां यक्षिसुवंद्योपादपभ्रयुग्मम् ।

चकाधिपादिमनुजैः खलवंद्यमाना,

माह्या नानादिविधिनात्रसमर्थयेऽहम् ॥

Closing । वरमहिषवाहिनि " शतचुड्गे ।।जय०।४५ ।

Colophon। इति आरती सम्पूर्णम्।

१७६६ ज्वालामालिनी-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १७६८।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāth a-Vidhāna )

Closing : राकेंदुविम्बरूचिशोमितदीव्यगात्रे राजीवपत्रनिभपादसुरांग ।।।

Colophon: अनुपलब्ध।

१८००. ज्येष्ठजिनवर-पूजा

Opening : नाभिरायकुलमंडन "" " क्षीर समुद्र भणी ॥१॥

Closing । यावंति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये,

तावंति सततं भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ॥३०॥

Colophon: इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा।

१८०१. कलशाभिषेक

Opening : सौगंध्यसंगतमधुत्रतझक्रतेन \*\*\*\*\*\* जिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं पुन्यकरोत्पादकम् ।

जिन गंधोदकं वंदे ह्यष्टकर्म निवारणम्।।

Colophon : इति लघु जिन कलशाभिषेक संपूर्णम् ।

१८०२. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चंद्रावदातैः सरलैसुगंधैरिनद्मपात्रैर्वरसालिपुंजै ॥ दुष्टो० ॥

Closing । वरखिगन्दु ः उवसग्गुतिहं।

Colophon । इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३. कलिकुण्ड-पूजा

Opening । ह्रंूकारं ब्रह्मरुद्रं सुरपरिकलितं .... .... विनाशं प्रयुक्तम् ॥

Closing । देखें, ऋ० १८०२।

२४४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति श्री कलिकुंड पूजा जी समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० द६१।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७५।

जि० र० को ०, पृ० ७४।

१८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Cpening : देखें, ऋ १८०३।

Closing । देखें, कु १८०२।

Colophon: इति कलिकुण्ड पूजा।

१८०५. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening । देखें, क॰ १८०३।

Closing : सर्वत्सर्पेशदर्गो राजहंसीवनाह ॥ १३॥

Colophon: इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल सभाष्त ।

१८०६. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रंकारं ब्रह्मरुद्रं · विद्याविनाशनम्।

Closing : एवं विध्नविनामनं भयहरं सब्वं भयान्विन्म् ।

C lophon: इति श्री कलिकुण्ड पुजा समाप्ता। श्री रस्तु।

१८०७. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पजा

Opening : देखें, क १८०६।

Closing : देखें, कः १८०३।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon: इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम्।

१८०८. कंजिका-व्रतोद्यापन

Openign । चिद्रूपं चिदानन्दं अपरं निर्जरं परम् । 
शान्तं कम्मातिगं पूतं पूराणं पूरुषोत्तमम् ।।

Closing । अतुलगुणसमग्रं स्वर्गमोक्षापवर्गम्,
त्रिभुवनपरिरिद्धिः प्राप्तसर्वे प्रसिद्धिः ।
नमति सुजसकीर्ति कोमलाकीर्त्य-कीर्तिः,
रतनविव्धसांतै पातु व मुक्तिकांतै ॥७७॥

Colophon: इति कंजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभं अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है।

१८०६. कर्मदहनपूजा

Opening: लोक सिखर तनछाड़ि असूरत ह्वे रहे,
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे।
लोकालोक सो काल तीन सबविधि धिनी,
जानि सो सिद्ध देव जजीं हु युति बनी।।

Closing : पुत्र प्राप्त करि भगड़ि सुतरी रौगाग्निधाराधरी, पापातापहरि प्रदोध सुचरी वत्रीन्द्रभूसोदरी। आनन्दाद्भुत धन्य धाम नगरी मायामय मार्सी, चर्च्यासाभवतो शिवस्य भवतु श्रेयस्करी शकरी।।

Colophon: इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १८१०. क्षमावणी पूजा

Opening । देवश्रुतगुरुन्नत्वा स्नापियत्वा महोस्सवे ।

ततश्चाष्टविधापूजा कुर्याद्वतविधायकः ॥

Closign । यश्चैतन्यमचित्यमद्भुतगुणाः श्रद्धानमंतः स्फुरन्,

ज्ञानं पंचसमस्ततत्वविषयं स्वात्मावबोधद्युति:।

तच्चारित्रमनंतरगतं व्यापारपारंगता ,

वंदे तत्रितयं त्रिधापतिणतं यसिश्चयासिश्चितम् ॥१२॥

Colophon: इति क्षमावणी अर्घ सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०' पृ० १७७।

### १८११. क्षेत्रपाल पूजा-

Opening : युगादिदेवं प्रयजे स्वहव्यै: इक्ष्त्राकुवंशोधरधर्मवेदी ।

चामीकराभाद्युतिकोटिभानुः प्रहाकृता घातकनुर्यभागम् ॥१॥

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्टासंघे यतिपति तिलके " क्षेत्रपानां शिवाय

।।२७॥

Colophon: इति श्री विण्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा संपूर्णम् । कार्तिक-

मासे जुक्लपक्षे तिथी पौर्णमास्यां भृगुवासरे । श्रीसवत्-१९५३

## १८१२ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening । क्षेत्रपालाय यज्ञे स्मिन्नत्रक्षेत्राधिरक्षणे ।

बॉल ददामि दिश्याने वेद्यां विघ्नविनाशने ॥१॥

Closing : बाठ्ठो छंद गानुं में तो रंज्यो क्षेत्र की।

मुनिसुभचंद्र गावी छंद भैरू लाल की।।

जैन को उद्योत भेंह समिकत धारी ॥१२॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripțs ( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon: अनुपलब्ध है।

१८१३. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, ऋ॰ १८१२।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् " सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

Colophon: इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम्।

१८१४. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : वंदेहं सन्मित देवं सन्मित मितिदायकम् ।

क्षेत्रपानां विधि वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ॥१॥

Closing : सर्वविध्नहरायक्षाः दक्षालक्षगुणान्विताः ।

एते पिडीकृता यक्षाः रूतरं प्रमिता मना । । २६॥

Colophon: इति क्षेत्रपालानां नामार्कित स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखें, जि⇒र० को०, पृ० ६= ।

१८१५. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening । देखें क० १८१४।

Closing : शांतिघारात्रयं ... ... क्षेत्रपानां शिवाय ॥२७॥

Colophon: इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening ! देखें, ऋ० १=१२।

२४८

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrab

Closing : अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही।

करि पूजा जिनंद ही, कमलानंद ही विजैपाल बहु सिरनवै।।

Celophon: इति श्री क्षेत्रपाल पूजा संपूर्णम्।

१८१७ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening । देखें, क १८१२।

Closing : इति प्रवृद्धातत्त्वस्य स्वयं - प्रादुरासनजितकमी ।

Colophon: इति श्री वृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

विशेष — इसमें क्षेत्रपालपूजा और वृहत्सहस्रनाम दोनों है। बीच के

बहुत से पत्र नहीं है।

१८१८ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening ; प्रणम्य श्री जिनेशानां वर्द्ध मानं जिनेश्वरम् ।

पूजा श्रीक्षेत्रपालानां वक्ष्ये विघ्नविहानये ॥१॥

Closing : लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रुहरि,

शाकिन्यादिहरी प्रशमंसुचरी राज्यादिनिवर्द्धनी।

विद्यानंदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिणांशनी, पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सपत्करी चित्करी ।।

Colodhon: इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१ = १६. लब्धिविधान-पूजा

Opening । श्रीवर्द्धं सानजिनचंद्र \*\*\* सततं शुनवत्या ।।१॥

Closing : जिणगुणरयणयरू हियै देवायरू केवलणाणलहैवि चिरू ।

हुय सिद्ध निरंजण भवभयवंचण अगिणिय रिसिपुंगमुजिचिरू । ६।

Colophon : इति लब्धविधान पूजा।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

१८२०. लघुकर्मदहन-पूजा

Opening : तीर्थं कर जिनकी नमत सुर नर संत ।

जे वंदी वरती सवा येसे सिद्ध महंत !।

Closing : मैं मत हीन विवेक नहीं अर प्रसाद में लीन।

थिरता लघ् जग जानककर लघु मत स्व नवीन ।।

Colophon; इति लघु कर्महन विधान संपूर्णम्। मिति अधन सुदी २

सवद् उनैसे अठाईस दसकत परमानंद के मुकाम जवलपुर।

ठीकाना हनुमान तलाव श्री मंदर वड़े दिवाले के पक्षवाड़े मुना-

लाल ।

विशेष— इसके बाद कुछ भजन भी हैं।

१८२१. लघुपंचकल्याणक विधान

Opening । वंदी श्री अरहंत पद मन वच तन चितधार।

मंगलमय जग मै प्रगट पार उतारनहार।।

Closing : तुम दयाल जगतपति सिवदरसी भगवान ।

सिव सेवा फल दीजिये तारापित नित जान ।।

संवत् येक पदार्थ ससंगत मिलाय कर ठीक।

पूरन पाठ भयौ सो तब भद्र कृष्न नवमीस ।।

Colophon: इति लवु पंचकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

Opening : दिन दिन गुनकर करी सदा बढ़त जान जिनचन्द।

वर्द्ध मान कही हरी जज्यों में पूजों सुचकंद ।

240

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jam Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : ॐ हीं अतिवीरनामेश्यो अर्घम्।

Colophon: सम्पूर्णम् ।

१८२३. मंगल

Opening : पणविवि पंच ... जगत मंगल गावई ।।१।।

Closing : वदन उदर अवगाह कलस गति जानिए .... • जगत मंगल

गाईए ॥

Colophon । इति दुतीय मंगल सम्पूर्ण ।

१८२४. मंत्रविधि

Opening : ते चतुर्दशी पुष्पार्क होवै त्यारितादिने उपवासं कृत्वा जाप्य

**९२००**० त्रिसंघ्यं अर्द्ध रात्रौ एवं ४८**०**००

Closing ; अनेन मंत्रेण होमं कुर्यात् सहस्र १२०००। शत्रुनाशं भवति ।

अनेन मंत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरणं पूर्वमत्रस्मरणीयम् ।

Colophon । इति विधि सम्पूर्णम् ।

१८२४. मोक्षपैडी

Opening । इक्क समै रूचिवंत नौ गुरुवरक सुनु मल्ल।

जों उफ अंदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ।।

Closing ! भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह कौ यह उपदेश।

कहत बनारसीदास यौं मूढ़ न समुझै लेस ।।

Clolophon: इति मीक्षपैड़ी समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāiha-Vidhāna )

१८२६. नं रीश्वर पूजा

Opening : नंदीश्वर पूरव दिसा तेरह श्री जिन गेह।

आह्वानन तिनका करूँ मन वच तन धरि नेह ॥ १॥

Closing : मध्यलोक जिन भवन अकित्तम ताके पाठपढ़े मनलाई।

जाके पुण्य तनी अति महिमा वरनन को करि सकै वनाई ॥

ताके पुत्र पौत्र अरू संपति वादै अधिक सरस सुखदाई । इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ।।

Colophon: इति नंदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८७६।

१८२७ नंदीश्वर-पूजा

Opening : मध्येमंडपमालिखेद्वर्त्तरे नंदीश्वरं मध्डलम्।

वर्णे पञ्चिभराततं गुणगुरु शकः सतां सम्मत ।

तन्मध्ये चतुराननं जिनवरं बिम्वस्य सातास्पदं।

दिव्यॅंऽन्टभिरिष्ट-सोख्य-जननैः कुर्यात्तदच्चि तत: ॥ १॥

Closing : अायु · देवाईतामईणा ॥११॥

Colophon: इति श्री नंदीश्वरपूजा समाप्त ॥

१८२८. नंदीश्वरद्वीप-पूजा

Opening : कर्पूरपृरपित्पूरितभूरिनीरः धाराभिराभिराभितः श्रीतहारिणीभिः

नंदीम्बरेष्टदिवसानि जिनाधिपानां आनंदतः प्रतिकृतिः

परिपूजयामि ॥

Closing : इयथुणि वि जिणेसरू महिपरमेसरू .... सुनख सो पावई ।।

Colophon: इति श्री नंदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्त:। लेखकपाठक-

वाचमश्रोतृणां समस्तु शुभं भवतु ।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१८२६. नवग्रहपूजा

Opening ; अर्कश्चंद्रकुजसौम्यगुस्तुक्रशनिश्चर:।

राहुकेतुग्रहारिष्टनासनं जिनपूजनात् ।।१।।

Closing : कन वंछित दाईक सेव सहायक जो नर निज मन घ्यान धरै।

ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पजन करें।।

Colophon ; इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पुजा सम्पुर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८८९।

१८३०. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें क १८२६।

Closing : देखें, ऋ॰ १८२६।

Colophon . इति श्री केतुअरिष्ट तिवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा

सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मंगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टिनिव।रक चतुर्विशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चतुर्विशति जिनेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्बत् १६१३ फालगून मासे

शुक्ल पक्षे सोमवारे।

१८३१ नवग्रह-पूजा

Opening : देखें, क॰ १८२१।

Closing : देखें, क॰ १८२६।

Colophon: इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhrasa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

१८३२. नवग्रह पूजा

Opening । श्रीनाभिसूनो पदपदायुग्मं नरवासुखाणि ? प्रथमं तु तैव,

समन्नमन्नाकिशिर: किरोटं संघच्छविश्रस्तमनीयतं वैः।।१।।

Closing : आदित्यादिग्रहासर्वे नक्षत्रासुरासया।

कुर्वन्तु मंगलंतस्य पूजाकर्तृणस्य वा।।

( olophon इति नवग्रहप्जा जिनसागरकृत सम्पूर्णम् ।

१८३३ नवग्रह-पूजा

Opening : प्रणम्याद्यं ततीर्थेशं धर्मं तीर्थंप्रवर्त्तकम ।

भव्यविध्नोपशांस्थर्थं ग्रहाचीवर्ण्यते मया ॥१॥

Closing : देखें, ऋ० १८२६।

Colophon: इति श्री केतु अग्ब्टि निवारक श्री मिल्लिनाथ पार्श्वेनाथ पूजा

संपूर्णम् । इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम् । शुभं अस्तु मंगलम्

अस्तु।

१८३४ नवग्रह-पूजा

Opening : ग्रह।सं शष्दये युष्मानयातः सपरिक्षदाः।

अत्रोपवसतां तावो जये प्रत्येकमादरात् ।। २।।

Closing : ॐ हीं नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम् ।

Colophon: इति नवग्रह पूजाविधानम् ।

१८३५ नवकार-पंच त्रिंशत्पूजा

Opening : श्रीमिञ्जिनेंद्रवरसायनसारभूतं पूज्यं नरामरसुखेचरनायकैंश्च।

ध्येय मुनीद्रगणनायकवीतरागै संस्थापयामि नवकारसुमंत्रराजम् ।

२५४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रम्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing : जय परमणि रंजण दुरिय विहंडण ... वर्रांदतु सुहा ।।

Colophon : इति श्री नवकार पैतीसी पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८३६. नवपद-कलश-पूजा

Opening : जोयन त्री जे अरे पहिलो तीरथराय ।

सोल जोजन ऊंचो सही ध्यानधरु चित लाय ।।

Closing : वाणी वाचक जस तणी कोई न यई अधूरी रे ॥२२॥

Colophon : इति इति नवपद कलश पूजा समाप्तम् ।

१८३७. नेमिनाथ जयमाला

Opening : नेमिजी तुम्हारी हठ मानी ।।

Closing । जो एतना करी ... ... पावै।

Colophon । इति नेमिजयमाल समाप्तम् ।

१८३८. न्हवण-पूजा

Opening : सौगंधसंगतमधुत्रतझंकृतेन संवर्णमानिषव गंधिनद्यमाधौ।

भारोपयामि विवुधेश्वरवृदवंदां पादारविदमभिवंदाजिनोत-

मानाम् ॥१॥

Closing । " जन्मजरामरण " ••• ।।

Colophon । अनुपलन्ध ।

१८३६. न्हवण-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १८३८।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing । अह्हा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्टी । एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुह दिंतु ॥१॥

Colophon: इति न्हवणपूजा।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रसुरनाथिकरीट कोटि संलग्लरत्निकरणच्छितिधू-सराघ्रि ॥ ॥ प्रस्वेदतापमलमुक्तमिपप्रकृष्टै भक्त्यां जलं जिनपते बहुधाभि-सिंचेत् ॥१॥

Closing : यं पांडुकं ... ... ... ल त्वदीय विवम् ।।

Colophon : इति त्रिब स्थापण मंत्र ।

१ = ४१. निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेष्पिणु हिये धरेष्पिणु वाएसरेगुणगणहरहं।

णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेस हं ॥१॥

Closing : इय तित्यंकर तित्यइ पुण्णवित्तइ पठ इ वियाण इ विमलयरे।

तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मंगल सयल पहुं तिधरे ॥१७॥

Colophon: इति निर्वाण पूजा की प्राकृत आरती संपूर्णम्।

. १८४२. निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्व्वावस्थांगतोपि वा।

यः स्मरेत्परमात्मानं सः बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥५॥

Closing : देखें, ऋ० १८४१।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति णिव्वणि पूजा समाप्तम् ।

२५६

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२।

१=४३ निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय - - - सन्वसाहूगं ॥१॥

Closing : देखें, क० १८४१।

Colophon । इति निन्वीण पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४. निर्वाण-पूजा

Opening । ॐ जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

••• • • णमो लोए सव्वसाहुणं ॥१॥

Closing ! कहे कहाली तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।

करो आरता वर्द्धमान की पावापुर निर्व्वाण थान की ।।७।।

Colophon: इति आरती संपूर्णम्।

१८४५. निर्वाण-पूजा

Opening । देखें, ऋ० १८४३।

Closing : देखें, ऋ० १८४१।

Colophon । इति निव्वीण पूजा।

१८४६. निर्वाण-पूजा

Opening । देखें, ऋ॰ १८४३।

Closing : संवत् सत्रह से इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशाल ।

भैया वंदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pātha-Vidhāna)

Colophon: इति निर्वान काण्ड सम्पूर्णम् ।

१८४७. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क॰ १८४३।

Closing : देखें, क॰ १८४१।

Colophon: इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता।

१८४८. निर्वाण-पूजा

Opening । देखें, ऋ० १८४३।

Closing । देखें, क॰ १८४४।

Colophon: इति निर्वाण पूजा सम्ूर्णम्।

१८४६ निर्वाण-पूजा

Opening । वंदी श्री भगवान की भावभगत सिरनाय।

पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।१।।

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर वीस भगवान है।

गर्म जन्म तपज्ञान भए निरवांन है।।

Colophon: अनुपलब्ध।

१८५०. निर्वाण-क्षेत्र पूजा

Opening । देखें, ऋ० १६४६ ।

Closing ! संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महांन ।

भादी कृष्ण जु सत्तमी पूरण भयी सुजान ।।२४।।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Colophon: इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१८४१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening । परम पूज चौवीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो।

सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing । ए यल जावै पाप मिटावै गावै धावे भक्ति बढ़ावै ।

जो पुजे सो शिव लहै।।

Colophon: इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा संपूर्णम्।

१८५२. निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening । देखें, कः १६४३।

Closing । देखें, कः १८४१।

Colophon: इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा संस्कृत जयलाल

सहित सम्पूर्णम् ।

१८५३. निर्वाण-कल्याणक

Opening : केवल दृष्टि चराचर देष्यौ जारिसो,

भविजन प्रति उपदेश्यौ जिनवर तारिसो । भव भयभीत महाजन सरन जे आईया,

रतनय सुभ लछन शिव पंय भाईया ॥ १।।

Closing : रचि अगरचंदन प्रमुख परिमल द्रव्य जिनजयकारियो।

पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि संस्कारियो । निर्वान कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।

भणि रूपचंद सुरेव जिनवर जगत मंगल गाईये ।।६॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

Colophon: इति निर्वाण कत्याणक भाषा सम्पूर्णम्।

१८५४. नित्यनियम पूजा

Opening : सौगन्धसंगतमधुवत .... ... ।

पादारविंदमभिवंद्यजिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : मुखदेवी दुखमेटिवी एहि तुमारीवानी,

मो अधीर की वीनती सुन लीजें भगवान।

दरसन की जै देव की आदि मध्य अवसान,

सुरगन के सुखभोगके पावै पदनिरवान ।।

Colophon: इति सम्पूर्णम्।

१८५५. पदलावनी

·Opeuing : शिखर गिर के ऊपर तिर्थे द्धर विराजे।

आधि रात में याने देव दुंदुभिबाजे ॥

Closing । समेद शिखर पर्वत केऊपर बीसतीर्थ ङ्कर मुक्ति गए।

कंकर कंकर सिद्ध विराजे असंख्यात मुनि मुक्ति गए।।

Colophon: इति सम्पूर्णम्।

१८५६. पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखें, क॰ १८५७।

Closing : पायोभिदिव्यगंध्यै; - पूजयामीष्टसिद्धै: ॥१३॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

750

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

## १८४७. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नच्डा-,

पाशांकुसौरभफलांकितदो चतुष्काः।

पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतंस-,

पद्मावती जयतु शासनपुण्यलक्ष्मी ।।

Closing : या देवी रिपचोरवन्हिजमहा संकष्ट संहारिणी,

या रात्रिचरभूतखेचरमहाबेतालनिणांशिनी,

रंकानां धनदायिनी सुखकरा इष्ठार्थं संपादिनी,

सा मां पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥

Colophon । इति पद्मावीपूजा चारूकीतिकृत सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२।

# १८५८. पद्मावती-पूजा

Opening ! देखें, क १६४७।

Closing : श्रीमत्पन्नगराजाग्रे वाराधारा करोम्यहं.

सर्वशोकस्य शांत्यर्थं भृंगारनालनिर्गता ।।१०।।

Colophon: नहीं है।

विशेष— इसमें पार्श्वनाथपूजा तथा धरणे द्रपूजा भी संकलित है।

१८५६, पद्मावती-पूजा

Opening । श्रीमच्चतुर्द्धिदशशोभितदोर्घवाहिनी बज्जादिकायुधधरामहमा-

संस्थापयामि सुजनैरिभपूज्यमानां पद्मावतीक्षितेनुतां फणिराज-

कांता ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

Closing : नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,

नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जनाः कारुण्य बृध्या मया। राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,

बौद्धोद्यान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालितः ॥१६॥

Colophon: इति अकलंकाष्टकम् ।

१८६०. पद्मावती-पूजा

Closing : श्रीपाश्वंनाथपदपंकज-सेव्यमानं प्रमजामि नित्यम् ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

१८६१ पद्मावती-पूजा

Openirg जय कुसुमकुं कुमारूणशरीर " पद्मावती।।

Closing : गंभीरं मधुरं मनोहरतरं सद्धोषरत्नाकरम्,

वक्र पूर्णकरं सुधाहितकरं भक्तांबुजं भास्करम् । नानावर्णसुरत्नभूषितकरं संसारसौख्याकरम् ।

श्रीपद्मावती देविमूर्त्तिसुभदं कुर्वन्तु वो मंगलम् ।

Colophon: इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८३२ I

१८६२. पद्मावती-पूजा

Opening । देखें, १८६१।

Closing । देखें, क १ १ ६ १ ।

Colodhon: इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१८६३. पद्मावती-व्रतोद्यापन

Opening ! नमः श्री पार्श्वनाथाय मोक्षलक्ष्मी तिवासिने ।

वक्षे पद्मावती पूजा चतुर्विशतिअंगया ॥१॥

Closing : ये पूजयंती मनकायवाणी तेषां जनानां सुखदायकानि ।

पद्मावतीनामपरं पवित्रं सद्यः पवं दान ददाति पूजा ।।६।।

Colophon ! इति प्रथमनिरूपमं पुष्पांजलिम् ।

१८६४ . पंचवालयती पूजा

Opening : श्री जिनपंच अंनंगजित वासु-पूज्यमल्लनेम ।

पारसनाथ सुवीर अति पूजों चितधर प्रेम ।।१।।

Closing । ब्रह्मचर्य सो नेह धर रिचयो पूजन पाठ।

पाचौं बाल जतीनकों, कीजैं नित प्रति पाठ ॥२७॥

Colophon: इति श्री पंचवालजती पूजा सम्पूर्णम् । श्रमम्

१८६५ पंचकल्याणक-पूजापाठ

Opening: श्री चौवीस जिनेस पद बंदो मन वच काय।

जाके घ्यावत भव्य जन भववारिधि तरिजाय ॥१॥

Closing: सात जुगुल नव येक लिषि संवत् श्रावण मास ।

कृष्णपक्ष दसमी दिवस शुक्रवार परभास ॥१३॥

Colophon: इति श्री चतुर्विंशति जिन पंचकत्यानक पूजापाठ समाप्तं

१८६६. पंचकल्याणक्पाठ

Openign । पणविविषंचपरमगुरुजिनशासनं - पापप्रणा-

सनम् ॥१॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing:

पावए अष्टी सिद्ध \*\*\*

चउसंघहि गए ॥२५॥

Colophon:

इति श्री पंच कल्याणक जी समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८८६।

१८६७. पंचकत्याणकपाठ

Opening: देखें, कः १८६६।

Closing +

फुनि हरैं पातक टरैं विघन जे होय मंगल नित नए। भनि रूपचंद त्रिलोकपति जिनदेव चउ संघिहगए।।२६॥

Colophon:

इति श्री पंचकल्याणक संपूर्णम्।

१८६८. पंचकल्याणकपूजा

Opening

मिद्धं कल्याण गीजं कलिमलहरणं पंच्कत्याणयुक्तम्, स्फूर्यदेवेन्द्रवर्ये मुकुटमणिगणैदीव्तपादारविन्दम् । भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुषकरं कर्म्मवल्लीकूठारम्, कूर्बेऽहं पूजनं वै: प्रबलभवभयं शान्तये श्री जिनानाम् ॥१॥

Closing

इति शान्तिधारा त्रयं ---

ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्यं च बोधान्विताः। भव्ये सद्विधिनाविधानसमये संपूजिता: संस्तुता: ।। त्रैलोक्येशमहोदरोभ्येव सुखं संसारकं चाप्नुतम्,

मोक्षं चापि दिशंतु वै: जिनवरा: सर्वात्मना सर्वदा ॥६॥

Col phon:

इति श्री पंचकल्याणकपुजा समाप्तम्।

देखों, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ८६७। दि० जि० ग्र० र०, प्र० १८४। Cagt, of Skt. & Pkt. Ms. P. 662. Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१८६९. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १८६८।

Closing : अनेकतर्कसंकर्षहर्षातितव्द्योत्तमा ।

स्वद्धिनी च वयस्फर्तिजीवात् श्री प्रतिवर्द्ध नम् ॥

Colophon । इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । लाला संकरलाल

रतनचंद के माथे को पुस्तक।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६०२।

१८७०. पंचकल्याणक-दोहा

Opening : कल्याणक नायकनमूं, कलपकुरूह कुलकंद ।

कल्मष दूर कल्याणकर, बुधकुलकमलदिनंद ।।१।।

Closing : तीन तीन वसु चंद ये संवत्सर के अंक ।

जेष्ट शुक्ल दशमी दिवस पूरन पढठो निसंक।

Colophon; ६ति पंचवल्याणक के सांगीत कवित सम्पूर्णम् ।

१८७१. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : परमन्नहमेभ्यस्तेभ्यो नमो निर्वाणिसिद्धये ।

येषां नामान्यनंतानि कातिभिरपि सस्तुवे ॥१॥

Closing : देहं दीप्तप्रकारौ सुनाप्तसुकरी चकैंन्द्रसंपत्करी जन्मादिसुतरी।

गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी ... ... रोगाद्यनासंकरी ।।

Colophon: इति श्री चतुर्विशतितीर्थं ङ्कर पूजा पंचकल्यः णक समाप्तम् ।

१८७२ पंचकल्याणक-पूजा

Opening : पंच परमगुरु वंदि करि पंचकुमार मनाय।

मदन ब्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय।।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing । पूजन पंचकुमार · • मोक्ष सुरपायहो ॥ १७॥

Colophon: इति श्री पंचकुमार जिनेन्द्रपूजा संपूर्णम् ।

१८७३. पंचकुमार-विधान

Opening : ॐ परम ब्रह्मेण नमो नम: । स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव,

नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व आनुसाधि आनुसाधि

Closing : ॐ हीं कों षष्टिसहस्र संख्येभ्यो स्वाहा । नाग-संतर्पनार्थ

ईशान्यां दिसि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

Colophon । इति पंचकुमार विधान सस्पूर्णम् ।

१८७४. पंच-मंगलपाठ

Opening । शिलागतमादिदेवयध्नस्रापयन् सुरवराः सुरशैलमून्स्नि ।

कल्याणमी सुरदमक्षततोयपुंजै. संभावयामि पुर एव तदीय

बिवम् ।।

Closing । मैं मित हीन भगति वसभावन ... ... ।

- जन देव वौ संघित जयौ ॥१४॥

Colophon: इति श्री पंचकत्याणक गीतम्।

१८७४. पंच-मंगलपाठ

Opening : देखें, ऋ० १८६६।

Closing : देखें, ऋ० १८६७।

Colophon: इति श्री रूपचंद कृत पंच मंगल समाप्तम् ।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१८७६ • पंचमंगलपाठ

Opening: देखें, ऋ० १८६६।

२६६

Closing : देखें, ऋ० १८६६ ।

Colophon: इति पंचमंगल सम्पूर्णम् ।

१८७७ पंचमेर-पूजा

Opening । देखें, क १८७८।

Closing । ॐ नंदीश्वरद्वीपवावनिजनालयस्य जिनेश्यो नमः।

Colophon: नहीं है।

१८७८. पंचमेर-पूजा

Opening : संबोषडाहूयनिवेश्य ताभ्या सानिध्यमानीयषड्परेन,

श्रीपंचमेरुस्थ जिनालयानां यजाम्यशीतिः प्रतिमासमस्ता ॥१॥

Closing : पंचमेरु की आरती पढ़ें सुनै जो कीय।

द्यानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ।।

Colophon: इति श्री पंचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ८६१।

१८७९. पंचमेर-पूजा

Opening : देखें, क॰ १८७८।

Closing । देखें, क॰ १८७८।

Colophon : इति पंचमेरु की आरती समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१८५०. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, कः १६७८।

गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपै नैवेच दुर्वाफलवह्निरघै.।

श्री पंचमेरोस्तु जिनालयानां यजाम्यशीति प्रतिमां समस्तम्।

Colophon: इति श्री पंचमेरू पूजाष्टकं समाप्त.।

१८८१ पंचमेर-पूजा

Opening : देखें, १८७८।

Closing : भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विषै दिठ भव्य जनौ।

कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पंचमेरु जयमाल भणी ।।१।।

Colophon; इति पंचमेरु पूजा।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८५।

१८८२ पंचमेरु-पूजा

Opening । जिनान् संस्थापयाम्याह्वानादि विधानतः ।

सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पांजलि विशुद्धये ।।

Closign । सुदर्शनादिमेरूणा पूजाकारिसुभावहा ।

रत-रत्नाकरेणासौ पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Colophon: इति श्री पुष्पांजिल पूजा समाप्तम् ।

१८८३. पंचमेरपूजा

Opening । तीर्थं कर के न्हीन जजतें भए तीरय सर्वदा, तार्तें प्रदच्छन देत सुरगन पंचमेशनि की सदा। Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

दो जलिध ढाई दीप मैं सब गनत मूल विराजही,
पूजी असी जिनधाम प्रतिमा होहि सुख दुख भाजही ॥१॥

Closing:

देखे, ऋ० १८७८।।

Colophon:

इति पंचमेरु पूजा

१८८४. पंचपरमेष्ठी अर्ध्य

Opening:

श्रीमस्त्रिजोके तिलकायमानः मानुन्नतोभव्यसरोजभानुः।

देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवंद्यो वंदे जिनेन्द्रोविश्रुतं विधाता ॥

Closing:

ॐ हीं समोशरणादिश्वराय अष्टाविसतिगुण विराजभानाय

श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सर्वसाधुपरमेष्टिणो मम सुप्रसन्नवर-

दा भवंतु ॥

Colophon:

इति पंचपरमेष्ठी अर्घ सम्पूर्णम् ।

१८८५. पंच-परमेष्ठी जयमाला

Opening

मणुयण इंद .... अट्टावरं मंगलं ।

Closing ,

अरूहा सिद्धा आयरिया उत्रझाया साहुपंचपमेट्टी।

एदे पंच नमोयारो भवे भवे मम सुहं दितु ॥७॥

Co'ophon:

इति श्री पचपरमेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम्।

१८८६. पंच-परमेष्टी पाठ

Opening :

प्रथम पंचपद को नमों गुरुपद सीस नवाय।

तुच्छ बुद्धि रचना रचौं सारद सरन मनाय ।।१।।

Closing:

जै जै श्री आचार्यं नमस्ते, गुन छतीम वपुधार्ज्यं नमस्ते ।

तिन पदनमिष्ठरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ॥३॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

जै जै श्री उपझाय नमस्ते, गुन पचीस सुखदाय नमस्ते, बंदय जे धरि भक्ति नमस्ते, " - " " ।।४॥

Colophon ; अनुपलब्ध।

१८८७. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमतं त्रिजगदेवं त्रैलोवयानंददायकम् ।

चन्द्राकं चन्द्रभं वंदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ॥

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यविन्माधरो,

मोहे भेशमृगेश्वरे गतरिपुर्दे वाधिदेवो जिनः । संसारार्णवतारकोहतमलो धर्मादिभूषो मुनिः,

श्रीदेवेन्द्रसुकीर्त्तिपादनिमतः कुर्यात्सदा वः सुखम् ॥

Colophon: इति श्री भट्टारक श्री धम्मभूषण विरचितं परमेष्ठिपूजा

समाप्ता। शुभमस्तु।

१८८८. पंच-परमेष्ठी पूजा

Opening : श्रीधर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार।

श्री सरवज्ञ नमी सदा पार उतारन हार।।

Cloing : संवत एक सहस्र नव सतक सो सताईस ।

भादौ कुस्न त्रयोदसी बुद्धवार सो गनीस ।।

Colophon: इति पंच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम्।

१८८६. पंचपरमेष्ठी-पूजा

Opening : ॐ अहंत्सिद्धाचार्योपाध्याथ साबुध्यो नम,

ॐ अथ अरहतदेव के ४६ गुण।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

ॐह्रीं षट् चत्वारिशत गुण सहिताईत्परमेष्ठिभ्यो नम ।

Closing । ॐ हीं वीर्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिस्वो नमः।

Colophon! नहीं है।

१८६०. पंच परमेष्ठी-पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमलाकरं सच्च चिदुज्वलमहः प्रकटीकृतार्थम् ।

उच्चेनिधाय हृदिवीर-जिनं विशुद्धैः शिष्टेष्टपंच परमेष्ठीमहः

प्रवक्ष्ये ॥

Closing : स्फुर्भत् प्रतापतपनप्रकटीकृताशाः

श्री धर्मभूषगपदांबुजचुम्नाविन ।

कर्त्तव्यमित्युदयतं सुयसोभिनंदिसूरे

सदंतरूदपीकरणैकहेतु: ॥४॥

Colophon: इति यशोनंदिविरिचता पंचपरमेण्ठी पूजा सम्पूर्णम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, प्र० १८७।

१८६१. पार्श्वनाथ कवित्त

Opening : प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि जाप जपौं जगवंदन की।

तिहुँ लोक के लायक लायक ही सुखदायक आनि निकंदन की ॥

Closing : जग सौ भी भीत तेरे पंथसो परम प्रीति ।

ऐसी जाकी रीति ताकी वंदना हमारी है।

Colophon: नहीं।

१८६२. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening । नमंडलं चारुचतुर्विशति कोष्टकम्।

महारम्यं पंचवर्णं रत्नप्रकरसंभृतम् ॥२॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramía & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāțha-Vidhāna)

Closing:

श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशांतये ।

भृंगारनालनिवाति शांतिधारां करोभ्यहम्।

Colophon:

नहीं है।

१८६३ पाइर्वनाथ-पूजा

Opening

प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार।
अभ्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अंक हरित तन सुख दातार।।
जरत नाग जुग बोधि दियो तिहि सुरपद परम उदार।
ऐसे पारस को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार।।

Closing .

पारसनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान।
सुखसागर वर धन को शिस सम सब कषाय को मेघ महान्।।
तिन को पूजें जो भिव प्रानी पाठ पढ़ें अति आनंद आन।
सो पार्व मन विदित सुख सब और लहें अनुक्रम निरवान।।

Colophon:

इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम्।

१८६४. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening

हीं देवं पार्श्वनाथं धरणिपतिनुतं देवदेवेन्द्रवंद्यम्, हींकारं बीजमंत्रं जगदकलिमंत्रं सर्वो उद्यवहारी । ॐ हां हीं हूंकारनार अधहरनमहामक्तिरूपं जनानाम्, व्यालीढं पादपीठं शठकमठमति माह्वयं पार्श्वनाथम् ।

Closing

कल्याणोदयपुष्पवल्लभदयं संसार संतापभृत्, तुंगौतुंगभुजंगमंगलफणाः माणिक्यमालायते । पायात्म्यज्जनभृंगभृंगसहितो नागेन्द्र पद्मावती, सेव्यसेवक वांछितार्थफलदं श्रीपार्श्वकल्पद्रुमः ॥

Colophon:

इति पार्श्वनाथ पूजा।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

# १८६५. पार्श्वनाथ-पूज-(

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।

मिलि सुगंध जगत पावन जन्म दाघ विनासने ।। परम श्री जिनपाद पंकज विगत कल्मषदूषणम् ।

श्री पार्श्वनाथमहं यजेवर फणि लांक्षन भूषणम्।

Closing : जलादिगंधाक्षतचारुपुष्पै, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदाने ।

श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेशं, श्री पार्श्शनाथं परिवर्**गमा**मि ।।

Colophon । इति पार्श्वनाथ पूजा संपूर्णम् ।

१८६६. प्रभाती मंगल

Opening : जैं जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करें तुम सेवा।

अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मत मेरी ।।

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी, बड़े भागनि पाइयै।

जन रूपचंद चिंता कहा जब सरण चरण न आइयै।।

Colophon: इति श्री मंगल जीत समाप्तम् ।

१८६७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening : अथ बिबजिनेन्द्रस्य कर्त्तव्यं लक्षणान्वितम् ।

ऋज्यावत सुसंस्थानं तरूणांगं दिगम्बरम् ॥१॥

Closing । ये केचिज्जिन " नरेन्द्राच्चितान् ॥१०॥

Colophon: इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचितं प्रतिष्ठातिलक

समाप्तम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

## १८६८: पूजामाहातम्य

Opening । नीर के चढ़ाये वीर भवदिध पारहूजे चंदन चढ़ाये दाह दुरित मिटाईये। पुष्प के चढ़ाये पूजनीक हूजे जगत में अक्षत चढ़ाऐ ते अभय पद पाईये।

Closing : पाप न कर पार्व जाके जिय दया आवै धर्म को बढ़ावे दया कही आचरन को । ताते भव्य दया की जे तिहुलोक सुख लीज कहत विनोदीलाल जी तहु मरन को ॥

Colophon: इति सम्पूर्णम्।

१८६६. पूजासंग्रह

यह पूरा ग्रंथ अस्पष्ट है। इसे पढ़ा नहीं जा सकता।

१६००. पूजासंग्रह

Opening : प्रणिम सकल सिद्धिनिक् प्रणिम सकल जिनराय।
प्रणिम सकल सिद्धान्तक् निम गणधर के पाय।

.Closing : मनवंछित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे।

ग्रह दु:ख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौवीसी पूज करैं।

Colophon: इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पू-र्णम् । इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विशति जिनपूजा संपूर्णम् । Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

# १६०१. पूजा-विधान

Opening । चितवत वदन अमल चंद्रोपम त्जि चिंता चित होय अकामी।
त्रिभुवन चंद्र पाप तम चंदन नमत चरन चंद्रादिक नांमी।।
तिहुं जग छाई चंद्रिका कीरत चिह्न चांद चिंतत शिदगामी।
वंदो चतुर चकोर चंद्रमा चंद्रवरन चंद्रप्रभु स्वामी।।

Closing : राखो संभार उर कोस में, निह विसरो पल रंकधन। परमाद चोर टारन निमित करो पास जिन गुण कथन।।

Colophon : न ीं है। विशेष---इसमें कई पूजाएँ संकलित हैं।

### १६०२. पुण्याहवाचन

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमृतिनाथ, भास्वितकरीटमणिदीधितिपादपद्मम् । त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणवं प्रणस्य, होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुिक्क्षपामि ।।

Closing : श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तुः तव पुष्टि समृद्धिरस्तुः कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तुः वीर्घायुरस्तुः कुलगोत्र- धनं तथास्तु ।

Colophon । इति पुण्याहवाचन संपूर्णम् । देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६१६ ।

## १६०३. पुण्याहवाचन

Opening : श्रीनिज्जेरेशाधिपचिक्तपूर्वं, श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम् । श्रीवर्द्धं मानं प्रणिपत्य भक्त्या संकल्यरीतिकथयामि सिद्धः ॥ १॥ Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pātha-Vidhāna)

Closing ; देखें, क॰ १६०२।

Colophon: इति पुण्याहवाचन संपूर्णम्।

१६०४. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, कः १६०२।

Closing : देखें, कर १६०२।

Clolophon: इति श्री पुण्याह वाचन संपूर्णम् ।

१६०५. पुण्याहवाचन

Opening । देखें, ऋ० १६०२।

Closing : चतुर्वर्णसंघप्रसीदन्तु प्रीयन्तां शांतिभवन्तु कीर्तीभवंतु दीर्घायुरस्तु

कुलगोत्रधनधान्यं तथास्तु ।

Colophon: इति पुण्याहवाचन लघु सम्पूर्णम् ।

१६०६. पुण्याहवाचन

Opening । देखें, क॰ १६०२।

Closing । देखें, ऋ० १६०२।

Colophon: इति पुष्याहवाचन सम्पूर्णम्। संदत् १८६६ साके १७३२

प्रमोदनाम सछरेतीय श्राव (ण) मासे शुक्लपक्षे षष्टम्यां सद्दिने लिखितं कारंजा नगरे द० देवमनराय स्वकरेण स्व-

पठनार्थं ज्ञानावणिकम्मक्षयार्थम् । श्री सरस्वत्यै नमः ।

१६०७. पुण्याहवाचन

Opening : ॐ पुण्याहं ३ प्रीयंतां ३ भगवतोंर्हता सर्वज्ञा। सर्वदिशिन: सकल-

वीर्याः सुसकलसुखकरास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजिता · · ।

२७६

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing : स्वस्तिभद्रं चास्तु ३ नः स्वीं क्ष्वीं हंसः स्वस्ति स्वस्ति

स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

Colophon: इति पुण्याहव।चन।

१६० : पुष्पांजलि पूजा

Opening : वीरदेव को प्रनिम करि अर्चा करौ त्रिकाल ।

पुष्पांजलिव्रत कथा को सुनौ भविक अघटाल ।।१।।

Closing । घाति कर्म निरमूलन करौ निर्वानपद तब अनुसरै।

जा विधि वर प्रभाव तित लहयौ, ललितकीर्ति कवि इस विधि

द हुयौ ॥

Colophon । पुष्पांजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

१९०६. रत्नत्रयपूजा

Opening : चिदगतिफणविष हरन मन, दुख पावक जलधार।

शिवसुख सुधा सरोवरो सम्यक त्रयी निहार ।।

Closing । एक सरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय।

तीन भेद व्यौहार सब द्यानत की सुखदाय।।

Colophon: इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम्।

१६१० रत्नत्रयपूजा

Opening : पंचभेद जाक प्रगट गेय प्रकासन भान।

मीह तपन हर चंद्रमा, सोई सम्यक् ज्ञान ॥

Closing : देखें, ऋ० १६०६।

Colophon: इति रत्नत्रय पूजा।

विशेष— इसी से ग्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत है।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhrachia & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāțha-Vidhāna)

## १६११. रत्नत्रयपूजा

Opening: देखें, ऋ०१६१२।

Closing : मोहाद्रिसंकटतटीविकटप्रवासं संपादिने सकलसत्विहतंकराय ।

रत्नत्रयाय शुमहेतिसमप्रभाय पुष्पांजलि प्रविमलं हि अवतारयामि ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

१६१२. रत्नत्रय-पूजा

Opening : श्रीमतंसन्मतं नत्वा श्रीमतः सुगुइनिष ।

श्रीमदागमत. श्रीमान् वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥१॥

Closing : दखें, क॰ १६०६।

Colophon: इति रत्नत्रय जी की भाषा आरता सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1, ऋ० ६२३।

१६१३. रत्नत्रय-पूजा

Opening । देखें, क॰ १६१२।

Closing । इति दर्शनस्तुति .... मुक्ति ॥६॥

Colophon: इति श्री रम्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १६१२।

Closing : सम्यक दरशन ज्ञाण वृत शिवमग तीनों मई।

पार उतारण जांन दानत पूजी इत सहित ॥१०॥

Colophon । इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

#### श्री जै। सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library. Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१६१५ रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें,, ऋ० १९९२ ।

२७५

Closing : अनुलसुखनिधानं · · · · · दर्शनास्य सुघांबु ॥३॥

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१६१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening ! जत्र जय सदर्शन भवभव निरसन मोह महातरु वारण ।

उपसम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ।।

Closing : मदरागकषायरजः समनं भवर्र्गयदानवसंदमनम् ।

परमं शिवसौख्यनिवासकरं चरगं प्रणमामि विशुद्धितरम् ॥

Colophon: नहीं है।

देखें, जैं। सिं भ० ग्रा 1, ऋ० ६३२।

१६१७. रिववत उद्योपन

Opening : पार्श्वनाथमहं वंदे सर्वविघ्निनवारकम् ।

कमठोपसर्गहरनं जोगीकल्पतरुं परम् ।।

Closing । रिवत्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।

पंचातमाविने विप्र लेखक चित्ततप्पकाः।।

Colophon: इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत

उद्यापन विधि पूजा समाप्तम् ।

१६१८. रविव्रत-पूजा

Opening : इश्वाकृवंशकृलमंडनअश्वतेनो तद्वल्लभः प्रतिवत्ताजिनवामदेवि ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts

( Pūjā Pātha-Vidhāra )

तस्या जिन विमलमूर्त्तिसुरेंद्रवंदा त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपरं

नमामि ॥

Glosing : इति रिवद्यत पूजा सुरपित पद दूजा जे करंत नव व्रत सही।

मन वचकाय धावही सो सुराद पावही पार्श्वनाथ फल देत

सही ॥१२॥

Colophon: इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम्।

१६१६ रिवव्रत-पूजा

Opening : देखें, कै० १६१८।

Closing : इक्ष्वाकीत्ररवंशभूषननृषो श्रीअध्वसेनोतुजः,

वामानंदनइन्द्रचंद्रधरनी ससेव्यमानं सदा।

प्रत्याहार्य विभूषितं वसुबुधि कल्याणकारी सदा,

ते तुभ्यं विद्धातु बांछितफलं श्रीपाश्वकलपदुमः ॥१२॥

Colophon: इति रवित्रत पूजा।

१६२०. ऋषिमंडल-पूजा

Openign : प्रणम्य श्री जिनाधीशं - वक्षे पूजादिमल्पणः ॥

Closing : श्रीमच्चारुचरित्र " " नंदीगुणादिमु नि:।।

Colophon: इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि: श्लोक ग्रंथाग्रंथ

। ३८०। सवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पंडित

श्री हेमराजेन हुकुमचंद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१. ऋषिमांडल-पूजा

Opening : देखें, क. १६२०।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closing । देखें, ऋ० १९२०।

२८०

Colophon: इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि: श्लोक ग्रंथा-

ग्रंथ । संवत् १६५६, वैशाख कृष्ण द मंगलवारे लि०।

१६२२. ऋषिमंडल-पूजा

Opening । देखें, क॰ १६२०।

Closing: देखें, कः १६२०।

Colophon: इति ऋषिमंडलपूजा विधि समाप्तम्।

१६२३. ऋषिमंडल-पूजा

Opening ! देखे, ऋ० १६२०।

Closing : देखें, क॰ १९२०।

Colophon: इति श्री ऋषिमंडलपूजा समाप्तम्।

१६२४. सहस्रनाम-पूजा

Opening । पंचपरमगुरु कोनमीं, उर धरि परम सुप्रीति ।

तीरथराज जिनन्द जी, चोबीसों धरि चीत ॥१॥

Closing । सम्वत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह ससि जान ।

यह रचना पूरी भई मंगल मुद सुख्यान ।। सिखिरचंद कृत पाठ यह वन्यौ अनुपम रास,

जो पढ़सी मन लाय के पासी 🕰 ख्य सुवास ।।

Colophon: इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम्। शुभमस्तु। मिति

पौषशुद्ध द बार सुभ बुध संमत् १६४२ । को पूर्ण हुई सो जयवंत प्रवर्तो । श्रीकल्याणमस्तु । शिखिरचंद अग्रवाल गोदल

गोती कवि श्री वृंदावन के लघु सुअन कृत जयवंती।

# Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

## १६२५. सकलीकरग

Opening : इन्द्रश्चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यज्ञांगसज्जिनान् ।

यागमंगलपुजार्थं परिकल्मचिरेदिदम् ॥ १॥

Closing : सिद्धार्थान् अभिमन्त्य परमंत्रेण सर्वे विध्नोप समर्थान् सर्वे दिक्षु

क्षिपेत्।।

Colophon: इति सकलीकरण संपूर्णम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६४।

## १६२६. सकलीकरण विधि

Opening : ध्त्वाशेषरपाइहारपटके ग्रेवेयका लंबक,

केयूरांगदर्मादवं धुरकटी सूत्रा च मुद्रांकितम् । चंत्रत्कुं डलकर्णपूरममलं पाणिद्वयं ककणम्, मंजीरं कटकंपते जिनपते श्रीगंधमुद्रांकिते ।।

Closing : सर्वराजभयं छि० सर्वचीरभयं छि० सर्वदृष्टिभयं छि० सर्व-

दृष्टिमृगभयं छि० सर्वसर्पभयं छि० सर्ववृच्चिकभयं छि० सर्व-

ग्रहभयं चि॰ सर्वदोषभयं छि॰ सर्वव्या .... 😁 🖚 ।

Colophon: अनुपलब्ध।

१६२७. सकलीकरण विधि

Opening : वासपूज्यं जगत्यूज्यं लोकालोकप्रकाशकम्।

नत्वा वक्ष्येत्र पूजानां मंत्रान्पूर्वपुराणतः ॥

Closing : लोक्याचोक्तं श्री सोमसेनमुनिभि शुभमंत्रपूर्वम् ।

Colophon । इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूर्णम् सं० १६२१।

१६२८. सकलीकरण विधि

Opening । देखें, क॰ १६२४।

#### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing : देखें, क॰ १९२४।

१८२

Colophon: इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ह० पंडित परमानंदेन बाबू धर्म-

कुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ़ शुक्लपक्षे शनिवासरे संवत्

१६५६ का। शुभंभूयात्।

१६२६. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी वंदू सिरनामी मरण सनाधि भला है।

मोक्ष पाऊ नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायै ॥१॥

Closing : हास आवे शीव पद पावे बील सुख अनन्ता ।

द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवंत ॥२०॥

Colophon: इति श्री समाधिमरण समाप्तः।।

१६३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषम सनमति चरम तीर्थं कर चडबीस ।

सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमों धारि कर सीस ।।

Closing : असें सामायिक पढ़ी सार जान मुनिवृद ।

घर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचंद ।।

Colophon: इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्नम्।

१६३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखें, ऋ० १९३०।

Closing : देखें, ऋ० १६३०।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

### १६३२. समवशरण

Opening : आज गई थी समोसरण मैं कहाँ कहुँ हीत हेत री।

बार बार दरवाजे चहुदिस परखा कोट समेत री ।।।।।।

Closing : परम सरस्वती सिव 🕶 गहे निज ग्याने तीन जु वरी।

कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री।।

Colophon। अनुपलब्ध।

१६३३. समवशरन

Opening : धूल साल देखे मूल साल नरहत,

डर मांनषल देखें जो ईमान महामानी की। वेदी कें विलोक आप वेदी पर वेदी होत, निरवेद पद पावें याते है कहानी की।

Closing : धरि लई सुध अनुभूत की ज्ञानलोग भोगी लयो।

अनुभाग बंध स्थिति भागतें, भागरागदारिद गयला ॥

Colophon: इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम् । संवत् १७७४ वर्षे पोसमासे

शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम्। शुभमस्तु।

१६३४. सम्मेदाचल-पूजा

Opening । मुक्तिकान्तां प्रदातारं स्थानेषु स्थानमुत्तमम् ।

मुक्ति तीर्थं करं प्राप्य वंदे शैलेन्द्रसिद्धिदम् ॥१॥

Closing : वजीचंद्रप्रतेंद्रपेंद्रतरणी पानुवन्ति शिवम् ॥१३॥

Colophon । इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम् । संवत् १८२६ भाद्र

बदि १२ भीम दिने लिखि।

Shri Devakumar Jain Oriental Libiary, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

१६३४. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : गिरसम्मेरते जीत जिनेश्वर सिव गए,

अवर असिषत मुनि तहां तैं सिद्ध भए। वदौ मन वच काय नमौं सिर नायकै,

तिष्ठी श्री महाराज सबै इति आयकै।।

Closing : ए वीस जिनेश्वर निमत सुरेश्वर नित मधवा पूजन आवै।

नर नारी ध्यावे सो सुख पावे रामचन्द्र जिन सिर नावे ।।१९॥

Colophon: इति तस्ने त्शिवर पूजा सम्पूर्णम्।

१६३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : परमपूज्य जिन वीस जहाँ ते शिव लये,

ओरह बदुत मुनीश शिवालै सुखमये।

अँसे श्री सम्मेद शिखर निमहं मुदा,

दरब साजि शुचि रूचि युत पूज रची सदा ।।

Closing । जय एक वार बंदे जुकोय

तसु नकं तिर्यं च कुगत न होय।

इत्यादि घनी महिमा अपार

प्रणमों मनवचकर सीसधार।।

Colop'on : 'इति'।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६४३।

१६३७. सम्मेदशिखर-ूज

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुखवान ।

शिखर समेद स्दानमों होई पाप की हान ।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

Closing । नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये, श्रीयंसनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुन्नत को निर्चे जाये। श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनसोन्नत आये। शीतल अनंत संभव अभिनंदन चित्त भाये बंदो सख पाये।

Colophon: इति कवित्त संपूर्णम्।

मती भादो, वदी ५, वारगुरु सम्बत् १६२६।

देखें, जै० सि० भ० प्र० I, ऋ० ६४२।

१६३८. सम्मेदशिखरपूजा विधान

Opennig : प्रणम्य सर्वज्ञमनंतवोद्यामाप्तप्रदं सद्गुणरत्नसिद्धम् ।

कुर्बे त्रिशुध्या सुभ्रतां हि तीर्थं सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम् ॥

Closing : चतुः मुनीन्द्रिभ श्लोकैमातृछदोवचोमये ।

ज्ञातब्या ग्रंथसंख्या नृगणकै: लेखकोत्तमै: । ५॥

Colophon: इति भट्टारक श्री धर्म्मचंद्र विनुचर पंडित गंगादास कृत सम्मेदा-

चलपूजा समाप्तम्।

१६३६ सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : पंच परमगुरु ... सारदा सीस ॥१॥

Closing : सिखरसम्मेद '... " भानिये ॥

Colophon: इति सर्वैया संपूर्णम्।

१६४०. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : देखें क० १६३७।

Closing : तुच्छ बुद्ध मोरी सही पंडीत करौ िचार।

भूल चूक अब होई जहां लीजौ चतुर सुधार ॥६॥

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति श्री सम्नेदिसखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम्।

१६४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : अमल गंग सुवारिणां भरि झारिणां सुखकारिणाः,

भवतापनिवारिणाः मलहारिणाः कर्मवारिणाः ।

सम्मेदाचलपर्वतं अपवर्गतं सुखअपितम्,

वीसतीर्थसुपूजितं भववाजितं मुनितस्जितम् ।।

Closing : यः यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते स्वर्गमुक्तिप्रश्वा

ते नारकतिर्यं चगतिर्विमुखा सङ्गावनाभावतः । तेषां पुत्रकलत्रमित्रभवता सल्लक्ष्मी लीलाकराः

सत्समेदगिरिसु धर्ममतं कुर्वन्तु वो मंगलम् ।।

Colophon : इति श्री सम्मेद जी की पूजा सलाप्ताः।

१६४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening । रिषभ अजित .... पूजत सुरराय ।।

Closing : मुक्ति मुक्ति दातार - .... सिव लहै।।

Colophon: इति श्री समुच्चय पूजा संपूर्णम्।

१६४३. शांतिनाथ-पूजा

Opening । शांति जिनेश्वर नमूं तीर्थ वसु दुगुनही।

पंचमचकी अनंता दुविधि षट्गुनीही ॥

तृणवत् रिधि सब छारि धरि तप सिववरी।

आह्वानन विधि करूँ बार त्रय उच्चरी ॥

Closing : प्रभु के चैय प्रमाण सुरतन धरि सेवा करत सोहयो।

देवी वृदं जिनवर को जनम कल्याणक गायो।।

२८६

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Colophon: इति श्री संपूर्णम् ।

१६४४ शांतिनाथ-पूजा

Opening ; देखें, क॰ १६४३।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला " - सुंदर ततिषन वरई ॥

Colophon: इति श्री शांतिनाथ जी की पूजा संपूर्णम्।

१६४५. शांतिपाठ

Opening । शांतिजिनंशशिनिम्मेलवक्त्रं सीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।

अष्टमहस्रसुलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रम्।

Closing : क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,

काले काले च सम्यक् वर्षतु मधवान व्याधयो यांतु नाशम्।

दुर्भिक्षं चौरमारिक्षणमि जगतः मास्मभूज्जीवलोके, जैनेन्द्रं धर्मचकं प्रभवतु सततं सर्व्व शौख्यप्रदायि ॥

Colophon: इति श्री शांतिजिनस्तोत्रम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, ऋ० ६५६।

१९४६. शांतिपाठ

Opening । देखें, १६४१।

Closing । मंत्रहीनं कियाहीनं श्रद्धाहीनं आयेव च ।

स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः ।।

Colodhon: इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णम् ।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

२८८

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१६४७. शांतिपाठ

Opeuing: देखें, ऋ० १६४५।

Closing 1

आह्वानाय पुरादेव लब्धभागाः यथाऋमम्।

मयाभ्यचिता भवता सर्वे यातु यथा स्थितिम्।

Colophon:

इति श्री शांति सम्पूर्णम् ।

१६४८. शांतिपाठ

Opening : देखें, ऋ० १६४५।

Closing:

आह्वाननं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।

विसर्जनं नैव जनामि क्षमस्व परमेश्वरः ।

. स्यस्व स्थानं गच्छतुं स्वाहा ।

Colophon:

इति शांति पाठ।

१६४६ शांतिचऋ-पूजा

Opening :

अर्हब्दीजमनाहतं च हृदये " " यद्वांछितम् ॥

Closing:

निशेषश्रुतबोधवृत्तमतिभिः प्राज्ञैलदारैरिप

स्तोत्रैर्घस्य गुणार्णवस्य हरिभिः "

\*\*\* श्री शांतिनाथं सदा ।।

Colophon:

इति श्री शांतिचक पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

देखें. जि॰ र० को०, पृ० ३७६।

दि॰ जि॰ ग्र॰ र०; पृ० १६६ ।

# Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramia & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

## १६५०. शांतिधारा

Opening : श्री खंडोद्रवक्रदंमेसु रूचिरैः कर्पू रचूर्णैःमितै:

संमिश्रीकृतिगधिलं नदनदिकसारकूपादिभि:।

... ... 🕶 देवां जिनस्थापये ॥१॥

Closing : सर्व्वदेशमारी छिद-२ भिद-२ सर्व्वविषभयं छिद-२ भिद-२

सर्व्वकररोगवैतालकािकनी डािकनी भयं छिद-२ भिद-२ सर्व-

वेदनीं छिद२ भिद-२ सर्वमोहनी ... ...

Colophon: अनुपलब्ध।

## १६५१. शांतिधारा

Opening : सिद्धावल श्री ललनाललाम मही महीयो महिमाभिरामम् ।

आसार संसार यथोपपरामं नमामिनाभेय जिनं निकामम् ॥१॥

Closing : नेत्रे दंढरूजाविनाशनकरं 🕶 🕶 स्नानस्य गंधोदिकम् ॥

Colophon: इति सांतिधारा।

१६५२' शांतिघारा

Opening : अ हीं श्रीं क्जीं रों हैं वं भं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं

तंतंपंपं ... 💳 ...।

Closing । देखें, कः १९४१।

Сอใดวน่วว : इति शांति शारा सम्पूर्णम् । इति विहासन प्रतिष्ठा संपूर्ण।

शुभमस्तु ।

## श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रम्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Colophon: इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम्।

र्दखें,दि० जि० ग्रं० र०, पृ० २०० जै० सि० भ० ग्रं० I, ऋ० ६६० ।

# १६६६. सिद्धपूजा

Opening । देखें, ऋ० १६६५।

Closing : आवृष्टं सुरसंपदं विदधति ... ... साराधनादेवता ।।

Colophon; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता।

१९६७. सिद्धपूजा

Opening । देखें, क १९६४।

Closing : देखें, ऋ० १९६५ ।

Colophon: इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

१६६८. सिद्धपूजा

Opening । देखें, ऋ० १९६४।

Closing : देखें, कर १६६४।

Colophon: इति सिद्धचक्रपूजां समाप्ता ।

१६६१. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क॰ १६६४।

Closing : देखें, ऋ० १६६५ ।

Colophon: इति सिटपूजा समान्ता।

Catalogue of Sanskrit, Praktit, Apibhrainia & Hiadi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

१६७०: सिद्धपूजा

देखें, ऋ० १९६५। Opening

जो पूजै गावै युत चढावै मन लगावै प्रीति सौं। Closing

ष्स्याल चन्द कहैं कहां लीं जस जिनी का रीतसीं।

जे नाम अक्षर जपै हरषै धन्य ते नरनारि हैं।

प्रभु पतित तारन दुःख निवारन भगत्कौ निरदार हैं।

इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम्। Colophon :

१६७१ सिद्धपूजा

Opening देखें, ऋ० १९६५ । देखें, क० १९६५। Closing:

Colophon: इति सिद्धपूजन प्रतिज्ञा सम्पूर्णम् ।

१६७२. सिद्धपूजा

देखें, क० १६७०। Opening देखें, ऋ० १६७०। Closing:

इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम्। Colophon:

१६७३. सिद्धपूजा

Opening देखें, ऋ० १६६५ ।

सिद्ध वरे संसार, सिद्धन की पूजा करो। Closing !

आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ॥

इति सिद्धपूजा संपूर्णम् । Colophon:

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

Closing : दुरितितिमिरहंसं मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,

मदन भुजगमंत्रं चितमातंगसिहम्।

विसनघनसमीरं विश्वतत्वैकदीपम्,

विषयरसकरीजालं ज्ञानमाराधीयत्वम् ।।

Colophon । इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१६६०. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, ३० १६५८।

Closing : देखें, कः १९४७।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१६६१. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क॰ १६४८।

Closing : स्तुत्वेति ..... समुद्वरेत् ।।३।

Colophon: इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१६६२. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, ऋ॰ १६५८।

Closing : देखें, क॰ १६५६।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१६६३ शास्त्र जयमाला

Opening : संपयसुद्धकारण "" संगमकरण ।।५।।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Arathransa & Hindi Manuscripts ( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing : इय जिनवरवाणी "" णवि उत्तरई ॥१३॥

Colophon: इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम्।

१६६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Cpening : सिद्धं सिद्धार्थंदं सुद्धं सिद्धारमानं स्ववर्गगम् ।

श्रीक्योस्पादगुणे युवतं वंदे तं जणहेतवे ॥

Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्धः कविनायकः ।

तेनेदं रवित: पाठ: शत्रु जयाख्याभिधानक: ।।

Colophon । इति श्री विशासकीत्यात्मजो श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विर-

चिते हेतुं ज्य गिन्ट्रिजा समाप्तम् संबत् सै ३० ? वर्षे अध्वनी शुक्ल डितीयाँ पटनानामनगरे श्रीमूलसंघे अवावती गच्छ

भट्टारकाधिराज श्री सुरेंद्रकीतिजी तिच्छव्येण दिन्य तादिद

तेजपालेनेयं पूजा लिखिता । सत्रुंजय पूजायाः कमलानि प्रथम

वलये । १।। द्वितीय वलये ॥ ८।। तृतीये ॥ १२॥ चतुर्थे ॥ १३॥

पंचमें ।।३२ । एवं ६८।। कल्याणमस्तु । इति संपूर्णम् ।

१६६५. सिद्धपूजा

Crening । उच्चिधारयुतं सिंबदुसपरं ब्रह्मासुरावेष्टितम्,

वंग्गीपूरितदिग्गतांबुजदल तत्संधितत्वान्वितम् ।

वंता पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रीकार संवेष्टितम् ,

देवं ध्यायति सुमुक्ति सुभगो वैरोभकठीरव ॥१॥

Closing : असमसमयसारं चारूचैतन्यचिन्हम्,

परपरणतिमुक्तं पद्मनंदीन्द्रवंश्वम् । निष्वलगुणनिकेतं सिद्धस्त्रं विश्वद्रम्,

स्मरति नमति यो वा स्तोति सोध्येति मृक्तिम्।

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

१९५३. सप्तर्षि-पूजा

श्रीमद्गणीद्रं-हिमवन्मुखकंदरायाः वाग्नीसन्तसुत्ररितिचारू Opening 1 विनिर्गतायाम् ।

स्नाताननेकविध्वमंतरंगिकाया योगीयवरानघरत्नधरान् समर्च्ये ।

Closing ; असमसुखसारं तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं स्वकरकरजटिलं दीर्घजिह्वा-करालम् । is applying to the second of the

> सुघटविकृतचक्रं शांतिदासप्रसस्य भजतु नमतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥१॥

Colophon: अनुपलब्ध है।

१६५४. सप्तिषि-पूजा

Opening । देखें, ऋ॰ १९४३।

Closing । ए रिसि वत " " वसुरिद्धिहं।।

इति सप्तऋषि पूजा समाप्तम् । Colophon:

१६५५. सप्तर्षि-पूजा

वंदेहं विश्वसेनेशं 😁 🎌 ज्ञानरूपं निरंजनम् ॥१॥ Opening:

मानव विकृति येषां ... तत्व तत्वार्थवेदिनः । १४।। Closing:

Colophon 1 अनुपलब्ध । Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

१९५६. सरस्वती-पूजा

Opening : ॐ नमः प्रगटित-परमार्थं शुद्धसिद्धांतसारे,

िजनपत्तिसमयेऽिस्मन सारतां संदधानः।

जगति समयसारकीर्त्ततः सन्मुनिन्द्रैः

स वसतु मम चित्ते सच्छृतज्ञानरूपः।

Closing : अज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढ़े सुणे जे भाव धनी ।

ब्रह्म जिनदास भासि विविध प्रकासि मनवंछित फल बुद्धिधणी।।

Colophon: इति सरस्वति जयमाला संपूर्णम्।

१६५७. शास्त्र-पूजा

Opening : पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः पयः पयः पेयतयोपयोग्यम् ।

समतमद्रा श्रुतदेवतार्यः भवत्या परायः परया ददामि ॥१॥

Closing : जिनवाणी के ज्ञान तें सूझे लोक अलोक !

द्यानत जग जैवंत को सदा देत है धोक ।।११।।

Colophon: इति शास्त्र पूजा।

१९५८. शास्त्र-पूजा

Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण " अहं परिपूजये ॥१॥

Closing । मलयकीर्ति कृतामिष संस्तुति पठिति यः सततं मितमान्नरः ।

विजयकीत्तिगुरुकृतमादरात् सुमितिकेल्पलताफलमस्तुति ।।१०।।

Colophon: इति सरस्वति स्तुति विधानम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६।

१६५६. शास्त्र-पूजा

Opening : देखें, कः १६५६।

### २१६ भी जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

१९७४. सिद्धपूजा

Opening: देखें, क॰ १९६५।

Closing : दीर्घायुरस्तु गुभगस्तु मुकीतिरस्तु मुक्षिटरस्तु धनधान्य समृद्धि-

रस्तु बारोग्यमस्तु विजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव

सिद्धप्रसादात् ।।१।।

Colophon । इति सिखपूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५. सिद्धपूजा

Opening : देखें, कः १९६४।

Closing : कृत्याकृत्तिमचारूचैत्यनिलयान् .... दुष्कर्मणां गांतये ।।

Colophon: नहीं है।

१९७६. सिद्धपूजा

Opening ! देखें, क० १९६४।

Closing : देखें, क॰ १६६५।

Colophon । इति सिखपूजा।

१६७७. सिद्धपूजा

Opening । देखें, क॰ १९६४ ।

Closing : देखें, कः १६६४ ।

Colophon : इति सिढरूना माला सम्यूपंप ।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
(Pūjā-Pātha-Vidhāna)

१९७८. सिद्धपूजा

Opening : परम ब्रह्म परमातमा परम जोत परमीस ।

परम निरंजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ।।१।।

Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी ..... जाने सो दीवाना आतम

को यह ॥

Colophon: संपूर्ण।

१६७६. सिद्धपूजा

Opening : इत्थं चक्रमुपास्य दिव्य ध्यानं फलं न्यस्तुते ॥

Closing : आकृष्टं सुरसंपदा विद्धित मुनितिश्रयोवश्यताम् ' पायात्पं-

चनमः कृपाक्षरमयी साराधनादेवता ॥१॥

Colophon: नहीं है।

१६८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज्य चौबीस जिह जिह थानक सिव गये।

सिद्ध भूमि निय दीस मन वच तन पूजा करो ।।१।।

Closing : जो तीरथ जावे पाप मिटावे ध्यावे गावे भक्ति करें।

ताके जस कहिए संपत्ति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै

119011

Colophon; इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम्।

१६८१. सिद्धचक्र-पूजा

Opening । जिनाधीस सिवईस निम सहस गुणित विस्तार । सिद्ध चक्र पूजा रचों शुद्ध त्रियोग संभार ॥

### २६८ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

Closign । जिन गुण करण आरंभ हास्य कोधाम है।

वायस का नहिं सिंधु तारण को काम है।।

Colophon: इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम् ।

संवत् १६६४ फाल्गुन शुक्ल ६ लिखितम् ॥

१६८२. सिद्धचऋ-पूजा

Opening : अरिहंत पद ध्यातो थको दव्बह गुग परजाय रे।

भेद छेद करि आत्मा अरिहंतरूपी थाय रे।।

Closing । योग असंख्य ते जिण कह्या नव पर मोक्ष ते जांगो रे

एह तण अविलंबन आतम ध्यांत प्रमाणो रे । २१ वी० ॥

Colophon: अनुपलब्ध।

१६८३ सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : वंदौ श्री भगवानकूं भावभगत सिरनाय।

पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।

Closing : संवत् अष्टादश सही सत्तर एक महान ।

भादी कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयी सुजान ॥

Colophon: इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम्।

१६८४. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : श्री आदी वर वंदी महान, कैलास सिखर तैं मोक्ष जान ।

चपापुर ते श्री वासपूज, तिन मुकति लही अति हरिष हुज

HIPH

Closing : देखें, क॰ १६८३।

Colophon: इति सिद्धक्षेत्र पूजा।

Catalogue of Sanskrit, Prakcit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

१६८५. शिखर-विलास-पूजा

Opening । जेठ शुक्ल चतुर्थं दिवस ' फिरके बहुत उछाह।।

Closing । .... ध्यावै सो सुख पावै रामचंद्र निति सिरनावै।।

Colophon: इति श्री शिखर विलास जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखंते सीकर-

मध्ये - मिति फाल्गुन सुदि अठाई संवत् १९४२। का लिखंते

बेठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो।

विशेष-इसके Closing के पहले का बहुत से पत्र गायब हैं।

१६८६. सील-बत्तीसी

Opening : सीलवतीसीवर्णवड •• •• सदा सुमरौ रिसहेश्वर ।१॥

Closing : हरिहर इंद नरिंद नरसुर जंप हिए कान्ताजेन नारी।

संजम धरम सुगण अकू जंपहि जसु ते हरि।।

Colophon: इति सीलवतीसी समाप्तम्।

१६८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

Opening : श्रीमद्वीरजिनेशानां प्रणिपत्य महोदयम् ।

नब्याशनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्षे यथागम् ॥

Closing । नेत्रे द्वंद्वरुजाविनाशनकरं गात्रं पवित्रीकरम्

वातः पित्तकफादिदोषरहितं सूत्रं च सूत्रं भवेत्।

पापं कर्म कुरोगनाशनपरं राहुक्षयं कुर्वते,

श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगलं स्तानस्य गंधोदकम् ।

Colophon: इति शांतिधारा सम्पूर्णम्। शुभमस्तु। पौषमासे शुक्लपक्षे

तिथी ६ संवत् १६५५ । श्री इदं पुस्तकं लिखावा भगवानदीन

पंडित ।

देखें, जै. सि. म. ग्र., ऋ. १६४।

### ३० श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

### १६८८. शीतलनाथ पूजा

Opening । सीतल जुगपद नमूं धर्मदसधा इम भाष्यौ,

उत्तमिषमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्य सन्ध्यायी । सुनि प्रतिबोध हूयो भिव मोक्ष मारग कौं लागै, आहु बानन विधि करुं चलण जुग करि अनुरागै ॥१॥

Closing : पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,

जनमैं श्री जिननाथ निवोगे सब हसी।

Colophon: अनुपलब्ध।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावनी पूजा अधुरी-अधुरी लिखी गई है।

### १६८६. स्नानपूजा-विधि

Opening । प्रथम हुँ निस्सही पूर्वक देह रै जी आवी अंग,

सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै ...।

Closing । देवचन्द्र जिन पूजतां करता भवपार।

जिन प्रतिमा जिन सारवी कही सूत्र मंझार ।।

Colophon: इति स्नानपूजा विधि संपूर्णम्।

१६६०. सोलहकारण-पूजा

Opening : एन्द्रं पदं प्राप्य परं प्रमोदं धन्यात्मनामान् मनिमन्यमानः ।

द्क्-गुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोहं षोडशकारणानि ।।

Closing : भक्ति प्रदा सुरेन्द्रसंस्तुतिमदं तीर्थंकराणां पदम्,

लब्धुं वांछति योनि (पि) वा चतुरं संसारभीताशयैः ॥

श्रीमदृशंनशुद्धिभूरिविनयं ज्ञानं तदा तत्फलम् ।

भवस्या षोडशकारणानि सततं संपूज्य वाराधयेत् ॥

Colophon: नहीं है।

## Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāţha-Vidhāna)

### १६६१ सोजहकारण-पूजा

Opening: देखें, ऋ० १६६०।

Closing : इब सोलाकारण - सद्भवरं गणहियद हरा।

Colophon: इति सोलाकारण पूजा जयमाल संपूर्णम्।

१६६२. सोलहकारग-पूजा

Opening: देखें, कः १९६०।

Closing : इण बहु भविय " - " संकम्पवि - " ।

Colophon । अनुपलब्ध ।

१६६३. सोलहकारण-पूजा

Opening । देखें, कः १९६०।

Glosing : देखें, ऋ० १९६१

Colophon: इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम्।

१६६४. सोलहकारण-पूजा

Opening । देखें, ऋ १९६०।

Closing । देखें, कः १९६१।

Co ophon । इति षोडसकारण अंग पूजा समाप्ता।।

१६६५. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क १६६०।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

३०२

Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arra

Closing : एई सोले भावना सहित धरै वृत जोइ।

देव इन्द्र नरविंद पद द्यानत शिव पद होइ ॥

Colophon: इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम्।

१९६६. सोलहकारण-पूजा

Opening । देखें, क॰ १६६० ॥

Closing : एते षोडशभावना - .... मोक्षं च सौख्यास्पदम् ।।

Colophon: इति श्री षोडशकारण जयमाला भ।षा संस्कृत पूजा समाप्तम् ।

१६६७. सोलहकारणपूजा

Opening । देखें, क॰ ११६०।

Closing । देखे, क॰ १६६१।

Colophon: इति षोडशकारण पूजा।

१६६८. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, ऋ० १६६०।

Closing : भविभवियणिवारणं सोसहकारणं पयडमिगुण-गण-सायरः।

पणविवि तिस्थंकर 😁 \*\*\*।।

Colophon: अनुपलब्ध।

१६६६. सोलहकारण-पूजा

Openign : सरव परव मैं बड़ा अढाई परव है,

नंदीश्वर स्वर जांहि लिए बहुँ दरव है। हमें सकति सो नाहि इहाँ करि थापना, पूर्ज जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना।। Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts (Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

Closing । देखें, क॰ १६६५।

Colophon: इति सोलैकारण पूजा।

२०००. सोलहकारण-पूजा

Opening: मैया मेरी क्रिया हसुन?

आवे मेरी क्रिया हसुन।

लै खोज मेरी हम वहहमको न विसरो ये कहमा।

कर हे सीता वीसेर हम ।।१।।

Closing : सांझ सुबेरा वेर न जाने न जाने धूप अब बरखा जी ।।

Colophon: नहीं है।

२००१. सोलहकारण-पूजा

Opening: सोलैकारन भाय तीर्थंकर जे भये,

हर्षे इन्द्र अपार मेरु पै ले गए।

पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसौं. हमहूँ षोडस भावन भावें भाव सौं।।

Closing : देखें, ऋ० १९९४।

Colophon: इति सोलह कारन पूजा संपूर्णम्। भाद्र शुक्ल १० गुरु सं०

१९६५ आरा में बाबू हरिदास ने लिखा बाबू अनंतकुमार के

पढ़ने हेतु । शुभम्।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जंबूदीप मंझार भरत क्षेत्रर कहाी,

आरज षंड सुजान वद्र देसे लह्यो ॥

### ३०४ श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah.

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ। पंच कोडि अर अरध मुक्ति पहुंचे तहाँ।।

Closing ! सोनागिर जैमाल का लघुमित किह बनाय।

पढ़ै गुनै जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon: इति सोनागिरि पूजा संपूर्णम्।

२००३ स्तवन जयमाल

Opening : श्रीमत् श्रीजिनराजजन्मसमप्रे इंद्रादिहर्षायमान् ।

हस्तारूढ़िवराजमानित्रपुरीपुष्पांजिल दापयन् । इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिताः देवांगनावृत्यवान्, नानागीतिवनोदमगलिवधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयित जिनराज लालचंद्र

विनोदी ।

जिनवरपदपूज्यं भावनेंद्रसुपूज्यं सकलशलविमुक्तं ते लभते

विमुक्तिम् ।

Colophon: इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम् ।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening : गुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।

नमः श्री वर्द्ध मानाय वर्द्ध मान-जिनेशिने ॥ १॥

Closing । उज्जीवण मुज्जीवण णिव्वाहण .... - .... भणिया ॥३॥

Colophon । इति स्वाध्याय पाठः ।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप।

स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripțs
( Pūjā-Pāṭha-Vidhāna )

Closing : ग्यामल यक्ष समर्चं अर्च पूजे जो प्राणी।

तनमन कर आह् लाद प्रगति रुचि हृदि हरषानि ।।
तेइ अन्न धन सौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावै ।
अजितदास मन आस पूज एहि गहि सुख पावै ॥

Colophon । इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उद्धिक्षीरसुनीरसुनिम्मंनैः कलशकांचनपूरितशीतलैः।

पवनपावनश्रीश्रतपजनैः जिनजुहे जिनसूत्रमहं भजे ।।१।।

Closing । इति जिनमतसूत्रे - - - मोक्षमार्गस्य भानुः ॥

Colophon: इति तत्वार्थसूत्राष्टक जयमालसहित समाप्ता ।

२००७. तेरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पंच परमगुरु घ्याइ।

तिनके गुन बरनन करौं, मन वच सीस नवाइ।।

Closing । अचल मेरु पश्चिम सुखकार कुमुद देश वसे निरधार।

जिन मंदिर तहाँ पूजी जाइ. रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ।।

Colophon: अनुपलब्ध।

२००८. तीनलोक-संबंधी-पूजा

Opening ; यह विधि ठाड़ी होय के प्रथम पढ़े जो पाठ।

धन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जुआठ।।

Closing : तिहूं जग भीतर श्री ान मदिर वने अकित्तन महासुखदाय।

### श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Sidhhant Bhavan, Arrah.

नर सुर खग कर वंदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ।। धन धान्यादिक संपति तिनके पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय । चिक्रपद सुरपद खग इंद्र होय के करम नास शिवपुर सुवथाय ।।

Colophon: इति श्री तीनलोक-संबंधी पूजा संपूर्णम्।

२००६ तीसचौवीसी पूजा

Opening । संवौषडाह्वानम् मंयुक्तान् ठः ठ. स्थापन-निष्टितार्थान् " ।।

Closing : सकलसुखधामात्रिकालस्य ..... शिवकान्ति ॥

Colophon: इति चौबीसी पूजा समाप्तम्।

२०१०. तीसचौबींसी-पूजा

Openiag : ॐ जय जय जय गमोऽस्तु णमोऽस्तु ण सन्वसाहूणं।।

Closing : जम्बूघातकपुष्करेषु " नित्यमाप्नुते ॥

Colophon : इति मशुक्तरिविनिशौंगात् सवणविभावशम्मंगाविहिता सुहितकरो-

भव्यानां नंद्यादचंद्र ताराकृति इति पंडित श्री भावशर्मकृतं मधु-

करकारितं त्रिशतवर्रुविशतिकार्चनं समाप्तम् ।

२०११. उद्यापन

Opening : भवांभोधिनिमग्नानां जन्तुनां तारणे क्षमः।

संस्थापयामि दशधा धर्मशर्मौककारणम् ॥

Closing : श्रीनाभीजिनींदो परमानंदो परमसुखकरकारम्।

भवसागरपारं दुरघनिवारं परम 🎌 🐃 सुखकारम् ॥

Colophon . इति ।

३०६

3008

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripts
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

२०१२. वर्द्ध मान-पूजा

Opening : श्रीमतवीर हरैं भवपीर भरें सुख सीर अनाकुल ताई।

केहरि अंक अरी करि दंक नये शिव पंकज मोलि सुआई ।।

में तुमको इत थापत हों प्रभु भक्त समेत हिये हरिषाई।

हे करुना घन धारक देव इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।

Closing : श्री सनमित के जुगल पद जो पूर्ज धरि प्रीत।

वृंदावन सो चतुर नर लहै मुक्त नवनीत।।

Colophon: इति श्री वीर वद्धं मान पूजा समाप्तम्।

२०१३. वर्तमानचौबीसी-पाठ

Opening : वंदो पाँचो परमगुरु सुरगुरवंदत जास।

विघन हरन मंगल करन पूजत परम प्रकाश ।।

Closing । रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्ध मान जिनवर सुखकार।

तिनके चरन कमल को पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार।।

ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुन मिले अपार।

सुरपद भोग भोगि चक्री ह्वै अनुक्रम लहै मोक्ष पदसार ।।

Colophon: इति श्री वर्तमान चौवीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृंदावन कृत

सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुवलपक्षे तिथी १४, भृगुवासरे संवत्

१६५२।

विशेष-इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है।

२०१४. वर्तमानचौवीसी-पूजा

Opening । श्री आदीश्वर आदि जिन अंतनाम महावीर ।

बन्दी मन वच काय सी मेटी भव भय भीर ॥१॥

Shri Devakumar Jain Oriental Library, Jain Siddhant Bhavan, Arrah

Closing ! चौवीसों जिनराज की महिमा कही बताई।

पढ़ें सुनै नरनारी सब सुर शिव पहुँचे जाई ।।४३।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौवीसी वास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् ।

शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्यानमस्तु शुभ सम्वत् १८६० । मासो-त्तमे मास अग्रहने मासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तक-मिदं रघुनाथ सर्मने लेखि पट्टनपुरमध्ये आलमगंज निवसतु ।

लेखक पाठकयो मंगलमस्तु ।। शुभ भूयात् ।

२०१५. वर्तमानजिननाम

Opening । नत्वा सिद्धसमूहं च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।

भरतैरावतास्थानां निनैः साकं विदेहजै ॥

Closing : भूतानागतवतर्मानजिन ... सद्भव्यसंप्रार्थनात् ॥ ३०॥

Clolophon: इति श्री अतीतवत्तं मानागतपंचभ रते रावतित्रशच्चतुर्विशितका

लौकिकाव्यवस्थायां वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभिक्तरागा-

त्चिरं नन्दतु । इति त्रिशत्चदुत्रिशतिका पूजा समान्ता ।

२०१६. विद्यमान-बीसतीर्थं कर-पूजा

Opening ! पूर्वापरिवदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वरः।

स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धसम्यक्तहेतवे ॥१॥

Closing : श्री मदिरादियुगं देवमजितं वीर्यमृतमम् ।

भूयात् भव्य सतां सौख्यं स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रदः ।।

Colophon : इति श्री वीस विद्यमान पूजा संपूर्णम् ।

२०१७. विद्यमान बीस-पुजा

Opening : हेखें, त्र० २०१६।

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa & Hindi Manuscripst
( Pūjā-Pātha-Vidhāna )

Closing । ए बीस जिणेसर णिमय सुरासुर,

बिहरमाण मय संयुणिमा।

जे भणई भणावइ अरू मणभ वह,

ते पावइ सिव परमपय ॥

Colophon: इति वीस बहरमाण की पूजा जयमाल सकाष्तम्।

२०१८ विश्वमान बीस तीर्थ कर पूजा विधान

Opening : वंदो श्री जिनवीसकों विरहमान सुखखान।

दीप अढाई क्षेत्र में श्री विदेह शुभ थान ॥१॥

Closing : सम्बत्सर विकम विगत वसु जुगग्रहसिस कंद ।

ज्येष्ट शुद्ध प्रतिपद सुदिन पूरन भयो सुछन्द ॥

Colophon: इति श्री सीमन्धरादि बीस तीर्थंदर पूजा समाप्तम् । शुभमस्तु ।

लिखा शिखिरचन्द भाद्रपद कृष्ण ग्यार**ह** (एकादशी) वार

शुक्रको शुभ बेलापूर्णकरी। सो जयवन्त प्रवर्ती।

२०१६. विद्यमान बीस तीर्थ कर-पूजा

Opening । श्रीमज्जबूधातुकीपूष्कराद्धं द्वीपेव च्येये विदेहा , शर स्यु:।

वेदा वेदा विद्यमानाजिनेद्राः प्रत्येकं तांस्तेषु नित्यं यजामि ॥१॥

Closing : एते विशति तीर्थं न अधहरा; कम्मारिविध्वंसका,

संसारार्णव तारणैकचतुरा इंद्रादिदेवीस्था।

अंतातितगुणाकरा सुखकरा मोहांधकाराषहा, मुक्ति श्रीललनाविलास ललिता रक्षंतु वो भाक्तिकान् ॥१२॥

Colophon : इति विश्वतिविद्यमान तीर्थंकर पूजा समाप्ता ।

२०२०. व्रत-विधान

Opening : चौदाशि ग्यारस १९ आर्वे च तीज ३ चौथ ४ एवं उपवास ४५

भावनांपचीसी व्रत दसें १० पून्यों १४ एवं उपवास २४ भावनां

वत्तीसी वृत

Closing : आश्वनन्यां पूर्वमुपवास एक पूर्णे सप्तविश्वति,

नक्षत्रवते द्वितीयमुपवाश्वन्यां कियते ॥

Colophon। इति व्रत विधानम्।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

# शुतपंचमी पर्व रावं श्री जैन सिद्धान्त भवन का 95 वाँ वार्षिक प्रतिवेदन

श्रुतपंचमी के पावन पर्व एवं श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा के 95 वां वार्षिकोत्सव के अवसर पर आप सभी महानुभावों, माताओं, बहनों विद्वज्जन, एवं उपस्थित भाई-बहनों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आप सभी को मालूम ही है कि आज का दिन अत्यन्त पावन एवं पुनीत दिन है। हम सभी इस महान् जैनागम एवं श्रुत स्कन्ध यंत्र की पूजा अचेना के लिए एकत्रित हुए हैं जिस ग्रंथ को ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में आज के ही दिन ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को आचार्य पुष्पदन्त ने लिपिवद्ध पूर्ण किया गया था। आज भवन का 95 वां वार्षिक प्रतिवेदन आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए हम गौरवान्वित हैं।

आज से 154 वर्ष पूर्व पितामह पं अवर बाबू प्रभुदास जी ने अपने अथक पित्रिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों का भण्डार एकिन्नत किया। बाबू प्रभुदास जी के पाँत राजिष देव कुमार जैन का ध्यान जब शास्त्रों की सुव्यवस्था की ओर गया तब भट्टारक श्री हर्षकीर्ति जी महाराज की प्रेरणा से इन्होंने श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना सन् 1903 ई॰ में आज ही के दिन कर एक अद्वितीय कार्य किया था और पितामह बाबू प्रभु दासजी द्वारा एकिन्नत सभी ग्रन्थों को भवन को अपित कर दिया। साथ ही भट्टारक जी ने भी अपनी सम्पूर्ण हस्तिलिखित ग्रन्थ को भवन को समर्थित कर दिया था।

आप जानते हैं कि शास्त्र भण्डारों का महत्त्व मन्दिरों, चैत्यालयों मूर्त्तियों के निर्माण एवं पूजनादि से कम नहीं होता क्योंकि तीर्थं करों, आचार्यों की वाणी इनमें सुरक्षित है। क्योंकि ज्ञान के बिना कियाकाण्ड इच्छित फलदायी नहीं होते। देव, गुइ एवं धर्म का स्वरूप शास्त्रों में निहित है।

प्राचीन काल में लोगों की स्मरणशक्ति प्रखर होती थी। शताब्दियों तक मौक्षिक पठन-पाठन की परम्परा थी किन्तु काल एवं परिस्थितियों बदलती गयी। लोगों की स्मरणशक्ति क्षीण पड़ती गयी। ऐसी स्थिति में जिनवाणी के लुप्त होने की सम्भावनाएँ बढ़ती गयी। उस समय श्रुतघर आचार्य घरसेन जी महाराज का जब यह आभास हुआ कि ज्ञानघारा लुप्त होती जा रही है तो उन्होंने आगम प्रन्थों को लिपिबद्ध करने के निमित्त गिरनार पर्वत पर अपने दो शिब्यों मुनि पुष्पदन्त और मुनि भूतबिल के सहयोग से जैन धर्म के प्रमुख अगम षट्खण्डागम को लिपिबद्ध कराने का कार्य प्रारम्भ किया। प्रथम शिष्य मुनि पुष्पदन्त जी इसे अपने जीवन काल में पूर्ण न कर सके किन्तु द्वितीय शिष्य मुनि भूतबिल ने पूर्व प्रथम शताब्दो

को आज ही के दिन ज्येष्ठ शुक्स पंचमी को उक्त जैन वाङ् मय वाणी पट्-खण्डागम को पूर्ण किया। इसी कारण आज का दिन ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी श्रुतपंचमी पर्व के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सम्पूर्ण भारत में लोग आज के दिन षट्खण्डागम की पूजा,आरती विभिन्न प्रकारके उत्सव मनाकर सम्पन्न करते हैं।

जैन परम्परा में पहले ताड़पत्रों पर ये शास्त्र लिखे जाते थे। धीरे-धीरे हस्तनिर्मित कागज का अविष्कार हुआ और कागज पर ग्रन्थों को लिपिबद्ध किए जाने की परम्परा प्रारम्भ हुई। जैन सिद्धान्त भवन में केवल जैन ग्रन्थ की ही नहीं अपितु जैनेतर धर्मों को मिलाकर लगभग 7000 हस्त-लिखित ग्रन्थ संगृहीत हैं।

इस वर्ष सन् 1997-98 में हिन्दी की 30 छपी पुस्तकों, अग्रेजी की 20 छपी पुस्त को बढ़ायो गयीं। आज इस प्रन्यागार में 12,000 छपो हिन्दी बगला, कन्नड़, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं की पुस्तक हैं, 5000 अंग्रेजी में छपी दुलंभ एवं बहुमूल्य ग्रंथों का संग्रह एवं लगभग 7000 हस्तिलिखित एवं 1700 ताड़पत्रीय ग्रंथ सुज्यवस्थित ढंग से संगृहीत है।

ग्रन्थों के रख रखाव एवं उसकी सुरक्षा हेतु समय समय स्टौक चेकिंग, लेवरिंग, बाइण्डिंग आदि कार्य चलता रहता है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रन्थागार के प्रकाशन विभाग द्वारा हिन्दी में श्री जैन सिद्धान्त भास्कर तथा अंग्रेजी के "जैन एन्ट्रीक्वायरी" का प्रकाशन 1912 से ही सुव्यवस्थित ढंग से चलता आ रहा है। इन दोनों शोध पत्रिकाओं में जैन साहित्य, प्रातत्त्व, इतिहास एवं कला सम्बन्धी सैकड़ों महत्त्वपूर्ण लेख प्रकाशत होते चले आ रहे हैं। जल्द ही हम भास्कर का 50-51 वां अंक प्रकाशित करने जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त ज्ञान प्रदोपिका, प्रतिभा लेख संग्रह मुनिसुवत काव्य, वैधसार, सचित्र जैन रामायण श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रंथावली (दो भागों में) तथा भास्कर भाग। से 30 तक छपे लेखों की सूची पुस्तक रूप में प्रकाशित है। भाग-49 किरण 1-2 में 31 से 46 तक क अंकों के लेखों की सूची भी छापो जा चुकी है। शोध कर्त्तांशों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए बहुमूल्य तथा दुर्लभ ग्रन्थों की जेरोक्स कापी करवाकर भी देने की व्यवस्था हम करते हैं।

श्री जैन सिद्धान्त भवन का सदुपयोग सरस्वती पूजा, लक्ष्मण पर्व, श्रुतपंचमी, वार्षिकोत्सव कवि गोष्ठी महावीर जयन्ती एवं मुनिवरों के उपदेश आदि विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए भी किया जाता है। आरा नगर के मध्य अनुपम एवं स्थच्छद वातावरण में स्थित यह ग्रन्थ।गार दर्शनीय एव बंदनीय है। इसके कण-कण में धर्म, कला एवं संस्कृति को त्रिवेणी लोगों में चेतना के बीज बो रही है।

श्री जैन सिद्धान्त भवन में 60 साप्ताहिक, मासिक, षाण्मासिक शोध पत्र पत्रिकाएँ देश-विदेश से श्री जैन सिद्धान्त भास्कर के परिवर्तन में आती हैं।

श्री जैन सिद्धान्त भवन में विडियो-आडीयो कैसेट की लाइब्रेरी है जिसमें जैन तीर्थ स्थलों, मस्तकाभिषेक, रवीन्द्र जैन, मुनि महाराजों, पं॰ गणेश प्रसाद वर्णी जीसे संतों आदि के प्रवचन एवं जैन भजन आदि के विडियो कैसेट 15 एवं आडीयो कैसेट 20 तथा हस्ति बित ग्रंथों की माईको फिल्म भी संगृहीत हैं।

शोधकायं के क्षेत्र में भी श्री जैन सिद्धान्त भवन के अन्तर्गत श्री देतकुमार जैन शोध संस्थान अपनी नि:शुरूक सेवा प्रदान कर रही है। इस शोध संस्थान की मगध-विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। यहाँ की प्रचुर सामग्री ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ ताड्यत्रीय - ग्रंथ आदि अत्यन्त उपयोगी हैं। यहाँ जैन साहित्य का ही नहीं जैनेतर साहित्य प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रजी आदि विविध भाषा विषयक दुलंभ ग्रंथ आदि शोध कार्य हेतु प्रचुर मात्री में उपलब्ध हैं। इसी वर्ष ग्रंथालय से लगभग 100 पुस्तकें निर्गत की गयी हैं। जैनागम के प्रसिद्ध विद्वान् डां० राजाराम जैन मानद शोध निदेशक के रूप में कियाशील हैं तथा इनके निर्देशन में शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं। इस वर्ष शोध निदेशक के रूप में वैशाली शोध संस्थान के विरूपात प्राध्यापक डां० लालचन्द्र जैन ने भी अपना सहयोग देने की स्वोकृति दी है।

श्री जैन सिद्धान्त भनन ग्रंथागार के तत्त्वावधान में निर्मल कुमार चक्रेव्वर कुमार जैन कला-दीर्घा की स्थायो प्रदर्शनो प्रभु शान्ति नाथ जैन मन्दिर पर दर्शनाथियों के लिए नित्य खुली रहती है। इस कला-दीर्घा में प्राचीन एवं आधुनिक चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों के अतिरिक्त प्राचीन सिक्के, सुप्रसिद्ध विद्वानों के पत्रों एवं ताड़पत्रीय ग्रन्थ एवं अन्य विभिन्न सामग्रियों का अनुपम संग्रह है। जिसे देखने हजारों-हजार की संख्या में दर्शनाथीं भारत के विभिन्न भागों से आते हैं, और इसे देखकर इनकी भरी-भरी प्रशंसा करते हैं।

इसकी एक शाखा, दिगम्बर जैन महावीर कीर्ति सरस्वती भवन राजगृह में स्थापित है। दिसम्बर, '93 में भगवान बाहुबलि मस्तकाभिषेक के समय इसकी एक और शाखा श्रो जैन बाला विश्राम, धर्मकुञ्ज, धनुपुरा आरा में 'पैनोरमा औफ जैन आर्टस' के नाम से खोली गयी जिसमें देश के उत्कृष्ट जैन मन्दिरों के फोटो चित्र प्रदर्शित हैं।

मैं भवन की प्रबन्धकारिणी के सभी सदस्य पदाधिकारियों एवं कार्यकत्ताओं के प्रति अपना अनुग्रह प्रकट करता हूँ, जिनके बहुमूल्य सहयोग से जैनागम की सेवा निरन्तर हो रही है। आज इस अवसर पर उपस्थित सभी माताओं, बहनों, भाई बन्धुओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनकी उपस्थिति से यह कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हो रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपका सहयोग भविष्य में भी प्राप्त होता रहेगा।

और अन्त में आप सभी से मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि श्रुतपञ्चमी पूजा पूर्ण कर जब आप अपने-अपने घर जाएँगे तो अपने मन्दिर में रखें या घर में रखें, शास्त्रों की साफ सफाई कर जहाँ तक संभव हो, शास्त्रों को वेस्टन में लपेटकर रखें। तभी श्रुतपञ्चमी पर्व पर जिनवाणी माता की पूजा हमारे लिए सफल होगी।

जय जिनेन्द्र, जय जिनवाणी।

अजय कुमार जैन मानद मंत्री पराग जैन संयुक्त मंत्री द्वारा पठित

## मूडिबद्री जैनमठ के भट्टारक स्वामीजी दिवंगत

कर्नाटक में दिगम्बर्ग जैन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण प्राचीन केन्द्र मुड बिद्धी में जैसमक के पीठासीन पहाचार्य, स्वस्ति श्री ज्ञानयोगी चारकीर्ति महारक स्वामीजी का भट्टारक-भवन में ताळ 15 जनवरी 98 को अचानक और आकस्मिक स्वर्गवास हो गया । अंतिम रात्रि में कोई भी व्यक्ति उनके पास नहीं था । मध्याह्व में दरवाजा तोड़कर जब लोग उनके कक्ष में गये तो वहां उन्हें मृत पाया गया । समझा जाता है कि रात्रि में सोते समय हृदयघात से उनका निधन हुआ होगा।

नियाओं के अर्जनका अभिप्राय लेकर दक्षिण से उत्तर भारत में आया लिगर करनी तथा वाराणसी के जैन विद्यालयों में तथा आरा के जैन-सिद्धान्त-भवन में उत्तर में क्षिण के जैन विद्यालयों में तथा आरा के जैन-सिद्धान्त-भवन में उत्तर में क्षिण के किया और श्री महावीर निर्वाण महोत्सव-वर्ष 1974 में, दिल्ली में भारतीय ज्ञानपीठ तथा वीर सेवा मन्दिर में सहायक के रूप में कुछ समय तक साहित्य सेवा का कार्य किया। इसी बीच प्रायः पच्चीस वर्ष से "गुरुविहीन" मुडबिद्री भट्टारकपीठ के लिये उनका चयन हुआ तथा परम्परानुसार श्री जैनमठ श्रवण बेलगोल के स्वस्ति श्री चारकीर्ति भट्टारक स्वामीजी ने क्षुल्लक दीक्षा प्रदान करके मूडबिद्री के पीठासीन भट्टारक के रूप में उन्हें पट्टाभिषक्त कराया। इस प्रकार उस विख्यात जैन पीठको लगभग 22 वर्ष तक उन्होंने कुशलता-पूर्वक संचालित किया।

मठकी अनेक अचल सम्पत्तियों के दीर्घकालीन विवाद सुलझाकर, उन पर पुन: मठका स्वत्वाधिकार स्थापित करना स्वामोजी के कार्यकालीन उल्लेखनीय उपलब्धि मानी जायेगी।

दक्षिण काशोके भट्टारक बनकर भी स्वामीजी ने उत्तर भारत से जीवन्त-सम्पर्क बनाये रखा। मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल और आसाम तथा नागालैण्ड तक उन्होंने बार-बार दूर-दूर तक यात्राएँ कीं। पूज्य गणेश प्रसादजी वर्णी, पूज्य आर्थिका विशुद्धमती माताजी तथा पूज्य आचार्य विद्यानन्द के प्रति उनकी विशेष भिक्त ज्ञान-दाता विद्वानों का उन्होंने सदा सम्मान किया। उनकी छात्र अवस्था से लेकर अन्त तक मेरा उनसे घनिष्ठ सम्पर्क रहा। उनके जाने से मैंने एक आदरणीय मित्र खो दिया है।

उन्होंने आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड और जापान आदि अनेक देशों का भ्रमण किया था। उनके निधन का समाचार फैलते ही दूर-दूर से मठ के शुभचिन्तक और भक्तगण मूडिबिद्री में एकत्र हो गये। श्रवणबेलगोल मठ के कर्मयोगी चाह-कीतिं स्वामीजी ने स्वयं पधारकर अंत्येष्टि कराई तथा मठ का चार्ज ग्रहण किया। इस अवसर पर हुमचा के श्रीदेवन्द्रकीतिं स्वामीजी तथा कारकल और नरसिंहराज्य पृरा के भट्टारक और कनकगिरि के नव-दीक्षित भट्टारक श्रीभुवनकीतिं स्वामीजी उपस्थित रहे।

धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्रीयुत वीरेन्द्रजी हेगड़े. केन्द्रीय मंत्री श्री धनंजय, पूर्वमंत्री श्री अमरनाथ होट्टी, विधायक अभयचन्द, नगर अध्यक्ष श्री श्रीणाय सहित हजारों की संख्या में लोगों ने शव-यात्रा में भाग लिया। श्री शांतिराज शास्त्री श्रवण बेलगोला तथा श्री देवकुमार शास्त्री, प्रभाकराचार्य और श्री धर्म साम्राज्य एवं डाक्टर आरिगा ने व्यवस्था का संचालन किया।

— नीरज जैन सतना

### श्री मूडिबद्री क्षेत्र के पूज्य भट्टारक जी के देहावसन पर

आज दिनांक 7-2-98 की अपराह्न 2 बजे से श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा की एक सभा श्री सुबोध कुमार जैन जी की अध्यक्षता में देवाश्रम आरा में हुई जिसमें निम्न महानुभाव उपस्थित रहे।

1.	श्री सुबोध कुमार जी जैन	ह0/
2.	श्री प्रो० अ० श्याम मोहन अस्थाना	ह॰/
3.	श्री नन्देश्वर प्रसाद जी जैन	ह०
4.	श्री अभय कुमार जी जैन	ह∙।
5.	श्री मुकेश कुमार जैन	ह॰/
6.	^ · · ·	ह०/
7.	श्रो प्रो० डा० राकेन्द्र चन्द जैन	ह∙/
8.	श्री अतुल कुमार जी जैन	ह०/

टाइम्स ऑफ इण्डिया दिल्लो के अंक में दिनांक 2-2-98 को दु:खद समाचार प्रकाशित हुआ कि मूडिबद्री के परम पूज्य मट्टारकरत्न श्री चारुकीर्ति जी महाराज मूडिबद्री को समाधिमरण (देहान्त) दिनांक 11-1-98 गुरुवार को हो गया। इसके पूर्व उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। श्रद्धेय भट्टारक जी का आरा नगरी में दो बार पर्दापण हुआ और उनके द्वारा श्री शांतिनाथ मन्दिर, जैन सिद्धान्त भवन तथा अन्य स्थानों पर बहुत धार्मिक एवं प्रभाव-शाली प्रवचन हुए थे। आरा नगर के जैन-जैनेतर समाज ने इसका लाभ उठाया। तदुपरान्त पावापुरी जी, राजगृह व अन्य तीर्थों की वन्दना करते हुए अपने अमेपदेश दिये। वे श्री जैन सिद्धान्त भवन की प्रशासनिक समिति में अध्यक्ष थे और उत्साहपूर्वक अपना नेतृत्व हमें दिया।

विदेशों में विगत 5-6 वर्षों से उन्होंने भ्रमणकर विदेशी एवं भारतीय मूल के निवासियों के बीच अपना घार्मिक प्रवचनों आदि के द्वारा जैन सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार किया। उनके असामियक निघन से आरा वासी काफी दुखित हैं। आज उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु एक मिनट का मौन धारण कर वीर प्रभु से प्रार्थना की गई कि उनको आत्मा को शान्ति प्रदान प्रदान करें एवं इस प्रकार अपनी विनयांजिल समर्पित की गई।

श्री जैन मठ मूडबिद्री के व्यवस्थापक दूस्टियों को इस प्रस्ताव की प्रतिलिपि भेजने का निर्णय लिया गया।

ह०/ सुबोध कुमार जैन

## "भाषा के स्वाभाविक विकास का नाम है प्राकृत" —श्री मदल लाल खुराना

नई दिल्ली 25 मई (जनसत्ता, प्राकृत भाषा एवं साहित्य पर दसवें अखिल भारतीय ग्रोब्मकालीन स्कूल का उद्घाटन रिवबार को विजय वलभ स्मारक जी॰ टी॰ करनाल रोड में केन्द्रीय पर्यटन एवं संसदीय मामलों के मंत्री मदनलाल खुराना ने किया। उद्घाटन भाषण करते हुए उन्होंने कहा कि "प्राकृत, भाषा के स्वाभाविक विकास का नाम है। भगवान महावीर सम्नाट अशोक जैसे महापृष्ठषों ने इसी जनबोली के माध्यम से अपना संदेश आम जनता तक पहुँचाया। यह भाषा न केवल सर्वधर्म के समभाव पर चलने की प्रेरणा देती है बल्कि धर्म, दर्शन सभ्यता, संस्कृति तथा साहित्यिक विकास के अन्य मूल तत्वों को भो धारण करती है। उन्होंने कहा कि प्राकृत के ज्ञान के बिना कोई कैमे समझ सकता है कि वेदों में बहु रूपता क्यों आई। इस ग्रीब्मकालीन स्कूल का आयोजन भोगीलाल लहेरचन्द इंस्टीच्यूट आँफ इन्डोलोजी ने किया था।

कलकता विश्व विद्यालय में भाषा विज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रोक्तिस्य रंजन बेनर्जी ने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के ऐतिहासिक एवं भाषा के वैज्ञानिक महत्व पर प्रकाश डाला। समारोह मैं उपस्थित विद्वानों में इस संस्थान के निदेशक, विमल प्रकाश जैन, प्रो॰ प्रेम सिंह भाषा वि॰ विभाग दि॰ वि० वि॰, श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, श्री राजकुमार जैन, श्री विनोद भाई दलाल, एयर मार्शल पो॰ के॰ जैन, श्री के॰ के॰ जैन, श्री विशम्भर नाथ जैन, प्रो॰ संघक्षेन सिंह आदि प्रमुख थे।

### कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा प्रवर्तित ''कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार"

दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम द्रस्ट, इन्दौर द्वारा जैन साहित्य के सृजन-अध्ययन/अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के अन्तगंत रूपये 25,000/— का कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रति वर्ष देने का निर्णय 1992 में लिया गया था। इसके अन्तगंत नगद राशि के अतिरिक्त लेखक को प्रशस्ति पन्न, स्मृति चिन्ह, शाल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया जाता है। गत 4 वर्षों में संहितासूरि पण्डित नाथूलालजी शास्त्री इन्दौर (1993) प्रो॰ लक्ष्मीचन्द्र जैन जबलपुर (1994) प्रो॰ ज्ञान चन्द्र जैन असरकर नागपुर (1995) डा॰ उदयचन्द्र जैन, उदयपुर एवं आचार्य गोपीलाल अमर, नई दिल्ली (1996 संयुक्त) को उनकी कृतियों हेतु सम्मानित किया जा चुका है।

वर्ष 1997 के पुरस्कार हेतु ''भगवान ऋषभद्देव एवं जैन धर्म की प्राचोनता'' शोर्षक पर प्रित ष्टयाँ 31-12-97 तक आमंत्रित की गई थी। प्राप्त 5 प्रविष्टियों का मूल्यांकन निम्नांकित त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल द्वारा किया गया—

- प्रोः महेन्द्र सिंह. सौढा. पूर्व कुलपित–इन्दौर एवं ्रीलखनऊ विश्व विद्यालय तथा निदेशक—आई० पी० एस० एकेडेमी, इन्दौर।
- 2 प्रो०पी० एन• मिश्र, निदेशक-प्रबन्ध अध्ययन संस्थान,

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर

3 प्रो० सी० के० तिवारी, प्राध्यापक-इतिहास एवं पूर्व प्राचार्य.

होल्कर विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर।

निर्णायक मंडल ने प्राप्त प्रविष्टियों में से किसी को भी पुरस्कार योग्य नहीं पाया, फलतः निर्णायक मण्डल को सर्वानुमित से की गई अनुशंसा के आधार पर अध्यक्ष-कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ ने 1997 का पुरस्कार निरस्त कर दिया है।

1998 के पुरस्कार हेतु विज्ञान की किसी एक विद्या, यथा गणित भौतिकी, रसायन विज्ञान, प्राणि विज्ञान अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के क्षेत्र में जैनाचायों के योगदान को समग्र रूप में रेखांकित करने वाली 1994-98 के मध्य प्रकाशित अथवा अप्रकाशित हिग्दी/अंग्रेजो में लिखित मौलिक कृतियां दिनांक 30-12-98 तक सादर आमंत्रित है। प्रविद्यों हेतु निर्धा-रित आवेदन पत्र एवं नियमावली निम्न पते से प्राप्त की जा सकती हैं। पता—कुन्दकुन्द ज्ञानपोठ, 584, महात्मा गांधी मार्ग, तुलोगंज, इन्दौर 45201

देवकुमार सिंह कासलीवाल अघ्यक्ष डा० अनुपम जैन मानद सचिव

## पाठकों के उद्गार

अंक में प्रकाशित सामग्री → यथेष्ट ज्ञानवर्धक व उपयोगी है। पुस्तक की छपाई स्पष्ट व सुन्दर है — तथा गैट-अप आकर्षक है। लेख — जैन दर्शन और कर्म — एक चिन्तन' में एक नया सोच प्रगट हुआ है — प्रो० डॉ० राजा राम जी जैन का लेख ''इक्कीसवीं सदी की दस्तक एवं जैन समाज के उत्तरदायित्व'' एक मील के पत्थर की तरह दिशा निर्देश देने में सफल हैं। बधाई।।

भवदीय इन्दर चन्द पाटनी व्यवस्थापक सरस्वती भण्डार, अजमेर 12-8-97

( 2 )

जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में "जैन सिद्धान्त भास्कर" त्रैमासिकी वस्तुतः भास्करवत ही प्रकाशमान है। इसमें शोध / खोज से परिपूर्ण आलेखों की प्रस्तुति जैन विद्या के अध्येताओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है सम्पादक जी के परिश्रम का परिणाम ही इतनी सुन्दर शोध पत्रिका समाज को प्राप्त हो रही है। आलेख भी भेजूंगा। एक दो आलेख—श्रवकाचार के प्रक्ष्य में अपेक्षित है।

अभार

भवदीय ह० श्रेयास कुम।र जैन वड़ौदा 22-10-97

( 3 )

मान्यवर महोदय, सादर जय जिनेन्द्र

"जैन सिद्धान्त भास्कर" दिसम्बर '96 प्राप्त हो गया था जिसका हार्दिक धन्यवाद। यह पित्रका अपना एक उचा स्थान रखती है। इसमें जितने भी लेख होते हैं, वह सभी बहुत खोजपूर्ण जानकारी से ओत-प्रोत होते हैं, यह वास्तव में प्रेरणादायक है। इसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम है। आपका कार्य बहुत सराहनीय है।

शेष शुभ।

मंगल कामनाओं सिह्त हर् सुमेर चन्द जैन सम्पादक, वर्णी प्रवचन 15 प्रेमपुरी, मुजफ्फरनगर-251002 15-8-97 (8)

प्रिय भाई,

आपका पत्र मिला भास्कर का वाल्यूम 49/1996 डॉक से यथा समय मिल गया था मैं उस समय विदेश यात्रा पर था अतः पत्र नहीं जा सका इसका मुझे खेद है।

भगस्कर इस भोषण महँगाई और पत्रकारिता के पत्तन युग में भी आपना स्तर और निरन्तरता बन।ये चल रहा है, यह सचमुच सराहनीय है। यह वाल्यूम अभी पढ़ नहीं पाया हूँ। वाद में आपको लिखूगा।

धन्यवाद सहित-

भवदीय नोरज जैन शान्ति सदन, सतना मध्य प्रदेश-485001 22-8-97

### पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम

-: अमर जैन शहीद"

सम्गदक---

डाँ कपूरचन्द्र जैन, एवं डाँ० श्रीमती ज्योति जैन

प्रकाशक मार्फत —श्री कैलाश चन्द जैंन स्मृति न्यास

—डॉ॰ कपूरचन्द्र स्टाफ क्वार्टर न · 6

कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय, खतौली 251201

म् ० 40/-

मुजप्फर नगर (उ० प्र.) जैन विद्वानों एवं छात्रों के लिए रियायती मू० 20/-

प्रेषित अमर जैन शहीद की प्रति मिली । यह आपने ठीक ही किया कि जैन शहीदों की अलग से पुस्तक छपाई और 500-500 जैन स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनियों को जो आपने इकट्ठा किया, जिसे बाद में कुछ किस्तों मैं छापने की योजना है। भारत वर्ष की पांच भौगोलिक हिस्सों में बांटकर प्रदेशों के हिसाब से प्रकाशित होना चाहिए।

अमर जैन शहीद में आरा नगर के शहीद श्री मनोहर जैन का नाम आना चाहिए था, जिनका परिचय मैंने आपके पास भेजा था। आरा के स्वतंत्रता सेनानियों में अपनी सहादत के कारण ही वे स्वतंत्रता सेनानियों में अपनी सहादत के कारण ही वे स्वतंत्रता सेनानियों में अपणी माने जाते हैं। दुर्भाग्य से उनका कोई चित्र उपलब्ध महीं है वरना मूर्ति अवश्य स्थापित करवाई जाती। वर्तमान पुस्तिका में आपने अधिक से अधिक चित्रों को उपलब्ध करने का प्रयत्न अवश्य किया होगा क्योंकि इसमें शहीदों का चित्र बहुत कम है। छपाई कागज आदि संतोष जनक है। इस प्रकाशन के लिए बधाई,

—सुबोध कुमार जैन

## पुस्तक समालोचना

1—महाकिव आ॰ ज्ञानसागर के हिन्दी साहित्य की मौलिक विशेषताएँ 2—महाकिव आचार्य ज्ञानसागर अध्यात्म संदोहन 3—महाकिव आचार्य ज्ञानसागर के संस्कृत साहित्य में प्रकृति चित्रण 4—आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज इंगिलिश में जीवनी 5—सतख्जा के सन्त 6—विद्यासागर को लहरे 7—महामनीषि आ॰ विद्यासागर शोध—निर्देशिका 8—जीवन और साहित्यिक अनुदान।

उपर्युक्त पुस्तकें महामनिषि आचार्य श्री विद्यासागर जी साहित्य की विशाल श्रृंखला में प्रेषित 8 पुस्तकें प्राप्त हुई।

जैन साहित्य और दर्शन के क्षेत्र में और उससे भी आगे बढ़कर भारतीय साहित्य के क्षेत्र में प्० भुनिराज विद्यासागर जी का अवदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। उनके द्वारा मूक माटी का जो अद्भुत लेखन हुआ है उसका सर्वत्र हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अपूर्व स्वागत हुआ है। मुक माटी पर तो आधारित इस ग्रन्थ की प्रशंसा में अनेक पुस्तकें लिखी गई है।

पू० मुनिराज महाकित आ० ज्ञानसागर जी जो कि स्यादवाद महाविद्यालय काशी के छात्र थे। उनके ही दीक्षित होकर और अन्त में अपने ही दीक्षा गुरू के द्वारा आ० पद का त्याग करना और उसके पूर्व अपने शिष्य विद्यामागर जो को आ० पद प्रदान करना, अपूर्व घटना हुई जिसकी मिशाल खोजना असंभव है।

मुनि महाकिव आ॰ ज्ञानसागर जी महराज की साहित्य साधना के विषय में उपयुक्त पुस्तकों की क्रम संख्या 2—महाकिव आचार्य ज्ञान-सागर आध्यात्म संदोहन 3—महाकिव आचार्य ज्ञानसागर के संस्कृत साहित्य में प्रकृति चित्रण और हिन्दो साहित्य की मौलिक विशेषताएँ जो कि श्री जैन सिद्धन्त भास्कर में अन्य पुस्तकों के साथ समीक्षा हेनु प्राप्त हुई है, ये तीन पुस्तकों भी आ। विद्यासागर जी महाराज की अद्भुत गुरूभितत को दर्शाती है।

पूज्य आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के विषय में इसके पूर्व भी अनेक साहित्य प्रकाशित हो चुके है और अपनी अद्भूत गुरूभिक्त के उदाहरण स्वरूप आ० श्री विद्यासागर जी महाराज अपने पूज्य गुरू की लेखनी से निकले सभी अप्रकाशित पाण्डुलिपियों को प्रकाशित करवा चुके हैं।

अपने परम श्रद्धेय दीक्षा गुरू के साहित्य को प्रकाश में लाने का श्रेय आ• श्री विद्यासागर जी को हैं। उपर्युक्त सभी साहित्य पठनीय है और देश के सभी पुस्तकालयों में तथा स्कूल और कॉलेजों में, रखे जाएँ, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। कम संख्या (1-2-3)

- 4. अंग्रेजी भाषा में आ॰ श्री विद्यासागर जी महाराज की लघु जीवनी को डा॰ बड़े लाल जैन द्वारा हिन्दी भाषा में लिख कर तथा उसका अंग्रेजी में अनुवाद डा॰ लालचन्द जैन से करवाकर प्रकाशित हुआ है। इन दोनों महासन्तीं के कार्य, गागर में सागर के समान प्रतीत होते हैं और जो लोग हिन्दी भाषा-भाषी नहीं है, उनके बीच अंग्रेजी की यहपुस्तक वितरण करनी चाहिए।
- 5. 'सतलजा' के सन्त आ। श्री विद्यासागरजी महाराज की जीवनी है जिसे कवि लाल चन्द जैन ने हिन्दी कविता में लिखकर अपने पूज्य सन्त के प्रति श्रद्धासुमन अपित किए हैं।
- 6. 'विद्यासागर की लहर' का प्रकाशन दि० जैन युवक संघ, सागर वालों ने सन्त शिरोमणि आ० श्री विद्यासागर जी महाराज के रजत दीक्षा के अवसर पर अपनी विनम्र प्रस्तुति प्रकाशित की है। पुस्तकों के द्वारा तथा उनके द्वारा दीक्षित वर्त्तमान शिष्य-परिचय, आदि जो लिखें हैं, वे सभी पठनीय है और इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है।
- 7. महाकवि आ० विद्यासागरजी साहित्य साधना एवं शोध निर्देशिका मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के पूज्य आचार्य श्री द्वारा रिचत सभी साहित्य पर शोध करने के लिए उपयोगी पुस्तिका लिखी है।
- 8 डा॰ विमल कुमार जैन द्वारा लिखित महामहिषि मुनि विद्या-सागरजी महाराज की जीवनी एवं उनका साहित्यिक अवदान। विद्यासागर साहित्य के शोध के सन्दर्भ में अत्यन्त उपयोगी प्रसिद्ध होगी और जैन अध्ये-ताओं के लिए अनुसंधान के क्षेत्र में, उपयोगी है।

कुरल-काव्य का नवीनतम प्रकाशन श्री कुन्द कुन्द भारती नई दिल्ली द्वारा हुआ है। सन्त श्री एलाचार्य द्वारा विरचित तिरूककुरल एक ऐसा काव्य ग्रन्थ है जिसे जैन और अजैन विद्वानों में एक समान आदर प्राप्त हुआ। कवीरवादी इसे पंचम वेद मानते हैं। इस नीति ग्रन्थ में जो कि तिमल भाषा का ग्रन्थ है किसी धर्म या दर्शन का सिद्धान्त नहीं बताएँ हैं अपितु सूक्तियों का संकलन है। यह किसी धर्म या समुदाय का नहीं है। इसी कारण इसाई लेखकों ने इसे इसाई ग्रन्थ माना है। कबीर पन्थी इस ग्रन्थ को लेखक जुलाहा वताते हैं, हिन्दू लेखक हिन्दु मानते हैं और श्री ए० एन० चक्रवर्ती ने यह विश्वास व्यक्त किया है कि यह ग्रन्थ आ० कुन्द कुन्द का लिखा है।

पं० गोबिन्द राय जैन शास्त्री ने इसका अनुवाद किया था। अब पुन: आ० विद्यासागर जी महाराज की प्रोरणा से डा॰ सुधीर जैन ने सम्पादन किया है। श्री कुन्द-कुन्द भारती ट्रस्ट द्वारा प्रकाशन के क्षेत्र में बराबर नयी नयी रचनाएँ आ रही हैं और आ० श्री विद्यानन्द जो महाराज जा का नेतृ ब इस संस्थान को मिल रहा है। कीमत 50/-

प्रतिष्ठा रत्नाकर हिन्दी भाषा में सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठा रत्नाकर पं॰ गुलाब चन्दजी पुष्प 619 पृष्ठों की एक अद्भूत कृति पू॰ आ॰ विद्या विमल सागर जी महाराज के शुभाशिर्वाद से प्रतिष्ठा की विधियाँ विस्तृत रूप से इसमें एक जित की गई है। और यह विशाल पृस्तक सभी प्रतिष्ठा कारकों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

पं॰ गुलाब चन्दजी से हमारा परिचय राजगीर के पहले पर्वत पर बाबू छोटे लास की प्ररणा से भगवान महावीर की प्रथम देशना स्मारक रूप में जो प्रतिब्ठा हुई थी, उसी में प्रतिब्ठाकारक के रूप में हुआ था। इस प्रतिब्ठा में इन्द्र-इन्द्राणी कमशः साहु अशोक कुमार जैन और उनकी पिन बने थे और बहुत विशाल तौर पर इस प्रतिब्ठा का आयोजन करने का सौभाग्य हुवें प्राप्त हुआ था। इसके प्रतिब्ठा कारक के रूप में पं॰ गुलाबचन्द जी को बहुत निकट से देखने समझने का अवसर मिला था। प्रतिब्ठा के समस्त कार्यक्रम गौरवपूर्वक भ्रौर प्रतिब्ठा रत्नाकर की प्रति देश के सभी जेना ग्रन्थागारों में एवं देश के सभी नगरों के प्रमुख मन्दिरों में अवश्य होनी चाहिए। इससे सभी को जानकारी होगी कि प्रतिब्ठा का विधान किस प्रकार और कैसे शुद्ध रूप में सम्पन्न किया जा सकता है। इस ग्रन्थ के लेखक पं॰ गुलाब चन्द जी पुष्प को हार्दिक बधाई देता हूँ और इसके प्रकाशक प्रति बिहार जैन समाज दिल्लो को साधवाद देता हूँ।

कीमत 200/-

## ब्रपते-ब्रपते

दिल्ली, से बहुत दु:खद समाचार आया है कि साहू अशोक कुमार जी हृदय रोग से अस्वस्थ चल रहे थे, पर अब बीमारी ने घोर रूप ले लिया और उनके ईलाज के लिए अमेरिका ले जाया जा रहा है। यह भी सूचना मिली है कि उनके हृदय प्रत्यारोपण का विचार चल रहा है जो कि केवल अमेरिका में ही सम्भव है।

हमारे परिवार तथा साहू परिवार का सम्बन्ध उस समय से है, जब 60 वर्ष पूर्व हमलोगों ने मिलजुलकर, डालिमया बन्धु के साथ, पटना के पास बिहटा में, एक वृहद चीनी मिल की स्थापना की थी। हमलोग एक साथ ही बिहटा में रहते थे। बिहटा मिल की स्थापना के उपरान्त ही साहू अशोक कुमार जी के पिता स्वर्गीय शांति प्रसाद जी के साथ सेठ रामकृष्ण डालिमया, की एक मात्र पुत्री श्रीमती रमा डालिमया के विवाह का निर्णय, बिहटा में ही लिया गया था। यहीं साहू जी से परिचय करने और उन्हें देखने सुनने के लिए उन्हें बिहटा में ही निमंत्रित किया गया था। वे आए थे और हम सब ने उन्हें पहलीबार वहीं देखा।

समय किस प्रकार परिवर्तन होता है, सब पुरानी बातें इस समय याद आ रहीं हैं। जबकि साहू अशोक कुनार जी की बीमारी के कारण, सारा जैन समाज चितित है।

हमलोगों की शुभकामना है कि वे पूर्ण स्वास्थ लाभ करें और समाज का नेतृत्व करते रहें।

नेबन-सुबोध कुमार जैन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

- \* The Sacred Books of the Jainas
- ★ The Religious Scriptures of the Jainas
- \* The Library of Jaina Literatures
- \* Sri Jaina Sidhanta Bhawan Publications
- \* Nirmal Prakashans
- \* The Jaina Research Publications
- \* Saraswati Mandir Prakashan



# Catalogue & Price List of Printed & Xerox Publications

Write to

Ajay Kumar Jain Secretary
SRI D. K. JAIN ORIENTAL LIBRARY
Devashram ARRAH 802301-Bihar
INDIA

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

### The Sacred Books of the Jainas

(With Introduction & translation in English with original Commentary)

Vol. I	DRAVYA SAMGRAHA	
	by S. C. Ghoshal	Rs. 248-00
,, II	TATTVARTHADHIGAMA SUTRA by J. L. Jaini	Rs. 177-00
" III	PANCHASTIKAYA SARA by A. Chakravatinyanar	Rs. 196-00
" IV	PURUSARTH SIDDHYUPAYA by Ajit Pd. Jain	Rs. 108-00
" V	GOMMAT-SARA JIVAKAND by J. L. Jaini	Rs. 316-00
., VI	GOMMAT-SARA-KARMAKAND (Pt. by J. L. Jaini	.—I) Rs. 236-00
" VII	ATMANUSHASAN by J. L. Jaini	Rs. 63-00
" VIII	SAMAYASARA by J. L. Jaini	<b>R</b> s. 172-00
"IX	NIYAM-SAR	
	by V. Sainggar	Rs. 70-00
,, X	GOMMAT-SARA-KARMAKAND (Ptby Shital Pd.	2) Rs. 312-00
., XI	PARIKSAMUKHAM	
	by S. C. Ghosal	Rs. 212-00
	Write to Xerox Publication Section	

Write to Xerox Publication Section

Dept. of Rare Books & Manuscripts

# D. K. Jain Oriental Library Devashram ARA Bihar 802301

With effect from 1st. Jan. 1996

# The Religious Scriptures of the Jainas

(With Introduction & translation in English)
in the Original Commentaty)

		in the Oliginal Commentary		
No.	1	GANITA-SARA -SAMGRAHA		
		OF MAHAVIRACHARYA		
		by M. Ranga Charya	Rs.	378-00
	2	NYAYAVATARA		
		by S. C. Vidyabhushan	Rs.	43-00
	3	PRAMATMA PRAKASH		
		by C. R. Jain	Rs.	75-00
	4	DWADHANU PREKSHA		
		by Shital PJ.	Rs.	127-00
	5	RATNA KARAND SRAVAKACHARA	_	
		by C. R. Jain	Rs.	92-00
	6	ATMA SIDHI	_	
		by J. L. Jaini	Rs.	84-00
	7	THE NYAYAKARNIKA	<b>T</b>	co 00
		by M. D. Desai	Rs.	50-00
	8	BHADRABAHU SAMHITA (Jainas Laws)	D o	108-00
	^	by J. L. Jaini	Rs.	100-00
	9	SANMATI TARKA	De	309-00
		by S. L. Sanghavi, B. D. Deshi	Rs.	303-00
	10	JAIN LAW	n -	222 00
		by C. R. Jain	Rs.	222-00

#### Consisting of:-

- I Bhadra Bahu Samhita
- II Vardbamanu Niti
- III Indranandi Jina Samhita
- IV Arhan Niti
- V Trivanikachar

Write to Xerox Publication Section

Dept. of Rare Books & Manuscripts

D. K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA, Bihar 802301

/wi	th effect from 1st Jan. 1996		
1	The Library of the Jaina Lite	erati	ıre
1	JAINA HISTORICAL STUDIES		
	by U. S. Tank	Rs.	31-00
2	JAINISM	1(3.	31-00
	by Herbert Warren	Rs.	121-00
3	OUTLINES OF JAINISM	200	121-00
	by J. L. Jaini	Rs.	153-00
4	STUDY OF JAINISM	10.	155 00
	by LaIa Kanoomal	Rs.	86-00
5	MODERN JAINISM		
	by Sinclair Stevenson	Rs.	98-00
6	THE HEART OF JAINISM		,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,
	by Sinclair Stevenson	Rs.	259-00
7	THE JAINISM OF INDIA & Hindu Code		
	by J. L. Jaini	Rs.	19-00
8	THE FIRST PRINCIPAL OF JAINISM		
	by H. L. Jhaveri	Rs.	49-00
9	JAINISM NOT ATHEISM		
	by H. Warren	Rs.	28-00
10	NAYYA THE SCIENCE OF THOUGHT		
	by C. R. Jain	Rs.	52-00
11	SAMAYIKA OR AWAY OF EQUANIMITY		
	by B. L. Carr	Rs.	43-00
12	THE PRACTICAL PATH		
	by C R. Jain	Rs.	196-00
13	AN EPITOME OF JAINISM		
	by Puran Chand Nahar	Rs.	625-00
14	DIVINITY IN JAINISM		
	by H. Bhattacharya	Rs.	36-00
15	WHERE THE SHOE PINCHES	_	
1.0	by C. R. Jain	Rs.	28-00
16	ATMA DHARMA	_	
	by C. R. Jain	Rs.	55-00
	Write to Xerox Publication Section		
D	Dept. of Rare Books & Manuscripts K. Jain Oriented Library, Devembran, APA		002201

With effect from 1st. Jan. 1996

# The Library of the Jaina Literature

17	DIGAMBER JAIN ICO NOGRAPHY		
	by J. A. S. Burgeis	Rs.	16-00
18	THE JAINA GEN DICTIONARY		20 00
	by J. L. Jaini	Rs.	117-00
19	PURE THOUGHT	-	
	by Ajit Pd.	Rs	24-00
20	A PEEP BEHIND THE VEIL OF KARMAS		
	by C. R. Jain	Ks.	32-00
21	WHAT IS JAINISM		<b>0</b>
	by C. R. Jain	Rs.	7-00
22	HISTORY & LITERATURE OF JAINISM	,	
	by V. D. Barodia	Rs.	104-00
23	STUDY IN SOUTH INDIAN JAINISM		
	by M. S. Ramaswami Ayyangar	Rs.	249-00
24	A REVIEW OF THE HEART OF JAINISM		
	by J. L. Jaini	Rs.	43-00
25	SOME DISTINGUISHED JAINS		
	by U. S. Tank	Rs.	69-00
26	THE KEY OF KNOWLEDGE		
	by C. R. Jain	Rs.	842-00
27	THE RIGHT SOLUTION		
_	by C. R. Jain	Rs.	14-00
28	THE SCIENCE OF THOUGHT		
	by C. R. Jain	Rs.	49-00
29	THE JAINA PHILOSOPAY		
	by V. R. Gandhi	Rs.	206-00
30	KARMA PHILOSOPHY		
	by V. R. Gandhi	Rs.	134-00
31	INDIAN SCIENCE OF THOUGHT		
	by H. Bhattacharya	Rs.	66-00
32	CONFLUENCE OF OPPOSITE		
	by C. R. Jain	Rs.	350-00
	Write to Xerox Publication Section		
	Dept. of Rare Books & Manuscripts		
D. k	K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA,	Bihai	802301

33 •	THE SECRED PHILOSOPHY by C. R. Jain	Rs.	26-00
<b>3</b> 4	SAPTBHANGIENYAYA		
	by Lala Kangmal	Rs.	26-00
35	AN INTRODUCTION TO JAINISM		
	by A. B. Letthe M. A.	Rs.	<b>96-0</b> 0
36	SANYAS DHRMA		
	(A complement to householders Dharma)		
	by C. R. Jain	Rs.	127-00
37	OM NI SCIENCE		
	by C. R. Jain	Rs.	16-00
38	HISTORICAL JAINISM		
	( A History of Jaina Church )		
	by Bool Chandra	Rs.	18-00
39	JAINA LITERATURE IN TAMIL		
	by Prof. A. C. Chakraverty	Rs.	63-00
40	ICONOGRAPHY OF THE JAINA GODESS		
	SARASWATI		
	by Umakant P. Shah	Rs.	34-00
41	COSMOLOGY OLD & NEW		
	A Modern Commentary on 5th Chapter of Thattve		
	by C. R. Jain	Rs.	205-00
42	RISHABH DEO, THE FOUNDER OF JAINISM		
	by C. R. Jain	Rs.	64-00
43	LORD ARISTANEMIU	<u>.</u>	<b>60.00</b>
	by H. Bhattacharya	Rs.	68-00
44	SUBHACHANDRA AND HIS PRAKRIT GRA		
4.5	by A. N. Upadhya MS OF VARANGA CARITA	Rs.	19-00
45		_	1 - 00
	by A. N. Upadhya	Rs.	16-00
46	JAINISM CHRISTIANITY & SCIENCE		
	by C. R. Jaini	Rs.	156-00
47	THE BRIGHT ONES IN JAINISM (Svarga Loka)		
	by J. L. Jaini	Rs.	18-00
	Write to Xerox Publication Section		
f	Dept. of Rare Books & Manuscripts		•
D.	K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA,	Bihar	80230

48	THE JAINA PUJA		<b>*</b>
	by C. R. Jain	Rs.	43-
49	JAINA PENANCE		
	by C. R. Jain	Rs.	133-(
50	THE PRINCIPLES OF JAINISM		
	by Dr. Shital Pd.	Rs.	14-(
51	MAHAVIRA THE GREAT HERO		
	by A. S. Sunavala	Rs.	7-0
52	THE LIFTING OF VEIL OR THE GEMS OF IS	SLAM	
	by C. R. Jain	Rs.	142-0
53	MEDIAEVAL JAINISM		
	by B. A. Saletere	Rs.	319-0(
54	SRAVAN BELGOLA		
	by G.S. Mahinath	Rs.	48-00
55	LIFE OF MAHAVIRA		
	by M. C. Jaini	Rs.	85-00
56	MAHATMA GANDHI OF AHINSA		•
	by an Ahimsaist	Rs.	26-00
57	JAINA PSYCHOLOGY		
	by C. R. Jain	Rs.	52-00
58	JAINISM & WORLD PROBLEM		
	by C. R. Jain	Rs.	171-00
<b>59</b>	JAINA LOGIC		
	by C. R. Jain	Rs.	26-00
60	THE NECTER OF SPRITUALISM		
	by Sri Ganesh Pd Ji Varnsi	Rs.	7-00
61	A LECTURE ON JAINISM		
	by Banarasi Dass	Rs.	68-00
62	AN INSIGHT INTO JAINISM	-	60.00
	by R. Dass	Rs.	68-00
63	THE HERITAGE OF THE LAST ARHANT	D.,	26.00
•	by Charlotle Krause	Rs.	26-00
	Write to Xerox Publication Section		
	Dept. of Rare Books & Manuscripts		-
D. 1	K. Jain Oriental Library, Devashram, ARA,		8023
	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		

#### With effect from 1st Jan 1996

J.

All Interested in Jaina Antiquities should now possess the complete volumes of The Jaina Siddhanta Bhasker

&

# The Jaina Antiquary

The only and the oldest Journal devoted to Art, History, Epigraphy, Archoeology Numismatics, Ethonology. Notices, of Rare Manuscripts, Biography at Jaina Acharyas & eminent personalities, etc.

Published under the Auspices of

# Sri D.K. Jain Oriental Research Institute, Devashram, Arrah, Bihar-802301

Annual Subscription Rs. 50/- Patron life Subscription 1001/Back Volums of Shree Jain Siddhant Bhasker &

The Jaina Antiquary are available from

# Volume I onwardes [ 1912-1990 ]

1 Volume 1 to 15 Rs. 96/- each × 42 issue Rs. 4032/ (Volume 1 to 4 issue in xerox copy)

2 Volume 16-25 Rs. 72/- each  $\times$  20 issue Rs. 1440/-

3 Volume 26-35 Rs. 48/- each × 19 issue Rs. 912/-

4 Volume 36-43 Rs. 30/- each  $\times$  13 issue Rs. 390-

5 Volume 44-46 Rs. 60/- each  $\times$  3 issue Rs. 180/-

6 Volume 47-48 Rs, 200/- each × 1 issue Rs. 200/-(Granthawali Visheshank Part-I)

7 Volume 49 Rs. 60/- each  $\times$  1 issue Rs. 60/-

8 Volume 50-51 Rs. 200/- each × 1 issue Rs. 200/-(Granthawali Visheshank Part—11)

7414/-

W	ith effect from 1st Jan. 1996	
1	JAIN SIDHANT BHAWAN SER मुनिसुव्रत काव्य (चरित्र) संस्कृत और भाषा टीका र	lES
-	पं के भूजवली शास्त्री, विद्याभूषण एवं पं हरना	गहरा । असम— श्राहिकेकी ३०.००
2	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिकशास्त्र, भाषा टीका सिह	4 18441 30-00 =
_	सं॰ प्रो॰ रामव्यास पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य	
3	प्रतिमा लेख संग्रह सं श्री कामता प्रसाद जीन, एम,अ	24-00
4	प्रशस्ति, संग्रह (प्रथमभाग) संबपं को भुजवली शास्त्री	18 6 64, 24-00
5	वैद्यतागर सं॰ पं॰ सत्यधर आयुर्वेदाचार्य काव्यतीर्थ	
6	तिलोय पण्णतो ((प्रथम भाग) सं ० डा० ए • एन ० उ	24 <b>-</b> 00
	भवन की अंग्रेजी पुस्तकों की सूची	
7 8	An Introduction of Jain Sidhant Bhawan	6-00
9	Rules and by-laws of Deva Kumar Jain	
•	Oriental Research Institute, Arrah	
10	श्रीजैन सिद्धान्त भास्कर लेख सूची (भाग १ से ३० तक )	6-00
	The Jaina Antiquary-Articles Index	
	( Part 1 to 30 )	
11	भारतीय दर्शन में सर्वज्ञ स्वरूप विमश:	
	जैन दर्शन के आलोक में — डा॰ लालचन्द जैन एम,	<b>y.</b> 12 00
	NIRMAL PRAKASHAN SERIE	
1	तीर्थं ङ्कर—डा॰ रामनाथ पाठक ''प्रणयी'	12-00
2	प्रकाश दीप (जैन भक्ति पद संग्रह) सं० सुबोध कुमा	रजन 6-00
3	सोलह कारण भावनाओं की पूजा रूपान्तरकार श्री मुबो	-
4	महामुनि सुदर्शन-श्रीमती प्रमिला जैन	6-00
5	ओंकार धुनिसार—सुबोध कुमार जैन	6-00
. 6	राब्द्रीय एकता की भाषा दिन्दी (जैन सन्तों का योगद	ान) 6-00
_	लेखक सुबोध कुमार जैन	
7	सम्राट कुमारपाल—सुबोध कुमार जैन	6-00
8	ध्यान कैसे करें — सुर्वोध कुमार जन	6-00
9	कौशाम्बीगढ़ का इतिहास	<b>6-00</b>
10	श्री जैन सिद्धान्त भवन क्रंथावकी भाग I & II	235-00
11	सचित्र जैन रामायण Write to Xerox Publication Section	1450-00
	Dept. of Rare Books & Manuscripts	4
D.K	L. Jain Oriental Library, Devashram, ARA	Bihar 802301

#### With effect from 1st Jan. 1996

# Shri Jain Bala Vishram Prakashan

r	ुआर्थिकारत्न चन्दा माँश्री समग्र	51-00
	ुरुपदेश रत्नमाला (प्रथम पुष्प)	15-00
- 24 -	सौभाग्य रत्नमाला (द्वितीय पुष्प)	15-00
	निबंध रत्नमाला (तृतीय पुष्प)	15-00
	आदर्श निबन्घ (चतुर्थ पुष्प)	15-00
6	श्री जैन बाला विश्राम हीरक जयन्ती स्मारिका	<b>5</b> 0 <b>–</b> 00
	श्री जैन बाला विश्राम अमृत महोत्सव स्मारिका	100-00
8	ब्र॰ पं॰ चन्दाबाई अभिनन्दन ग्रन्थ	501-00
	पं वन्दाबाई सचित्र जीवनी	5-00

## Nirmal Prakashan Series

1	जैन चित्रकला - श्री सुबोध कुमार जैन	2-00
2	रार्जीष देवकुमार की कहानी	2-00
13	राजुल-श्री सुबोध कुमार जैन	4-00
_	्भगवान बाहुबलि स्तवन और पूजन—श्री सुबोध कुमार जै	न 6•00
( )	ब्दं भर दूध —श्री सुबोध कुमार जैन	7-00
- M.		

	Saraswati	Mandir	Prakasna	ın
1	हिमालय			6-00
2	हमारा देश			6-00
3	समृन्द्र			6-00
4	आत्मकथा			6-00
5	बाल गीताँजली			6-00
6	सैलानी की सैर	and the second s		7-00
7	सूर्य की दुनिया			7-00
8	वीर गाथा			7-00
9	शहीद बालाएँ			6-00
12.5				25 00

#### Write to

#### Publication Section

SRID. K. JAIN ORIENTAL LIBRARY, DEVASHRAM ARRAH 802301 BIHAR

#### New Publications

#### SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI

Vol. 1

Pages xv—169—328 Price Rs. 30

Vol. 2

Price Rs. 30 Pages xiv—173—309

Contains descriptive catalogue in English of about 2000 N cripts of the library in Sanskrit, Prakrit. Apabharamsa and Hin opening and closing slokas and Colophon, in their Original lar. Vol 3 to 6 is under preparation.

> Edited by Rishabha Chandra Jain 'Fauzdar' Forward by Dr. Gokul Chandra Jain.

# 'श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावर

भाग १-मृत्य ३००/०० भाग २-मृत्य ३००-०० श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा में संग्रहित लगभग ६,००० हस्त ग्रन्थों के विस्तृत विवरण के साथ प्रकाशित होने वाली सूची ग्रन्था भागों में प्रकाश्य। भाग १ और २ लगभग ६०० पृट्ठों में प्रकाशित लोकार्पण –डा० शंकर द्याल शर्मा, उप राष्ट्रपति जी प्रस्तावना –डा० गोकुलचन्द जैन, एमः ए॰ पी॰ एच॰ डी सम्पादन -श्री ऋषभचन्द जैन 'फौजदार' दशनाचार्य

#### JAINA RAMAYAN

Price Rs

In Miniature paintings

Coatains Ram Yaso Rasayan of Muni Keshraj with fi reproductions of 213 miniature paintings of Jain Ramayan on Inaugurated by Dr. Shankar Dayal Sharma, Vice President of

Forward by Dr. Raj Anand Krishna. Edited by Dr. Jyoti Prasad Jain.

# 'सचित्र जैन रामायण'

मनि केशराजकृत ''राम यशो रसायन' के २१३ नयनाभि चित्रों में सूसन्जित-सचित्र रामायण श्री जैन सिद्धान्त भवन आरा एक अनमोल एवं अद्भूत हस्तलिखित कृत है। अधक प्रयास इसका प्रकाशन संभव हो पाया है।

आमुख : डा० आनन्दकृष्ण सम्पादन : डा० ज्योति प्रसाद जैन

जनता प्रिटिंग प्रेस, आरा।

जो सामान्य ग्रहण वस्तुओं का करते, नहीं आकार का, अविशेष ज्ञान अर्थों का दर्शन उसे कहें शास्त्रों में (43)

दर्शन, ज्ञान के पूर्व संसारी जीवों के, न दोनों उपयोग होते युगपत । कियार केविलनाथ के तो दोनों ही होते युगपत (44)

अशुभ से विनिवृत्ति भ में प्रवृत्ति, यह जानो चारित्र । र, व्यवहार नय से, व्रत-समिति गुप्ति ऐसा जिनवर ने कहा । (45)

्राह्य-अभ्यंतर क्रिया के अवरोध, पृष्ट करे संसार के कारणों को । जानी के, कहा, जिन प्रभु ने, असम्बन्ध सम्यक् चारित्र होता (46)

दोनों ही (निश्चय/व्यवहार)क्योंकि मुनि को मोक्ष हेतु ध्यान से प्राप्त होते नियम से; अतएव तुम प्रयत्न-चित्त से

भरमो, मत फंसो, मत द्वेष करो, भूनिक अनिष्ट वस्तु से। अक्तिर ईच्छा जो चित्त में, चित्रन ध्यान सिद्धि के लिए (48)

निस, सोलह, छ:, पाँच, बार, दो, एक को जपो-ध्यायो । प्रमुखी वाचक व पुरुष गुरु उपदेशों को (49)

ं स्ट्रंट चतुर्घातिकर्म, प्राथ्य, ज्ञान, वीर्यमय गुभ-देह में शुद्ध आत्मा अर्हन् का विचिन्तन करना (50) अष्टकर्म-लोक-अलोक पुरुपाकारी आत्मा ध्याओ, लोक शिखरा

दर्शन-ज्ञान-प्रधान, वीर्य, चारित्र, उत्तमतप करे। अपने व पर को जाने (जनावे) वह मुनि, आचार्य-रूप ध्याओ।।

जो रत्नत्रययुक्त नित्य धर्मोपदेश में निरत । वह उपाध्याय आंत्मा यतिवर-वे, नम: उन्हें (53)

जो मुनि दर्शन-ज्ञान, समग्र मोक्ष-मार्ग साधे सदा शुद्ध वह मुनि साधु, नमो उन्हें (54)

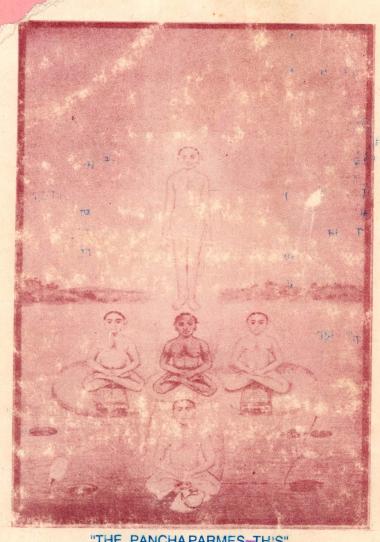
जो कुछ भी ध्यावे निरीहवृत्ति से जब साधु; होता वह प्राप्त कर एकत्त्व को, तब उसका वह निश्चय ध्यान (55)

मत करो, मत बोलो, मत सोचो ताकि उससे बनो स्थिर, आत्मा, आत्मा में रहे यही, परम, होता ध्यान (56)

तप, श्रुत, व्रतवान चेता ध्यान-रथ धुरंधर होता जभी; तभी तीनों में निरत, उन्हें लब्ध हेतु सदा रहता (57)

इस द्रव्य संग्रह को, मुनिनाथ, जो श्रुतज्ञानपूर्ण, दोष-संचय-च्युत है-, शुद्ध करें ! इसे अल्पज्ञानी-नेमिचंद मुनि ने कथन किया (58)

समाप्त



"THE PANCHA PARMES—THIS"
The original painting available at
N.K.C.K. Jain Gallary of Art & Culture
Sri Jain Siddnant Bhawan, Arrrah.